तसईलिख
नागर
तेहोइ
ग्रजूकी
हूराधा
महरि
रती
जेही
हँसर
जात
होत
सुराधाह
दोहा
तेतोश्री
यह
सों
कवि
श्रवू
तुसो
पदानि
सहि

१० स०
२॥

यैं निसद्यौस रहै मनमोहन सौं कव्रहूं न हीकु
री॥२॥अथ वैससंधि वर्ननं॥तिय की छिन छिन
..सोरव्यय पुन्य का..मदौंन॥व..पुन्य
न पाइयतु वैससंधि संकौंन॥३॥टीका॥यह
नाइका की नरिकाई अरु तरुनाई वैस कीसं
धि है सो सषी नाइक सौं कहतु है॥३॥कवित्त
उत्तम रजरासित जै जव लौंन हिं हूसरीरासिं
वावतु है॥तव लौं वह अंतर कै समयो अवि
उत्तम वैस वतावतु है॥इमहूं जयु वैस विसो
रदि नैस उहूं वय अंतर आवतु है॥सुकनी
कोऊ सरवहुनु नुतैं विवसं कमको छिनु पा
वतु है॥३॥दोहा॥छुटीन सिसुता की झलक
झलक्यौ जोवन अंग दीपति देह दुहूंन मिलि
दिपत ताफता रंग॥४॥टीका॥यह दोऊ वैस कै
संगमु है सो सषी सषी सौं कहतु है अथवा ना
यक सौं सषी नवेदन करत है॥४॥कवित्त॥वा
हि वह वनिया नुकी है कछु कहरैं मुस कीन
दरी है॥छूधी चितौंनि विलोकत है पर लो
लता रंच कजांनी परी है॥छूटी नहीं सिसुता
की प्रभा नव जोवन की दुति जांनी परी है॥सं
ग दुहूंन वै ताफता रंग दिपतन की दुति रंग म

हे॥४॥मुग्धा दोहा॥लाल अलौलिकल रुक ईलेषि स्रखिसषी सिहांनि॥आजु कालिह मैं सषियतिउरउकसौंहीमांनि॥५॥टीका॥यह दोहा नायका कैं जोवन अंकुरि न हैसो सषी नाइकसौं निवेदनकरतु है नायका अंकुरितजोवना कहिये॥५॥कवित्त॥कैसी सुहाई अलालरिकाई जोवनजोतिलसौंहीमई है॥ चाल विनोदन तें उचटी तचिकां मकलामैर सौंहीमई है॥वाहि विलोकि सिहांतिसषीवतियानिकी वांनिहसौंहीमई है॥आजिही कालिह मैं वाल वधूकी कछु छतिया उकसौंहीमई है॥५॥दोहा॥हरि हिंडोरैं गगनतें परी परी सी टूटि धरीधाइ पियवीचहीकरी षरी रस लूटि॥६॥टीका॥यह नाइका मुग्धा है हिंडोरै तें नाइकाकौं देषिकैं भाजिवेकौं भईसो टूटि परी सषीकै वचनसषीसौं॥६॥कवित्त॥वाल वलीस वीनकैं संगवनीठनी रूखतरंग हिंडोरैं॥वालेकी चूंनरी चारु कसूंमी सुगंधसनी दमकैं तन गोरैं॥नंदलाल विऊंचेतें टूटि परी जो पाटी अति लाजहिं हिंडोरैं॥काहू पियारे नैं वीचहीधाय करी रस लूटि लई भरि कोरैं॥६॥ग्यातनैवना॥दोहा॥मामक उभरौंहीं भयौ कछु कप।

वि॰स॰ ॥२॥

वो भरुयो आ.इ ॥ सीपहरा कैं मिस हियो निसदि
न हेरत जात है ॥७॥ टीका ॥ यह नाइका मुग्धा
ग्यात जोवना सषी नाइक सों कहतु है सषी
को वचन सषी सों ॥७॥ कवित्त ॥ प्यो रे मंद
लाल वह वाल अलबेली नवेली नवजो
बन की जोति दिन द्वै कतें भरत है ॥ दंपति च
रित्र कुरि चितवनि लागी काम की कलोनी क
छु कांननि धरति है ॥ रंच कउरोजन की कोर
वकसों ही भई नैंसकु लज्जो ही सी चितौनि ह
रति है ॥ सषकी वचा ढडी ढिनि जछानी बार
बार गुंज हार मिस कर हेरि वो करतु है ॥७॥
अथ नउढा दोहा ॥ अपनें अंग के जानिकें।
जोवन नृपति प्रवीन ॥ तन मन नैंन नितंब कों
बडौ इजाफा कीन ॥८॥ टीका ॥ यह नाइका न
वजोबन भूषिता मुग्धा सषी कौ वचन सषी
सों ॥८॥ कवित्त ॥ जोवन रूप सहाय सबी
न विचच्छिन ताइ हरी निठई है ॥ राजल यों न
व लातन कों कटि सत्रु की संपति लूटि लई है
॥ हरि कियो सिसुता कौ सहायक चातुरता चि
त चाह भई है ॥ नैंन उरोज नितंबन कों अपनें
गनि कैं बढवारि भई है ॥ ॥ दोहा ॥ अरुनें टरत
न वरपरे दई मुरक मन मैंन ॥ हो डांहो डी वढि ॥२॥

चले चितु चतुराई नैंन ॥ ९ ॥ टीका ॥ यह नाइ
का कैं जोवन आयो है सु चतुराई अरु नेत्र
वढ़न लागे सषी सषी सों कहतु है ॥ ९ ॥ कवि
नैंननि की वढवारि लषैं चितु चातुरी की उम
गी अधिकाई ॥ चातुरी की अधिकाई लषैं तु
व नैंननि और गही सरसाई ॥ छमकहैं व सवा
यो उहूं नइ तेपर चौस मनोज की पाई ॥ होडा
ये होडा चलै वढि मानों विपलोचन ऐचि
अे चांन कपाई ॥ ९ ॥ दोहा ॥ निरषि नवोढा
नारितन छुटत लरिकई लेस ॥ भो प्यारो
प्रीतम तियनु मानौं चलत विदेस ॥ १० ॥ टी
यह नायका नवोढा है याको जोवन आवत
देषि सौतिनि निरास भई है सो सषी सषी सों कह
ति है ॥ १० ॥ कवित्त ॥ कुंदन सी दिपै देह की
दीपति मैंन मनौं निज मोहनी घालतु ॥ छू
टत सी लरिकाई कछू तरुनापन रंग उरो
ज छालतु ॥ वाल वधून न जोवन आवतु
सौतिन कैं उर सूल से सालतु ॥ प्रानन तैं प्र
ति प्यारो लगै पति मानौं कहूं परदेस कों
चालतु ॥ १४ ॥ दोहा ॥ गाढे गाढे कुच नु विनु
को पिय हिय ठहराइ ॥ उकसौंहैं ई तो हियै दइ
गवै उकसाइ ॥ १ ॥ टीका ॥ यह नाइका नवोढा

वि० स०
॥३॥

है नाइककी याही सैं वकूत आसक्ति है सो सषी नाइका सौं कहति है ॥१॥ कवित्त ॥ पीन पयोधर मूंदर सैं नियतो उरऊपर कै जनवे ॥ कोवसि है पियकैं हियभामनि सुंदर रूप अनूपतवे ॥ नैंक विलोचन लोल भये नवजोवन जोति जगीन अवे ॥ तें उकसें उरजानन हीपियके हियतें उकसाय सवे ॥१॥ दोहा ॥ बाढत तो उर उरज भर भरूतरूनई विकास ॥ वोझनु सौति नु कें हियें आवत रूधी उसास ॥२॥ टीका ॥ यह नाइका नवजोवन भूषित है याकों देषि कैं सौतिनु कैं दुष होत है सो सषी नाय कै सौं कहतु है ॥२॥ कवित्त ॥ नोसी तुही सनी रतिराइ भयो अतितो वस प्यारे विहारी ॥ वेस विलास जग्यो नवतैं यह तोन नवात अनूप निहारी ॥ बाढत है नवनागरि तो उरजानन को उर मैं भर भारी ॥ ता भर सैं तिनु सास उसास नपी रही होत दुषारी ॥२॥ दोहा ॥ मान रूमुकूदि षरावनी दुलही कोअनुराग ॥ सास सदन मन ललन हू सौतिनु दियो सुहाग ॥३॥ टीका ॥ यह नाइका नवोढा याकौ जोवन देषि नायक याकैं वस भयो अरु सैंम है को सुहाग इन लीनो सो सषी ॥३॥

सषीसौंकहतिहै॥३॥कवित्त॥गौनैंआईदुल
हनिल्लौंनैंतनवारीमनौंजगरमगरहोतभ
वनकोभागुहै॥विधिनैंसुधारिधरीचातुरीकी
वोपजाकेंरूपआगैंरतीरतिकोनलागुहै॥
मेरेंजांनिमुंहदिषरांवनीकोनेगुजांनिपियस्यो
कीनौंअनुरागुहै॥सासलैभवनदीनौंप्यारेंला
लनदीनौंअसपीतिपनुदीनौंदीनौंसोति
नुसुहागुहै॥२३॥दोहा॥देहदुलहियाकीच
देंज्योंज्योंजोवनजोति॥त्योंत्योंलषिसौतैंस
वेंवदनमलिनदुतिहोति॥४॥टीका॥यहना
यकानवोढानवजोवनभूषिताहैयाकोजो
वनआवतदेषिसौतिनुकेमुहफीकेपरतुहैं
सोसषीसषीसोंकहतिहै॥४॥कवित्त॥माधुर
गौंनगहैंपदपंकजेमत्तगयंदुनदूषनलागे
॥मैंनकेटौंनेंसवैंनभयेतिनकेसमऊषम
दूषनलागे॥त्योंत्योंनिरषिभईमलनीदुतिसो
तिनकेमुषसूषनलागे॥जोवनजोतिजगीति
यकेतनसौतिनकेतनसूछिमलागे॥४॥दो
ज्योंज्योंजोवनजेठदिनकुचमितअतिअधि
काइ॥त्योंत्योंछिनछिनकटिछपाछीनपरत
नितजाइ॥५॥टीका॥यहनायकाआरूढ
जोवनाहैयाकोजोवनवढ्योदेषिसषीसषीसौं

कहतिहै॥१५॥कवित्त॥वानननरूपकीरासिल
सेतिहूंलोकमैंऔरइतीकलनहीकिन॥वांनि
कवैसलुनाईविलोकिकेतोरूनवारंहिवार
हिनूतिन॥त्योंवनजेठहीआवतज्योंजोउ
राजनकोपरवांनवढैदिन॥त्योंहीत्योंहींन
लगीकविलक्षछिपाकटिछीनपरीदिन
हीदिन॥१५॥दोहा॥नवनागरितनमुलक
लोहिजोवनआंमिलजोर॥घटितैंवढिव
ढिघटिकरीरकमऔरकीऔर॥१६॥टीका
यहनाइकाकेतनमैंजोवनआयोसुअंग
वढिगयेहैंतेघटिगयेघटिहैतेवढिगये
यहआंमिलकोप्रसंगकरिसषीसषीसोंक
हतुहैसषाकेवचनंनायकसोंसंभवै॥१६॥
कवित्त॥सुवरनवेलीसोनवेलीकोललितत
नुराजनसुदेसअतिसोभासरसायोहै॥पाये
हैऊकमछितिपालमीनकेतनकोजोवने
प्रवे[illegible]लतहांनायककेआयोहै॥औरही
तेऔररीतिरसिकवनायकीनीअमलजे
गायोसवहीकेमनभायोहै॥घटिहैतेवढि
कीवीववढिलैघटायदीनोंकहैकेविलम
ऐसोचलनचलायोहै॥१६॥दोहा॥भेंटन
वनैतननमांवतोचिततेरसतअतिप्यार॥[illegible]॥

रनलगायलगायउरसूषनवमनहप्यार
७॥ टीका॥ यहनाइकामध्यायाकैंलाजका
मरोउसिधाएहैसोसषीसषीसौंकहतिहै॥
७॥ कवित्त॥ प्यारीकौनेहलग्यौपियप्यारेसौं
धांनमैंधांनरहेदिनराती॥ मेरिवेकौउपचा
रवनैंनगुरुलोगनुकेउपहाससकाती॥ जांमि
कैंधीतमकेतनकौंतिनकैमिलिवेकौंहियें
अकुलाती॥ भूषनवासच्यवासकेकौंनमें
वांरहीवारलगावतछाती॥७॥ दोहा॥ छूटे
नलाजनलालचौप्यौलषिनेहरगेह॥ सट
पटातिलोचनपरैमरेंसकोचसनेह॥८॥
टीका॥ यहनाइकामध्यायाकेलाजकामम
मांनहैसोसषीसषीसौंकहतिहै॥८॥ कवि
मायकेमैंमनभांवनकौंलषिप्यारी॥ निसंक
कैदेषिसकैनां॥ देषिवेकौंतरसैहियराषि
सां ललगीचितचैंनरहेनां॥ छूटेनला
जचाहूटैनलालचलोककीलीकउलंघि
परैनां॥ नानैंसकोचसनेहभरेअकुलात
परेजलज्ञानसैनैंनां॥८॥ दोहा॥ समरसमर स
सकोचवैसविवसमईअकुलाइ॥ फिरिषि
रिउझकतिफिरिडुरिडरिउझकनजाइ॥८॥ उरत
॥टीका॥ यहनाइकामध्याहैलाजकामस

वि०स०
॥५॥

मानहै तोलषीसषीसों कहतिहै ॥१९॥ कं
प्रानन मांझवसीपियमूरतिनैननिमांझ
सकोचविवेकौ ॥ झांकिझरोषांदुरैफिरिझां
कैदुरैवझरोषेंठहरातननएकौ ॥ त्रासइतैगु
रलोगुनकोउतलालचमोहनकेलविवेकौ
॥ लाजयौंकांमकेवांमदुवीचपरीयौंचला
चलहालहियेकौ ॥१९॥ दोहा ॥ नईलनवि
कुलकौसकुचविकलभईअकुलाइ ॥ दुहूं
वोरऐंचीफिरेफिरकीलौंदिनजाइ ॥१०॥
॥ टीका ॥ यहनाइकामध्याहैलाजकामस
मानहैयारक्रियाकहियेतौकहियेनईलग
निकुलकौसकुचव्यापततौ ॥ सोलषीसषीसौं
कहतिहै ॥२०॥ कवित्त नईलगीलगनिरसि
कमनमोहनसौंउरअभिलाषनकीउमंग
मरतहै ॥ कुलकौसम्हारकौसुरतिआवैऐ
सीरीतिहोतआतिहीकीजियकलनधरत
है ॥ देविवेकौटरतडरतमनहीमनमैंमरत
उसासपैप्रकासनकरतहै ॥ बालनकुल
होकौनिवीचफिरकीलौंवालवधूयनउ
तऐंचीवैचीफिरवौकरतहै ॥२०॥ दोहा ॥
बतछबीलेलालकौनवलनेहलहिना ॥५॥

रि॥ चाहत चूंमत लनाय उर पहरत धरत उना
रि॥२१॥ टीका॥ यह नाइका कौ सनेह नाइक
मैं अधिक है सो ढ़ला कौ पायवा कै मिलने कौ
सुष मांनत है लाज तैं मिलिवे कौ प्रवेस ना
यकतें न। ही नाइका मध्या परकीया हू होय तो
होय सषी कौ वचन सषी सौं॥२१॥ कवित्त॥ नां
गर सौं नव नेह लग्यो नव नागरि आलीन
हूं सौं दुरावै॥ देषि कैं अकुलात हियें प्रतिलना
जनि सौं वनि पैन हिआवै॥ नंद लला कौ ढ़ला
लोहि कैं यतनाकि कैं नैंन निमेष लगावै॥ चूं
म निढूवृत्ति आंषि निसौं कब हूं पहरै कब हू
उर लावै॥२१॥ दोहा॥ वाले की बानै चली
सुनत सषीनु कै टोल॥ मोयें हूं नो यह हसति
विहस निजात कपोल॥२४॥ टीका॥ नायका
मध्या सषी कौ वचन सषी सौं॥२४॥ कवित्त॥ सो
है सषीनु समाज मैं सुंदरि जाहि त्रिषैंरति रूप ल
जायौ॥ एक कही वैस सबै गुन आगर चोपरिवे
लनहां वनि आयौ॥ वाले की वातें सुनीनव
हील विकैं मुकुआं चरनीनैं दुरायौ॥ नैंननि
लाज कपोलनि हांसी दुहूं मिलिकैं अतिरं
ग छिपायौ॥२४॥ दोहा॥ उर उरभ्यौ चित चोर

वि०स०
॥६॥

सोगुरगुरजनकीलाज ॥ चढी हिंडोरेसेहियें
कियेंवनेंयहकाज ॥२३॥ टीका ॥ यहनाइका
मध्यासषीकोवचनसषीसों ॥२३॥ कवित्त ॥ नं
दकिसोरकोरूपचुंभ्योचितुयौंउरम्यौसुमुर
नहिमोरे ॥ संकहियेंगुरलोगनुकीयहकाजक
रेंअनिलाजनिहारें ॥ मैंनमरूरसौंसुरंगराति
कहूनवसांतिफसीविधिओरें ॥ वलगलो
चनकोंदिनदैतेंचढ्यौचितुचारुविचारुहि
डोरें ॥२३॥ दोहा ॥ सटपटीनिसीससिसुषीमु
षघूंघटपटटांकि ॥ पावककरसीमकिके
गईझरोषाझांकि ॥२४॥ टीका ॥ यहनाइकाम
आलाजकामसमानहैनायकाकौवच
नसषीसों ॥२४॥ कवित्त ॥ मोहनीसीमुरली
कीधुनिसुनिश्रवननिलजकनआयससि
मुषीसटपटसौं ॥ नैंसकउझकिझांकिआंन
नअवलोकिवेकोंउरदाविलीनोंआयआ
नसटपटसौं ॥ कहैकविलमवालजांनोंक
निकाईदेषिवेकोंडगम्याकुलमदनचटप
टसौं ॥ दंपतिकीतरफझरफकिधौंपावक
कीझांकिगईझमकिकैंझरोषांझटपटसौं
२४ ॥ दोहा ॥ विहसिबुलायविलोकिउतप्री ॥६॥

टातिय रस घूंमि ॥ तुल कि पसीजैं न स्तनकौ॥
पिय घूंम्यो मुष चूंमि ॥ २५ ॥ टीका ॥ यह नायका दो
टा है सुनै यह की अधिकाई पिय नैं चूम्यो वा ही स्त
नकौ मुह चूंमि कैं आंनंद मांनत है सात्वक भा
व यह हाय वात सत्य यह होइ ॥ २५ ॥ कवित्त ॥ स्तन पै
म तुमा है तें प्यारी फिरै सब मांझ हियैं फूलसा
तें ॥ स्तनकौ आंनन चूंम्यो पिया तिय चूमतें चूं
सौ महा रस मांनी ॥ चाहि उतै मुसकाइ बुलौ
यौं ही मुष पाय लगावती छाती ॥ गात पसी
जि रोमांच ितहोत भई अनुराग के रंगमें
राती ॥ २५ ॥ दोहा ॥ को रिजैं तन कीजैं तऊ नैंन
कीन पतिन जाइ ॥ तो लौं भीजै चीर ज्यौं रहै
नयौं लपटाइ ॥ २६ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोढा है
याके काम को अधिकार है नाइका कौ वचन
सषी सौं ॥ २६ ॥ कवित्त ॥ कियें को रिजतन निति
न कीनें तपतिजाय अ तन की पीर अति उर म
रसानि है ॥ दूरितें विलोकैं चित चौगुनौ उमं
गे चाउ दृग आयें भेटिवे कौं अति अकुलानि
है ॥ जीवन सफल तो लौं ली जिये सुजान भ
रि की जियें न न्यारे क्यौं हूं यौं ही सुष पाते है ॥ स्या
ले पटकी सी भांति ज्यौं नृपति आठौं जांम रहौ
लिपटांनें छाती तुम्हें तोसि रात है ॥ २६ ॥ दोहा

वि॰ स॰ ॥
।।१७।।

छिनकुउघारनछिनछिवनराषतछिनकु
छिपाइ॥ सवदिननिपियपंडितिनअधररदेषपन
देषनजाइ॥४॥ टीका॥ यहनाइकाप्रोढाहैना
यकसौंसनेहअधिकहैयातैंनायकसनेसु
रतिकेचिंहनकौंमनलगावतहैसषीकोव
चनसषीसों॥५॥ कवित्त॥ रतिरतिरंगपतिसं
गमिलिकीनीअंगअंगमनमथकीतरंगसंग्या
सरसे॥ भोरभयेंवालसजनीगनमैंवैठीवेनि
साकीवातैंसुमरिजियसरसै॥ प्यारेकेदसन
कोअधरपरचिंहनाहिआरसीलैवारवार
देषैरसवरसै॥ कवहूंउघारैकवहूंकटोकिर
षैअनुरागमैंउमगिपांनपल्लवकीपरसै॥ ५
॥दोहा॥ दुषिहाइतुचरचानहीआंननन्आं
ननआंन॥ लगीरहतदृकाहियेंकाननकां
ननकान॥ ५६॥ टीका॥ यहनायकाप्रोढानाइ
काकौवचनसषीसौं॥ ६॥ कवित्त॥ लालम
नभांवनसौंमिलिकरिआतुरसकेलिमैंमु
नोरथविविधिमनमांनही॥ कसप्रांनप्यारे
नैकमेरीवोरदेषौतांकोचहचरमेरैंरचवा
इनकौठांनई॥ कुंजननमैंवीथीनकाषिरकीषि
वांरहरिलगिरहेनिसदिनहूंकाहियेंकानई
॥ देषोमाईयनिदुषहाईनुकैउलटंजुआंन

।।१७।।

औन न आंन प्रति आन चर चा नही॥२८॥ दोहा
पकू चैतसी दिरन सुभटलौं रो किसकै सवु ना
हि॥ लाषनहूं की भीरमैं आंषि वही चलिजा
हि॥ २८॥ टीका यह नाइका प्रौढा नाइका को वच
न सषी सौं तथा परकियाहू होइ॥ २८॥ कवित्त॥
भीरभई सुभ काज समाजु मैं लाषन आंनि जुरे
नरनारी॥ देतन कों उमगे मन चाहसों प्रेम
भीर भरी अति भारी॥ काहू की रोकी चितौं नि
रहै न विलोकत आपस मैं पियप्यारी॥ डीठि
उहीं ठहराति भटूसवनैं कछु प्रीतिकी रीति है
न्यारी॥ २८॥ दोहा॥ सोवत लषि मन मांन धरि
ढिग सोयो प्यौ आय॥ रही सपनकी मिलनि मि
लि पिय हिय सौं लपटाय॥ ३०॥ टीका यह नाइका
प्रौढा है मांननी ह्वै कैं सोइ रही है पाछै नायक
ढिग आय सोयो तब सपनैं की मिलनि कौं मि
स करि कैं लपटाइ गई अरु मांन हू राष्यौ सो
सषी सषी सौं कहति है॥ ३०॥ कवित्त॥ मांन कि
यौ जिय मांनैं न क्यों हूं हरी आली रही वहु भांति
मनाइ कै॥ सोइ गई रिस ही जिय मैं धरि सोयो रस
सो ढिग मोहन आइ कै॥ बाल वधू सपनैं के सु
भाइ रही पिय के हिय सौं लपटाइ कैं॥ रोस ही
मैं सरसायो रच्यो कहि नैंन वनैं जु रही छवि छ्वै
इ कैं॥ ३०॥ दोहा॥ आपनी गरज निवोलियत

कहा निहोरो तोहि ॥ तू प्यारो मो जीय कौ मो
ज्यो प्यारो मो हि ॥ २ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रौढा
है सो नाइक सौं अपने जिय की विथा कहत
है ताकौ विना देषे मेरो जिय रहत नांहीं या
तें अपनो जिय राषिवे कौ तो सौं बोलत हौं ना
इका कौ वचन नायक सौं ॥ २ ॥ कवित्त ॥ आप
नें आपने प्रांन सबही कौं प्यारे होत आ ता
भांति राषिवे कौं सोई चाहियतु है ॥ ऐसी कछू
बानि आंनि परी मेरे प्रांनन कौं तो हि देषें जी
लौं तौ लौं चैंन लहियतु है ॥ करत उपाव हम तो
तिनही के राषिवे कौं हमसे प्रांन प्यारे कित न्या
रे रहियतु है ॥ तातें लाल बोलियतु आपनीये
गरज ताकौ कछु तुम सौं निहोरो कहियतु है
३ ॥ दोहा ॥ जात सयान अयान कै वे ठग का
हि ठगैं न ॥ कोलग चाय न लाल कौं लषिल
लचौ हैं नैंन ॥ ३ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रौढा है
सषी सिष्या देतु है ताको उत्तर कहत है कि वे
नेत्र देषिकैं को क लल चात नांहीं सनेह त
कौ अधिक नायका कौ वचन सषी सौं ॥ ३ ॥
कवित्त ॥ कौंन रहे ठगमूरी सी बाइकैं लल न
कौंन विवेक कलै ॥ काहि न वे बिसरावैं सबै सु
ष मोहन वे कहिकैं अवलै ॥ होत सयांन अयां ॥ ६ ॥

नसवैचतुराई अनेकन एक चलैं ॥ होत
अलीमनमोहनलालकैलोलविलोचन
देषतकौंनछलै ॥ ३२ ॥ टीका ॥ यहकांटोमो
पायगड़िलीनीमरतजिवाय ॥ प्रीतिजवा
वतभीतिसौंमीतजुकाढ्योआय ॥ ३३ ॥ टी०
यहनायकाप्रौढाऊढानायकाकोवचन
सषीसौं ॥ ३३ ॥ कवित्त ॥ जादिनतैंमिलिमैंन
कीमूरतिछाडिगयौवहछैलसुहायौ ॥ ता
दिनतैंअकुलातहैंलोचनदेषिवेकौंकहुं
दाउनपायौ ॥ मोपगमैंमगमैंलगिकैंयह
कारनैंआजिअमीवरसायौ ॥ प्रीतिजवा
वतयौंभयभीतिहैमोहनमीतजुकाढन
आयौ ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ कीनैंहूंकोरिकजत
नअवकहिकाढैकौंन ॥ मोमनमोहनरूप
मिलिपानीमैंकोलौंन ॥ ३४ ॥ टीका ॥ यह
नायकापरकियाऊढाअपनेमनकीअ
सक्तिसषीसौंकहतहै ॥ ३४ ॥ कवित्त ॥ जादि
नसौंवनवानिकसौंनिरष्योवलवीरका
लिंदीकेतीरमैं ॥ तादिनतेंनसुहायकछुसु
धिकौकवनैंसुरझ्योनसरीरमैं ॥ नैनमोक

तिं॰स॰
॥९॥

बसीवहसूरतिजायपरयौमनुतौछविछाहिं
मैं॥ कोरिकियैंकहैकैसैंविलागयोसषीलौं
न्योंनीरमैं॥ ३४॥ दोहा॥ कारेबरनडराव
नेंकितिआवतयहगेह॥ कैवारलषोसषील
षैलगैथरथरादेह॥ ३५॥ टीका॥ यहनाय
कापरकियाहैतुंरगुप्तानायककोंदेषिसात्व
कभयोहैतिनकोंसषीसोंदुरायवेकोंकहि
तहै॥ ३५॥ कवित्त॥ आपुकारेरंगगोरेंचिर
मकौछराधरैंवोढिवेकोंकारीकामरीयही
विसोति॥ सीसपरफैंटाएकपीरोसोअमैंठि
वांध्योतापेएकवरहीकीपंषियाफहरांति
॥ मरकततचलतडरपांवनौकोसांगकि
येंजवजवयहीवोरआवतअहीरजाति
॥ तवतवदेषिसषीकैउवेरदेषोंयाहिदे
षैंउलागेदेहपुलकिथरहराति॥ ३५॥ दो
केसरकेसरिकुसमकेरहेअंगलपटाय
लगेजांनिनषआंनिगुलिकितवोलनअ
नषाय॥ ३६॥ टीका॥ यहनायकापरकिया
गुवस्तगुप्तानायकाकोंवचनषंडितासौं
नायककेंपरतछिसषीनायकासोंकहैषंडि

॥ ९॥

...हूँ तो संभवै ॥ ३६ ॥ कवित्त ॥ तो हितै वो निप
री त्रैन षेवे की त्रै मैं ही कों सत राहू रठैं ॥
कीजिये तो निरधार कहू की धौं मोंह चढाय कै
बोलव षां नैं ॥ केसरि सौं उवह्यो तन न सो कहूं
केसरि कै करि हैं लपटां नैं ॥ आवरी तो हिरि
षां ठंन जी कहैं वा वरी तेवे न षछौ तजां नैं ॥
३६ ॥ दोहा ॥ रह्यो मो ऊ मिलनौं रह्यौ यों कहि
गहै मरोर ॥ उ तरे छिलि हिवरां हनौं इत चित
ई मै वोर ॥ ३७ ॥ टीका ॥ यह नायका परकिया
वाक विदग्धा सु क्रिया करि गई है सो नायका स
षी सौं कहति है ॥ ३७ ॥ कवित्त ॥ नारि न तैं वह बा
लगली मैं मिली ऊती काल्हि गई चित चोरि
कै ॥ एक ही ठौर करी इक ठौरी मनौं विधि रूप कै
[illegible]सि वेटोरि कै ॥ छाउौ समया करि वौ मिलिबो
ऊपरौ सनि सौं कह्यौ भौंह मरोरि कै ॥ यों सज्ज-
नी सौं वरांह नौं देपरि मोतन हेरि गई मुष मो
रि कै ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ हूसमां सगुन सषिन पेसं
ई चलत सँवार ॥ लै कर वीन प्रवीन तियरा पा
राग मलार ॥ ३८ ॥ टीका ॥ यह नायका परकिया
क्रिया विदग्धा है सु क्रिया हूं होय तौ होय ३८
कवित्त ॥ नीत समैं परदेस कौं षीको पयानु सु

च्यौं वहरांवन लागी ॥ या रितु में हरि वेयौ [illegible]
घर है वनता पूजि मनावन लागी ॥ और सु पाव
न कौन कछू न वसा जि कैं वीन व जांवन ला
गी ॥ प्यारी प्रवीन भरि सुर मेघमलार अलापि
कैं गांवन लागी ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ फेरि कछूक रिपो
रि तैं फिरि चितई मुसकाय ॥ आई जो मन लैन
जिय ने है हूवैं जमाय ॥ ३९ ॥ टीका ॥ वेली लि
ये कर आनि अचांनक कंचन वेली सी बाल
अवेली ॥ जोवन जोति जगी अति की रति
की दुति पाय नि पेली ॥ कठ म सौं मुरि कैं चि
तई सु मनौं मुसिकांनि मैं मोहनी मेली ॥ जो
मनु लैन सजां मन है यौं गई जिय ने हज मा
यन वेली ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ न्हाय पहरि पट [illegible]
कियौ वेंदी मिसु पर नांम ॥ दूगा चलाय घर कौ
चलत न विरहा किये घनस्यांम ॥ ४० ॥ टीका ॥ प
हन्हाय का पट [illegible] कियौ क्रिया विदग्धा सखी कौ
[illegible] वन सषी सौं ॥ ४० ॥ कवित ॥ न्हाय पट पहरि
मृगाछी चारु च[illegible]तुरी सौं रुरि मन भांवन कौं
मुरि मुसिकांनी है ॥ कम्मक है वेंदी के सुधारि
वे कौं मिसु करि कीनी मन पति हैं तांसौ नीहै

कहाकरौं आलीकछूकहततनवनैनकौंसूनै
सीतुहिंसरसमनेहरीतिठांनीहै ॥ घरकौचल
नचारुलोचनचलाचलकैचातुरीसौंचाहि
विराकीनौंदृधिदांनीहैं ॥ ४० ॥ ललिता ॥
दोहा ॥ पूछैंक्यौंरूषीपरतिसगिवगिरहीस
नेह ॥ मनमोहनछविपरकरीकहेकछ्यांनी
देह ॥ ४१ ॥ टीका यहनायकालछिताहैरू
षाईकरिकैसषीलौंदुरावतहैसषीकोवच
ननायकासौं ॥ ४१ ॥ कवित्त पूछेतेक्यौंवह
रावतिहौंतनकहांतैंअनौंषीरूषाईतैंठांनी ॥
प्यारेकैप्रेममैंपागिरहीअबहोतकहामुकरै
हमजांनी ॥ क्यौंउरअंतरकीदुरैप्रीतिसने
हकीरीतिरहैनहीछांनी ॥ तूमनमोहनकी ॥
छविपैजुकरीसुकहेयहदेहकह्यांनी ॥ ४२
दोहा ॥ औरैओपकनीनिकनिगनीघनी ॥
सिरताज ॥ मनीधनीकेनेहकीवनीछनीप
टलाज ॥ ४२ ॥ टीका ॥ यहनायकालछितास
षीकोवचननायकासौंन ...कोहितुयासौं
...अधिकहैसुनेत्रनुकीसोभाऔरैमईहैया
...परतै...गर्वितातहैहोयसषीसषीदसौंकहै

४२॥ कवित्त केलि कलोलनि के रंग मैं सुंदरी तमसागर मी रजनी है॥ निम्मसनी दरसा तंतमहू अरसात प्रभा मरसाति घनी है॥ औरहीं मो मद गातन अंग पत्र नैननि की सिरमोर गनी है॥ कौं क्रम के प्रेम की सो है मनी पटला जमैं चारु छनी सीवनी है॥४२॥ दोहा॥ प्रेम अतोल दुलै नहीं मुह बोलै अनषाय॥ चितवनि मूरति वसी चितवनि माह लषाय॥४३॥ टीका॥ यह नायका परकिया स्वेहलछिना है सषी कि वचन नायका सौं॥४३॥ कवित्त॥ बोलैं न क्यों न कितौ अनषाय कैं होत कहा अवसा धैं रिषाई॥ तेरै हियें थिर प्रेम की वांनि सुजांनी पारी री दुरैन दुराई॥ तु हरि के हिय मां न रही मिते रोई नां मुरझै सुषदाई॥ प्यारे की मूरति सो चित मांझ वसी सु चितौं निमैं देत दिषाई॥४३॥ दोहा॥ रूपी मिस रोष मुष कहत नरु ...रवैंन॥ रूष वे से हो तये ने ह चीकने नैंन॥ ४४॥ टीका॥ यह न...यका लछिना परकिया ...ाई करि सषी सों दुरावति है॥४४॥ कवित्त॥ ... कुटी मन रीस सु ... मोरि रिसो समि सु कार रूपरि॥

सषाईमाधिकेहै रूषेवैंनहे ॥ औतुकोपवेसनु
षीतिहीकोधरैंनतुकैमेकेंडराबोकछुपनमें
डरैनहे ॥ हरिकेसनेहमांनीकैसंधोंरहत छां
नीकहैंरतप्रगटछबीलीछविन्नैनहे ॥ रूषो
रूषकरिरूषीबांनिनिगांनिबेढीपरिरूषकैसंहो
नतेहचीकनैएनैंनहे ॥४४॥ दोहा वरहैंसब
जियकीकहनेठोरकुठोरलषैन ॥ छिनऔरहि
नऔरसेयेछविछाईनैंन ॥४५॥ टीका यह
नायकापरकियालछितासषीनायकासों
कहतहेजोनायकानायकसौंकहैतौषंडित
हूहोय ॥४५॥ कवित देषतनोहिनैंठोरकुठौर
देहैंजितहीजितचाहिचकेहैं ॥ औरघरीप
[illegible]औरसीरीसनमूमतऔरसमैंविथके
हैं ॥ लाजतनैंसिथलाइगहैंऔचनैंवसनांहि
नैंयौवहकेहैं ॥ रतकहैंजियकीसववातविलं
वनयेछविछाकछकेहैं ॥४५॥ दोहा नाम
सुनतहीह्वैगयोतनऔरेमनऔर ॥ दवे
नहीचितचढिरह्योअवैचढायेत्योर ॥४६॥
टीका यहनायकासषीसोंरिसकोमिसु
करिकैंसनेहदुरावतिहैऐनामसुनेंतेवि

कोबनिश्रनक्रियाओरहीभांतिभईयातेंस
षीनेंमीकैंकरि जांनिनिनायकालछिताणी
कोवचनसषीनायकासों ॥४५॥ कवित्त॥
नेहकीरीतियहैनवनागरनैंकुलगैंनिव
रैननिवेरें॥ नांमनहुनेहीमयोमनुश्रोर
हीओरेभयौतनुचेतननेरैं॥ ----------

---------- ज्योंह मनैंसुनेराय
विलोकतहोतकहाअबत्योरतरेरैं॥४६
दोहा॥रहिमुहफेरिकहेरियातहितसमुहों
चितनारि॥डीठिपरसतरिपीठिकेपुलकितम
हैंउकारि॥४७॥टीका॥यहनायकापरकिय
हेसषीकेदेषतडीठिदेवेडीडुरायवेकोपिरोमा
चपीठिपेभयेतेरेषिसषीकहततेहेनायकाल
छिता॥४७॥कवित्त हितकोनिरषिपनुहरषे
हिस्कोमनुहमतोधस्योइतनुप्रेमकोत्र
नीतको॥लि ककुरावतिहेवातवहराव
तिहेकाहूकोडुरावतिनवेलीनेहनीतिको॥
मादेहतनेभावरहिमुहफेरिनेतिसनमु
वीसरनीतिको॥डीठिकेपरसहीतेंर

तीयह पीठिपै पुलकपांति प्रगट कहत तेरी प्री
ति कौं ॥४७॥ कुलटा ॥ दोहा ॥ लषि लौनैं नैंना यनं
ने के कोयनु हीयन आनु ॥ कौंन गरीब निवा
जिवौ कत तेयौ रति राजु ॥४८॥ टीका ॥ नायका
परकिया कुलटा कौं नु गरीब निवाजिबौ याय
दतें व ऊत नायकन की प्रतीति भई सषी कौं व
चन नायका सौं ॥४८॥ कवित्त ॥ सस्सी रूहू षंजे
न मीन कुरंग प्रभाय नु की सहजैं हरिबौ ॥ यत
नैं पर नाह के चाय नु सौ षकु ओर चलाचल
कौ करिबौ ॥ कित धौं रति नाथ सनाथ भयो
वह कौं सुकलीजिन पैढरिबौ ॥ इनु सुंदर ले
षन कोर नु सौं लषि कौं नु पेआ जु भया के
रिबौ ॥४८॥ दोहा ॥ फिरि फिरि दोरत देषियेनि
चले नैं कर हैं न ॥ एक जरारे कौं न पे करत
कजा की नैंन ॥४९॥ टीका ॥ यह नायका परकि
या कुलटा कौं न पे करत कजा की याए दौ व
ऊत नायकु न सौं प्रीति जानी सषी कौं वच
न नायक सौं ॥४९॥ कवित्त ॥ कांनन चैं नि
डर निसंक कहै विहार करैं कांहू तेन दूरै
बेनु वित हह रलैं नये ॥ नृपति मनोज कप
चल अ सि गाह कहैं घायल करत जर र

कारैनये॥ घूंघटकीवोटगहैंघातहेरिफेरिके
रहौरतहीदेषियतुनिकनेरहैंनये॥ चंचलइ
तारेअनियारेकजरारेभारेकौंनपरकरतक
जाकीतेरेनैंननये॥ ४९॥ दोहा॥ षेलननसिषये
लिमेलनचतुरअहेरीमार॥ कांननचारीनैंनम्
गनागरनरनुसिकार॥ ५०॥ टीका॥ यहनाय
कापरकियाकुलटासषीकोवचननायकासो
हैनागरनरनुसिकारयापरतेंवकृतनायक
नुकीप्रतीतिभई॥ ५०॥ कवित॥ कांनन वारी
कहांवैंदतेपरदोरकरैंपुरमेंमृगपाये॥ अं
अमेंडुअचूकहनेंगुनआगरनागरमा
रिगिराये॥ घायलकैफिरिलेतसुघौनपलै
नथ्यकैंअतिकोतिगछाये॥ नीकेमनेन
वीनकरोलयेषेलननैंनकुरंगसिषाये
५०॥ मुदिता॥ दोहा॥ चलतरेतआभारसुनि
ईहीफरोसिहिनाह॥ लसीतमासेकीदगनि
होंसीआंसुनमांह॥ ५१॥ टीका॥ यहनायका
परकियामुदितारहेचाहतीवातभईजोंन
सनेताकीहांसीभईसषीकोवचनसर्व
सो॥ ५१॥ कवित॥ देषिपरोसीकांचीकनीनआ ॥३

हनिप्यारी हियेंपरी प्रेमकी फांसी ॥ त्यौंपि
आनविरह सलप्यौ विलषी विरहातुरमा
स कसांसी ॥ बाहीपरोसीसौं वोलिकहीपति
है रत तोसों हमारी निसांसी ॥ त्यौंलसी ऋ
वुजनैंनके नैंननु आंसून मांझतमोसक
...सी ॥ ५१ ॥ अनुसयाना ॥ दोहा ॥ सनेव
...त्यौवनौऊ षौलहै इनुषारि ॥ हरीहरी व
रह हरि अजों धरिधरहरि जियनारि ॥ ५२ ॥ टी
यह नायका अनुसयाना संकेतकीठौर जा
नजानिसोच करतहै सो सषी समाधौंनु क
रतुहै उत्तर ॥ ५२ ॥ कवित्त ॥ वीनन फूल
सहेलीके संगचलीमृगलोचनी मोदभरी
...केलिथली उनरी अवरी अवलोकि
... सासभरी अलिसों उचरी है ॥ वीतिगयो
...रसु ...कैयो सनो अरु ऊष्यो उषारि लह
सिगरी है ॥ यौंहहरै मतिधीरधरो अवहीतो
...हरिप्यारी हरी है ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ फिरिफि
...विलषी ह्वैलषति फिरिफिरिलेत उसास
...सांई सिरकचसेत ज्यौंवीत्यौ चुनतकपा
स ॥ ५३ ॥ टीका यह नायका अनु ...

वि० स ... रकोभेरवीनीजांनिविलषीहेसोसषीसनी
॥२४॥ सोंकहतुहे॥५३॥कवित्त वालमकेसिरकेल
रीलहस्यौसितऐसेंलेतह्वैनितुनिसिरधुनि
धुरजातिहे॥वीनतहेतूलऐसैंसूलससे
लतहियेमांनितुषमूलफूलजिमकुभिलात
तहे॥वारवारकहतआलीसोंकेलीमही
रतिकेतिकेविलासकीछलीयोंचालीजा
नेहे॥वेलषिविलषिकेंतसोसेलेतवाल
वधूलेषिवनुवीत्योमनुआतिअब...नात
हे॥५३॥अनुकूलनायक॥दोहा॥नहिहह
रिलौंहियराधरौनहिहरलौंअरधंग॥येक
नहीकरिराषियेअंगअंगप्रतिअंग॥५४
टीका यहनायकाअनुकूलहेसोनायकके
मनकोविचारजांनिये॥५४॥कवित्त राषिय
नोहरिलेहियराधरिऔरसवैअंगहीह
उघारी॥जोहरिलौंधरियेअरधंगतौ...
हीवोरवढेसुषभारी॥तातेयहैजियमेंआव
तिहैकरियेनहिवाहिछिनोकहूंन्यारी॥
जैसेंअंगनिनायकैंएकनहीकरिराषि
...पियरी॥५४॥दछिननायकदोहा
...जोनिसिसररकीरमनोरतिकरसन

आयेलाल नसोहतुसिंग [illegible] चारुमेरे मनम
न्योंहै ॥ आलसवलित [illegible] नहूँ [illegible] लित
गति सिथल कलित रूप मोहनी सों स [illegible]
है ॥ हम प्रान प्यारे रह्यो नरषे परि [illegible]
विनगुनहार अरगरै जान्यौं है ॥ वेई [illegible]
गोरैं परी जो मते गुमनु मते गुरे [illegible]
[illegible] मारि आन्यौं है ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ बालक
है [illegible] नी भई लोइ नेको इतु मोहि ॥ लाल
तुम्हारे दृगनकौ परी दृगनि में छांह ॥ ५७
॥ टीका ॥ यह प्रस्तुत नर नायक सठ नायका ष
डिता ॥ ५७ ॥ कवित्त चारु निकाई लषैं जिन
कीरद लागत आपरतो पलकी है ॥ वंदन
की छवि मैं रकरी निदरी दुति विद्रुम के दरा
लकी है ॥ [illegible] न पियारी कहा इनु नैननि
आजु लगाई इती ललकी है ॥ लोचन
लाल तुम्हारे लषे तिनकी इत आनि प्रभा
कलकी है ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ सकत न तुव [illegible]
वचन मो रस कौ रस षोइ ॥ षिन षिन औ
टे षीर ज्यों [illegible] रो सवा दिल होइ ॥ ५८ ॥ टीका
यह नायक सठु सापराध आयो है सुनायका [illegible]

॥ ५ ॥

यतेक सुधाके हूं न पावै ॥ वारति मूरति कै
सत राहु हूं मेरे हिये अति भोरे स्वभाव ॥ ल
सुभाव सु हा गिलकोर सुहूं रिस हूं हसि हीह
सि आवै ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ नरि कालेवैं मिस नुल
रमोहि गआय ॥ गयो अचानक आंगु
री छाती छैनु छुवाय ॥ ६० ॥ टीका ॥ यह नायकसु
हे नायक की कर्त्तव्यता नायका सषी सो
कहत है ॥ ६० ॥ कवित्त ॥ गोरस के मिस
हे वन गैल नु छाड तु छैल चवाई ॥ मौन मरे
मे कहा कहौं जैसी करी जिसुधाकै ल
लाल गराई ॥ मोहि गआय हरें इहरें कछु
कीनी सनेह सनी चतुराई ॥ छोहरी लैवे के
ऊरमं आंगि चानक आंगुरी छाती
छुवाई ॥ ६० ॥ पतिउपपति ॥ दोहा ॥ कें जम
वनत जि कुंज कौं चलिये नंदकिसोर ॥ फूल
न कली गुलाव की चटका हूट च कुवे र ॥ ६१
॥ टीका ॥ यह नायका सु किया हू होय नायक
को वचन नायक सौं ॥ ६१ ॥ कवित्त ॥ सुकित
कली गुलजात की कछु क भई भोर नु को
तमंजु अवन निधारियें ॥ पुलि वग

नायकाकोनायकसे ॥ दोहा ॥ मोहिम
नेमोरीझिहेतझकिझांकिइकवार ॥ प्यारि
झांवनहारवहयेनैनारिझवार ॥ ६२ ॥ टी
यहनायकाकोरूपसषीनायकेसोंनि
हनेकरतुहैसषीकोप्रयोजनप्रीतिकरा
वै ॥ ६३ ॥ कवित्त सुंदरमोकहियेनै तिह
रमैंइकुनंदडुलारोईहै ॥ यामेंकहाकर
वतिहकछुपैमकोपंछुनियैरोईहै ॥ नैक
झरोषाकेझांकिवलायलौंमोहिमेरोमोहे
हारोईहै ॥ रिझवारहैतोइगरीझिहिगवह
रूपरिझांवनहारोईहै ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ हौरी ॥
झीलषरीझिहोंछबिहिछबीलेलाल ॥ सो
नजुहीसीहोतिदुतिमिलतमालतीमाल
६४ ॥ टीका ॥ गातवर्ननना इकाकेअंगकी
छविसषीनायकुसोंनिवेदनुकरतिहै ॥ ६
कवित्त नीकीलसेहषभोनललीनवजोव
नजोतिजगीअंगअंगहि ॥ ताहिविलोकि
ललामननुमेरोनेभोइबरयौअतिरीझि
नरंगहि ॥ छेलछबीलेलपैंछविरीझिहै ॥ ७ ॥

क्यों नहियें रस भा[illegible]तमें गहि ॥ मालती माल
न [illegible]तसों मिलि सौं नजु ही के प्रकासति
रं[illegible]हि ॥ ६४ ॥ दोहा ॥ अंग अंग नग सग मगत
[illegible] सिषा सी देह ॥ दीया वढ़ायें हूं रहै ब डोउ
जारो गह ॥ ६५ ॥ टीका ॥ यह नायका की छवि दे
[illegible]सषी नायकसों निवेदन करत है ॥ ६[illegible]
कवित्त ॥ दीपसिषा सी लोइ ऐसी हू सरीन को
रही दृगनि समोयमां नैं मोह नील मनि है
॥ औरत जवाहर कै रूप न ललित अंग अं
गनि मिलि तिनग जोति सी जगति है ॥ दीप दु
वडौ हूं भयें देह कोउ जास होत वडौ ई प्रका
स चकचौंधी सी लगति है ॥ दीपति की दुति
भरि भवन अषिल जालरंध्रिन कै बाहर
की ओर उझलति है ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ बाहि
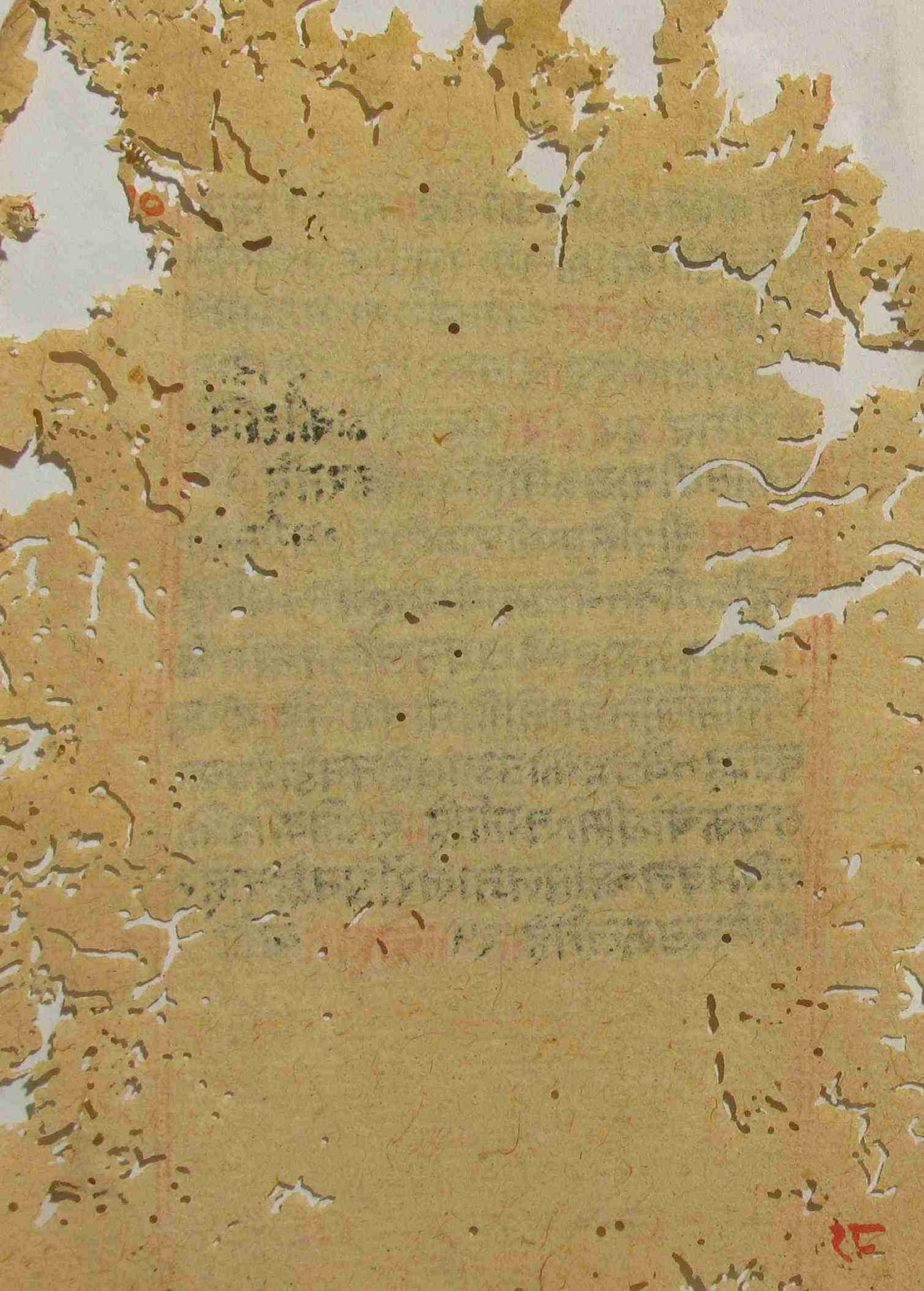
रूपैसैलोइनलगैंकैंनजुवतिकीजोति॥जा
केतनकीछांहद्रिगजौंकछ्वांहथीहोति॥६५॥
॥टीका॥यहनाइकाकीदीपतिसषीनाइकासौं
निवेदनकरतिहैअरुनाइकुसषीसोंकहैतोगु
नकथनहूसंभवै॥६६॥कवित्त॥आजुछविआ
गरीविलोकीव्रजनागरीकेअंगअंगरूपकी
तरंगउमगतिहै॥हंसआंनप्यारेवरनतीन
वनीतिकोहूजोवनकीजोतिजगाजोतिसी
जगतिहै॥कोहैऐसीऔरतियसुरनरनाग
पुरवाकेआगेंजाकीदुतिदृगनिषगतिहै॥
जाकेतौंनेंतनकीललितपरछांहीसंआगे
सरदजुन्हाईपरछांहीसीलगतिहै॥६६॥रो
मईजुछबिभिनवसनमिलिवरनिसकैसुनि
वैन॥अंगओपआंगीदुरीआंगीआंगदुरैन
६७॥टीका॥यहनाइकाकीसोभासषीनाइकु
सौंनिवेदनुकरतिहै॥६७॥कवित्त॥हरिकैंचेत
वेलीसीवालकीदेहकीदीपतिकौंवरनेंकवि
है॥अंतनाहिमिलीदुतिकंचुकीकीसुभंर
प्रेमऔपरहीफविहै॥कछुजानकहीनहीं
अंगप्रभाअमचीरमिलैजुमईछविहै॥वह
आंगीगईहविअंगकीओपमैंजागकेहार
विहै॥६८॥दोहा॥सौनजुहीमीजगमगतिसौ

वि०ग०
॥४१॥

गअंगजोवनजोति॥ सुरंगकसूंभीकंचुकी दुरंमदेहदुतिहोति॥६७॥टीका यहनाइकाके अंगकीसोभासषीनाइकासोंनिवेदनुकरतिहै॥६८॥कवित्त॥सुवरनवेलीसीनवेलीकी दुतिजोवनकीजोतिमिलिअतिसरसातिहै ॥चुहचुहीचूंनरीमैंगहगहीगातकीगुराई नदुरतिअतिरसवरसातिहै॥रूपकीनरंग अंगअंगतैंउमगिसोभाहोनवक्रूरंगलोंवसोतिअंगरसातिहै॥कंचुकीकसूंभीप्यारीपहिरैंसुरंगतऊमिलिअंगरंगसोंदुरंगदरसातिहै॥६९॥दोहा कहिलहिकोंनसकेदुरीसोंनजाइमैंजाइ॥ननकीसहजसुवासुवसदेतीजोवनाइ॥६८॥टीका यहनाइकाके ननकीदीप्तिअरुसहजसुगंधसषीसषीसोंकहतिहै॥६९॥कवित्त बेलनतचोरमिहचनीबेलदुरीतियसोंनचमेलीमैंजाइकों॥रंगमैंरंगरह्योमिलिकैसुकिहूंविधिरंचनहोनलषाइकों॥भौरनकीअवलीचहूंघातैंसुगंधकेलोभरहीमंडराइकों॥कोऊलहिसोवहिकुंजमैंवाहिजोदेतीनअंगसुवासवताइकों॥६९॥दोहा देवीसोंनजुहीफिरतिसोंनजुहीसेअंगउतिलपटनुपटसेतहूंकरतचिनौंटीरंग॥७०

॥४२॥

॥टीका॥ यह नाइका के अंग की गुराई सषी ना
इकु सौं निवेदनु करति है॥७०॥कवित्त॥ सहज
सिंगार दुति लसत अपार लषि मनिहूं कैं मन
मान उपजै अनंग को॥ अति सुकुमार याते लं
बे कतु लांकु भार लसहि न सकनु बिबिउ रुजु उतं
ग को॥ रूप की रसालनु मदेषी सोन वालनु लां
जु कहा कहौं कनक वरन वा के अंग को॥ चा
रुनन सुषप हिरनि छिनवा हिनन दुति मिलि
होनु कै सरियार रंग को॥७०॥दोहा॥ दीठि नु पर
त समान दुति कनकु कनक सौ गात॥ भूषन क
र करकस लगत परसि पिछानै जात॥७१॥
॥टीका॥ यह नाइका के अंग की दीप्ति सषी ना
इकु सौं कहति है अरु नाइकु हू सषी सौं कहै सौं सं
भवै॥७१॥कवित्त॥ आजु लाल एक ब्रजबाल मैं
विलोकी जाकी ललित लुनाई लषि कोचनति
हातु हैं॥ साजनु सिंगार रचि पचि कै प्रवीन आ
ली निनहूं के वेन सब हेरनु हरातु है॥ करत वि
चारु पैन होत निरधार कछू जैसोई कनकु ते
सी वरन काकै गातु है॥ कौं वैरें करेरे कैं वितान प
ह चौं नियतु कर परसेतें आभूषन जानें जातु
है॥७१॥दोहा॥ करत मलिन आछी छबिहि ह
रतु जु सहजु विकासु॥ अंगराग अंगनि लग्यौ ज्यौं

वि॰स॰
॥४॥

ॐ

आरसीउसास॥७२॥टीका यहनाइकाकेअं
गमैंकेसरिलगीहैनाइककौंइननौंहूंअंत
राइसुहातुनहीयहजोनिसषीनाइकुसोंकहै
तोसंभवैजोकेसरिलगावतिनाइको
सषीसोंकहैतोरूपगर्विताहोइ॥७२॥कवि
सैंनकीमांहनीसीलविन्याईहीमोहनरी
फिरहैंरसपागे॥जोवनरूपसुहागसनीछ
विसोतितुकैंउरदाहनिदागें केसरिलागें
नेअंगलषातजोंआरसीदीषैउसांसकेला
गे॥ऊजरीलागेनऔरकछूनवनागरिते
रीगुराईकेआगें॥७२॥दोहा॥पहस्तिभूषन
कनककेकहिआवतइहहेत॥दर्पनकेसे
मोरचेदेहदिषाईदेत॥७३॥टीका॥यहसषी
नाइकाकेअंगकीनिकाईनाइकासोंकहति
हैभौभूषनकोअंतराइजोनिनाइकहूनाइ
कासोंकहैतोवनै॥७३॥कवित॥हितकीतो
वातहितहीसोंकहिआवतुहेतातेंतोसोंक
हतुछवीलीपेमपागिकें॥तेरीसमताकोंरति
रंभाउरवसीहैनतेरेअनुरागप्यारोरूयोअ
नुरागिकें॥लोनोतेरोरूपतामेंसोनेंकेएग
हनेंतूकतपहरतिरफेअवहीदेत्यागिके॥
नीकेनीकेतनपरफीकेफीकेलागतहैंमोर ॥८॥

वारहेहैंमानौमुकरमैंलागिकै॥७३॥दोहा
कंचननैनघनबरर्‌यौरंगमिलिरंग॥जानी
जातिसुबासहीकेसरीलाईअंग॥७४॥टीका॥
यहनाइकाकेअंगकीगुराईसषीनाइकासोंक
हतिहैअथवाचलिवेकीउताइलकरिअंग
रागकौनिवारनुकरतिहैकेअंतराईजानि
नाइकनाइकासोंकहतुहै॥७४॥कवित्त॥जो
कछुतोननमैंतरुनीसुरंनीनलहैरतिरूपनि
काई॥तापरजोवनजोतिजगेकविकोवरनै
कविकीसरसाई॥रंगमैंरंगसमोइगयेजब
कंचनसेननमैंघसिलाई॥अंगसुगंधनकी
नलहैसरिकेसरिवासुहीनेंनविपाई॥७४॥
दोहा॥कैकहूंमननमैंरहीमिलितनदुतिमु
कतालि॥छिनछिनषरीविचछनोलहतनहीं
इतनुआलि॥७५॥टीका॥यहअंगरीतिकी
निकाईसषीनाइकसोंकहतिहैसषीहसौंक
हतोवनैं॥७५॥कवित्त॥कुंदनसेगातजोल
जोतसेनयनजाकीदीपतिजुकांईसीभवन
मांभवैरही॥कंचनकीचौकीपरबैठीवरबाल
सोसैंसकलसिंगारजोतिजगमगिकैरही॥
मोतिनकीमालसजनीनेंपहराईसुतोतनदु
तिमिलतकपूरकीसीकैरही॥एकचलीच

वि॰स॰ ।।२९।।

चतुरजनकीसीचकिरहीएककारिवेकोंनिह
चैतिनकाहाथलैरही ।।७५।। दोहा ।। मोहनधो
नीसेतमैंकनकवरनतनवाल ।। सारस्वार
स्वीजुरीमारदकीजनुलाल ।।७६।। टीका ।। यह
नाइकाकीगुराईसषीनाइकासोंकहतिहै ।।७६।।
कवित्त ।। केंवेन्वरननतनवेनकअनूपमांनो
रूपकीअवधिमनमथकीरसालहै ।। एकधो
नीसेतमैं अनेकछविछिटतवालमानोहेमसमं
उलीमैंचंपककीमालहै ।। सरदघटानुमध्य
दामिनीलसतिकिधोंछीरसिंधुमांझवडवा
नलकीज्वालहै ।। सुरसरिसोतमैंसुधानिधि
कीकलाकिधोंसंकरकेअंगलसेपारवतीवा
लहै ।।७६।। दोहा ।। कहाकुसमुकोकौमुदीकि
तकआरसीजोति ।। जाकीउजराईलषेआंषि
उजरीहोति ।।७७।। टीका ।। यहनाइकाकीउजराई
सषीनाइकासोंकहतिहैनारकहूकेहैंतोसनवे
७७।। कवित्त ।। वालवनीवरवांनिकवेसदेईवि
धितेसीयसुंदरनारी ।। फूलनकीदुतितूलनान
होतिअतूलपभाअंगअंगनिछारी ।। वेतकी
चांदिनीचारुकितीअरुआरसीहूरतीजो
तिनपारी ।। न्यारहीउजरीहोतिहैं आंषिनिहा
रतवातनकीउजराई ।।७७।। दोहा ।। वरवासतु ।।२९।।

कुमारनासंवविधिरहीसमाइ।। पखुरीजगीगु
लावकीगातनजांनीजाइ।।१८।।टीका।। यहना
इकाकीसहजसुगंधजोवनकीअरुनाईसुकमा
रतांसखीनाइकुसौंनिवेदनुकरतिहैजोनाइ
ककीसेजकीपांखुरीजांनिसखीनाइकुसौंक
हैतौलखिनाहीहोइ।।१८।।कवित्त।।बीनतिफूलन
हेउरफूलंखभातसमैंसुखसेजतैंजागी।। ओसे
नहांमनमोहनप्यारेसुभालविरीकिरयोअ
नुरागी।। वैसीईरंगसुगंधहवैवैसियेवैसियेको
मलनारसपागी।। कौनहूंभांतिसौंजांनिपरीन
गुलाबकीपांखुरीगातसौंलागी।।१८।।दोहा।। र
चनलंबियतुपहरियोकेचनसेकनवाल।। कुं
मिलांनैजांनीपरतिउरचंपेकीमाल।।१९।।टीका
यहनाइकाकेअंगकीगुराईऐसीहैजुचंपेके
फूलनिकीमालाजांनीनाहीजातिसोसखीना
इकुसौंकहतिहै।।१९।।कवित्त।।लाईबनाइखबी
नअबीनवचंपकमालसुगंधभरीहै।। लैअप
नैकरमैंनवनागरिहुलसकैहैउरमैंपहरीहै।।
कैचनसेतनकीछविमांझगईमिलिरंचनहीं
उघरीहै।। चाहिरहीसजनीचकिसीकुंमिलां
नीइगईतवजांनीपरीहै।।१९।।दोहा।। लिंब
नवेलिसाकीसवीगहिहिगहिगरवगरूर।। भयेन

केनेजगतके चतुर चतेरे कूर॥८०॥टीका॥य
हनाइकाकीनिकाईसषीनाइकुसौंकहति
हे अरु प्रगट करतिहै किवाहिदेषतसात्विक
भाव होत है जो वे समधिक हियेनो हू समुझे वेया
तें चतेरेन पै क्यों हू लिषतवनतनाही॥८०॥

कवित्त॥ रूपकी अवधि ऐसी और न वनाई
विधि जाके लषि विवेकौं लाल देवनामनाइवौ॥
ताकी सोभा लिषिवे कौं वैठतु गरबु करि आन
न हीमन होनघूमै घननाइवौ॥ ऐसी भांति
आइ आइ कूर कहवाइ गये चतुर चितेरे तिन्हैं
कहै लोंगनाइवौ॥ हलषान प्यारे वह चि
वनी विचित्र गति काहू पेन वन्यौं वाके चित्र
कौं वनाइवौ॥८१॥दोहा॥ अंग अंग छवि कील
पटउपटत जात अछेह॥ घरी घातरी हहतऊ
लगेभरीसीदेह॥८२॥टीका॥यह नाइकाकी
नाजुकता अरु दीप्ति सषी नाइकु सौं कहति है

कवित्त॥ कंचन कुंजकुरंगकलानिधि कं
द॥ वानवनाग
वु की सोभा समाई सभाइ हरीसी॥
रि की निसद्यौस रहै इतिनैं ने निमा सधरीसी
अंगनि चंगउमंग अछेह प्रभा की तरंग संग
घरीसी॥ घातरी वाकी चअंग टिकै छवि पुंज न
लागति देह भरीसी॥८१॥दोहा॥ अंग अंग तिय छवि
विपरि देरप न सम सव गात॥ इहरे ति है वोहरे

रूपषनजोंनेंजान॥८२॥टीका॥यहनाइकाकेअंगकीउजराईसषीनाइकसोंकहैसषीसोंकहैसोसबभांति हं भवैजोनाइकासषीसोंकहेतौरूपगविताहोइ॥८२॥कवित्त॥वदनविलोकिससिसमतालहैनक्यौंहूंलोचननिहारैंजलजातहूंलजातुहैं॥नागरिनवेलीनषसिषलोंनिकाईभरीवानिकुविचित्रलषिलोचनसिरातुहैं॥छ इम ग्रांनप्यारेअतिउज्जलसनवाकेमुकरसेगातमहामोभासरसातुहैं॥अंगअंगप्रतिप्रतिविंवपरकेऊठौरएकरूपकेअनेकजोंनेंजातुहैं॥८२॥दोहा॥बालछबीलीतियनुमैंवैठीआपुछिपाइ॥अरगटहीफानूंससीपरगटहोतिलषाइ॥८३॥टीका॥सहनाइकाकेअंगकीदीप्तिसषीनाइकसोंनिवेदनुकरतिहैनाइकुकहैतोसंभवै॥८३॥क०लैनैंतनवारीवनवारीमैंनिहारीप्यारीछुनिरहीवाकीउजराईमेरेमनमैं॥कहेकविहसमसीनिजतनुनाईलषेंमेरेंजोनिदांमिनीडरीहैंजायघंनमैं॥छविसोंछवीलीगुरनारिकीसकुचतेवेठीआपुअंगनिदुराइतियगनमैं॥अरगटहोतिपरगटपटदीपगलोंजोतिजगिमगिरहीअषिलभवनमैं॥८३॥दोहा॥मां

वि० स०
८२१

नकुं विधितन अछेछे विसवछेरा षिवे काज॥ छगपगपोंछन कों कियेभूषन पाअंदाज॥ ८४॥ टीका यह नाइका केतन की छवि सषी नाइक सों कहतु है अरु सषी को वचन सषी सों नाइक को वचन नाइका कहे सो हाइ सषी कहे सो हाइ तो संभवे॥ ८४॥ कवित्त तूही नीनो लोक की लुनाई सवेटि लाई है ये सरूप की निकाई नंदलाल लला लेवाए है॥ नेरी दुति आगें आली कंचन के गह ने एफी केफीके लागें असे गात छवि छाये हैं॥ दीठि केपर सहीत मेले होत अंग असी उजा लता सहित विरंचि नेंवुनाए है॥ तिन की निकाई स्वछराषिवे को है तयेतो ग्यान कोमालो पग पोछनी वनाए है॥ ८४॥ दोहा॥ पत्राई तिथि पाइय तिवा घरके चहुपास॥ नित प्रति पूंन्यों ई रहत आनन ओपउजास॥ ८५॥ टीका यह नाइका के मुष को प्रकास सषी नाइक सों कहति है नाइका कहे सषी सों कहै तो सुमिरनु जानिये॥ कवित्त॥ तेनेमांझ आननकी वोपको उजा सरहै गेह आपुपास अति चारनी विहार के॥ तिथि निरधारकरिवे को केते सुघरगनि कवो लिवे में वेरहत विचार के॥ पत्रा षोलि देषि ना मुतिथि कों वतावें फेरि पूंन्योई कहत वेह को मुदीनिहारिके॥ कवहू कपत्रादेषें कवहू वेर ॥ ८९॥

नप्रभाकरहनसकलनिएकवाननिरधारिकै ॥
८५ ॥ दोहा ॥ लीनैंऊंसाहसंसहसकीनैंअन
नहजार ॥ लोंइनुलोंइनुसिंधुतननपैरिनुपा
वतपार ॥ ८६ ॥ टीका यहनाइकाकेअंगकीदु
हरतांदेषिकेंनाइककेनैंनदेषिकैंतहांइथ
किनकैरहतुहैसोनाइकुसषीसोंकहैसषीना
इकसौंकहैसषीसषीसोंकहै ॥ ८६ ॥ कवित्त जा
ननकीछविकोंकविकोविदकेनेकितीउप
नवृतावत ॥ तानतकीछविछिबिषैतंनवेनैंन
लगेनउतैरतधावत ॥ साहसकोरिसथांवघ
नैंवहुभांतिअनेकउपावकनावत ॥ सोभा
केसागरमांझपरेअबपैरतकैसैंहूंपारनपा
वत ॥ ८८ ॥ दोहा ॥ सहजसेतपचतोरियापह
रतअतिछविहोति ॥ जलचादरिकेदीपलौं
जगमगाततनजोति ॥ ८७ ॥ टीका यहनाइका
कैतनकीदीप्तिसषीनाइकसौंकहतुहैनाइ
कुहसषीसोंकहैतोअवीनुरागजोनिपैंजोना
इकासषीसोंकहैतोरूपगविनाहोइसषीसषी
सोंकहैतोऊसंभवे ॥ ८९ ॥ कवित्त ॥ कनकवर
ननतनबनकविचवबालबालमकेउरवीज
आनंदकेवातिहै ॥ वाकेआगेंवोरनिकेगात
कीनिकाईलागेमनकेंनिकटधरैंलागति
ज्योंपोतिहै ॥ जबपहरतिपचतोरियाकीसा

रीतबतनकीयोंमहज्जगमगनिज्जोतिहै॥
त्नसंप्रानप्यारेछैषिछ्छाजंतविमलजजैचा
ररिकेदीपतिपरगटहोतिहै ८७॥स्वप्नदरस
नदोहा॥देषोंजागिनेवेसियेसांकरलगीक
पाट॥कितकैआवतजातभजिकोजानैंकि
हिंवाट॥८८॥टीका॥यहस्वप्नदरसननाइका
सषीसोंकहतिहै॥८८॥कवित्त॥रंचकनींदप
रैजवहीतवहीछिगआनिटिकैषगिकैं॥हे
रिहसेंरसकौंवरसैंवतरायमहाहितसौंपगि
कै॥जागीतोडीठिपरैनकछूअरुत्योंहीक
पाटरहैंलगिकैं॥यहजानैंकोआवतधोंकि
तकैपुनिजातकवैकितकैंभगिकैं॥८९॥रो
सोवतसपनैंस्यामघनहिलिमिलिहरतवियो
ग॥तवहीटरिकितहूंगईनींदोनींदनजोग
८९॥टीका॥यहस्वप्नदरसननाइकासषीसों
कहतिहैनींदकीनिंदाकरतिहै॥८९॥कवित्त॥
आलीविछोहमयोजवतैंछतियांवहुभांति
वियोगनईरी॥आजुललामनमोहनसोंसप
नैंमेंअचानकभेटभईरी॥मैंसुविछावहरा
यवेकोंहिलिकैंमिलिकैंरसकेलिठईरी॥नी
दहूनींदविलायजवेतवहीकहूंभागिगई
सुगईरी॥८९॥साक्षात्दरसन॥दोहा॥नाय
कानायकाकौ॥लटकिलटकिलटकतचल

तुडटनमुकटकीछांह ॥ चटकुभस्यौनटमिलि
गयोअटकमनस्कवटमांह ॥ ९० ॥ टीका ॥ यहस
खानदरसनजैसीछविसोंदेषौहैनाइकुतैसें
हीनाइकासषीसोंकहतिहै ॥ ९० ॥ कवित्त ॥ लट
किलटकिचलितिनिरषतुबारबारफेरिफेरिग्री
वांछांहमंजुलमुकटकी ॥ केसरिकीषोरिपर
कलितसचिरभारकुंडललसितसोहैवनमा
लटटकी ॥ केगईविपनमनअटकमठकमे
टतवहीतेनैननिमेंषुभीसोभानठकी ॥ भूली
सुधिघटकीरीलोकलाजसटकीरीअटकी
हियेमेंफहरानिपीरेपटकी ॥ ९० ॥ साछातदर
सननाइकाकोदोहा ॥ चुनरीस्यामसतारन
ममुषससिकीउनहारि ॥ नेहदवावतनीर
लौंनिरषिनिसासीनारि ॥ ९१ ॥ टीका ॥ यहसांछा
तदरसनजैसेंनाइकादेषीहैतैसेंहीनाइकु
सषीसोंकहतुहै ॥ ९१ ॥ कवित्त ॥ उन्नतपीनउरोज
नकोजुगकोकनुकीछविपावतुहै ॥ मुषसोह
तुसोमजुकैयाहसीदुतिदीपगुमोदवढाव
तुहै ॥ कविकुलसविराजत चूंनरीस्यामसमार
कबोमुलषावतुहै ॥ वहजोमिनिसीगजगां
मिनिरषतनीरस्योंनेकुदवावतुहै ॥ ९१ ॥ इष्टा
नुरागनायकाकोदोहा ॥ सनिकज्जलचषफं
बलगनउपज्योमुदिनसनेह ॥ क्योंनननृपति

कै भोगवैं लहि सुदेस सतु हे ॥१४॥टीका॥ यह इ
ष्टानुराग है नाइका के नेत्र अंजन सहित देषि
नाइका सों कहतु है नाइका पर किया नाइक है
सषी सों कहै तो संभवे ॥१५॥कवित्त॥ देषी एक व
निता विचित्र वरवांनि कसौं जाकी जोति दीसी
जगि मगि रह्यो गेह है ॥ विहसि विहसि मृदु बो
लत सरस बांनी वरसतु मानौं अमी बूंदनु कौ
मेह है ॥ कहै कवि कलस कौंन भूपति कै भोग
कै रेरजे धां नीस कल सुदेसु पाई देह है ॥ नैंन
मीन लगन पै अंजनु लसतु पानि चैसे सुभ डो
ग समैं उपज्यो जु नेह है ॥१६॥ इष्टानुराग नाइका
कौ दोहा ॥ मोहन सौं तजि मो दृग चले लाग उरि
मौल ॥ छिन कुछ्यो इछि विगुरु डरी छबि लेछ वी लि
छेल ॥१७॥टीका॥ यह इष्टानुराग है नाइका कौं
देषि नाइका कौं अनुराग उपज्यो है सु नाइका
सषी सों कहति है नाइका पर किया ऊढा ॥१८॥
॥कवित्त॥ जा घरी तैं मोहनी कौ मंजु डारि दीनौ
उनि रूप की मिठाई ता घरी तें कल न लेहैं ॥ ज्यौं
ज्यौं हठ करि रोकि रही ओट अंचल की त्यौं त्यौं
अति वैल करि उतही कौं हलें हैं ॥ मोहन सौं ज
कैतो नातो पलक मैं करि हां तो छोडि सब तौ
तो वा की गैल लागि चले हैं ॥ नंद कौ कुंवर रूप
लीवी सविसि ठगु है री देषत ही देषि मेरे दोऊ नैं ॥२३॥

नछुलेहैं ॥ ५३ ॥ चेष्टादोहा ॥ फेरिकछुकरिषो रितैंफिरिचितईमुसकाइ ॥ आईजामुनलैंन जियनेहैगईजमाइ ॥ ५४ ॥ टीका ॥ यहनाइका परक्रियाजुचेष्टायाकीदेषीहैसोनाइकसुसषी सौंकहतुहै ॥ ५४ ॥ कवित्त ॥ वेलीलियेंकरआई अचांनककंचनवेलीसीबालअकेली ॥ जोवनजोतिजगीअतिकीरतिकीदुतिलै जिहिपाइनिपेली ॥ ऊठमसौंमुरिकैंचितई सुमनौंमुसकांनिमैंमोहनीमेली ॥ जांमुन लैरसजामुनदैयोंगईजियनेहजमाइनवेली ५४ ॥ दोहा ॥ चितवनिभोरेभाइकीगोरेमुहमु सकांनि ॥ लागनिलटकिअलीगरैंचितष टकतिनितआंनि ॥ ५५ ॥ टीका ॥ यहनाइका कीचेष्टासषीनाइकसौंकहतिहैनाइकुहस षीसौंकहैहपूर्वानुरागहहोइअरुदसअव स्थानुकेभेदमैंसुमिरनुजांनियें ॥ ५५ ॥ कवित्त भूलतनक्यौंहंमोहिवाकीसुषदांनिवांनि वहअंगरागनिअंगुरीनचटकायकैं ॥ वहगो रेवदनकीमुसकांनिवहचेरवही चितवनिभोरेभाइकैं ॥ घूंघटकरेनिकरकैं मलरसारिवहलटकिमिलनिसजनीसौं लपटाइकै ॥ औसीभांतिजवतेंमैंनिरषीहीन

वहीतैं पलपल मांम घट कन सव आइकै
२५॥दोहा॥ इमी भीर हू मे रहि कैं कित हूं कैइ
न आइ॥ फिरै डीठि जु रिडीठि सों सव की डीठि
वचाइ॥२६॥टीका॥ यह नाइका के चितैवे की
चतुराई सषी संषी सों कहै तो होइ नाइका
परकिया॥२६॥कवित्त॥ सोंनें से गात सुहाई
सी वेस सनेह सनी रस को वरसावे॥ चाह के
चाइनु की चतुराई कहां लौं कहौं कहौं कटतें नहि
आवे॥ भीर भई अति भारी तऊ मन भायो करे
को ऊ भेद न पावे॥ घात गहैं नु रिडीठि सों डी
ठि फिरें सव की वह डीठि वचावे॥२६॥दोहा॥
गडी कुटंव की भीर मैं रही वैठि दे पीठि॥ तऊ
पलक पर जात सज लेह सों ही डीठि॥२७॥टी
यह नाइका के सनेह नि काई अरु चितैवे की
चतुराई नाइकु कुं कहै तै है नाइका परकिया॥
२७॥कवित्त॥ प्यारी प्रवीन सनेह सनी न घनै
सिष लै सुष की निधि त्यौं ही॥ कैसें हू मेउ र
नैंन टरै रंजु चुभी चित चाह नि नेह निवौं रैं
॥ वैठी वधू गुरु नारिनु मैं जु ऊ नारिन वाइष
री सकु चौं ही॥ लाज पगी पलए कतऊ परा
॥ नहि
आत इतै वह डीठि हसौं ही॥२७॥दोहा॥ नहि न
चाइ चितवतिउ गनि नेहिवेस्यन मुसकाइ
ज्यों ज्यों रूषरू षौ करैं त्यौं त्यौं चितचिकनाइ

५२०.५९

९८॥टीका॥यह नाइकाकी चेष्टा नाइक सषी सौं कहतु है कि यह रुषाई मेरे चित्त कौं चिक नावति है॥९८॥कवित्त॥जोरत न लोचनन चाइ नहि चाइ भरी मृदु मुसिकानि कौ नु भाउ रसरसातु है॥बोलत न कहूं मन मोहने मधुर बैन मोरत न भृकुटी मरोरत निगातु है॥ कहै कवि देव स्याम वाकी गरबीली बानि कछू मुंह जब सी करकौ मन चाउ जान्यो जातु है॥ज्यौं ही ज्यौं रहत प्रान प्यारी राधा रूप रूषो कैरि त्यौं ही त्यौं षरो इ षरो चित्तु चिकनातु है॥९९॥दोहा॥ चितई ललचौंहें चषनु डटि घूंघट पट मांह॥छल सौं चली छुवाइ कै छिनु कछुबीली छौंह॥९९॥टीका॥यह नाइका परकिया है जु चेषा करि गई सो नाइकु सषी सौं कहतु है ९९॥कवित्त॥हूरन सुधा निधि सौ बदन दिषाइ करि घूंघट के पट मैं है निरषि निसंक चित्त व निलज चौंही चाहु चीक बीजु मारि कैं॥ कहै कवि देव मृदु मुसिक्याइ ली की वोर चली काहू छल सौं छबीली छोंह छ्वाइ कैं॥हाहा कहि कौ हीं जाहि येती छवि सौं ही वहमोही नैन नटंरत रही जु री झि छाइ कैं॥१००॥दोहा॥त्रिवली नाभि दिषाइ कै शिसिर टकि सकुचि समाहि॥ गली अली की ओट कै चली भली विधि चाहि॥

१००॥टीका॥यह नाइका पर क्रिया की चेष्टा देषी है सु नाइक कुं सषी सौं कहतु है॥१००॥कवित्त॥
आजु मैं अचांनक विलोकी ब्रजबाल एक
बाकी उति रही मैरे उर मैं विहारि कैं॥ दामिनी लहै न चारु चातुरी कला इनेक कांम हू
की कामिनी करोरि डारौं वारि कैं॥ त्रिवली उघारि कै दिषाइ कैं गंभीर नाभि घूंघट निकुरि कीनो सकुचि समारि कैं॥ भांति भली सौं
करी गली मैं गजगांमिनी अली की वोट गहै चली गई यौं निहारि कैं॥१००॥दोहा॥ उग
कुडि गति सी चलि ठटु किचित ई चली नि
हारि॥ लियें जाति चित चोरटी यह गोरटी
नारि॥१०१॥टीका॥यह नाइका की चेष्टा सषी
नाइक सौं कहतु है॥१०१॥कवित्त॥ मनमथ
बानसे चपल अनियारे चष अधर अरुन
उति अति सरसाति है॥ सौंनें से सुदेस नन
हौं नैंसे उरोज लौंनें कौनकी न मति लषि
कौं न ललचाति है॥ उगुए कुडिगति सी चली
फिरि ठाढी भई वकुरि विलोकि चली मुरि मुस
काति है॥ जोवन मरोर भरी गोरटी गयंद गौ
न कौंनु यह चोरटी चुराये चितु जाति है॥१०२
॥दोहा॥ भौंह उचे आंचरु उलटि मोरि मोरि ॥२५॥

मुहमोरि॥नीठिनीठिमीलरिगईउीठिदीठिसों
जोरि॥१०२॥टीका॥यहनाइकाकीक्रियाजु
देषीहैसोनाइकुकेचित्तमेंबसीहैवारवार
सषीसोंकहतुहैनाइकापरक्रिया॥१०२॥कवि
रूपकीअपारप्यारीठाढीनिजगेहद्वारजुप
कीछबिपररतिवारियेंकरोरिकैं॥मोहिदेषि
नैंसकुनंनारकैंवटाइमौंहवाहीचितवु
निमांझन्नीनोंचितचोरिकैं॥मोरिमारिमु
हजमुहांनीचंगरानीपुनिआलिसवलि
तनैंनवटुरारेटोरिकैं॥नीठिनीठिगईमी
नमीनरसरोजमुषीदीठिसोंमिलाइडीठिनी
कैंनेकुजोरिकैं॥१०२॥दोहा॥ऐंचतिसीचि
तवनिनिमेंभरेओटउचलसाय॥फिरउनक
निकौंमृगनयनिडगनिलगनियांलाइ॥
१०३॥टीका॥यहनाइकाकीचितवनिदेषिना
इकुकेचितमेंवसीहैसुनाइकसषीसोंकह
तुहैवैसैंहीफिरिचितवेयहअभिलाष॥
१०३॥कवित्त॥विरकीउघारिनवनागरिनिहा
रिपनठाढीवनवारीमनमथछविछायकें
॥विहसिकिंचतकीतसिवरनीलजाइकेंमुषै
चनिहीमनुभईओटकंचलमाइकैं॥लगनिल
गाइचितुलेगईचुराइकेंविहारीलालरयौठ

गकीसी छूरी षाइकैं ॥ उन चितवन सव काज चि
सराइकैं सु फिरि अवलोकिवेकी आसु उरला
इकैं ॥१०३॥ दोहा ॥ बैठी हे उमराह उन जल
न चुनै बडवागि ॥ जाही सौं लाग्यो हियो ना
ही कै उर लागि ॥१०४॥ टीका ॥ यह नाइका कों
देषि सषी सौं आलिंगनु करति है सो सषी उ
गट करतु है नाइका सौं ॥१०४॥ कवित्त ॥ आंगन
ते रिसु जा भरि भेंटत मो सौं कहा इठलाति
है आली ॥ पांनी की आगि सिराइ जु पांनी सौं
रीति कहौ कवनें यह चाली ॥ जाहि उने उम
राह भली विधि ठाढे है देषि वहै वनमाली
॥ जाही सौं नेरौ लग्यो हियको हितु ताकै हि
यें किन लागति आली ॥१०४॥ दोहा ॥ देष्यो
अनदेष्यो कियो अंग अंग सवै दिषाइ ॥ पैठ
ति सी तन मैं सकुचि वैठी चितै लगाइ ॥१०५
टीका ॥ यह नाइका परकिया कौं चितै वो ल
ज करि वा देष्यो सो नाइक सषी सौं कहतु है ॥
१०५॥ कवित्त ॥ सोहतु सरूप सनी वैठी ही छ
वीली वाल हौं हू तहां निकस्यो अचांनकही
आइकैं ॥ मेरी ओर देषि उन देष्यो अनदेष्यो
करि मुसिक्यांनी अंग अंग सकल दिषाइकै
॥ पैठति सी तन मैं सकुचि मन औं चितवती चि

नवनि चाहि वैठी सिमटि लजाइ कैं ॥ वह मुस
कांनी चित वनि सकुचिन कौं हूट रतिन रही
मेरे हियै मैं डराइ कैं ॥१०५॥ दोहा ॥ चिलकि चि
किनियां चट कसौं लफति सटक लौं आइ ना
रि सलौंनी सांवरी नागनि लौं डसिजाइ ॥१०६॥
॥ टीका ॥ यह नाइका की सांवरी छवि देषि नाइं
क आसक्त भयो सु सषी सौं कहतु है ॥१०६॥ क
विलकतु चारु चिकनाई की चटक भरी चल
त लफति जैसें लगल चकति है ॥ सांवरी सलौं
नी अति लोंनी आन्यों हौं नीवैस सो भासनी सी
समनें सहित लसति है ॥ कुटिल सुभाइ चितव
नि पैंम विष भरी नागनि ज्यौं डहि ब्रजनागरि
वसति है ॥ मन कौं डसति अरु तैन कौं लहरि आ
वै लागत नजंत्र मंत्र आरभुत गति है ॥१०६॥ नै
नलगनि दोहा ॥ मैं हूं जान्यौं लोइननु जुरत वा
ढिहै जोति ॥ को हे जानत डीठि कौं डीठि किरकि
री होति ॥१०७॥ टीका ॥ यह नाइका अपनें नेत्र
नु की आसक्ति सषी सौं कहति है अरु यह प्रगट
करति है कि जवतें आंषि देषी नवतें और कछू
सूझतु नाही ॥१०७॥ कवित्त ॥ जा दिन तें आली
तें कही कि मनमोहन के लोचन सलोंनैं देषें
अति हित वाढिहै ॥ जा दिन तैं मैं हूं यह जांनी चा
रि नैंन भयैं जोति को प्रकास कछु अधिकाई चा
ढिहै ॥ जोरत ही नैंन भयैं विथा तन मैं वगई म

दनकनासनवरनडारिजाहिहै॥ कौंनयहजो
नतुहौंडीठिहीकौंडीठिवीरहौंतौकिरकिरी
कोऊसकतनकाढिहै॥१०७॥ दोहा॥ त्यौंत्यौं
प्यासेईरहतज्यौंज्यौंपियतअघाय॥ सगुनस
लौनैंरूपकौजनुचषत्रषाबुझाय॥१०८॥ टीका॥
यहनाइकाकेनेनलगेहैंसुसषीसषीसौंकह
तुहै॥१०८॥ कवित्त॥ हरिमुषचंदत्यौंचकोरकै
रहतिजांनिलोचनकमलगतिभौंरनकीमि
हतुहैं॥ देषतहूंदेषतरहतदिषसाध लगी॥
होतअनमेषयौविशेषउमहतुहै॥ दौनौंकव
हसपांनप्यारेकौसलौंनौंरूपतातैंनबुझन
त्रषाकलनलहतुहैं॥ अपतनहोतक्यौंहूंमा
ईरीनदनमेरेपियतअघायत्यौंत्यौंप्यासेईर
हतुहै॥१०८॥ दोहा॥ अलिइनलोइनसरनु
कौंयहैविषमसंचारु॥ लगेंलगायेंएकसेदोऊ
नकंरतसुमारु॥१०९॥ टीका॥ यहअपनेनेनेत्रनु
कीअवस्थासषीसौंकहतिहैनाइकाकेहैअ
थवानाइकुकहै॥१०८॥ कवित्त॥ सरूजाकैंला
गेताहिसुधिनरहैमकछूजोहनतुनाकेउर
रंचकविथानहै॥ तिनतैंअधिककुसमायुध
केपांचौंवांनजनेकेलगेतैंटरैसुनिनकेध्यान
हैं॥ हसपोनप्यारेकौंदुहाईजियजांनिआ
लीसवहीतैंविषमविसेषनैंनवांनहैं॥ दूहंन

विकलकरैंजनननलगैनआंन इहमांतिग्रेह
लागैग्रैंनहूंसमांनहै॥१०९॥दोहा॥दृग्नु
लगतवेधनहियहिविकलकरनअंगआंन
॥एनेरेसवतैंविषमईछ्नेनतीछनबांन॥११०
टीका॥इहनाइकाकेनेत्रदेषिनाइककूंविक
लताईभईसषीनाइकासोंकहतिहैअथवा
नाइकुनाइकासोंकहै॥१११॥कवित्त मोंहकमां
नविनांजिहतेंछुटिटेढेचलेंउकूंओरअनें
रे॥नैंननिओनिअनूकलगैंहियमेंदृतक्यों
हूंफिरैंनहिफेरै॥ओरसवैअंगव्याकुलकैस
रसातविथाघहरातघनेरे॥रीतिगहैसवतेंवि
षमैंविषमैंसरतीछनईछनतेरे॥११२॥सोरठा
कौडाआंसूवूंदकसिसांकरवरुनीसजल॥की
नैंवदननिमूंदइगमलिंगडौरैंरहत॥११३॥टीका
इहनाइकाकेनेत्रनाइककौंदेषिविवसभयेहैं
आसक्तहैसषीसषीसोंकहतिहै॥११४॥कवित्त
नैंजवतैंव्रषभांनसुताहरिकेदृगनैंकनिहारि
हरैहैं॥तितवतैंनहलैंनचलैंरहैंवाहीचितौं
निकीचाहभरेहैं॥कौउकियेअंसुवानकीवूं
दजंजीरवरीवरुनीजकरेहैं॥मैंकअवेडनको
मुचिलेकमलिंगमनौंमुहमुंदिपरेहैं॥११५॥
॥दोहा॥कहतसवैकविकमलसेमोमतनैंनप
षांन॥नतरकुकतइनवियलगतउपजतवि

रहक्रसांन॥१२॥टीका॥यह नेत्रलमनिहेयहवं
चननाइकक हेतौवनैं नाइकाक हैतोहूसंभवै
१२॥कवित्त॥वरनवरन द्रगकहनसकलनका
विकमल कुरंग मीन षंजन समांन हैं॥कहूंक
विहसरचिपचिचतुराननने लोचनेएपांह
नवनायेमेरेजांन हैं॥कमलसो कमलन
गायदेषोकेयोवेर एकअेकक्यौंहूं उपनन
कसांन है॥लागतहीवियनैं नलवहीउपजि
उठैलगनिछ्रगनियातेंष्रगटप्रमांन है॥१२॥
दोहा॥सवहीत्यौंसमुहातिछिनुचलतिसव
नुदैपीठि॥वाहीत्यौंठहरातियहकविलनुवा
लौंडीठि॥१३॥टीका॥यहनाइकोलछिनासस
षीनाइकसोंकहतिहै सषीकोवचनसषीहू
सोंवनैं॥१३॥कवित्त॥नालनमनमोहनकी
विपरलतौवलिरीफिरहीमोहिवहरातिहैमो
रीज्यौ॥प्रीतिउरअंतरकीप्रगटविलोकियतु
सौंहकियेंकैसैंनिवहतचोराचोरीज्यौं॥सवकों
नषनमिलैंकाहूसोंनतेरीडीठिपीठिदैचले
नपुनिसवहीकीओरीज्यौं॥इतउतहेरिचित
चोरहीकीओरआइरहतहैठहराइमंत्रकी
कटोरीज्यौं॥१३॥दोहा॥दरैंदारतैंदीठरत
हूजैंदारदरैंन॥क्योंहूंआंननआंनसोंनैंना
लागननैंन॥१४॥टीका॥यहनाइकाअपनैं

नेत्रनकीआसक्तकहतुहैअरुनाइकाकैअम
हैकिनाइकऔरसोंआसक्तहैसोनाइकाकोअ
मुहरिकरतुहैजोनाइकानाइकसोंकहैनोउ
द्दाहरनहूंसंभवै॥२४॥कवित्त॥औरनैवानिप
रीतुपरीनटैरवहकोटिउपाइकियेंहूं॥तुम
कहैजितरीफिरचेतितनैंनचलैनकहूंआं
ननआंनसोंयेइगनैंकनलागतकैहूं॥त्यौं
हींढरैंजिहढारढरैंनहिहूसरैढारढरैंसपनैं
हूं॥२४॥दोहा॥हरिछबिजलजबतेंपरेतबतैं
छिनबिछुरैंन॥भरतढरतबूडतनतरतरहटघ
रीलौंनैंन॥२५॥टीका॥यहनाइकाअपनेंने
त्रनुकीआसक्तिसखीनाइकसोंकहतुहै॥२
॥कवित्त॥आजुनिरष्योमैंब्रजराजकोकुंवरका
न्हजाकेअंगअंगआलीमनहिहरतुहै॥छ
लछांनप्यारेकीइहाईबानिकाईदेषैंकोरिर
तिपतिछबिलाजनमरतुहै॥ताकीसोभास
लिलमेंजबतेंनयनअरेतबतेघरीलौंछिन
हूंनबिसरतुहै॥ऐसमयेरततहीकरतअनै
कभावभरतढरतपुनिबूडततनरतुहै॥२५॥
दोहा॥नैनलगेतिहिलगनिछुटैंछुटेंजु
प्रांन॥कांमनआवतएकहूंतेरसेकुसयांन
२६॥टीका॥यहनाइकानेबोटोसखीसिछादेतु

हैनासोंअपनीदूहता कहतिहै ॥२६॥ कवित्त
नैंननतुंऐसोगहोहितकोपतु चैंनुलहैअ
वतेंहरिहेरैं॥ प्रांनछुटैंहूंनवांनछुटैंगुरसों
नृहसेउपहासघनेरैं॥ कोकुलकानिककहाव
धूरीगईलाजलजाईनआवतुनेरैं॥ तेरेमट
अवसोकुसयांनयेएकहूंकोमनआवनमेरैं
॥६॥ दोहा नेननतुम्हारेरूपकीकहोरीतियह
कोंन॥ जासोंलागतपलकुपललागतपलकुप
लोंन॥५॥ टीका यहनाइकाकीअवस्थासषी
नाइकासोंकहतिहैकिजबतेंतुमदेषेहोनवतें
वाकेपलकहूनांहीलागतुहैंनाइकाहूनाइकु
सोंकहैसोसंभवे॥७॥ कवित्त बारकदेषेंसुध्यौन
रहैहिवसाधलगेकुलकोंनिमगे॥ मोहनीरी
तिकछूमनमोंहनुरावरेरूपकीयोंउमगे॥ कोंन
वगोरीनहीकितकोंकरमैंनवसीकरमंत्रपगे
॥ जाकीकहूंपलएकलगेपलनाकीपलेपल
कैंनलगे॥७॥ दोहा हेहियरहनह ईछबैन
रनुगनजगजो॥ डीठिहिडीठिलगेदईदेह
दूवरीहोइ॥८॥ टीका यहनाइकाकैनेननाइ
ककोंदेषिकैंलगेअरुदेहदूवरीहोतहैसुना
इकाअथवानाइकुसषीसोंकहतुहैसषीसषी
हूंसोंकहैतोवनैंअरथसुनहै॥८॥ कवित्त देष
तदेषतहूंनलहैकलपैंममरूपउठेचपनिमा

री॥देषे बिनां न सुहाइ कछु पुनि हाइ रहै अति
होतु दुषारी॥ आकुल कैंधें कुलाइ महां सुर
झाइ रहै निसिनी द बिसारी॥ नैंन लगै न तन दूव
रो होइ अनोषी सनेह की रीति बिहारी॥२८॥ दे
षनि आंषियां दुषियां नु कौं सुष सरस्यौ इनां हि
॥ देषैं बनैं न देषतैं अन देषैं अकुलांहि॥२९
॥टीका॥ यह नैनोपालंबना इका अथवा नाइ
का सषी सौं कहै॥२९॥कवित॥ लागत न पलक
लल क रूप लषिबे की बाही ध्यांन पगंति जग
ति दिन राति है॥ ज्यौं ज्यौं निरषति त्यौं त्यौं उम
हति भूषी क्यौं हूं होत न अघूं षी षरी षरी लल
चाति है॥ औरै भयें बरत बिषम बिरहागनि
में मीन जल हीन की सी गति दरसाति है॥ सि
ऐपो न सुष हू नि दुषि हाई आंषिन कौं देषें न अ
घात अन देषैं अकुलाति है॥३०॥दोहा॥ देषतु
कछू कौतिगु इतै देषौ नैंक निहारि॥ कब की
इकटक डटि रही टटिया अंगुरिनु फारि॥३१
॥टीका॥ यह नाइका कहूं कै नाइकु कौं देष
ति है सो सषी नाइकुं कौं वाहि दिषावत है स
षी कौ वचन नाइकु सौं प्रीति कराइबो षये
जनु॥३२॥कवित॥ मैंन हूं नैं ऐंन मन मोह
न नूं मागी छबि नैंन निमें षु भी हजबा लरि

वि० स०
॥३०॥

झिवारिकै॥वगरकौवासुसासुननदकौत्रा
सुलाानैं निरबिसकैनप्यारीवदनउघारिकैं
॥विनदेषैंकलनपरतियातें देविवेकौंकह्यौ
हैउपाउदेषौ इन्हधौंनिहारिकैं॥कवकीनिमे
षभूलेलोचनलगाइइनडटिरहीटाटीकर
पल्लवसौंफारिकैं॥२७॥दोहा॥चकीजकीसी
ह्वैरहीवूझेंवोलतनीठि॥कहूंडीठिलागीलगै
काहूकीडीठि॥२८॥टीका॥यहनाइकालछिता
हैसषीनाइकसोंकहतुहैसषीहूसोंकहै॥
२८॥कवित्त॥आजुचकीसीजकीसीकहाकैधुं
अंगसम्हारिहिराईसीहेरी॥वूझेंहूंनीठिक
हैमुषवैनंनलेनचलैजतुचित्तउकेरी॥मेरीलै
षेंयहतेरीनईगतिमोमतिसोचसमूहनघे
री॥डीठिलगी किधौंकाहूकीतोहिकिडीठि
लगीकहूंकाहूसोंतेरी॥२८॥दोहा॥नेहननैं
ननिकौकछूउपजीवडीवलाइ॥नीरभरेनि
तिवढतिरहैंतऊनप्यासवुझाइ॥२९॥टीका॥यहे
नाइकाअथवानाइकअपनेंनैननुकीअव
स्थासषीसोंकहैसषीसषीसोंइनकीअवस्था
कहैनीहूसंभवै॥२९॥कबित्त॥एकपलहूनलग
ैपलकैंललकैंलखिवेकंहैंलागीचटी॥ऽ
नीरभरेनिसद्यौसरहैंनमिटैंतौअभूरितृषा
उपटी॥आछहैजामनपेतरफेउपवोरहसो॥३०॥

निघटैनघटी ॥ यहप्रीतिलगीनहि आंखिनकूं
कोऊपावकव्याधिसुजैसेलगी ॥ २२ ॥ दोहा ॥ कै
वाआवतइहिगलीरहौंचलाचलैंन ॥ दरस
नकीसाधैंरहैंसुधेहीहिननैंन ॥ २३ ॥ टीका ॥
यहनाइकाअपनेनेत्रनुकीदसासषीसोंक
हतिहैदेषौतोलाजतेंदेषीनांहिसकतिअ
रुदेषैंअकुलातहैंमध्यापरकिया ॥ २३ ॥ कव
काहूअलीवकुवेरग[illegible]लीइहिआवतुचा
हतिहैंहकियेंहूं ॥ देषिवेकोंतवहीनवहौंलल
चाइरहौंनचलायेचलैंहूं ॥ नाजअचानक
आइउहैपछितानतयहैंअपनैजियमैंहूं ॥
सोंहैंचितवेकीसाधैंरहैंउरसूधैविलोचनहौं
ननकैंहूं ॥ २३ ॥ दोहा ॥ साजैंमोहनमोहकोंमो
हीकरनकुवैन ॥ कहाकरौंउलटेपरेंटौनेंलों
नैनैंन ॥ २४ ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रोढापरकिया
नाइककोंदेषिवेकीव्यथाकेअकुलातुहैंसुषी स
सषीसोंकहतिहै ॥ २४ ॥ कवित्त ॥ वूझतिहोंस
निभाइसषीइहसीषरकैंसिषईकाहिकोंनैं ॥
मैंसजुमोहनमोहिवेकोंवकुअंजनसाजवना
इसलौंनैं ॥ देषतहीललचाइरहेअवएअ
पनैंसपनेहूंनहौंनैं ॥ मोहीकोंटैंनलगेउघनैं
नहैंज्यौंउलटेपरजानहैंटौनैं ॥ २४ ॥ दोहा ॥ मे
हसैंजुकिमीठकुइगवलैलागिउहिगैल ॥ छि

नछुछाइछविगुरुडरीछलेछबीलेछैल॥
२५॥टीका॥ यहनाइकाअपनेंनेत्रनुकीआ
सक्तिसषीसौंकहतिहै॥२५॥कबित्त॥ जाघरी
नैंमोहनीकौमंत्रडारिदीनौंउनरूपकीमि
ठाईताघरीतेंकलनमलेहैं॥केतोहठकरिरो
किहारीओटअंचलकीत्यौंत्यौंअतिबल
करिउनहीकौंचलेहैं॥मोहसौंजुकतौनौं
तोपलकमेंकरिहांतोछोडिसबतौंतोवा
कीगैललागिचलेहैं॥नंदकौकुवरआली
बीसबिसेठगुहेरीदेषतहीदेषिमेरेदोऊनें
नछलेहैं॥२५॥दोहा॥ लोमललगेहरिरूपके
करीसाटिजुरिजाइ॥हौंइतैवेचीबीचहीलो
इनुबडीबलाइ॥२६॥टीका॥ नेत्रलगनिना
इकाकौवचननाइकसौंतथासषीसौं॥२६॥
कबित्त॥ नंदकिसोरकीमोंहनीमूरतिदेषतलो
चनिमोमनभाई॥तौलगिलोमललगेडगां
आगेंईजाइमिलेमिलिसाटिमिलाई॥आप
नौंस्वारथसाध्योसबैबिधिहौंइतिबीचहीबे
चीरीमाई॥कैसीकरौंनकछूबनिआवति
नैननिकैमनमेंतौठगाई॥२६॥दोहा॥ लोनुअ
पजसुदेषतनहीदेषतसामललगात॥कहाक
रौंलालचभरेचपलनैननचलिजात॥२७॥
टीका॥ यहनाइकाकौंसिछादेतरैतासौंअ

पनैंनेत्रनकी आसक्ति कहहतिहैं ।।२७।। कवित्त
सासुरिसात नसुकै न ननदी जेठेऊं सषी नूं सिषवैस
षीसी षकैबैंना ।। है हठ जुवास चवाइ भई चकु
चौर चलै उपहास की सैंना ।। देषत सुंदर सांव
री मूरति लोक अलोक की लीक लषैंना ।। के
सी करौं हरकैं न रहैं चलि जात नतऊं लचि लाल न
चौं नैंना ।।२७।। दोहा नैंनानें कनु मांनहीं कीनौ
कह्यौ समुझाइ ।। तन मन हारें हूं हसैं तिनुसौं
कहा वसाइ ।।२८।। टीका यह नाइका अपनैं नेत्र
नकी आसक्ति सषी सौं कहतु है ।।२८।। कवित्त
सहियें जग के उपहास निनैं रहियें गुरु लोगन
मांझ गसैं ।। उर आंनिय है अपनैं उरहौं सनु
झाइ रही नहि नैंक त्रसैं ।। अरु रंच कमेरी क
ह्यौं सजनी यनु नैंन निपेह रिहेरि हसैं इहमैं
।।२८।। दोहा सकै सताइ न नेम विरह निसदिन
सरस सनेह ।। रहैं वहै लागी दगनि दीपसिषा
सी देह ।।२९।। टीका यह नाइका नाइका कौ ध्या
न करतु है तऊ विरह घटतु नांही सु नाइका
षी सौं कहतु है ।।२९।। कवित्त वा मृगलोचनी के
विछुरें जु भई गति सो नहि जात उचारी ।। सुष
हूं सा परिहरनें नेह निवात थली उरअेनरधा
री ।। जदपि दीपसिषा सम नैंननि लागी रहै तन
की दुति प्यारी ।। जदपि सिहुमे कछु न हियें भरि सु

वि० स०
॥३२॥

रि.रह्यौविरहानलसुभारी॥२९॥दोहा॥लाजलल
गांमनमांनहीनैंना.मोवसनांहि॥एमुहलो
रतुरंगलोंऐंचतहूंचलिजांहि॥३०॥टीका
यहनाइकासषीसोंअपनीआसक्तिकेअनुभी
अवस्थाकहतिहै॥३०॥कवित्त॥देषतवानट
नागरकीछविफांदिपरेंअटकेनरहांहीं॥लो
चनलोलतुरीमुहजोरसुलाजलगामकौं
मांनतनांही॥ऐंचतहीअपनैंइतिकौंवलि
यकनकैंउतहीचलिजांहीं॥कैसीकरोंनहि
मोवसएकुलकांनिकेचारुफतैंनछुटांही॥
३०॥चितलगनिदोहा॥फिरिफिरिचितव
तहीरहतुटूटीलाजकीलाव॥अंगअंगछ
विझौंरमैंभयौभौंरकीनाव॥३१॥टीकायहना
इकुनाइकाकेअंगअंगकीछविपेरीझ्योहै
सुअपनैंचित्तकीआसक्तिसषीसोंकहतिहै
३१॥कवित्त॥जोवनमहानदसरूपकोसलिल
भस्यौतरिलनरंगहावभावनकौभावहै॥अ
गअंगछविकीउमंगझौंरभारीभौंरचपलक
टाछनतहांफस्योचितुनावहै॥चलिपैनसक
तिचमलुरहैवाहीठौरतरकितिहूंकोजिम
टटीलाजलावहै॥लागतनकौंहूंकुलकां
निकीविसालवलीधीरजपंववलपतवारी॥३२॥

कौनु दावु है ॥१८॥ दोहा ॥ यनतैं उनउनतैं इतै
छिनन कहूं ठहराति ॥ जकन परत चकिरी
भई फिरि आवति फिरि जाति ॥१९॥ टीका ॥ यह
नाइका मध्या परकिया है सु याकी विवस्या स
खी सखीसों कहति है जो सखी नाइकसों कहै
मोहनसैं भरे ॥१९॥ कवित्त ॥ जबतें चटकीन
टनागरसों नवतैं न कहूं मन लावति है ॥ ठ
हराति नहीं छिन एक कहूं निसबासर ज्यों व
हरावति है ॥ कबहूं यनतैं उन धावत है कब
हूं उनतैं इत आवति है ॥ चकरी जिम ज्यों वृत
जोन वृथ पलकौं न कहूं कल पावति है ॥२०॥
दोहा ॥ कौ जानै कै है कहा ब्रज उपजी अति
आगि ॥ मन लागै नैननु लगै चलै न मग लगि
लागि ॥२१॥ टीका ॥ यह नाइका प्रथमा नाइका
कै हरानुरागमै विरह भयो है सु विरह की अ
गनि सों मन आकुल भयो सु सखीसों कहति है ॥
२१॥ कवित्त ॥ हीमैं न धूं मवरै वितु ई धन उन्नत
कै पगटैन लिषा है ॥ नैसकु नैननु लागन ही म
नं ज्यों निसबै अंगन दाहै ॥ लोचन नीर टरैन
तु मैं अपनी ब्रजमें कौ उज्यो गिमहा है ॥ देषै
धीं ठि परै न कछू अब मानै कैं आगे धौं कै
है कहा है ॥२२॥ दोहा ॥ डरन टरै नीद न परै ह
रैन काल विपाकु ॥ छिन कुछाक उछकै न

फिरि घरौ विषम छबि छाकु ॥३४॥ टीका यह नेह
लगनि है सु नायकु अथवा नाइका सषी सौं क
हैहै कि छबि कौ छाकु घरौ विषम है सो विषम
ता वरननु करतु है ॥३४॥ कवित्त सुधि कौं नध
रैनी दिने सकौ न परे महा भयतें नरहै सु षमि
कैरनु वाकु है ॥ कहै कवि लछमी हूं एक वेर छ
कै सु तो उछकै नैनैं को न समैं कौ परिपाकु है ॥
सीरो लागें वैरे निसि दिन तरफरै वलगनिं ॥
तिहैरे घरे काहू कौ नु धोकु है ॥ और मतवारे
नैं तो मेरे मतवारे यह सवही नैं विकट विषम
छबि छाकु है ॥३५॥ दोहा उडी गुडी लषि लाल
की अंगना अंगन समाइ ॥ बौरी लौं दौरी फि
रत छुवत छवीली छांह ॥३५॥ टीका यह नाइ
का परकिया बोढ़ा है सु नाइक की वंग की छां
ह छुवै ते नाइक के मिले ही कौ सुष मानत है
सषी सौं कहति है ॥३५॥ कवित्त नंदलालन वंनौ
र पैनि जरूप दिषाइ के गोरी सी नाइ ॥ बाहिर
जात वनैं गृह तैं न विलोकि वे कौं च तिहीं च
कुलाई ॥ प्यारे की चंग यतें मैं उडी लषि मो रहमरी
निज अंगन आई ॥ होन गुडी की जिनै जित छां
ह तितै तित धी वे कौं डोलत धाई ॥३५॥ दोहा च
लत घैर घर घरत क्यौं परी तु घर रहै हाइ ॥ सम
कि उही घर कौं चले भूलि उही घर जाइ ॥३६॥ ॥३३॥

॥टीका॥ यह नाइका प्रोढा पर किया है जहां चित
लाग्यो है नहां जानि है सषी सषी सों कहति है
३२॥कवित्त॥ बाल विधी रसके चसके बसके
नसकै न सकै मनु कौं समुझावै॥ होतु घरै घर
घेरनऊ कघर एक घरी रहि वौन हि भावै॥ रैनि
दिनां कल कां मकिरैं न कहूं कलकी कल षे
विन पावै॥ जांनि चलै नो उहीं घर आवत न
लिपरै तौ उहीं घर आवै॥३२॥दोहा॥ यों ते।
कां कां तेउ हो नेंको धरति नुधीर॥ निसदिन
डाढी सी फिरति वाढी गाढी पीर॥३३॥टीका॥ य
ह नाइका के चित मैं लगनि लगी है सु याकै म
न कहूं कल पावतु नांही याकी दसा सषी सों
कहतु है॥३४॥कवित्त॥ सोभा मनमोहन की प
रमरसाल चितु चुभी ब्रजबाल कै न छिन वि
सरै कहूं॥ बरसत जलत रसत झारै विवकौं
कहो ऐसी लगनि दुराये नै दुरै कहूं॥ घरतें
बगर आवै बगरतें घर धावै फिरै ज्यों विप
लपल कलन लहै कहूं॥ वाढी मनमथ पी
रनैं सु को धरै न धीर डाढी सी फिरत गाढी छि
न न रहै कहूं॥३४॥दोहा॥ पलन चलै जकसी र
है थकिसी रही उसास॥ अबही तन रितु वौ
केहूं मन पठयौ किहि पास॥३५॥टीका॥ यह वि
नलगनि सषी नाइका सों कहति है॥३५॥कवि
सासन उसास नि है वाम की सम्हार है न ऐसी

वि० स०
।।३४।।

कै कै कौन के धौं हित मैं हितै रही ।। किते है रीते री मनु री तौ सो लगत तनु अवरी न सुधि बुधि कहि क्यों बिनै रही ।। चित्र की सी लिषी रीझ किन अचेत भई पलक निगाति न्हैली च कित चितै रही ।। काहू हेरि हरी मति बिसरी सबै सुरति हहै तो तेरी यह गति देषि थकि नै रही ।। ३८ ।। दोहा ।। जौं ज्यौं आवति निकट नि सि त्यौं त्यौं षरी ।। झमकि झमकि टहलैं करैं लगी रहैं चटवाल ।। ३९ ।। टीका यह नाइका औ

अमाल

टो है सु सषी सषी सौं कहति है ।। ३९ ।। कवित्त गौ नैं भये दिन कै उ भये हिय मैं पिय पेम को नि सि जागी ।। वासर ज्यौं वहरावति नीठि विधी सब के रस मैं अनुरागी ।। आवत ज्यौं ज्यौं न जीक निसा तिय त्यौं त्यौं उछाह उमंग निपागी ।। सत्वर काज करै ग्रह के रवनी रति केलि के लाहक लागी ।। ३९ ।। दोहा ।। भ्रकुटी मटकन पीतपट चटक लटकनी चाल ।। चलचषचितवनि चोरि चित लियो विहारी लाल ।। ४० ।। टीका यह नाइका औटा है नाइक की सोभा देषि मोहित भई है सु अपनें चित्त की वृत्ति सषी सौं कहति है ।। ४० ।। कवित्त ।। कहवे की होइ तौ कहूं री एक बात का लि वनि ठनि वा निकसौं का फेर तन वैगयो ।। सांवरौ सलोनौं तनु सुंदर वर ।। ३४ ।।

नसोभासदनविलोकतमदनमदनैगयौ॥
चलनिकीलटकनिपीतपटुचटकनिमौं
हनिकीमठकनिचेटकसोकैगयो॥चपलच
षनिबदचहीचितवनिचाहिअलीरीविह
रीलालचोरिचितलैगयो॥४०॥दोहा॥ छुटन
नपैयतुबसिछिनकुनेहनगरयहचाल॥मा
लोफिरिफिरिमारियेखूनीफिरैषुमाल॥४१
॥टीका॥यहलगनिकौवर्ननुहैजाकौंलगति
हैताकौंअधिकुदुखहैअरुजाकीलगनिहै
ताकेमनहूंमैनाहीसुनाइका अथवानाइ
कुसषीसौंकहतिहै॥४१॥कवित्त॥ छिनुबसै
छूटियेनबिनबसैचेटपटीनेहनागरीमैं
यहैअटपटीरीतिहै॥लीजतछिडाइमनु
रतनजेतनुनाहिअतेतुमहीपतिअधि
कअनीतिहै॥मरेहीकौंमारियतुषुसीनयौ
खूनीफिरैजीतेहीकौहारिअरुहारेहीकौ
जीतिहै॥सरबसुदीजेतऊपरबसपरियतु
जहांकछूलोकपरलोककौनभीतिहै॥
४१॥दोहा॥कौबसियेनिर्वाहियेनीतिनेह
पुरनाहि॥लगालगीलोइनुकैरैनाहकम
नवंधिजाहि॥४२॥टीका॥यहलगनिहैनेत्र
नुकेलगेमनबंधतुहैयहअदेखुतअनीति
हैसुनाइकाअथवानाइकसषीसौंकहतु

वि०स०
॥३५॥

है॥४२॥कवित्त॥पावक प्रचंड जातैं भागैं हूं न
छूटियतु वरियंतु ज्यौं ज्यौं उपचार की जिय
तु है॥ प्रवल कजाक नु पै मगन चलन न दैयो वि
नु वितु दीजै न कहित भी जियतु है॥ औसे पे
मतु रके सैं बसियै निबहियै क्यों हे पैये अनी
ति छिन छिन छीजियतु है॥ लगनि करनु
धाइ नैंन मैंन मनु वारै नाह कवि चारौ मनु
बांधि लीजियतु है॥४२॥दोहा॥ मैं तो सों कै
वा कह्यो तू जिनि इन्हैं पत्याइ॥ लगा लगी
कंरि लोइननु उर मैं लाई लाइ॥४३॥टीका
यह लगनि है नाइका अप्रवीना इका अपनै
मन सों कहै सखी सों कहै बीन ही॥४३॥कवि
त्त तो सों मैं कही ही कै डेवरस मझाइ मन नैंन
नु कैं मन लागै भारी बना घायवौ॥ नु बतौने
सीषमांनी इन हीं की मति ठांनी अब कहा है
न पर बस पछितायवौ॥ लगा लगी इनकी
भीउर कों लगाइ दीनी लगनि अगनि ता तैं
कहां भगि जायवौ॥ कीजै न जतन न सी रो सौं
त्यौं होत इव नीरो निस दिन अतनु सतावै
न न आयवौ॥४३॥दोहा॥ सारी डारी नील की
ओट अचूक चुकैं न॥ मो मन मृग करवर
गहतु अहे रहेरी नैंन॥४४॥टीका॥ यह नाइ
का के नेह है बिना इकु को मनु हाथ रहतु ना

हीसुसषीसषीसौंकहहैकरषवरकौप्रसंगक
रिकै॥४४॥कवित्त॥चोरचरहैजोवनकेषनमैं
विहारकरैंकाहूकेनरोकेरहैंविकमअक
थके॥भ्रकुटीकुटीलचालेअंजनुअसित
वासतरलकटाछिगहेंआयुधसुहथके॥
सारीनीलीतारीवोटओवनअचौनकही
करतअचूकचोटरहतनथथके॥मोमन
कुरंगुकौंपकरिलेनहूंघांहथीराधेतेरेनैं
नएअहेरीमनमथके॥४५॥दोहा॥ग्रमकि
चटतिउनरतअटानैंकनघांकैरेह॥भ मि
ईरहतनटकौबटाअटकौनागरनेह॥४५
॥टीका॥नाइकाप्रोढानाइकाकौसोभारेषि॥
आसक्तिभईसुदेषिवेकौंउनरति चटतिहै
सुयाकीविवस्थासषीसषीसौंकहतिहै॥
४५॥कवित्त॥कांकरकौवदनविलोकिकैवि
कांनीवालनारिनतेदेषिवेकेंजतनकरनु
हे॥सुरभीचराइव्रजआइवेकीवेरजांनिरस
वेसहोतसवकाजविसरतुहै॥सांकगुरून
नकीनिसांककैनठाढीरहैछिनइतछिन
उतयाविधिटरतुहै॥नटकैबटाज्योंनटना
गरकेपेंमपागीउचेअटाग्रमकिचटतउ
तरतुहै॥४५॥पूर्वानुराग॥जेनवहोनदिषा
दिषीमहाप्रीतीइकत्रांका॥हगेंतिरोछीडी

ठि अब वृके बीछी के डांक ॥४६॥ टीका यह सखी
नुराग जे चित वनितें संजोग मैं सुष रही तें वियो
ग मैं सुष आवें सालनि हैं सु नाइकु अथवा
नाइको सषी सों कहै है विरह की दसों अव
स्था तुमें तु मिरतु कहिये ॥४६॥ कवित्त रंगर
ली मैं भली विधि सों वकुनां तिनके सुषदेत
हैं सौं ही ॥ तेई न कुंज मये थ तिकूलवि जो कि
हियें दुष सूल सलेई ॥ नेह के आहिर सीली
चितौं निहुं ती इक आंक अमी समतेई ॥ बी
स विसे विष साइक कै उरसालनि वांकी बि
लोकनि वेई ॥४६॥ दोहा ॥ नैं को उहि न जुरी
करी हरषि जुरी तुम माल ॥ उरतें वास छुटौ
नहीं वास छुटे हूं लाल ॥४७॥ टीका ॥ यह सखी
नुराग है नाइका की षी तिसषी नाइकु सों क
हति है किनु म्हारी मालासों ये सो हितु मा
नतु है सो तुम सों कहा कहैं ॥४७॥ कवित्त जा
हिन वाहि अलीन के देषन रीझिये हितु
मानि कें भारी ॥ आपने ही तें उतारि दई तुम
फूल की माल रसाल बिहारी ॥ नारि नितैं ब
हवारि अवारि कौं षांनन हू नैं लगी अति
प्यारी ॥ वासु गई कुं मिलाइ गई पै करी न त
उरतें छिन न्यारी ॥४७॥ दोहा ॥ बिन बिन मैं
बटकतु सुहिय परी भिरमैं जात ॥ कहि जु च

लोविनुही चिंते और निहीमें बात॥४८॥टीका
यह नाइका परकीया है कहूं भीरमें नाइकनें
देषीहै सुवानें जु चेष्टा कीनी सु इनदेषी पेवा
नसुनी नहीं सु सषीसों कहतु है॥४८॥कवि
त्तआजु मिली ब्रजबाल अचानक मोमति वा
केसंग नद्द गही है॥जानि कुती अति भीरमें सु
द्रि मो तन नेह रिहियें उमही है॥ ज्यों जनें पै
नें विलोकि सकी उनकी नीतर्कू रसरीति स
हीहै॥ और नहूं में गई जु कछू कहि में न सुनी
पछितावो यही है॥४९॥दोहा॥वननतनेनकोंनि
कसतु लसतु हसतु हसतु इतु आइ॥ दग षंज
नगाहि लैगयो चितव निचें पुलगाइ॥५०॥
टीका यह नाइका प्रौढा है जा छबि सों श्रीकृष्ण
देषे हैं ते सषी अपनें नेत्रनु की लगनि सषी
सों कहति है॥५१॥कवित्त॥आजु कछौ वन
कों इत के बनि बानिक सों जसुधा को कन्हा
ई॥ मोर किरीट लसे मुरली लकुटी अरुपी
तपटी छवि छाई॥ मो ढिग आइ नस्यो रस मा
इ हरें मुसिकाइ मुत्यों सु फ्हाई॥ चौ पकी चा
ह निचें पुलगाइ कें लै गयो नैन नमो लनि
माई॥५२॥दोहा॥जब जब वे सुधि कीजियें
तब तब ही सुधि जाहि॥ आंषिनु आंषि लगी

रहैं आंष्यौ लागति नाहिं ॥ ५० ॥ टीका ॥ यह पूर्वा
नुरागनाइका अथवा नाइका सषी सौं अपनी
बात कहै है ॥ ५० ॥ कवित्त ॥ यह प्रीति की रीति अ
नोषी कछू जानी न जाति कहा गति है ॥ चित
चाह की चौंप चढी यैं रहै अरु ऐंमनि ष्याउर
पागति है ॥ नित आंषिनु सौं वेई आंषैं लगी
रहैं आंषिन कै संहं लागति हैं ॥ जब ही जब
वैं सुधि की जाति हैं त बही सब ही सुधि भागति
है ॥ ५० ॥ दोहा ॥ जहां जहां ठाढौ लष्यौ स्याम सुभ
ग सिरमौर ॥ बिनहूं उनछिनु गहि रहतु दृग
नि अजौं वह ठौर ॥ ५१ ॥ टीका ॥ यह पूर्वानुरा
ग लषि देषै है नेईं ठौर स्री कृस्न की भावना
करिकैं नेत्रनु कौं आयह नु करति है सुना
इ का सषी सौं कहति है ॥ ५१ ॥ कवित्त ॥ केलि सुष
सागर मैं केलि रंगरली परि हरन विविध बि
धि करती मनोरथनु ॥ नैन मन वाट तौउ म
गि अनुराग भागु लागतु है मघवा सची कौ
अनुहूनैं अनु ॥ कृस्न पान प्यारे की दुहाई अ
ति छवि छायौ जिन जिन कुंजनि मिलतु हो
री स्यामघनु ॥ नेई नेई कुंज अब उनहूं बिलो
कि बिनु माइ गहि रावनि परी कलौं अजौं
दृगनु ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ सघन कुंज छाये सुषद स

रसिजमुरभिसमीर॥मनुछैजानुऔजौंव
है७हिजमुनाकेतीर॥अथटीका॥यहपूर्वानु
रागुहैसुजमुनाकेतीरसंजोगमैंजुचित्तकी
वृत्तिहोतहीसुवहीभावनाफेरिवैसेंहीहोति
हैसुनाइकासषीसौंकहतिहै॥५२॥कवित्त॥
सघननिकुंजछांयेसुषदेसुहायेअरुमंडित
सरसगुंजपुंजमधुपनकी॥प्रफुल्लितमंजुअ
रविंदुनकेहेरआवैचविविधिवयारिलेसुगं
धकुसमनकी॥नित्तिकात्नलितछविवलित
लहलहातिजेऊतीविहारभूमिनंदकेसुव
नकी॥हमघांनप्यारेकीसौंवहीजमुनाकेती
रऔजहांनिरषिवहैगतिहोतमनकी॥५२
किरिबूझतिकहिकहाकह्यौसांवरेगात॥क
हाकरतदेषिकहीअलीचलीक्यौंवात॥५४
टीका॥यहपूर्वानुरागसषीकौवचननाइक
सौं॥५४॥कवित्त॥मदनगुपालकीविलोकनिछ
विछाकीवानलगीप्रेममदहरनसम्हारविसरा
ईरी॥वेईवातेंबूझिकेरिबूझिफेरिबूझिफेरिबू
झिफेरिबूझिवेकीरटसीलगाईरी॥हाहाक
हिसांवरेकुंवरतोसौंकहाकह्यौकैसोहोस
माजवाकेसंगसुषदाईरी॥करतकहाहोकि
हिंठौरकौनवानिकसौंकैसीकैसीभांतिमेरी

सिं० स०
॥३९॥

चरचा चलाईऐ॥५३॥ सषी कौ वचन नाइका
सौं दोहा॥ मन न धरत मेरौ कह्यौ तूं आपनें स
यांन॥ अहे परनि परि प्रेम की परहथ पारि न
प्रांन॥५४॥ टीका॥ यह सषी नाइका सौं कहति है
कि प्रीति के प्रसंग नैं प्रांन पराये हाथ परें न है
सु हम तिकरें तौ यह प्रसंग है कि सषी प्रीति क
रत मनैं क्यौं करति है सु मनैं नांही करति प्रीति
दिढावति है कि प्रांन परायें हाथ परैंगे जौ तौ
फेरि हूं टेंगें नहीं सषी नाइका सौं कहै तौ वैं
कि प्रेम की परनि मैं तौ परि च्यत प्रांन जु हैं ना
ह कु नाहि पराये हाथ मति पारै॥५६॥ कवित
तूं नहि मांन निमै रौ कह्यौ अपनैं मन मांन्हि स
यांन गुमारी॥ देषि वे कौ ललचाव तिन्यां क
छु घोस नितैं यह रोस निहारी॥ नेह कहूं नेंह
नेंहन सौं लगिजै है तौ फेरि न कैहैं छुडारी
॥वे॥ चवि प्रांन नु पर्यौं पर हाथ फसै मति प्रेम
फंदा व्रजनारी॥५६॥ नाइका कौ वचन सषी
सौं दोहा॥ विनु विनु वचनन हरतु है ढिला
लन दृग वरजोर॥ सावधांन के वट पराये
जागत के चोर॥५५॥ टीका॥ यह नाइका नाइ
क के नैं न नु पै आसक्ति है सु नाइक के नैंन
या के मन कौ जोरावरी हरि लेतु हैं सु नाइका
सषी सौं कहति है॥५५॥ कवित्त॥ रावति सलं

॥३९॥

कमिलि मदन महीपति सौं स्हनतु सर किजा
नकानन की ओर है ॥ चपरि हरनि ब्रजबाल
[illegible] नु के मन धने मारन मरोरि भरु जोव
न मरोर है ॥ जानहू मूसें सावधान कों विव
सकैं चपल चितौं निसरवे धनसजोर हैं ॥
मोसों कहि आली ब्रजलाडिले के लोल दृ
ग है कहा कहैं इकै न है कि चोर है ॥ ५५ ॥ ना
इकाकौ वचन सषीसों ॥ नावक सर सैलाइ कै
तिलक तनरू निरतनाकि ॥ पावक झर सी झ
मकि कै गई झरोषा झांकि ॥ ५६ ॥ टीका यह ना
इकनें नाइका झरोषा झांकत देषी तु जैसी भांति
देषी है तैसी ये सषी सौं कहतु है ॥ ५६ ॥ कवित्त
साजि कै सिंगार भरी छवि भार हियैं विरहागि
निवारि गई है ॥ चौंप भरी कछु ओबसौं आई
झरोषे कनैंक निहारि गई है ॥ झांकत नैंक लषी
जबतें तबतें सुधि मोहि विसारि गई है ॥ पाव
क ज्वाल सी बाल विलोकि कैं नावक तीर सें भा
रि गई है ॥ ५६ ॥ नाइक को ध्यांन नाइका कैं ॥ दो
कवकी ध्यांन लगी लषौं यह घर लगिहै को
हि ॥ डरियतु भ्रंगी कीट लौं मति वहई कै जा
हि ॥ ५७ ॥ टीका यह नाइका नाइक के ध्यांन में
लीन कै रही है सु सेषी सषी सौं कहति है ॥ ५७ ॥
॥ कवित्त ॥ ठाटी विलोकति हीं कवकी पहर

न प्रेम हियें टरिवो || पाइन की पुतरी कै रही
विसरयो उरज्यों चल कौ धरिवौ || ध्यान नही ध्यौ
नमें तौ कवहूं यह होइ रही तौ कहा करिवौ
|| या कौ घरी अवलागि है का हि कहा गति कै
है यह टरिवौ || ५७ || नाइक कौ ध्यान नाइका
कौ दोहा || सरस तु पौंछति ललित षिरह तु लगि
कपोल के ध्यान || कर लेष्यो पट ललित विमल |
प्यारी पठये पान || ५८ || टीका यह नाइक की स्त्री
सषि नाइका सौं अधिक है सु वा के हाथ के पा
न देषि नु चेष्टा करतु है सु सषी सौं कहतु है सु
मिरतु जानियें || ५९ || कवित्त ध्यान पियारे की प्या
री तिया पठये करि है तु हियें सरसे || पाइल पा
न षरे सु थरे तिन की छवि देषि हियो न रसे ||
पौंछतु है पट लै कवहूं टरसे कवहूं परसे ||
ध्यान कपोलन कौ कवहूं करै चुंवतु यों रस
कौं वरसै || ६० || मुरली दोहा || अधर धरत हैं हरि
के परत ओठ दीठि पट जोति || हरित वांस की
वांसुरी इंद्र धनुष रंग होति || ६१ || टीका यह ना
इका श्री कृष्ण कौं मुरली वजावत देषि रीझी है
सु वह सोभा भांति भांति करि कहति है सषी सौं
६२ || कवित्त चलि देषि री वांनिक सौं वनि कैं व
अराज कौ लाडिलो आवतु है || सु षवेर की वा
रु मरी चितु सौं वलि नैंन चकोर मिरावतु है ||

जवडी ढिको ओढनु को पट को सुसिकों नि
कौ रंग मिलावतु है॥ नववौ सुरी वास हरे की
ललासु रचा पके रंग दिषावतु है॥ ५९॥ दोहा॥
कित्ती नृगोकुल कुलवधू काहि न किंहि सि
षदीन॥ कौनें तजी न कुलगली कै मुरली सु
रलीन॥ ६०॥ टीका॥ यह मुरली की धुनि परी सौ
है मुसषी सिषाइ दै तिहै नासों जासुर की मोह
न नाक हानि है॥ ६०॥ कवित्त॥ गोकुल मैं न किती
कुलनारि पती व्रत पालन रारि रवी नी॥ अ
रुजसी षन कौं नैं सुनी सतिसील की पद्धति
कौंन नैं न लीनी॥ पेषत रावन र नागर की छवि
कौंन भई उहि रूप अधीनी॥ वा मुरली धुनि
कांन परें कुलकांनि विदा कहि कौंनैं न कीनी
६१॥ दोहा॥ लई सौंह सी सुनन की तजि मुरली
धुनि आंन॥ कियें रहत नित राति दिनु कांन
न लागे कांन॥ ६२॥ टीका॥ यह मुरली सुनी है न
वते कछु और सुनत नेंही सषी सषी सों कह
ति है॥ ६२॥ कवित्त॥ मोहन की मुरली की अली
जब तें मधुरी धुनि कांन परी है॥ बाल भई त
व ही तैं लटू ग्रह काज समाज सबै बिसरी है
॥ चांन सुहात न आंन कछू सुनि वे की मनों म
न आंन करी है॥ ६३॥ दोहा॥ उरली नें अति च
टपटी सुनि मुरली धुनि धार॥ हौं निकसी ऊ

३॥ कांनन तु कांनन औरकियें रहे है कां मषरी कुलकांन करी है॥

लसी मृतो गो गो झूलसी उरलाइ ॥ ६२ ॥ टीका य
ह मुरली सुनि सब का मछोडि झूलसी निकसी
है इह नदेख्यो नवजु कछु अवस्था भई है सु सखी
सों कहति है ॥ ६२ ॥ कवित्त ॥ भौन के कौन में बैठी
झूली हौं कछु गृह काज के साज पगी री ॥ बार
क कांक्रकरी नवही मुरली धुनि आंननु आं
निषगी री ॥ हौं लषि वेकौं उझो हमरी निकरी
व्रह डीठि पस्यौ नद गोरी ॥ नैंननु कौं अरु कान
नु कौं मन कौं नवतैं न लवेली लगी री ॥ ६२ ॥
परस्पर अवलोकन दोहा ॥ फूले फदकत लैन फ
री पल कटाछन रवार ॥ करेत बचावत विय
नयन पाइक घाइ हजार ॥ ६३ ॥ टीका यह दो
ऊनु के नेत्र आपस में कटाछनु की चोट क
रतु है औरनु की द्रष्टि बचावत है सखी सखी
सों कहति है ॥ ६३ ॥ कवित्त ॥ अंजनु अंग कछै
कछनी सिषये नव जोवन नाइक कौं ॥ फांद
त फूले निसांक गहैं करवाल कटाछ सहाइ कै
हैं ॥ ओर कौं टाल करी पल कैं लल कैं प्रति
जौं मसों लाइ कहै ॥ वि पलोचन चोरबचाव
त हैं तिय नैंन कि मैंन के पाइक हैं ॥ ६३ ॥ दोहा
कहे तन न टत री झत षिझत मिलत षिलत ल
जियात ॥ भरे भौन में करत है नैंननु ही सब बा
त ॥ ६४ ॥ टीका यह दोऊ भरे घर में नैंननु ही
में सब बात करतु है सु सषी सषी सों कहति है ॥ ६४ ॥

६४॥कवित्त॥ मरयो है भवन न तऊ पावन न मेंड़ु
कों ऊउ मरह तन दोऊ के पोसने हैं सनी घान है॥
हिलन मिलन उनि बि लजि मिलन रस ऊ
नसन नसन सकान मुसिकान है॥ हां करन
नां करन रीझन षिझन हिन भीजन लजान न
जिकान है विकान है॥ प्रेम पगे हूं रन प्रवीनि
यांन प्यारी पीउ नैंन नु ही निटुन करन सब वा
न हैं॥६४॥दोहा॥ डीठि वरत बांधी अटन तु चढ़ि
धावत नि न डरात॥ इतनेउ तैहि तदु ऊनु के न
टलौं आवत जात॥६५॥टीका॥ यह दोऊनु के
चित लगे हैं सु परस्पर रूप पनें अटा पर तें निस
कहं धावत हैं उन कौ मनु इत आवत है इत कौ म
नु उत जात है सु सषी सषी सौं कहति है॥६५॥कं०
प्रीति पुंज वढ़ै आप आपनें अटान चढ़ै नि
रषैं मैं आनु जैसें यों न चितरन है॥ और कोऊ
जो न तनु तिनकी अनेक गति छल बल भरे
ऐसी दूरि नि ठरत है॥ बांधे डीठि वरतन उरन
न गायें रुची नट कीसी कला दिषे प्रगट क
रत है॥ दुहूंनके चित चलि आवत दुहूं की ओ
र धावत फलनि सिषानि धीर जधरत है॥६५॥
दोहा॥ जुरे दुहूंन के दृग झमकि रुके न झीनें ची
र॥ हलुकी फोज हरौल ज्यों परत गोल पर भी
र॥६६॥टीका॥ यह दुहूंनु के नैन घूंघट की ओ
ट पलकैं मिलि गये हैं सु सषी सौं कहति है॥६६

वि॰स॰
॥४२॥

॥कवित्त॥ वैठी अलीगन मैं नवनागरि आयौ
तहां चलि प्यारौ विहारी॥ लाल की डीठि बचा
इ वैकों मुष घूंघट ओट कह्यौन निहारी॥ नैंन
सौं नैंन उमंगि मिले न रहे पट ओट किंतौ पं
चिहारी॥ रोकि सकै न ह्रौ लल की फौज ज्यौं गो
लपे आंनि परयौ मरू भारी॥ ८६॥ दोहा॥ ह्रयौ
घरे समीप कौ लेत मांनि मन मोद॥ होतु दुहं
नु के हगनि ही वतरस हंसी विनोद॥ ८६॥ टीका
यह दोउ ने अनु ही मैं वातें करतु हैं मिले कौ
सुष मांनतिहै सु सषी सषी सौं कहतिहै॥ ८६॥
॥कवित्त॥ प्रेम भरे भाउ दुहूंन के कैसं हू मोपै
वनैं न वषांनत हैं॥ चारू कला चितु चातुरी॥
की रस भाइ भरी उर आनत हैं॥ नेह पियूष
रई तउ वे समीप ही कौ सुष मांनत हैं॥ नैंनतु
ही वतराइ हसैं अनिरी किरली मनि ठांनत
हैं॥ ८७॥ दोहा॥ उनहरि की हसि कैं इतै इन सौं
पी मुसिकाइ॥ नैंन मिलैं मन मिलि गये दोऊ
मिलवत गाइ॥ ८८॥ टीका॥ यह दोऊ गाय मिल
वत मन मिलि गये सु सषी सौं कहतिहै॥ ८८॥ क॰
उनि हैं सिहां की यकहां की हैं नई सी गाइ मोपै
न घिरति कालि केते उ घरू ये हैं॥ इन मुसिका
इ कही अकुटीन चाइ ए तो गाइ हैं हमारी हि
लैं औरसौं वनये है॥ कहै कवि लैकन मिलै वैंन॥ ८९
नै

अरु नैंन सौं नैंन रीझि रसबस भये हैं ॥ हली
सुधि भौंन की न गौंन की सम्हार रही गाइ मि
लवत दोऊ मन मिलि गये हैं ॥६८॥ दोहा ॥ जहें
पिचकाइनु वीकनी चलति चहूं दिसि नैंन
॥ नह पिन छांडत दुहुन के हसी रसीले नैं
न ॥६९॥ टीका ॥ यह नाइका परकिया है सु दोऊ
दोऊनु के नेत्र देषत हैं नव हमन तरी है सु स
षी सषी सों कहति है ॥६९॥ कबित्त ॥ नेह की घात
लगी जबै नैंन नवतें रसरीति रहै न हि ढांकी ॥
देषत ही अति मोद भरैं उर कौं न करै कुलकां
नि की हांकी ॥ जद्यपि सैंन चवाइ सनी उपहा
स मैं तव लैंच हैं घां की ॥ तद्यपि छाडै न नैंन
दुहूं के रसीली हंसी रु बिलोकनि बांकी ॥६९॥
॥ दोहा ॥ रूठेहु जांनिन संग रहै मनु मुह निकसै वै
न ॥ याही तें मानौं किये वातनु कौं विधि नैन ॥
७०॥ टीका ॥ यह दोऊ आपस मैं नैननु ही में वात
करत हैं सु सषी सषी सौं कहति है कवि की उक्ति
होइ ॥७०॥ कबित्त ॥ इत ब्रजराज कौ कुंवर रसरा
सि उत बनी व्रषभांन की कुंवरि बनि वांनि कै
॥ ठाढे हित वाढे आप आपनैं अटांनि पर क
रंत कटाछ मनमथ की कलांनि कै ॥ बरननैं
निकसैं नेह होत मेरे जांन बैंननु कौं संग्रह
कहौं न यह जांनि कै ॥ परसपर बीन दोऊ याही
नैं परस्पर लौचनु ही मैं वतरात मसषांनि कै ॥

७०॥ दोहा ॥ चितवत जितवत हित्त हिये किये तिरीछे नैन ॥ भीजे तन दोऊ कंपत क्यौं हूं
जप निवरैं न ॥७१॥ टीका यह दोऊ पर स्प
र आसक्त हैं जु करत देषत हैं सषी सषी
सौं कहति है नाइका परकिया ॥७१॥ कवित्त
जमुना के तीर नर नारिनु की भारी भीर तद
पि निरषि विनु हरषें रहैं न हैं ॥ कहै कवि र
स चित चौंपसौं उगत अनुराग सौं पगत
उमगत मन मैं न हैं ॥ यौंही दिनु चितवत हि
यहेत जितवत चितवत चाइ सौं तिरीछे कि
ये नैन हैं ॥ भीजे पट कंपतन काहू तें सु चप
न दोऊ अधिक तपत क्यौं हू जप निवरैं न हैं
७१॥ स्वयं दूती दोहा ॥ घामु घरीक निवारिये
कलित ललित अलि पुंज ॥ जमुना तीर तमा
लतरु मिलत मालती कुंज ॥७२॥ टीका यह ना
इका परकीया वाक विदग्धा स्वयं दूतनाइका
कौ वचन नाइक सौं ॥७२॥ कवित्त ॥ चारु तमा
ल कलिंदी के तीर औ सीर सुगंध समीर रहे
मन ॥ मालती मल्ली निकुंज नि मैं मिलि गुंज
त मत्त मधुव्रत के गन ॥ फूलनि के भरु झूमि
लता रही वेलि तृगील पटा इत मालन ॥ कौ
जै विरामु घरी कु इतै यह आतपु नैं कनिवा
रियै लालन ॥७२॥ दोहा छै छिंगुनी पहौं चौ ॥

गिलनअनिदीननादिषाइ॥ बलबावनको
बौंनसुनिकोवलितुम्हैंपत्याइ॥७३॥ टीका॥ य
हनाइकके चितकीवृत्तिललचौंहीहै षिनाइ
काप्रीतिबढाय विकोंकहतिहै असमापरा
धदेषिषंडितान्हकहैतोसंभवै॥७३॥ कवित्त॥
जानतहैसबकोऊसवैगुनआगरेहोतुमने
सविहारी॥ दीनकेआवतहोपहिलैमनुहा
रिकरौअतिकैमनुहारी॥ कैसंहकैपरसोंछि
गुनीपुनिबांहगहौयहरीतिनिहारी॥ बौंन
सुनैंवलिवावनकौवलिकोंतुकैरपरतीतिति
हारी॥७३॥ दूतीदोहा॥ लाईलालविलोकि
येजियकीजीवनिमूलि॥ रहीभौंनकेकौन
मैंसोंनजुहीसीफूलि॥७४॥ टीका॥ यहनाइका
कोंसषीलेआईहैसुनाइकसोंकहतिहै॥७४
कवित्त॥ जाहिविलोकिकैंप्यारेविहारीसमू
रतुमैंसवभूलिरहीहै॥ आईसुजीवनिमूलि
विलोकियेतोहितसोंअनुकूलरहीहै॥ बैठी
दुकूलमेंअंगदुराइतऊतनकीदुतिफूलि
रहीहै॥ चौंधतलोचनभौंनकेकौंनमेंसोंन
जुहीमनोंफूलिरहीहै॥७४॥ दोहा॥ रहीपैजकी
नीजुमैंदीनीतुम्हैंमिलाइ॥ राषऊचंपक
माललौंलालहियेंलपटाइ॥७५॥ टीका॥ यहस
षीनाइकाकोंलेआईहैसुनाइकसौंकहतिहै

वि०स० ॥४३॥

७५॥कवित्त जाकी प्रभानके पुंजनि सौं जगि जोति रही सव कुं जगली है। कोरि उपाइन द्राइन सौं मिलई तुम कौं व्रषभांन लली है॥ मेंगु कही सु रही सव पैजु मिलै जो रस केलि करी सफली है॥ चंपक माल ज्यों लाल न लगाइ कें राधा हियें यह रूपरली है॥७५॥प्रथमसमागमदोहा॥ दोऊ चाह भरे कछू चाहत कह्यो कहैं न॥ नहि जाचक सुनि सूम लों वाहिरि निकसत नवैंन॥७६॥टीका यह प्रथम द्रसन मैं लाजन के अधिक्य तैं दोऊ कछू कहि सकत नाही सषी सषी सों कहति है॥७६॥कवित्त आजु दुहूं मिलि कैं सजनी मन सों मन सों करी चोर मिलायो॥ हाट दृग से रहे टकलाइ कैं नेह को मेह नहीं वरसायो॥ चाह भरे दोऊ चाहैं कह्यो कछु वोलु न यों मुष आवन पायो॥ सूम ज्यों त्यों वेन भौंन तैं वाहिर द्वार सुनें जवजाचक आयो॥७६॥सिषनषजूरोदोहा॥ करसम टिक चमुं ज उलटि षयें सीस पटु टारि॥ काको मन वांधेन यह जूरा वांधन हारि॥ ७७॥टीका यह जूरो वांधत नाइका नाइक नें देषी है सु सषी सों कहतु है जा निवर्नन होइ॥ ७७॥कवित्त नें नु ह्यें नमें नकें सवा नु षरसां नघरे व्रांम न की ओपक छु जैसे चंदहू रे की ॥४३॥

॥ कलकलनासी भुजउरजउतंगगोरे थुलउ
ली केचुकी सकजरंगरूरेकी ॥ कहैकविराम
मटकीलीचारुचितवनिचटकीलीचूनरी
चटक चोषे चूरेकी ॥ सीसपटुटारिभुजउ
लटिसमेटिकै चक्योंनमनबांधेवहवांधनि
मेंजूरेकी ॥ ७७ ॥ केसवर्नन दोहा ॥ सहज स
चिक्कनस्यांमरुचिसुचिसुगंधसुकुमार ॥ ग
नतनुमनपथुअपथुलषिविथुरेथुथरेव
र ॥ ७८ ॥ टीका यह नाइका के केसन पै आस
क नाइकु है सु नाइका सों कहतु है अथवा
सषी सौं कहतु है ॥ ७९ ॥ कवित्त निरतहै नम
पुंजप्रभा जिनकी छवि हेरि सिली मुष हारे
॥ स्यांम सुगंध सुभाइ सचिक्कन सोहत सुंदर
लांबे लछारे ॥ मैं न मनो अपनें कर के मष
तूलके वौंरवनाइसंवारे ॥ देषतही मन थ
कि रह्यौ नवनागरि के सनुदेस निहारे ॥ ८०
॥ दोहा वेई कर व्यौरनि वहै व्यौरो कौन विचा
र ॥ जिनें उर[illegible] ज्यौ मो हियौ तिनहीं सुरझे वा
र ॥ ८१ ॥ टीका यह नाइक की आसक्ति नाइका
[illegible]साथनु पै है सु वार व्यौरत देषि नाइकु स
षी सों कहतु है ॥ ८२ ॥ कवित्त पांनलसै सर
सी रह है तिन ऊपर मोडग भोंर भयेहै ॥ के
लिक वी सी सी घरी सुथरी नषचंद प्रभा निछये

ही

हे ।। व्हैई हैं हाथ व है चलिबो कहियामैं बिचा
रकहा थाँठये हैं ।। मेरो हियो उरझ्यो तिनसों
तिन मोर निहारु सुरझे कचये हैं ।। ७९ ।। दोहा ।। छु
टे छुटावत जगत तें सटकारे सुकुमार ।। मनु बे
धत बैंनी बंधें नील छबीले बार ।। ८० ।। टीका
यह नाइका के बारन पे नाइक को मन रीझ्यो है
सु नाइका सों कहत है अथवा सखी हूसों क
हे कवि की उक्ति है ।। ८० ।। कवित्त सोहतु हैं सु
कुमार महा उपमा को सिवार न लागत नेरे ।।
मेचक लों बेसु गंध सैं छवि देखत नैंन फिरे न
हि फेरे ।। छुटे छुटावत हैं जगत इनके कछू को
ति गुटौ नै सहेरे ।। नीरज नैंनी कहा कहिवे स
तु बांधन बैंनी बंधे कच तेरे ।। ८० ।। दोहा ।। कुटिल
अलक छुटि परत मुख बढिगो इतौ उदोत ।।
बंक बकारी देत ज्यौं दाम रूपैया होत ।। ८१ ।। टी०
यह सु मुख पर बार छुटे तें सोभा अधिक भई है सु
सखी सखी सों कहति है सखी नाइक सों कहै ना
इकु नाइका सों कहै कवि की उक्ति है ।। ८१ ।।
कवित्त ।। जगि मगि रही चंद की अमंद उति बो
दिनी न होती होति आठौं जाम धांम तें ।। ताप
र सुदेस साजे सकल सिंगारु चारु न्यारइ बस
की घन स्यांम ब्रज बांम तें ।। लस प्रांन प्यारे की

ल

सौंनापैयहछूटनहीकुटिलअलकसोभा
लहीअभिरामनै ॥ यैनैमानवढिगपैाउमसि
उदोनवंकदीयैतैंवकारीज्यौंरूपयाहीनदाम
नै ॥ ९ ॥ ललाटवर्ननदोहा ॥ चोरिपनिचअकु
टीधनुषवधिकुसमसरतजिकोनि ॥ हनतुतरु
निम्रगतिलकसरसुरकभालभरितानि ॥ ८१
टीका यहनाइकाकुलटाजैललाटश्रृंगारहैस
षीनाइकोसौंकहतिहैनाइकुनाइकासौंक
हेहनतुतरुनम्रगयापदतैंकुलटाजानियै
८२ ॥ कबित्त कुबितमौंहकमांनललसैंतिहि
कौंजिहिकेसरिपोरिबनाई ॥ नाकोललैनीरुक
योतिलकैसुरकेगहिनापरभाललगाई ॥ ष
लनजोवनकेबनमेंइहिमाजिसिकारमनो
ज अठाई ॥ हेरिहहैजुप्रवीनकुरंगनिहीनद
याउरकैकठिनाई ॥ ८५ ॥ दोहा नीकोलसतु
ललाटपरटीकोजरितजराइ ॥ छबिहिवढा
वतरविमनोंससिमंडलमेंआइ ॥ ८६ ॥ टीका
यहललाटपरटीकोहैताकीउपमासषीनाइ
कसौंकहतिहैनाइकसषीसौंकहैनाइकामैं
कहैंकविकीउक्तिहैहीइ ॥ ८७ ॥ कबित्त जोवन
औनिजगमगहोतिसिंगारसुभासरसावतु
है ॥ रीझिरहैंलषिलालकेलोचनमोद्दहियै
भरिआवतुहै ॥ सोइहतटीकोजराइजमो

वि० स०
॥४५॥

तियभालुमहाछविछावतुहै॥मांनकुचंद
केमंडलमें दिननाइकसोभवढावतुहै॥ ८२
॥फुलमुलीदोहा॥झीनैंपटमेंफुलमुलीझल
कतिओपअपार॥सुरतरुकीमानौंसिंधुमें
लसीसुपल्लवडार॥८४॥टीका यहफुलमुली
[illegible] निकोवर्ननुहैसुउपमासषी
नाइकसोंकहैनाइकुनाइकासोंकहैसषीसों
कहैकविकीउक्ति॥८४॥कवित्त जाकेकरनाभ
रनअषकेदिवाकरसेनैंनइंदीवरनिकीछबि
सरसांतिहै॥अधरसुधाधरसुधाधरसेवद
नमेंकिलि तललितकपोलनिकीकांतिहै॥
अंतरलेलितझीनैंवसनमेंफुलमुलीकहैक
विछबिझलकतिऐसीभांतिहै॥मेरेजांनसा
गरमेंडारकल्पद्रुमकीपल्लवनिसहितझग
टहरसांतिहै॥८४॥वेंदीदोहा॥तियमुषलषि
हीरांजरीवेंदीवढतविनोद॥सुतसनेहमानौं
लियेविधुपूरनविधुगोद॥८५॥टीका येहना
इकाकेभालहीराकीवेंदीहैसुसषीसोभाउ
पमानाइकसोंकहतिहैकविकीउक्तिहोइना
इकासोंनाइककहैकहै॥८५॥कवित्त कनकेवर
नतनअगरमगरहोतऔपकोउजासुभौंन
आसपासकीनोंहै॥सकलसकेलिरूपविर
चीविरंचिवालषीनेकटिकठिनउरोजजगपी ॥४५॥

नौं है ॥ ललित ललाट पर हीरा की लसनि बें
दी कहै है कवि छ्हूटें मनु नेह भीनौं है ॥ मेरे
जान इंदु भरि अंक कबु धरि लीनौं है ॥ ८५ ॥ दोहा
कहत सबै बेंदी दियें आंकु दस गुनौं होतु ॥
तिय ललाट बेंदी दियें अगनित बढत उदो
तु ॥ ८६ ॥ टीका यह बेंदी दियें तैं मुष की सोभा
अधिक बाढति है सु नाइका सषी सौं कहतु है
अथवा सषी नाइका सौं कहै अथवा सषी ना
इका सौं कहै है कवि की उक्ति है ॥ ८६ ॥ कवित्त ॥
जो बनसौं मिलि जगमगति अपार ओपमह
तु निहकौ मनु देषें रस भोतु है ॥ कहै कवि छ्म
छबि पुंजनि सौं छाजि रह्यौ सरस सिंगार रुव र
सत सुधा सोतु है ॥ सब कोउ ऐसैं ही कहतु
सहि मंडल मैं बेंदी के दीयें तैं आंकु दस गुनौ
होतु है ॥ बहै नव नागरि के ललित लिलाट
पर बेंदी लागें बाढ्यौ अनगनित उदोतु है
८६ ॥ दोहा ॥ भाल लाल बेंदी ललित अछत ने
है बिराजि ॥ इंदु कला कुज मैं बसी मनौ राहु
भय भाजि ॥ ८७ ॥ टीका यह नाइका के ललाट
बेंदी अछतन की सोभा है सु सषी नाइका सौं
कहति है कवि हू की उक्ति है ॥ ८७ ॥ कवित्त ॥
उदय समै के राका चंद सो बदनु तेसी नई तर

नाईकीउमगगोरे रंगमें॥ कंचनकिनारीवा
रीकांकरेजीसारीमें इरिदरसतिकैसीमंगउ
नमंगमें॥ भालपररोचनकोबिंदुछबिदेतुना
पेअछतललसैंज्योंगगमरसुनिसंगमें॥ आसन
नितमकोसुधाकरकीकलामानौंवसीहैनि
संकअवनीसुतकेअंगमें॥८७॥दोहा॥ भाल
लालवेंदीछएछुटेवारछबिदेतु॥ गह्योराहु
अतिआहकरिमनुससिसूरसमेतु॥८८॥टीका
यहनाइकाकेललाटपैलालवेंदीहैअरु अल
कापैवारछुटेहैं सुसोभासषीकहतिहैना
इकसोंअथवासषीसोंअरुकविहूकीउक्ति
होइ॥८८॥कवित्त॥ नवनागरिकेमुषचंदकी
चारुप्रभासरसीरुहतेसरसी॥ तुनिवेंदीवि
राजतिभालपैलालविलोकतकाहिकरैनव
सी॥ अरुतापरस्यामसुदेससिरोरुहहेछुटि
छूयेअतिओपलसी॥ मनौंज्योंनिगहेअति
आहकैराहुनैएकहीबेरउभानससी॥८८
दोहा॥ पचरंगरंगवेंदीषरीउठतिऊगिमुषजो
ति॥ पहिरैंचीरुचिनौंटियाचटकचौगुनीहो
ति॥८९॥टीका॥ यहनाइकानाइकनैजेसीछबि
सौंदेषीहैतैसीयेभांतिसषीसोंकहतुहैसषी
नाइकसोंकहैसषीसोंकहै॥९०॥कवित्त॥ न
लिनलिलारलसैपंचरंगवेंदीषरीऊगिऊ
गिउठतिअमंदमुषजोतिहै॥ पंजनतेअंजन

सहित अनियारे नैंन अधर अरुन गोरें गरें की
री पो तिहै ।। गौं हैं गहि वे की छवि सौं हैं वे उठौं
हैं कुच वल्ने च कत कटि मुनि मन रस भोति है
।। गहरें सरूप नन पहरें चिनौं टी चीर चोगु
नी निकाई की चटक चोरु देंनि है ।। ८९ ।। सोरठा
मंगल विंदु सुरंग मुष ससि केसरि आउ गुर
।। इक नारी लहि संग रसमय लोचन जगत
९० ।। टीका यह सिष नष में लल्लाट को श्रृंगार
है सुसषी सौं कहति है कवि ह की उक्ति होइ
९० ।। कवित्त मंगल विंदु सुरंग विराजत भामि
नि भाल महाछवि छायौ ।। आनन चंद कला
धरि पूरन केसरि आउ मनौ गुरु आयौ ।। इ
सकहे इक नारी मैं आइ मनौ परि हरस्नेजो
गल षायौ ।। नैंन भरे रस की वरषा करि चैंन
समूह हियें उमगायौ ।। ९० ।। डिठौंना दोहा ।।
लौंने मुह डीठि न लगै यौं कहि दीनौं ईठि ।। दू
नी ह्वै लागन लगी दियें डिठौंना डीठि ।। ९१ ।।
टीका यह डिठौंना को वर्नन नाइका सौं
कहे सषी सौं कहे सषी सषी सौं कहै ।। ९१ ।। कवि
लौं हि लषें रति की दुति लाज ति राजति ओप
सिंगार कियें तैं ।। भौंह नु की वरनी न परै छवि
मौहनु न्यारइ ही मोल लियें तें ।। सुंदर आनन
डीठि न लागे कपोल लियौं हि तु मांनि हियें

तैं ॥ तो मुष पै आवल लागन लागी हूनी के डी
ठि डिठौना दियै तैं ॥ १०॥ दोहा ॥ पिय तिय तो हूं
सिकैं कपोल स्यो डिठौना दीनि ॥ चंद मुषी मु
ष चंद तें भलौ चंद सम कीनि ॥ १०॥ टीका यह डि
ठौंनां वरनन नाइका सों कहै है अथवा
स्रृंगारु कर्त्तें सषी सों कहै है ॥ १०॥ कवित्त प्यारी
को चारु सिंगारु निहारि हियैं पति के अति मो
द भर्यो है ॥ वाहि चषौंडा कही मुसिकाइ सही
विधि रूप सके लिष र्यो है ॥ जा मुष की अकलं
क प्रभा सकलंक मयंक पर्यौ निदर्यो है ॥ सो
मुष तैं वडिठौने दै आजु भलो यह चंद समा
न कर्यो है ॥ १२ ॥ मुषवर्नन दोहा ॥ दोहा वद
न उघारि द्रग सफल करै सब को इ ॥ रोज सरो
जन के परै हसी ससी की होइ ॥ १३ ॥ टीका यह मु
ष वर्नन है सषी नाइका सौं कहै है नवोढा के
प्रसंग मैं वनैं मानु छुडावे कों हूं कहै तो वनै ॥
१३ ॥ कवित्त लोचन लहे कौ फल सफल हमा
रो करि प्यारी प्रांनपति कौ सनेह रस लीन करि
॥ नैई पाई परमनिकाई की अवधि अवधूती
वृषभांन की कुंवरि अरवीन करि ॥ टारि घूंघ
ट कौ हा हा है उघारि मुष निजु छवि पानि
मैं पीके द्रग मीन करि ॥ कंज छवि छीन करि
ससि ही मलीन करि सौतिनुं कौं दीन करि प्या
रे कौं अधीन करि ॥ १३ ॥ दोहा सूर उदित हूं

सुदिन मन मुष सुषमा की ओर ॥ चितै रहत
चहूं ओर तैं निहचल षुष नु चकोर ॥ ९४ ॥
टीका यह मुष वर्नन सषी नाइका सों कहै के
वि की उक्ति है होइ ॥ ९४ ॥ कवित्त मुष को सम्
ह व्रषभांन की कुंवरि तेरे मुष को प्रकास भ्र
ग मगनु अमंद है ॥ याही तें विलोकि छवि
हर विलुट्ट कै मट्ट भांवरी भरनु फिरै त्या
रौन रनंद है ॥ ह्यौ से हु निसा कौं रहै विधिन
विनान कहू देषैं उमगतु अति आनंद को
होत है ॥ सकल विलास छाडि एक आसला
गे रहै भौंर जानै कमल चकोर जानै चंद है
९४ ॥ दोहा छप्यो छवीलो मुष लसै नीलै अं
चल चीर ॥ मनों कला निधि झलमलै कालिं
दी के नीर ॥ ९५ ॥ टीका यह नाइका के मुष की
वर्नन सषी नाइक सों कहै नाइका दूरि सो कहै
९५ ॥ कवित्त भांवती निहारी कौं गई ही लैंन
गिरधर ताहि देषैं मेरो मन पर्यो छवि भीर मैं
॥ हस षांन प्यारे तरुनाई की लुनाई होति
जगर मगर वाके सोंने से सरीर मैं ॥ पंकजन भ
वर कीर की प्रभा निहारि वदन उरोवेठी जी
नैं नीले चीर मैं ॥ मेरे जान द्वैरन कला निसि
झिलमिला तु इरस सुधा निधि कलिंदी के
नीर मैं ॥ ९५ ॥ वांनी दोहा कियहाइल चितची

इलगिवज्निपाइलनुवपाइ॥ तुनिसुनिसुनि
सुषमधुरधुनिकौंनलालललचाइ॥ ८६॥
॥ टीका यहनाइककी आमकिजांनिसुषीनु
इकासौं प्रीतिकेदाइवेकौं कहतिहैवानीवन
तुहै॥ ८६॥ कवित्त गजगतितेरीहेरीलटूतेव
हीभयेतापेसुनीपाइलकीझनकसुहाई
री॥ तवहीतैवाके उरलागीअतिचटपटी
तुवमिलिवेकौंललकेंतुदेककाईरी॥ वानी
केसुवनिहूतैमधुरसरसधुनिकाल्हिकेहू
तेरीउनवांनीसुनिपाईरी॥ काहेतेनराकेउ
रमदनमरूरउठ्याहीतेहौं कहतजरूरतो
सौंआईरी॥ ८६॥ दोहा छिनकछबीलेलाल
वहनहिजौलगिवतराति॥ ऊषमहूषपियू
षकीतोलगिभूषनजाति॥ ८७॥ टीका यहनाइ
काकीवानीकीमधुराईसषीनाइकसौंकहति
है॥ ८७॥ कवित्त जाकीसुनैंधुनिवीनकहागहि
लौजपिकीवनभागतिहै॥ जोसुनिकैकविहि
ष्मकहैसुनिकीमनसाअनुरागतिहै॥ जोसौं
छबीलेललातुमसौंवहैबालनबातेनुपा
गतिहै॥ तौलौंमहूषविपूषकीभूषनकैसें
हूभागतिहै॥ ८७॥ दोहा जरीकोरगोरेवदनव
ढीषरीछविदेषु॥ लसतमनौविजुरीकियें
सारदससिपरिवेषु॥ ८८॥ टीका यहनाइकाके

ऊषकी

सुषपरकिनारीकीसोभासषीनाइकसौंकह
तिहै॥१९८॥कवित्त आजुमैंनिहारीव्रषभानकी
दुलारीदुतिधारीअनिसकलसिंगारनतनसा
जिकैं॥जगमगजोतिनवजोबनकीदेषनही
द्रगनिकोंगयोदुषदंदुसबुभाजिकैं॥ननसुष
सारीनापेकंचनकिनारीगोरेआननकेचहूं
कोरफबीछबिछाजिकैं॥सरदकीपूनोंकेसु
धानिधिकेआसपासमानोंरह्योदामि
नीकौमंडलविराजिकैं॥१९९॥भौंहवर्ननदो॰
नासामोरिनचाइ द्रगंकरीककाकीसौंह
॥कांटोसीकसकतिहियेंगडीकटीलीभौंह
१९९॥टीका यहनाइकाकीभौंहनचाइवेकीछ
बिहैनाइकसषीसोंकहतुहै॥१९९॥कवित्त
मोतनहेरिपरोसनिसोंबनरानिकछूबनिता
रसबातकी॥येकरतीरतिकीदुतिहोतिनवा
कीनिकाईलषेंसमताकी॥नोकचेढाइउचा
इकैंओठनचाइकरीद्रगसौंहककाकी॥वा
छबिकीवेकटीलीसीभौंहकरेजेमेंसालसी
सालनिवाकी॥१९९॥नेत्रवर्नन॥ बारौंबलि
लोद्रगनिपै अलिषंजनम्रगमीन॥आधीडी
ठिचितैंनिजिहिकियेलालआधीन॥२००॥
टीका यहनाइकाकेनेत्रनुकीअधिकुलीछबि
लषनिदेषिनाइकुआधीनभयोसुसषीनाइ

बि०स० कासोंकहै २०० कारेऊपकारेरतना
४९ रे अनियारेसोहैंसहजढरारेमनमथमतवा
रेहैं लाजभररभरेभारेचपलनिहारेतारेसा
चेकेसेढारेप्यारेरूपकेउज्यारेहैं औधीचि
नवनिहीमैंआधीनकियोनैंहरिटौंनेंसेवसी
करकेलौनैंयेनिहारेहैं कमलकुरंगमीन
षंजनभवरवृषभानकीकुंवरितेरेनैंननु
पैवारेहैं २०० चमचमातचंचलनय
नविचघूंघटपटझीन मानहुंसुरसरिता
विमलजलउछलतजुगमीन २०१ य
हनाइकाकेनैत्रनुकीसोभासषीनाइकसों
कहैनाइकहैनाइकासोंकहैसषीसोंकहै
रूपकीरसालआछेदेषीअंजनवा
रेयेककेतीसोभासनीवाकेसौनैंसरीर
मैं दासीनटरनबहभाउमोहियनेंवाहूंवे
हीमुषदाकिगुरुलोगनुकीभीरमैं कहैके
विष्ठम अतिचपलविसालवाकेलोचनम
जुगलमलकतझीनेंचीरमैं केधौंनमनसो
रुहविनिरषिअधीनविधिमीनउछलत
मानौंसुरसरिनीरमै २०१ करेचा
हसोंचुटकिकेंषरेउडौंहैंमैंन लाजनवावे
नेरफरतकरतषुदींसनिंन २०२ य ४९

हनाइकामध्यानाइकाकेनेत्रनाकौरषा
हनैंदोऊनुकेवसषुदीसीकरतहैंसुसषीह
सोकहैहैनोषवनें॥२०२॥कवित्त नैंननवनाग
रिकेमेरलनुरंगअंगछविकीनरंगरंगरं
गनिधरैंधरैं॥मदनप्रवीननिकैंकेरिवोसधा
वतुहैघूंघटकीओटऐसोकौनिगुकैरैंक
रैं॥कीनैंचाहआउगीसोंचुरकिचपलहोन
घरेहीउडौहैंनेहउमगातननाईभरेकरन
षुदीसीपगधरतहैंरहैरैं॥२०२॥दोहा साय
कसममायकनैंयनरंगेत्रिविधिरंगगात॥
झषोविलषिडुरिजातजललखिजलजात
लजात॥२०३॥टीका यहनाइकाकेनेत्रनुकी
सोभासषीनाइकसोंकहैनाइकासोंकहैस
षीसोंनाइकुकहै॥२०३॥कवित्त सायकसे
घायकहैंनीषननेरलडोसेनसामअरु
नत्रिविधिरंगगातहैं॥कहैकविहंसजाके
उरमैंमिदतताहिसुधिनरहतिगातघूमि
मननातहैं॥येनेपुरभायेहैंविषमविषअं
जनसौंयाहीतैंविसेषविथाउरसरसातहैं
॥सफरीविलोकिजलविलषिडुरतिअगम
टकनविपनलजातजलजातहैं॥२०३॥
दोहा॥वरनेसरमैंनकेऐसेदेषसैंन॥हरनी
केनैंनानुनैंहरिनीकेयेनैंन॥४॥टीका य

षि०स० ॥५०॥

यनाइकाकेनेत्रनुकीसोभासषीनाइक
सौंकहतिहै॥२०४॥कवित्त॥चेरेकीनेंषंज
नकमैरेकीनेंकंजपुंजउपमा कैनेरेञ्रा
लिरंच कुलगैंनहै॥सोहतविसालयेरसा
लसालसोतितुरेषेंमनुहरतकरताचित
चैनहै॥चपलकटाछवरजीतनमदनस
रनुषकेनिकरञ्रोरदेषेञ्रेसेमैंनहै॥काम
दुषदैरनीकेव्रषभाननंदनीकेहरिनीके
नैंननुनैहरिनीकेनैंनहै॥४॥दोहा॥रजनसिं
गारमैंजनकियेंकंजनमैंजननदैन॥ञ्रंज
नरंजनहूंविनाषंजनगंजननैंन॥५॥टीका
यहनाइकाकेनेत्रनुकीसोभासषीनाइका
सोंकहैनाइकुनाइकासोंकहैसषीसोंकहै
प॥कवित्त॥कंज कुरंगगुमाननुगंजनपी
मनरंजनहैंञ्रनियारे॥षंजनमीननुकेमद
भंजनञ्रंजननहूंविनयेकजरारे॥लाजसेमाजे
सुसीलहंसीरसरंगभरेविधिमैंनसुधारे॥
लसकहैउपमाकहियेतियपाजगमैंदगनै
रेउञ्रारे॥५॥दोहा॥जौगनुगनिसिषयेसवै
मनौंमहामुनिमैंन॥चाहतपियञ्रदैतनासै
व्रतकानननैंन॥६॥टीका॥यहनाइकाकेने
त्रनुकीसोभाञ्रलतकनाईकोविलासुपिय
कीचाहसषीनाइकसोंकहतिहैसषीसषी ॥५०॥

सो कहै ॥ २०६ ॥ कवित्त ॥ तीनौं उपदेस महामु
निमीन के तन कौ जोग कला कुसल विमल्ल
विलसंत है ॥ तन मन मोह है नसौंये कभयौ चाहै
नहैं कांन नेकौं सेव तत्र गतन्नौ निवंत है ॥ हम
प्रांनै प्यारे की दुहाई जिं कैं देषत ही विरह क
लेस दुष सकल ने सत है ॥ सरल सुभाइ उरेम
ऋषरैं स्यां मछ्छ विप्यारी तेरे नैंन मन हर नम
हंत है ॥ २०६ ॥ पुतरी वर्नन दोहा ॥ सव अंग
केरि रोषी सु घर नाइकने हसिषाइ ॥ रसजुते रे
ति अनंत गति पुतरी पातुरराइ ॥ २०७ ॥ टीका
यह नाइका की पुतरी नु की सो भा अरू ने हकी
अधिकाई सषी नाइक सौं कहति ॥ २०७ ॥ कवि
चारु प्रभा पलकैं मनकैं म्र[illegible] हु पीत पदीप
हिरैं सुथरी है ॥ नाइक ने हसिषा सवे रस
मेद सधाइ प्रवीन करी है ॥ हमकहैं अति
चाइ नु सौं गति लेति मनौं वकु भाइ भरी है ॥
लेति रिझाइ मनौं अति चातुर पातुरराइ कि
धौं पुतरी है ॥ २०७ ॥ कटाछ दोहा ॥ लागतकु
टिल कटाछ सर क्यौं न होइ वेहाल ॥ कढ़त नु
हिय हि दुसाल करि तऊ रहत न टसाल ॥ २०८
टीका यह नाइका के नेत्र नाइका के हृदये में चु
भे हैं सु सषी नाइका सौं कहति है नाइक सषी सौं
कहै नाइका सौं कहै ॥ २०८ ॥ कवित्त ॥ मिदें सुधे
रती रतनेतौ तनकौ नवढावैं पीर जानिय है वा

नजियसकलउरातहै॥लागैं ब्रजनागरिके कुटिलकटाछ्ह सस्बमौंन होंहिविकलवि हालसबगातहैं॥विक्रमनिधानेअतिकार थ्यकेवांनहहनेमेरेजांनइनकेअनोषउतपा तहैं॥दृषियेनघाइउरकटके उसालकरिघ्र तेपैदेषोनटसालरहिजातहैं॥२०८॥नासा वेधकवर्ननदोहा॥वेधकअनियारेनयन वेधनकरिनिनषेधु॥वरवटवेचतमोहियो तोनासाकोवेधु॥२०९॥टीका॥यहनाइका केवेहकीसोभानाइकनाइकासोंकहतुहै २०९॥कवित्त॥अनियारेनैंनवरवेधनेवि रानैंमनकहाअचिरजुपैनेंसहजसुभाइ कौ॥तोहिनिरषिवृषभांनेकीकुंवरिअरनु नकीनरंगहीमेरेउरछाइकौ॥वरवटमेरो हियोवेधतुहैप्यारीतेरीनासिकाकोवेधुम नुरहैक्योंधिराइकौ॥सोहैंकिधौंनेहकीनिं काईकोनिकेतकिधौंसुषमंधुरमैंसुषिरुकी नोंग्राइकौ॥२१०॥नासाभूषन॥वेसरिमोती दुतिझलकपरीओठपरआइ॥चूनोहोइनं चतुरतियक्योंपटपोंछ्योजाइ॥२११॥टीका॥य हनाइकाकेओठमैंसेउज्जलुहैंजुमोतीकी झलकललाईकेमध्यस्वेतमनभेकलितहैसुय हचूनौंजांनिपोंछ्तिहैसषीयाकीओंतिहूरि॥

करनि है अथवा मोतीकी गल न करें षिस पीसों करे तो रूपगर्विता होइ सषीको वचन नाइ कासों ॥१०॥ कवित्त ओजु सिंगारु रुचन्यों तियने रोस ग्रम गजी तिस भूष है करी ॥ देषति आरसी वारहीबार हियो हरि कौ कहि क्यों न हरै वे सरि के मुकता की प्रभा अति उज्जल आनि परी अधरै ॥ होइ नचूं नौ लग्यो मृग लोचनि को पटसो अब पोंछि परै ॥१०॥ नथ दोहा इहि है ही मोती सुगथ तू नथ गरबि निसांक ॥ जेहि पहिरें जग दृग ग्रसति लसति हसति ॥ टीका यह नाइका की नथ की सीनांक ॥११॥ टीका यह नाइका की नथ की सोभा सषी कहति है अन्यो क्ति कबि ताहि मैं धनें ॥११॥ कवित्त ॥ सुरनि समनि नांक याही नें कहे तन मुकता निज्ञु नमुकतिपु री सी दरस निहे ॥ कहे कवि इस मनु मोहन कौं मोहि वे कौं मोहनी की सि छि मानों सोभा सरसति है ॥ तो पहिरें तैं जग नयन ग्रसति अति उति हे ॥ ग्रहे नथ व रसति मानों नासिका हसति है ॥ ग्रहे नथ उरमें निसंक तू गरवु करि द्वेही मुकता के ग्य सहित लसति है ॥१२॥ सीक वरननं दोहा जटित नील मनि जगमगति सीक सुहाई नांक ॥ मनो अली चंपक कली वसि रसु लेत निसांक ॥१२॥ टीका यह नाइका की नांक में सीक है

बि० स०
॥५२॥

ताकीउपमाकविकीउक्ति॥२२॥कवित्त॥सरन
मयंककेअंकमेंलसतुकीहूनेंकनिरषतही
हरतुचित्तचेतुहै॥प्रफुल्लितपंकमेंसोहैकरहा
टकिधोंतिलकोसुमनसुषसोंरमसमेतुहै॥नी
ठमनिजरतिछबीलीतेरीनांकपरसीकेधों
कौ
लसतिमहासोभानिकेतुहै॥मेरेजांनसुकलि
तचंपककीकलिकापैबैठ्योअलिसावकुनि
सांकरसलेतुहै॥२२॥लौंगदोहा॥जदपिलौंग
ललितौतऊहूनपहरिइकआंक॥सदासंक
वटियैरहैरहैचंदीसीनांक॥२३॥टीका॥यहना
इकाकीनांकमेंलौंगदेषिकेंरिनांकचंदीसी
देषिकेंसषीनाइकसोंकहहतिहै॥२३॥कवित्त
किधोंरतनछबिदीपकोसुमेरजाकीजगर
मगरजोतिहरनप्रकासिका॥कहैंकविहलम
चारुचंपककीकलिकाहैसहजसुगंधनिक
सतिजामैंस्वासिका॥जदपिलवंगअतिललि
तौनसतितऊतसमतिपहेरिउरपतिउरदा
सिका॥मानकेभरमभूलिमोंहनुविलोकिर
हेमगनैंनीनिरषिचंदीसीतेरीनासिका॥२
श्रवणवर्ननदोहा॥लसतुसेतसारीढप्योत
रलतर्यौनाकांन॥परयोमनौंसुरसरिसलिल
रविप्रतिविंबुविहांन॥२४॥टीका॥यहतर्यौना
वर्ननसषीकोवचननाइकहूकोवचनकवि
हूकीउक्तिहोइ॥२४॥कवित्त॥छबिसोंनिहारीश्रव

५२
॥५४॥

भांन की दुलारी आजु सकल सिंगार साजु ब
नौ है सु ठांन कौ ॥ कहै कबि हुलस चारु प्रभा की
निकाई लषें गरबु बिलास रस पुरबनितान कौ
॥ सोहतु सुदेस अति झीनी सेत सारी द्युति
रलनख्यौं ना झलकतु वाके कांन कांन कौ ॥ मे
रे जांन देबनदी जल में झलमलातु पेषियै प्रग
ट प्रतिबिंब भोर भांन कौ ॥ १४ ॥ कर्न भूषन बर्न
मालति है नट साल सी क्यौं हूं निकसति नांहि
॥ मन मथ के जा नौंक सी षुभी षुभी जियमांहि
१५ ॥ टीका यह नाइका की षुभी की सोभा नाइका
सषी सौं कहतु है ॥ १५ ॥ कबित्त राधिका प्यारी
के आंनन पै छबि तीनि हूं लोक की आंनि षु
भी है ॥ मैं निरषी जबतें तबतें मनि मेरी लुभा
इ रहे हौं ही षुभी है ॥ रूप के बोहथ कांन में वाके
बिराजति ओप अनूप षुभी है ॥ मालति है सु
मनौज के नेजे की नौंक मनौं उरमांझ षुभी है
१५ ॥ तरिवन बर्नन दोहा ॥ तरिवन कनक क
पोल दुति बिच बीच हीं बिकांन ॥ लाल लाल च
मकति चुनी चौका चीन्ह समांन ॥ १६ ॥ टीका
यह तरिवन की सोभा सषी नाइका सौं कहै ना
इका सौं कहै चतुर नाइका सषी सौं कहै तौ सुर
नगोपना होइ सषी कहै तौ लछिता होइ ॥ १६ ॥
कबित्त आजु की बनक के बरनत न बनति तेरी ब

वि०स०
॥५३॥

बिकीछटानुकीघटासीउमगतिहै॥ दमकति
सरससिंगारकीअपारओपजोवनेकीकांति
जगजोतिसीजगतिहै॥ कनकुतस्रौन नुकों
ललितकपोलकीदुतिमेंसमाइगयेंअद
भु-तगतिहै॥ हमप्रानप्यारेकीसोंचारसुच
मकतियेतोलालुलालचुनीचोकाचिकसी
लगतिहै॥१६॥ मुरासा॥ दोहा॥ लसेमुरासा
तियस्रवनयोंमुकतनिदुतिपाइ॥ मानोंपरस
कपोलकेरहेस्वेदकनछाइ॥१७॥ टीका॥ यहसे
तिनुकोमुरासानाइकाकेस्रवनमैंहैताकीसो
भादेषिसषीनाइकसोंकहतिहैअथवाना
इकाकेकपोलपेस्वेददेषिसषीनाइकासोंमु
रासाकोवर्ननुकरिकहैतोलछितजांनिये
८॥ कवित्त॥ आजुनवनागरीकीआगरीवि
लोकीछविदेषिवेकोंनैंनललचायललि
कतुहैं॥ कहेकविहमवहीवांनिकुविलोकि
वगेरीरूपगेनपतैंलगतपलकतुहैं॥ तरूनी
केस्रवनअमोलमुकताफलकेकरेनाभर
नऐसीआभाछलकतुहैं मेरेजांनपरसि
कपोलइनकेउरउलह्यौप्रस्वेदतेईबुंदझल
कतुहै॥१७॥ मुसिकानि॥ दोहा॥ नबसिबरूप
भरेषरेतोमांगतमुसिकांनि॥ तजतनलोचन
लालचीयेललचौंहीबांनि॥१८॥ टीका॥ यहनाइ ॥५३॥

का अथवा नाइकु मुसिकांनि देष्यौ चाहतु
है सु अपनैं नेत्रनु की आसक्ति कहतु है ॥८
॥ कवित्त ॥ देषत ही अंजन मे षरे हैं उमडे से पेरन
विचारत न गौंहूं ॥ रावरे रूप अनूप मौं पूरि रे
है है जऊ न षतें सिषलौंहूं ॥ मांगत है इतनें
परनो मधुरी मुसिकानि अघातन त्यौंहूं ॥ नैं
न भये अति लालची ये ललचानि की वानि
न छांडत क्यौंहूं ॥१८ ॥ हास्य दोहा ॥ नैंक हमैं
ही वांनि न जिल ष्यौ परनमुषनीठि ॥ चौका
चमकनि चौंधि मैं परति चौंधि सी डीठि ॥१९
टीका यह अप्रकारन हांसी जांनि गुरूसषी
नाइका सौं सिछा के प्रसंग मैं चौका की चम
ककी बडाई करे अथवा नाइकु नाइका सौं
कहे तौ संभवै ॥२० ॥ कवित्त सीसफूल दमक
तु तिलक कुंडल मलोतु जोति कौ समूह जग
मगतु अमंद है ॥ भाल की तिलक चारु रूल
कपोलनु कौ उमग्यो परतु अति दुति को
चंदु है ॥ हा हा वलि नैंक मुसिकांनि की निवा
रि वानि चकित करे रहतु वतुरन दंदु है ॥
चौका की चमक ही वषनु चक चौंधी होति
चाह्यो न परतु नीके चारु मुष चंदु है ॥२१॥
दोडी गाढ ॥ डारें ठोडी गाढ गहि नैंन वटोही
मारि ॥ चिलक चौंधि मैं रूप ठग मांही फांसी

डारि ॥ २० ॥ टीका ॥ यह ठोडी की गाड़ कौ वर्नन नाइकु नाइका सौं कहै सखी सौं कहै नाइका सौं कहै ॥ २० ॥ कबित्त ॥ केसनु के वन के उपकूल तनहीं भ्रकुटी गिरि ओट विचारे ॥ चारु लिलाट सिंगारु की चौंधि में देन दृगा ने हिहारे ॥ फांसि गरे मनुसि कांनि की पारि कै ठोडी की गाड़ कुवा गहि डारे ॥ प्यारी महा ठगु ते सो सरूप दुरया न जिनें नंवटो हितु मारे ॥ २० ॥ लीला दोहा ॥ ललित स्यांम लीला ललन वढी चिवुक छबि हून ॥ मधु छक्यो मधुकर रूपस्यो मनौं गुलाब प्रसून ॥ २१ ॥ दोहा यह नाइका की ठोडी पे लीला की सोभा सखी नाइक सों कहति है ॥ २१ ॥ कबित्त कुंकुम गारि कियो मनौं देऊ महा सुकुमार सुगंधु की भौंना ॥ रूप सुधा भरयो चंद सो आंनन पीतम के मन को ललचौंना ॥ ठोडी की गाड़ मैं स्यांम लविंदु निहारत लख सख्यु के मन गौंना केमधु पान गुलाब के फूल मैं मत्त परयो मनौं भौंर कौ छौना ॥ २१ ॥ दोहा ॥ घरी लसति गोरी गरें धसति पांन की पीक ॥ मनौं गुलीबंद लाल की लाल लाल दुति लीक ॥ २२ ॥ टीका ॥ यह कंठ वर्नतु है सुकुमारता सखी नाइका सों कहै अथवा नाइका सों कहै ॥ २२ ॥ कबित्त ॥ प्यारे में प्यारी तिहारी लखी न खतें सिखलौं सुनि काई भरी है ॥ केसरि की सुकुमारि मनौं छबि उज्जसों

आपविरंचिकरीहै॥गोरेक्षेरोरैगरैंमनुमो
हतिसोहतिदीककीलीकपरीहै॥चारुगुली
वेदलालेकीलालसमैंडुनिकीप्रतिलीकप
रीहै॥२२॥कुचवर्नन॥कुचगिरिचढ़िअति
थकितह्वैचलीडीठिमुषचाड॥फिरिनटरी
परियेरहीपरीचिबुककीगाड॥२३॥टीका॥
यहअंगदेषतदेषतदृष्टिडीठीकीगाडमेंजा
इपरीसुटरतनांहीसोनाइकाअपनीअवस्था
नाइकासोंकहैअथवासषीसोंकहै॥२३॥का॰
डीठिनदीत्रिवलीनरिनींछिरुमावलिकांन
नतैंनिकरीहै॥पीनउरोजपहारचढीअतिथा
कितऊ.नउहोठहरीहै॥चाहिबलीमुषमंड
लकीछविवीचहीलैविधिऐसीकरीहै॥ठो
डीकीगाडमेंजाइपरीसुपरीयेपरीनतहांते
टरीहै॥२३॥दोहा॥चलननपावतुनिगमम
गुजगुउपज्योअतिचासु॥कुचउतंगगिरिव
रगयोमैंनामैंनमवासु॥२४॥टीका॥यहकु
चवर्ननुनाइकुनाइकासोंकहैसषीसोंकहै
तौहूवनैं॥२४॥कवित॥छूटनेमालमुनिद
नुकेमनमांनविसातिलेकोनिबुरयोहै॥वे
दकोपंथुचलेकहिकैसंसवेजगमैंअतित्री
गुरयोहै॥छमकहेत्रिवलीसरितारुमली
वनुपासगदागुचयोहै॥उचउरोजपहार

वि०स०
।।५५।।

केछोरमनोजमहीपमवासुगयोहै।।२४।।
कंचुकी।।दोहा।।उनकुचविकंचुकीचुपरी।
सीरीसेन।।कविअंकनिकेअरथलौंप्रगटरि
षाईदेन।।२५।।टीका।।यहकचुकीकेवीचकु
चसोभाउपमानेहतिनकीघभादेषिनाइ
कुनाइकासौंकहेसषीनाइकासौंकहेसषी
नाइकसौंकहै।।२५।।कवित्त।।कंचनवरेनम
न्हरनअडोलगरुवेसेगोलगोरेसीसस्यामि
नाधरतुहैं।।उन्नतकरेरषरेचीकनेतुनाई
भरेमदनवेसीकरसेमनकोंहरतुहैं।।ऐसेंकु
चमीनीसेनकंचुकीतिलोंछीमांझप्यारीयें
दुरायेनदुरतउघरतुहैं।।कहेंकविहंसजे
सेंसुकविकेआंकमनुमेंअरथउमगिडी
ठिप्रगटपरतुहैं।।२५।।उरवसी।।दोहा।।उरमा
निककीउरवसीडटतघटतदृगदागु।।झल
कतिवाहिरभरिमनौंतियहियकोअनुरागु
२६।।टीका।।यहउरवसीकीसोभासषीनाइ
कसौंकहतिहैजोसषीनाइकासौंकहेतौ ति
यपदुसंबोधनुहोरनाइकाल्छितजोनि
ये।।२६।।कवित्त।।भोत्तीकीनिकाईवरनत
नगुननतमोपैरूपकीनरंगानिअनेउवरसा
योहै।।अंगअंगआभूषनजोतिजगमगहो
तिऐसोतोवनावरनिरंमोहनपायोहै।।मा।।५५।।

निककौ लसी उरबसी तिय उर पर इगनुकौ
उघटं उदेषतन नसायो है ।। मेरे जान पूरन कै अ
नरकौ अनुरागु हियो भरि वाहि रहुलकि छ
विछायो है ।।२६।। हाथवर्ननदोहा ।। वदै कहा
षत आपसौं गररे गोपीनाथ ।। मौव हिहैं जौ
राषिहै हौ हाथनु लषि मनु हाथ ।।२७।। टी
यह नाइकाके हाथकी सोभा सषी नाइकसौं
कहति है ।।२८।। कवित्त चारु हथेरीनु की छ
वि पैर हहो तिरतो पल हू की रजाई ।। कोरिफ
रीनु हूनैं सुथरी अंगुरीनु भरी अतिकोमलं
नाई ।। राषिहौ हाथन वेली के हाथ लषें मनु
मौवरिहौ चतुराई ।। रूपमयानिनु की अपनैं म
नसां मनिसां कथरी गरुवाई ।।२७।। दोहा न
षतवि चूरनु डारि कै ढगु लगाइ निजु साथ ।
। रह्यौ राषि हठि लैगयो हथ्यो हथी मनु हाथ
२९ ।। टीका यह हाथकी सोभा देषि नाइककौ
मनु हाथ नाही रह्यो सु नाइकु अपनैं मनकी
गति सषी सौं कहै है नाइका हू सौं कहै ।।२८
कवित्त ।। बुंदलनुसैं महिदी के नुरंग उहीं अ
रुनाई केरंग रचेकैं ।। रेष बसीकर मंत्र रिषा
इकैं साथ लगाइ लियो अपनें कै ।। चारु नष
ऊनि चूरनु डारि अधीन कियो वक्रभांति

मुरैकैं॥ राधेंहूपै दूरह्यौमनहाथहरयोंहरयौ
हाथुगयौसुमिलैकैं॥ २८ ॥ अंगुरीवर्ण
नं दोहा॥ गोरीछिंगुनीअरुननषछलासपों
मछविदेश॥ लहतिमुक्तिरतिपलकुयहनै
नअवैंनीलेइ॥ २९॥ टीका॥ यहनाइकाकीअं
गुरीकीसोभानाइकुकहतुहैनोइकासों॥ २९
कवित्त॥ कौंवरीगोरीलसैछिंगुनीअरुनं
लषभानषकीसुषदैंनी॥ ताप रस्योंमछला
कीपकवीछविनैनतुकौंलपिलागगतिअैनी॥
लोचनमंतलहैंरतिमुक्तिनिमेषककदेषतही
सुगनैनी॥ तोकरमांझविराजतिराधिकेती
रथ्थराजकीरीतित्रवैंनी॥ २९ ॥ लोटदोहा
वटननि॥ कसिकुचकोरइचिकटनगोरमु
जमूल॥ मनुलुटिगोलोटनचटनचोंटतऊं
चेफूल॥ ३०॥ टीका॥ यहनाइकाजोछविसोंद
षीहैसुसषीसोंकहतुहै॥ ३०॥ कवित्त॥ वेनअौ
जुलबीअषमोंनसुताजेगिजोतिरहीचहुं
फूलनिकी॥ चिकुंटीविनमैंउकसायेंभुजाव
हचोंट नउन्नतफूलनिकी॥ वदितीकरिते
कुचकोरनुकीरुचिचारुषभाभुजमूलनिकी
॥ लुटिगोमनुलौटविलोकतहीछविमोहै
नकेमैंहूमूलनिकी॥ ३०॥ दोहा॥ करउराइचं
घटकरतउमरतपटमुकरौंत॥ मुषमोंटैं॥ ५८॥

टीलखनलषिललनीकीलोट॥ ३१॥टीका॥ य
हनाइकाकीलोटकीसोभानाइकनैंदेषीहैं
सुसषीसषीसोंकहतिहै॥ ३१॥ कवित्त॥ जाति
हीवालगलीमेंअलीसंगआवतमोंहनुदे
ष्योअगोटै॥ ज्योंकियघूंघटहाथउठाइकैंत्यौं
उसरीपटकीगुमरोटैं॥ सोछबिमोपैकहीन
परैकछुकोरनुकोरिलुटीसुषमोटैं॥ लाल
लष्योअतिमोदहियेंनवनागरिकीनिरषी
जबलोटैं॥ ३१॥ कटिवर्ननंदोहा॥ लगीअन
लगीसीजुविधिकरीबरीकटिषीन॥ कियेंम
नौंवहीकसरिकुचनितंबअतिपीन॥ ३२॥ टी
यहनाइकाकेंअंगजोवनआयेतेंघटिव
ढिकेगयेहैंसुसषीनाइकसोंकहतिहैकवि
हकीउक्तिहोइ॥ ३२॥ कवित्त॥ रूपसोंचैंटोरर
चिपचिकैंसुधारेविधिअंगअंगसकलसु
देसरसमीनेंहैं। तापेनरूनाई [illegible] मैंवनाईक
छूऔरैविधिषीनकरेपीनअरूपीनकरेषी
नेंहैं॥ छोलिछौंटिलाकुंअतिसुछिमकेरा
ष्योताहिलचककतजांनिकेंजतनअमेकीनें
हैं॥ करिहाकीकसताकीसाधिकेंकसरिमा
नौंउरजनितंबअतिपीनकरिदीनेंहैं॥ ३२॥
दोहा॥ लहलहातितनतरुनईलचलगलौं

विं॰स॰
॥५७॥

लफिजाइ॥लगेलांकलोइनमरीलोइ।नले
तिलगाइ॥३३॥टीका॥यहनाइकाकीसोभाह
षीहैसुनाइकुसषीसोंकहैहैतोसंभवै॥३३॥
॥कवित॥लकलकेलेनमेलहलहातनर
नईनाकीनइअरुनईरहीछविछाइकें॥
कुचनुकेभारचपिलगेलोंलफतिजवच
लतिगयंदगतिसहजसुभाइकें॥कहेकवि
हुम्नषसिषलोंलुनाईभरीमानोंमहा
मोहनीनैंदेहधरीआइकें॥सुछिमलस
तुअंचारिकोसोआंकुआसेजगेलांकुवा
रीलेतिलोइनलगाइकें॥३४॥दोहा॥बुधि
अनुमानप्रमानस्रुतिकीयैंनीठिहराइ
॥सुछिमकटिपरब्रह्मकीअलषलषीन
हिजाइ॥३४॥टीका॥यहकटिवर्ननसषीसषी
सोंकहैनाइकासोंकहैकविकीउक्तिहोइ
३४॥कवित॥दोऊषंभुन्यारेन्यारेअलगेल
गाइघरेनाहीआधिनिरधारहोतिनविना
मनें॥कौनचतुराईसोविरंचिनिरमईपरत्ति
सोनटरस्तुसज्जनीनुहूकेधांननमें॥यंहनि
रषीनपरतिकिसोदरीकीषीनकरिजान
तसुजाननीठिवुधिअनुमाननें॥देषतनको
ऊजियजांनियसोऊपरब्रह्मकीअलषवे ॥५७॥

ति

दवचनप्रमांनतेै॥३४॥जंघदोहा॥जंघजु
गललोइननिरषकरैमनौंविधिमेंनु॥केलि
नरुनिदुषदैंनयेकेलिकलासुषदैंन॥३५
॥टीका॥यहजंघनकीसोभानाइकसषीसों
कहैनाइकासौंकहैसषीनाइकासौंकहै॥
३५॥कवित्त॥कारेकरेरेकुरूपकरीकरक्यौं
समहोतप्रभाइनकीके॥तोहतसुंदरपीन
सचिक्कनमोहनहैंमनमोहनपीके॥केलिक
लोलकलाकेनिधानमहादुषदाइकहैंक
दलीके॥तोजुगजंघविरंचिमनोजवनाइ
करेनिरलोइनहीके॥३५॥दोहा॥पाइमहाव
रदैंनकौंनाइनिवैठीआइ॥फिरिफिरिजा
तिमहावरीएडीमीडतजाइ॥३६॥टीका॥यह
पाइनकीसहजअरुनाईकौंअधिकसषी
सषीसौंकहतिहैनाइकहसौंकहैतोसंभवै
३६॥कवित्त॥पाइमहावरदैंनकौंनाइनिवा
इनिसौंउमहीअतिआई॥एडीगहीठकुराइ
निकीकरजामैंनुरीतिहलौकलुनाई॥जांनि
महावरमीडतिज्यौंहीज्यौंधोवतित्यौंसरस
तिललाई॥कोमलताईप्रभाप्रगुनाईकिलौ
वपरी किसवैंचतुराई॥३६॥दोहा॥कौंहरसीयेडी
नुकीलालीदेषिसुभाइ॥पाइमहावरदेइकौ

वि॰स॰
॥५८॥

आपभईवैपाइ॥२७॥टीका॥यहनाइका
कीएडीनुकीसोभासषीनाइकसौंकहति
हैसषीसौंकहै॥२८॥कवित्त॥कौंहरूकहाहै
बंधुजीवकौविलोकैबोचाहैलाजभितेकम
लमुदितफूलेफूलिकै॥मांनिकपंनारीवि
वाकेसेपटतरहोनऐसीउतिसहजउठलि
ऊलिकै॥चाइनिसौंपाइनिमहावरलगाइ
वेकौंआईठकुराइनिनिकटअनुकूलकै॥
कहैकविकलसचा॰रूचरननविलोकनहीभी
इनिविचारीगईसंवसुधिमूलिकै॥२९॥दो॥
अरूनवरूनतरूनीचरनअंगुरीअतिसु
कुमार॥चुवतिसुरंगरंगसीमनौंचपिवि
छियनिकेभार॥२५॥टीका॥यहचरनांगुली
नुकीसोभानाइकुसषीसौंकहतुहैनाइक
हूसौंकहै॥२८॥कवित्त॥मंदगतिहेरैंकैंहंसनल
लेहतकलसमदगयंदनुकौगरबुगरतुहै
॥हेमसपोनप्यारेचारूचरननिहारैंताकेजल
जसमहहजियलाजहियरतुहै॥अतिसुकु
मारतरूनीकीपगुअंगुरिनुऐसोअरूनाई
कौउजासुउपरतुहै॥मेरेजांनपरयोविछि
यनिकोअपारभारुताहीतेंउमगिरंगुनिचु
स्यौपरतुहै॥३०॥दोहा॥पगपगमगअगमन
परतचरनअरूनदुतिझूल॥ठौरठौरलषिय
॥५८॥

ल

नउठे ठुपहरिया केफूल ॥३९॥ टीका यह नाइका
के चरननु मैं अरुनता की अधिकाई सषी सों
कहति है नाइकु नाइका सों कहै सषी सों कहै नाइका
सषी सों कहै ॥३९॥ कवित्त पलिका तें उतरि प्रवी
न प्रान प्यारी धाम धरनी मैं सहज चलति ग
ति है ॥ कमल प्रान प्यारे ऐसें कों निगनि हारि तव
चरन अरुन दुति अति उमगति है ॥ जहीं जहीं
औंडी ह्वै बिपति अगौंडी आं निति नकी फल
कंजगजो तिसी जगति है ॥ नहीं नहीं फूल दु
पहरिया से रेखियत कौंन कीन मति देषें प्रेम
सों पगति है ॥३९॥ दोहा ॥ सोहत अँगुठाइ कै अ
नवट जसौं जराइ ॥ जीत्यौ तरिवन दुति सु ढ
रि परयौ तरनि मनौं पाइ ॥४०॥ टीका यह नाइक
के सृंगार कौ आरंभु है सु एकु ही अनौटु प
हरयौ है ता की उपमा सषी नाइकु ही सों कहति
है ॥४०॥ कवित्त प्यारी सिंगार संवारतु वेंदी अ
वौं न कछु आयौ न हीं दिधि दांनी ॥ ज्यौं ही जनी अ
रुत्यौं ही रही नव नागरि नेंद किसोर कें रूप दु
मांनी ॥ नीकौ जरा उ अनौट लसे पग कें अंगु
ठा उपमां सु वषांनी ॥ पाइ पर्यौ है मनौं रवि आ
इकें तेजकी हारि नलौं ना सो मांनी ॥४०॥ सु
कुमारता दोहा ॥ सरस कुसम मंडरात अलि
न झुकि झपटि लपटात ॥ दरसत अति सुकुमा
रतनु परसत मनु न पत्यात ॥४१॥ टीका यह

सुकुमारता विशेष है अरु कौऊकसषीना
इककौ अमन मिलौं जांनति है सु नाइककी
सषी भ्रमर के प्रसंग करि अन्योक्ति सों वाकौ
ग्रसुनि शारनु करति है ॥४॥ दोहा ॥ सुमन कौ
अगारु उपवन कौ सिंगारु चारु सौरभ विवि
धि उमग तुजा कौ गातु है ॥ सरस कुसुमनु सर
स अति सोभा सान्यौं निरषि लुभानौं अति दे
षैं न अघातु है ॥ कहै कवि ठेस अति रीझ पग्यौ
आस पास रहै मउरानौं न कपटि लपटातु है
॥ हरसनु वा कौ तनु अति सुकुमारता नैं पर
सनु वा कौ मनु क्यौं हूं न पत्यातु है ॥४१॥ दोहा
भूषन भार सम्हारि है क्यौं इहि तन सुकुमार
॥ सूधे पाइ न परत धर सोभा ही कै भार ॥४२॥
॥ टीका यह सुकुमारता है सु सषी नाइका सौं
कहति है प्रयोजनु यह है कि भूषन पहिरत
विलंबु न होइ या तैं वेगि चलै ॥४२॥ कवित्त ॥
विरच्यौ विरंचि तेरौ अति सुकुमार तनु औ
प्यौ तिहूं लोक की लुनाई कौं सकेलि है ॥ हे
स भांन प्यारे की सौं तेरी यह रुति राषी मैरै म
न मोह हरु हूं नैं नतु मैं लि है ॥ सोभा ही के भा
र सूधे पग न परत मग कै ऊंठौ रत्नचे कतिं
लगौ ज्यौं न वे लि है ॥ हितू हौं तौ हितु करि वूझ
ति हौं हाहा कहै कैसैं आभूषन नु कौं भारी ॥५२॥

२

मारीमारु मेलिहै ॥४३॥ दोहा ॥ मैंवरजीकैवा
रव्है इतकत लैनु करौट ॥ पघुरी लगैं गुलाबु
कीपरिहैं गातनपरौट ॥४४॥ टीका ॥ यह नाइकावि
प्रश्चनवौढाहै सयनमैं थिरतानाहीं यातैंस
खीउरुहिषाइसयनुकरावतिहै ॥४३॥ कवित्त
मैंवरजीवकुवारअरेहे नहिमाननितूवकहा
धौंकरैगी ॥ लैनि करौट इतै मुरिकैंआरेखीउ
रकौलौंइतैकधरैगी ॥ कोमलआपनैंअंग
निहारितवैसुकुमारि सुकौंसम्हरैगी ॥ पांघु
रीगातगुलाबकीजोगडिजैहै कहूतो परो
टपरैगी ॥४४॥ दोहा ॥ नजकधरतनहरिहियथ
रिनाजुककमलावाल ॥ भजतभारभयभीत
हैंघनचंदनवनमाल ॥४५॥ टीका ॥ यहनाइ
ककेहृदयमैंजुनाइकावसतिहै ताकीप्रीति
कौअधिकारसषीसषीसौंकहतिहै सषीना
इकासौंकहै तौप्रीतिनिवेदनु ॥४६॥ कवित्त
नि जुभक्तिनिकेहितकौंकमलापतिसंतत
चितविचारुकरैं ॥ अतिचंदनुअंगलगावै
नहींवकहूलनु नीनहिमालधरैं ॥ अरुजो
कवहूंकसिंगारसजैं कविहलमतऊकलकै
सैपरैं ॥ हहिमोचहियैंनिमघौसउरैं अतिनाजु
कश्रीमतिभारमरैं ॥४७॥ दोहा ॥ छालेपरिवे
केडरनिसकैनहाथछिवाइ ॥ भभकतहिये

वि॰ स॰
॥६०॥

गुलाबके झमाझमे यत पाइ॥४४॥टीका य
हनाइका के चरननुकी सुकुमारताा सषी ना
इकुसौं कहति है सषी हूसौं कहै॥४५॥कवित्त
पौंनलगैं अति पंषकी होति चलाचल कैसें
बयारि करै॥झम कहै कहूं केसरि अंगलगें
ये तौ सोति उछाह मरैं॥प्यारी के ना छुके पाइ
निहारिकैं हाथ लगावनि दासी डरैं॥धोवति
फूल गुलाबके लेयै न ऊफन कैं मनि छीले
परैं॥४५॥सिक्षा दोहा॥लग्यो सुमनु ह्वै है
सुफलु आन पुरो मनि वारि॥वारी वारी ओ
पनी सींचि सुहृदता वारि॥४६॥टीका यह स
षी कौ वचन नाइका सौं है सिक्षा॥४६॥कवि
वारी है न बावरी ह्वै देति लेड वाह्यौ कौं मानु
करिवे कौं उर मौ सरू विचारिये॥अबही तौ
नेह बेलिन बलकन गाई ताहि जतन नजतन
हठ करि पौ षिपारिये॥लाग्यो है सुमनु सुनो
हो हिगो सुफलु अब कहै कवि हठ सरितु आ
नतु निवारिये॥सीष मांनि मेरी मनि मौ तिनु
के चींन करै प्यारी प्रीति रसही सौं सींचि हि
तवारिये॥४६॥दोहा॥दीयौ अरघु नी चैं च
लौ संकट भानै जाइ॥सुचिती कैं और सबै
ससिहि विलोकैं आइ॥४७॥टीका॥यह नाइ
का के मुष की सौ भास षी कहति है॥४७॥कवित्त॥६१॥

सजि निसाकर अथौ रियो अवनी चैं चैंना
वलि संकर मानैं ॥ औरनु की डुबिताई मिटै
जिनि साधि उपास मनोरथ ठानैं ॥ चंद उतैर
नतो मुष चंदु कितै विन वैं चित सोच समानैं
॥ वे अपनैं ब्रत दूरे करैं नु रही चकि आंचर
देउर आनैं ॥४७॥ दोहा ॥ दूरहि हों ही सषि लषों
चहि न अटा वलि वाल ॥ सव हित विनु
ही समि उदै दीजनु अरघु अकाल ॥४८॥ टी०
यह नाइका के मुष की सोभा की अधिकाई है
सु सषी नाइकसों कहति है ॥४८॥ कवित्त हौं
ही अटा चढि हौं ससि देषने हू सजनी रहि हिंयों
गन हीन न ॥ और किती कि व्रती कि व्रती व
निता सव देषन चंद उदो छिन ॥ तो मुष देषि
उछाह भरी सव रैहिंगी अर्घ मयंक उदै वि
न ॥ और न के मन भंग करैं मति हो हि गो पा
न कु मानें कह्यौ किन ॥४८॥ दोहा ॥ कहे लल
है नैन ड्रग करैं परें लाल वेहाल ॥ कहूं मुरलि
का पीत पट कहूं मुकट वन माल ॥४९॥ टी०
यहां नाइका के नेत्र देषि नाइक की जु रसा न
ई सु सषी नाइका सों कहति है प्रयोजन कि
नेरी वाहै है तू वलि ॥४९॥ कवित्त नैंचि नइ
जवते नवनैं उह भाव रयौ चितु चेनु रयौ

है॥ पीतपटी लकुटी कितहूं अरु मोरकिरीटि
कहूं बिसर्यो है॥ त्यों लिगई बनमाल हूकी सु
धि हाल लला षेमनु मेरो डर्यो है॥ लाडिलीनैं
नलाउ तें कहा करदेषिनो लाल विहाल पर्यो
है॥४९॥ विनयदोहा॥ पियमन रुचि कैबोक
ठिन तन रुचि हो न सिंगारु॥ लाष करो आंषि
न बढैं बढैं बढायें बारु॥५०॥ टीका॥ यह नाइका
सिंगार करत है देषी सु सषी नाइका सों कहति
है स्यांम सौतिनिको श्रृंगारु देषि याकैं ईरषा
भई सु सषी सों कहति है या मैं श्रम गर्व ताहू
होइ॥५१॥ कवित॥ वे अरु कुंज सदन बिलोक
तु हैं तुव मग तेरो नाम मोहन रटतु बारबा
र ही॥ उठि चलि हेलि मिलि मानि रंगरली श्र
ली मेरो कह्यौ मानि अब नगर तिक हारही॥ पि
य मन बस करिवो ई है कठिन अरु तन न
डु निसरस ति साजें उ सिंगार ही॥ कहै कवि हम्म कीजें
लाष कुजतन नन ऊलो चन ने बढन बढायें
बढैं वार ही॥५०॥ मनाइबौ दोहा॥ गहलीग
रबन कीजिये समै सुहागु ही पाइ॥ जियकी
जीवनि जेठ सो माह न छांह सुहाइ॥५१॥ टी
यह सषी की सिषा है अरु जो जुप्रा का निष्ठी
के भेद में यासों नइका कों हित देषि सौतिक
है तो हूं संभव ईरषा संचारी हू होइ॥५१॥ कवि॥ ६१॥

अलिहौंसमुझावतितोहियहेनजिमानहहारु
घरेहिहमैं॥ फलकौंनलेहैवेलिजोवनकौम
नमोहनसोंमिलिकैयोंनरमै॥ लइवावरीपाइ
सुहागसमों जिनिएतोगुमानधरैजियमैं॥ स
वकीवहहजेहमैंजीवनिमूरिसुद्धाहसुहाइन
माहसमै॥५१॥ मिलिवेकौदोहा॥ सघनकुंजघ
नघनतिमरअधिकअंधेरीराति॥ नऊनदु
रिहेस्यामयहदीपसिषासीजाति॥५२॥ टीका
यहनाइकुनाइकानिसंककुंजमैंवैठेहैंसुगु
रुसषीनाइकसोंकहतिहैयाकीदीसिवनैनु
करिसिछाकहतिहैअथवानाइकुअंतेरंग
सषीसोंकहैयाकौंकुंजमैंहलैचलितहौंस
षीसौंकहिवेसंभवै॥५२॥ कवित्त॥ रैनिअंधे
रीनेहस्यौपरैकरकुंजसवैनसपुंजनिछा
ई॥ धूंमघनेंधूमतैघनहूंहअमैदमईतमकी
सरसाई॥ मेचकसाजिसिंगारकैंजेहपिअ
ईसंककियैंचतुराई॥ दीपसिषासमदीप
तिलालनऊयहवालदुरैनदुराई॥५२॥ मि
लिवेकौदोहा॥ फूलीफालीफूलसीफिरतिज
विमलविकास॥ भौरतनैरंयांहौंहिलैचलत
नोहिपियपास॥५३॥ टीका॥ यहमनाइवोस
षीनाइकासोंकहतिहै॥५३॥ कवित्त॥ निरषि
निकाईतेरीहौंतौविकाईवलितुहूअलवे

ली कछु मेरौ कह्यौ बैरंगी ॥ नेरी उतिरतिनर
ती कलागैसाचीकहिकौलौंऐसोहठउरथ
रेगी ॥ फूलीफलीफिरतिसिंगारसजैसोतिने
रीतिनकैगुमानकहिन्धौंकबहरैमी ॥ मोर
कीतरैयांसमदेषियैंगीप्यारीसहितुकरिज
बहंपियाओरबरेगी ॥ ५३ ॥ सिंगारबौदोहा
ननन्हेषनअंजनइगतुपगनिमहावुररंगु
॥ नहिसोभाकोंसाजियतुकहिवेहीकौअं
गु ॥ ५४ ॥ टीका यहनाइकाकेअंगकीस्वभा
विकसोभासषीकेहतिहैनाइकासषीसोंक
हैतोरूपगर्बितहोइविछिपनहाउहसंभ
वे ॥ ५४ ॥ कवित्त सहजेअरुनगुलफनितेंउ
ठतिछटातिनकोनिकटकहाजावकेकोरं
गुहै ॥ गातनकीगुराईआगेंकंचनकेआभूष
नफीकेसेलगतरंचसोभाकौनसंगुहै ॥ अं
जनहूंआंजेबिनुनैंनकजरारेदेषैनरुनी
अनेकनिकोहोतुमनभंगुहै ॥ नोतनासिंगार
कछुसोभाकोनसाजियतुजांनिअहिवातही
कौअंगुहै ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ बैंदीभालतमोरमुं
षसीससिलसिलेबार ॥ दृगआंजेराजेषरीयु
हीसहजसिंगार ॥ ५५ ॥ टीका ॥ यहनाइकाकी
सहजसोभासषीनाइकसैंकहतिहै ॥ ५५ ॥ क०
बैंदीछविछाजतिहैललितलिलारपरनीकी ॥ ६६ ॥

नवजोवनकीजोतिनिरषनिहै ॥ सिलसिलेस्या
मसटकारेसुकुमारघाररनिरषिसिवारपांनिस
रनिसरनिहैं ॥ अंजनमहूंअधरअनिअरुन
नमोरेमरेपंजनसेडगनुमेंअंजनधरनिहै
॥ सहूजसिंगारयेहीराजनअपारउतिसोति
नुकीआंषिनुमेंछारसीपरनिहैं ॥ ५५ ॥ कुमि
तौदोहा ॥ परीपातुरीकांनकीकौनवहांक
वांनि ॥ आककलीनरलीकरैअलीअली
जियजांनि ॥ ५६ ॥ टीका ॥ यहनाइकाकेमनमें
नाइककोअभ्यासनिजांनिभ्रमुभयोहैसु
सषीनिवारनुकरनिहै ॥ ५६ ॥ कवित्त ॥ बात
कहैकोऊपौंईजोआंनिकेंनूमनसोईसु
तांचीकैजांनिहै ॥ जांनिपरीषरीकांनकीपा
तरीसीबीकिनेकहिधौंयहवांनिहै ॥ छोडिहैं
कौंमहुमालतीवेलिमलीरसरूपरलीसुष
दांनिहै ॥ आकवलीपैअलीसुषपाइअली
कहिहैरलीकवमांनिहै ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ तोरस
राछौआंनवसकरैकुटिलमतिकूर ॥ नीवनि
वौरीलगैकोंवौरीवाबिअंगूर ॥ ५७ ॥ टीका
यहनाइकाकेमनमैंनाइकअभ्यासकिहैय
हनिश्चयहैसुसषीनाइकासोंकहनिहैयहभ्र
मुनिवारनुकरनिहै ॥ ५७ ॥ कवित्त ॥ तेरोईध्या
नधरैनंदनंदनकांननहूंसुनैतेरीकथा

र०सं०
॥६३॥

है ॥ नेरसरंगमें पागिरह्यो निसिवासरनेईहन
पसरोहै ॥ नाहितूऔरसों राच्योकहैकहिमोसों
हहा मन आईकहौ है ॥ बावरी रिबिबिचारहि
यें कोऊ दोषहि छाड़ि निबेरहि चाहै ॥ ५८ ॥
आलंबन दोहा ॥ गली अंधेरी सांकरी भौंन
टभेरी आंनि ॥ परे पिछांनें परस्पर दोऊ परस
पिछांनि ॥ ५९ ॥ टीका ॥ यह अंधेरी गली में जा
भांति भेट भई सु सषी सषीसों कहति है स्व रस
को पहिचांनिबो दोऊनु को आगैं मिलापहै
यह संगि नाइका परकीया रसकी रुतिनाहैं
तिहै ॥ ६० ॥ कवित्त ॥ रैंनि अंधेरी घनैं घुमडे घन
रूमिमहा न सु कुंज छये हैं ॥ जैसी यै सांकरी ल
वी गली मरट भेट अचांनक दोऊ भये हैं ॥ गा
तसों गात न हिलागत ही जिय जांनि हियें लप
टाइ गये हैं ॥ राधिका माधौ जू माधौ जू राधि
का आपु ही तें पहिचांनि लये हैं ॥ ६१ ॥ उद्दीप
दोहा ॥ उयो सरद राका ससी करत क्यौं न चित
चेतु ॥ मनौं मदन छिति पाल कौ छांह गीर छ
वि देतु ॥ ६२ ॥ टीका ॥ यह मानवतीसों सषी कौ
वचन नाइका कौ मानु छुडाइबौ प्रयोजनु ॥
६२ ॥ कवित्त ॥ वलि आजु सुहाई रवनी राका की रैं
नि विहार समो सुष साजतु है ॥ ब्रहदे बिरीइं
उदोत भयो अनंग नाइग है छवि सों छवि छाज ॥ ६३ ॥

है ॥ अबलोकमजाहिरिसैलनिपानिकौमा
नुकहूंउरिभाजतुहै ॥ यहमानौंमनोजमहा
छितिपालकौमानिकछत्रुविराजतुहै ॥ ८९
॥ दोहा ॥ डिगतुपानिडगुलाततगिरिलखिसब
ब्रजबेहाल ॥ कंपकिसोरीदरससैंषरेलजायु
लाल ॥ ९० ॥ टीका यहसात्विकभावसखीकौ
बचनसखीसौं ॥ ९० ॥ कवित्त ॥ लोपुसुन्योंवलि
कौमघवानबकौपकैमेघसबैसुकलाये
॥ गोधनुकाकाधल्यौतवहीसबकेउरकेभय
हरिमगाये ॥ पानिडगेंउगुलातलख्यौगिरि
लोगसबैब्रजकेअकुलाये ॥ गोपकिसोरीनि
हारिसुकेपिनगातषरेंदलालललजाये ॥
९० ॥ दोहा सुरतनतालनतांनकीउठ्यौतसु
रंबहराइ ॥ येरीरागबिगारिगौबैरीबोलसुन
इ ॥ ९१ ॥ टीका ॥ यहसात्विकभाउनाइकाकौब
चनसखीसौंअरुसखीकोबचननाइकासौंहौ
रतोलखिनासखीसखीहूसौंकहैतोसमये
परंकिया ॥ ९१ ॥ कवित्त ॥ लैकरबीनप्रबीनतिया
सुरसाधिकेगांनकौठाटुठयोहै ॥ बारपेआ
इकैनाहीसमैंमनमोहनकाहूकौनाउलयौ
है ॥ नानकहूंअरुतालकेहूंसुरतौकछूयौ
रतैंऔरमयोहै ॥ बैरीअबांनकबोलसुना

वि॰स॰ ॥६४॥

इकै नंद कौ रागु विरागारिग यो है ॥६१॥ दोहा
ध्यांन आंनि दिग ज्ञांन पति सुद्रि नर रति हि
नरानि ॥ पलकु कु क पति पुलकनि पलकु पल
कु पसीज निसानि ॥६२॥ टीका यह नाइकानि
रहनी ध्यांन करि मिलनि है तव ही सात्विक
भाव होतु है सु सषी सषी सों कहति है सषी ना
इका सौं कहै तो हू संभवे ॥६२॥ कवित्त ॥ बोहरि
के पिछु रैं गति ऐसी भई सुव ध्यांन करौं लगि
कीजै ॥ ध्यांन ही ध्यांन मैं वेद सुषी मिलि ओ
पी है रस रंग मैं भीजै ॥ रैंनि दिना रहै मोद भरी
देह को है वियोगनि क्यौं न दुषीजै ॥ कंपिन कै
कंपहूं लल कैक वहूं पुलकैंक वहूं कपसी
जै ॥६३॥ दोहा स्वेद सलिल रोमंच कुस गहि
दुलही अरु नाथ ॥ हियौ दियौ संग साथ कै
हथलेवा ही हाथ ॥६३॥ टीका यह विवाह स
मय दोऊंनु के अंनि सनेह को अधिक्यतें सा
त्विक भाव भयो सु सषी सषी सौं कहति है ॥
६३॥ कवित्त ॥ मंडप मंडल [illegible] नी रच्यो साधि कै व
र विधांन सों दंतु दियो है ॥ स्वेद भयो सोई नी
र नयो उहै पुलकैं कुस पुंज लियौ है ॥ मैंन मु
निं ड्यो गु पढ्यौ रस के लिहिये अभिलाष
कियो है दोऊनु ले अपनो अपनो यौं दियो
हथलेवा ईंग्रहियौ है ॥६३॥ दोहा ॥ न च्यौ ॥ ॥

आंच अति विरह की रह्यौ प्रेम रस भीजि ॥ नैं
ननु के मग जल तु बहै हियौ पसीजि पसीजि
६४ ॥ टीका ॥ यह नाइका अथवा नाइकु वियो
गमें अंसुवा वहि नहें तिन कों उत्प्रेछा करतु
है सुख सों सखी सों कहै ॥ ६४ ॥ कवित्त जा दिन तें
ब्रज नागरि कौ मनु नंद किसोर के नेह में लौ
॥ ता दिन तें दिन रैंनि दरैं अंसुवा तिन को य
ह मेदु लेषौ ॥ आंच न औ विरहानल की हि
न के रस में अति भीजि रह्यौ ॥ ता तें पसीजि हि
यौ विय नैंननु के मग नीर वहौ ॥ ६४ ॥ दोहा
में यह तो ही मैं लषी भगति अपूरव वाल ॥ ल
हि प्रसाद माला जु भौ तनु कदंब की माल ॥ ६५
टीका ॥ यह सात्विक भाव सखी कौ वचन नाइका
सों परकिया लछिता होइ ॥ ६४ ॥ कवित्त ॥ कौरि
ह वा दिन पें मपगी रंगि लालन के रंग लाल भ
ई है ॥ कौन छकी छवि देषि गुपाल की कोव नि
ता न विहाल भई है ॥ में निरषी यह तो तन आ
सु अपूरव भक्ति रसाल भई है ॥ माल प्रसाद
कौ पाइ न हीं सव देह कदंव की माल भई है ॥
६५ ॥ नाइका कौ वचन सषी सौं दोहा ॥ दौरी ल
ई सुन न की कहि गोरी मुसकान ॥ थोरी थोरी
सकुच सौं भोरी भोरी वात ॥ ६६ ॥ टीका ॥ यह ना

वि॰
॥६५॥

काप्रोढानाइकाकीचेष्टादेषीहैसुसषीसौं
कहतिहै॥६५॥कवित्त॥जादिनतेंवहसांवरौ
नैंसुकनैंनमिलैमुसिकाइगयोहै॥तादिन
तेंकविहलसकहैमनुवाहीकेहाथविकाइ
गयोहै॥थोरीसीलाजगहैहितचीकनीमो
रीसीवातसुनाइगयोहै॥कांननकौंश्रववा
तियकीसुनिवेहीकीढोरीलगाइगयोहै॥
६६॥दोहा॥जौलौंलषैंनकुलकथाढिकुतौ
लौंठहराइ॥देषेंआवतदेषहीक्यौंहूंरह्योन
जाइ॥६७॥टीका॥यहनाइकाप्रोढाअपनीइ
ढतासषीसोंकहतिहैअरूनाइककोसुरूप
औसोसुंदरहैजुदेषैनेंक्योंहूंरह्योनाहीजातु
नाइकाकोवचनसषीसों॥६७॥कवित्त॥जौलौं
नहीदिपरेमनमोहनहींनवरोंसषितौलौं
सयानहि॥टीकवुढानिपतीव्रतकौकरिलै
कुलकोनिकथाकेवषांनहि॥जोचनक्योंहूं
नरोकेरहैंजवदेषतवामृदुमूरतिकांन्हहि
॥देषैविनानरह्योनपरेकैसेंहूंमेरोकह्योकि
निसोंचुकेमांनहि॥६८॥नाइककोवचनसषी
सौं॥दोहा॥रहिनसक्योकसुकरिरह्योवसक
रिलीनोंमार॥भेदिदुसारकियोहियोतनदुति
भेदेसार॥७०॥टीका॥यहनाइकाकेनननकीउ

निनाइकुसषीसौंकहतुहै॥६८॥कवित्त॥राधि
कारंगभरीकैंमनौंविधिनीनहूंलोककोरू
परियोई॥नाहिंअलीअवलोकिनहींवियनें
नतुप्रेमपियूषपियोई॥जदपिकैनोरह्यौम्ह
तुकैंधरिकैंअनिधीरजुमेरोहियोई॥तदपि
वानननकीदुतिमेरकसारनैंमेरिहुसारकि
योई॥६९॥सोरठा॥नोतनअधिकअनूपरूप
लग्योसवजगतकौ॥मोडगलागेरूपहगनि
लगीअनिचटपरी॥६९॥टीका॥यहनाइको
केरूपसौंनाइककेडगलगेहैंसुअपनेनेत्र
नुकीतललफनिकहतुहैनाइककोवचननाइ
कासौं॥६९॥कवित्त॥सुंदरताकीतुहीपरमा
विधिनैंरतिकीदुतिपाइनपेली॥कोरमनी
रमनीयतिहूंपुरराधिकेतोसमहोइनुहै
ली॥नौतनमोहैलुनाईकीषानिलग्योनिहू
लोककोरूपनवेली॥त्यौंतिहिंरूपलगेममा
नैनलगीममनैंननित्यौंतलवेली॥६९॥टी
सहितसनेहसकोचतुषवेदकंपमुसिकांनि
॥वांनपानकेरिसआपनैंपांनधरेमोपांनि
७०॥टीका॥यहनाइककौपांनदेतनाइकाकैं
सात्विकभावभयोअरुनाइककेवांनवाबि
हसनिकैंदेषिवसिभयेतुसषीसौंनाइककह
तुहैसुमिरतुजांनियें॥७०॥कवित्त॥वामगतो

विला०
॥६६॥

चनिके सब अंग गृ अनंग विलास बसीकर रहे रे॥ स्वेद सकोच सनैं कवि हंस सने रमरे सुषपुं ज घने रे॥ कंपत गात कछु मुसिकात नेचदाइकै मौंह विलोचन फेरे॥ मो कर पान दये छिन सों उनि प्रान लये अपने कर मेरे॥७०॥ दोहा॥ ऊंचे चितै सराहियतु गिरह कबूतर लेत॥ झलकित दृग मुलकित बदनु तन पुलकित किंहि हेत॥७१॥ टीका॥ यह नाइक कौ कबूतर देखि नाइका के सात्विक भाव भयो सु सखी नाइका सौं कहति है परकीया लक्षिता॥७१॥ कवित्त॥ अंमर मैं सोभा सा जिउडत है पारावत बाजी करें रंग मैं गिरह अाछी लेतु है॥ तिन्है सब कोऊ नैंन ऊंचे करि चाहतु है रीझि रीझि सु घर सराहतु सहेतु है॥ चाहिवो सराहिवो विसरि गयो तोहि प्यारी देषत रही हरे चित चैनु है॥ झलकित नैंन मुलकित है अधर रते रेसांची कहि अंग पुलकित कौन हेतु है॥७१॥ दोहा॥ रहौ गुही वेंनी लखै गुहिवे के त्यौं नार॥ लागे नीर चुचान जे नीठ सुकाये वार॥७२॥ टीका॥ यह नाइक सखी भेष कै नाइका कौ स्रृंगार करन लाग्यो वेंनी गुहत सात्विक भाव भयो तव नाइका नें जान्यौ सु नाइक सौं कहति है॥७२॥ क गोपी कौ वेष वनाइ गुपाल जु श्री वृषभानु सु

॥६६॥

नारिग आये॥ हौंस जिमानन ति नी कैं सिंगा रु कहौ सु करौं कहै वैन सुहाये॥ वेनी गुहाव नप्यारी कह्यौ सुघरापन येकि नतें तुम पाये॥ नीर छुचौं न लगे अ वही सट कारे से वार जे ना ठि सुकाये॥ लीलाहाव दोहा॥ राधा हरि हरि राधिका वन आये संकेत॥ दंपति रति विपरी ति सुष सह अ सुरन हूं लेत॥७३॥ टीका॥ यह ली लाहाव रति विपरी ति समय सषी सषी सों क हति है॥७३॥ कवित्त देषिवे कौं दें हहै पै ये क मन एक प्रांन रूप सील वेस गुन चातुरी सम तु है॥ जैसें दोऊ सांचे मन राचे प्रीति रीति रंग आजु लौं न देषे कहूं ऐसो हिय हेत है॥ राधा माधो माधो राधा अदलि वदलि षे लनि वनि आये कुंज केलि कौ निकेत है॥ कहै कवि हम दोऊ सह अ सुरति करि रति विपरी ति के विविधि सुष लेत हैं॥७३॥ सात्विक भा व दोहा॥ नैंक उनै गुठि वैठि ये के हार है गहिगे ऊ॥ छुटी जानि न हरदी छिन कुमहदी सूक व हे ऊ॥७४॥ टीका॥ यह नाइक कौं देषि नाइका कौं सात्विक भाव भयौ है सु सषी नाइका सौं नि वेदन करति है नाइका हू सनेह कें अधिक्य ते नाइक सौं कहै है॥७४॥ कवित्त॥ आजु लौं कैं से हजौं निदरी न चली जब तैं र सरीति चला दे

षितु मृहं उमग्यो अवही कहूं पस्नव छोर रनि स्वेद
जला ॥ वैठ ऊनें कउ ते उ ठि कैं उघरी यह आव
ति प्रेम कला ॥ जानि छुटी अव हीन हु स्वी महदी
छितु स्पकन देई ऊलला ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ पहि रत हीं गो
रेंगरें यों दोरी दुति लाल ॥ मनौं परसि पुलकि
तें भई वौं लि सिरी की माल ॥ ७५ ॥ टीका ॥ यह नाइ
क के कंठ की माला के सपरस सों नाइका कें सा
त्विक भाव भयो है तु सषी नाइक सों कहति है ॥
७५ ॥ कवित्त ॥ सोरभ सहित चुनि चुनि कें कुसम
चारू आपनें कर न मनमोहन गुही वनाइ ॥
मैं तो जाइ दीनी उनि लीनी अति आदर सौं प
हिरी हिय मैं प्रांन प्यारी हित सरसाइ ॥ हू सपां
न प्यारे वाके गोरे गरें नाही विनु उपजी मवल
दुति रही ऐसी छवि छाइ ॥ मेरे जांन लाल वौं
ल सिरी की ललित माल पुलकित भई वाके त
नको परसु पाइ ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ हितु करि तुम पठयो
लगे वा विजना की वाइ ॥ टली तपति तन की
तऊ चलो पसीना न्हाइ ॥ ७६ ॥ टीका ॥ यह नाइक
कें वीजना की व्यार लगैं नाइका कें सात्विक भा
व भयो तु सषी नाइक सों कहति है ॥ ७६ ॥ कवित्त
मोर पषो वनि कोर चि कैं हितु के पठयो तुम प्या
रे विहारी ॥ नाहि विलोकि तही तिय की तनता
प टरी उमग्यो सु भारी ॥ हौ तौ विलोकि च
चि भैरही अवलौंन ... गति ऐसी निहारी ॥ वावि ॥ ६१ ॥

जुनाकीक्यारिलगैंवृह क्नाइपसीनाकेनी
रमैंनारी॥७६॥दोहा॥इहवसंतनपरीअरीगर
मनसीतलवात॥कहिक्योंझलकेंदेषियतुउ
नकिपसीजेगात॥७५॥टीका॥यहसाल्विकेभा
वदेषिसषीनाइकासोंकहतिहै परकीयाउछि
ताजांनियें॥७७॥कवित॥सोहतुसमानसमैं
यहतौवसंतरितुनाहिनेंगरमअरुसीरकंन
आनिहै॥कहैकविहकमवुलिहमसोंतोसांची
कहिकोहेतैंछबीलीभईतेरीअसीगतिहैं
॥कबहूंतेपतगातकबहूंपुलकहोतकबहू
पसीजिआवैकबहूंकपतिहै॥जांनीहैरीजा
नीहितसांनीअरगांनीरहिदेषिदषिदोनी
पेंमरसमैंपगतिहै॥७७॥मरहावदोहा॥नसी
संकसकुचितनचितनचितवोलतवाकुञ्ज
वाकु॥दिनछिनराछाकीरहतिछुटतुनछि
नुछविछाकु॥७८॥टीका॥यहनाइकाकोछवि
कोगर्वहैसुसषीसषीसोंकहैनाइकासोंसषी
कहैमरहावजोनाइककीछविकोछाकुरूषी
कहैतोलछितहोइ॥७९॥कवित॥कहूंहूं
झनवातहिकैतरदेतिनालाइटकीअनि
मेषतके॥अरुकानिकरैनअलीनहूकीन
जिलाजमरोषानिकैंतमकै॥सवसंकनजीस
कुचैनहियेंमुहंआवेसुवाकुकुवाकुवकै॥र
हैनिदिनाव्रषभांनसुताछविछाकछकीन

विं॰ सं॰ ॥ ९६ ॥

व्हिनौ उ मकै ७८ ॥ विभ्रमहाउदोहा ॥ रहीर
हेंडी ढिंगधरी भरी मथनियां वारि ॥ फेरतिक
रि उलटी रई नई विलोवनि हारि ॥ ७९ ॥ टीका
यह नाइका कौ विभ्रम हाउ है ॥ सषी नाइका
सौं कहति है सषी सषी हूं सौं कहै ॥ ७९ ॥ कवित्त
पास रहै हेंडी धरी यै रही जे लमो भरिकै जु मथ्यां
नी लई है ॥ घ्यां भसों नेनी लपेटि दई उलटी क
रि फेरति ता मैं रई है ॥ मोहि गो लाग तिनी की
महाउ रहस्य नवे मकी रीति ठई है ॥ मां वरी ह्र
तिकी रिझवारि न इतनू विलोवनहारि मई है ॥
७९ ॥ कुट्टमित हाउ दोहा ॥ लहि सूनें घर करग
हत दिषा दिषी की ईठि ॥ गडी सु चित नाहीं क
रति करि ललचौंही डीठि ॥ ८० ॥ टीका ॥ यह सु
रतारंभ समै नाइका की जु चेष्टा है षी सु नाइ
क सषी सौं कहत है पर कीया हू कुट्टमित हाउ
८० ॥ कवित्त ॥ देषी ही दिषी की डीठि अचानक डी
ठि परी अकिली घर मांही ॥ साहसु कै अपनें
उर मैं अति मोहि गजा इ लई गहि बांही ॥ लेसि
सि की नहराइ करे उहिं नी छन नैन कियै च हूं
घां ही ॥ कै ललचावनी डीठि करी वह नाहीं हि
येतें टरै अबनां ही ॥ ८० ॥ वोधक हाउ दोहा ॥
हरषि न बोली लषि ललन निरषि अमिल संग
साथ ॥ आंषिन हीं मैं हसि धरयो सीस हियैं धरि
हाथ ॥ ८१ ॥ टीका ॥ यह वोधक हाउ नाइका कौ ॥ ६८ ॥

ढापरकीयानाइकेकौंदेषिजुचेष्टाकीनीसु
सषीसषीसौंकहतिहै॥८०॥कवित्त॥ऊषिलसा
थमेंदेषिगुपालनिहिंगोपकुमारिकरीचतुरा
ई॥वैनकछूनकहैमुषतैंलषिफूलीमनौंनि
धिनीनिधिपाई॥हाथधर्यौहियपैपहिलैंसु
निसीसछियैरसरीतिवढाई॥आंषिनिहीमें
कछूविहसीपियकौंजियकीसवबातवुनाई
८१॥दोहा॥लषिगुरजनविचकमलसौंसी
सुछुवायौस्यांम॥हरिसनमुषकरिआरसीहि
येंलगाईवाम॥८२॥टीका यहनाइकाप्रौढा
परकीयाहैउनजुचेष्टाकीनीसुसषीसषीसौं
कहतिहै॥८२॥कवित्त आजुदुहूंमिलिकैस
जनीकछुसैंनतुहींसमझ्यौसमझायौ॥गौ
रीलषीगुरलोगनिमेंसरसीरुहसौंसिरुस्यां
मछुवायौ॥सोलषिकैंवृषभांनसुतारिस्यौ
ऊनतेमेंदुसुकाहूंनपायौ॥हेमकेहेहरि
केसतुहैंकरिदर्पनवामहियेसौंलगायौ॥
८२॥किलिकिंचितहावदोहा॥सुनिपगुधु
निचितईइतैनांनिहिरयेंहीपीठि॥चकीमकी
सकुचीउरीहसीलजीलीडीठि॥८३॥टी० यह
नाइकाजासमेंनाइकनेदेषीतासमेंकीजुचे
ष्टाउनिकीनीसुनाइकसषीसौंकहतुहै॥८३
कवित्त कामकीवामहतेअभिरामलसेउनि॥

वि०प्र०
॥६८॥

जोबनकीरसमांनी॥ज्ञांनहीपीठिदियैंअ
किलीसकिलीधुनिमोपगकीपहिचांनी
॥जाहुविसोंचितईइहिऔरसुकेसेंहमो
पैनजानिरषांनी॥चौकीचकीसकुचीडर
पीकरिडीठिलजोंहीनुकीमुसिकांनी॥८३
॥दोहा॥बालमबारेसोतिकैंसुनिपरनारि
विहार॥भौरसुअनरसरिसरलीरीनषी
नइंकवार॥८४॥टीका॥यहनाककीवकुना
इकुनासुनिकैंनाइकाकैंदुषभयोऔरसो
तिकीवारीबृथाभईसुनिसुषभयौसुसषी
सषीसौंकहतिहै॥८४॥कवित्त॥वैठीसषीउ
समाजुमैंप्यारीसिंगारुकेसाजनुसौंसरसा
नी॥केहूंकहीनुवसौतिकेओसरेंआनवधू
कैगयौदधिदांनी॥सोसुनिकैंकवितृहूसक
हेरहसीविलषीकुलसीअकुलांनी॥येकही
बैरलसीमृगलोचनिरीझिकैमुसिकांनी
रिसांनी॥८४॥दोहा॥पतिरतिकीवतियांकही
सषीलषीमुसिकाइ॥केकैसवैटलाटलीअ
लीचलीसुषुपाइ॥८५॥टीका॥यहनाइकेकौ
रं सुरतामैंसमैजांनिसषीकछूमिसुकरिउठि
चलीसषीकौवचनसषीसौं॥८५॥कवित्त॥
चौपरिषेलपगीवनिताब्रजराजविलोकित ॥६८॥

हीललचांनौं ॥ मैंननुमैंकछुकेलिकलो
लकीबातकहीमनमैंननुलौनी ॥ प्यारीअली
नुकीओरलषीहंसियेंरसभाउहियेंरसमां
नौं ॥ देषिसवैसुषपाइचलीअपनैंगहऊके
कछूऊठमुठांनौं ॥ ८५ ॥ दोहा ॥ लषिदोरतपि
यकरकेटकुवासछुडांवनकाज ॥ वरूनी
वनगाढेंडगनुरहीगुठौकरिलाज ॥ ८६ ॥
॥ टीका ॥ यहसुरतसमेयसषीसषीसोंकहति
है ॥ ८६ ॥ कवित्त ॥ रतिमंदिरमैंनवनागरिका
कमिलेरसंरंगहियेंठरिकें ॥ दलदौरतदेष्यौ
नहांपियकोकरवासछुडांवनकोंओरिकें
कविठमककैहेठहराइनहीनसकीरहीधीर
जकोंधरिकें ॥ गहिओटघनेंवरूनीवनकीर
हीनैंननुलाजगुठौकरिकें ॥ ८६ ॥ दोहा ॥ मौं
हनिवासतिमुहनटतिआंषिनिसोंलपटा
ति ॥ ऐंचिछुडावतिकरइचेआगेआवतिजा
ति ॥ ८७ ॥ टीका ॥ यहसुरतारंभसमैंप्रौढानाइके
काकीजुक्रियाचेष्टाहेसुसषीसषीसोंकह
तिहैनाइकासषीसोंकहैतोहूसंभवै ॥ ८७ ॥
॥ कवित्त ॥ तियसहनैंआवाससरोजसुषीदुतिपुं
ननिकोंउमगावतिसी ॥ नहांलमअचानकें
आंनिगहीचहीमौंहनुसोंडरपावतिसी ॥

वि॰ स॰
॥ ७० ॥

अरु आंषिनिमैं लपटानिसी आंननताकरि
क चंदावनिसी ॥ वह औं विछुटा व जिवां हइही
मिलआउइचौ दिग आवतिसी ॥८७॥ दोहा ॥ स
कुचि सुरतारंभ हीविछुरी लाजलजाइ ॥ दर
कि टारहुरि ढिग भई ढीठ ढिठाई आइ ॥८८॥ टीका
यह शोढानाइकाकौ सुरतारंभ सुसषीसषी
सौंकहतिहै ॥८८॥ कवित्त ॥ अतिअभिरामस्या
१. मास्यांमरतिमंदिरमैं विहरत उमगिअनंगरं
गभरिकैं ॥ नषदान रदांन चुंबन अधरपा
नआलिंगान करत अनेकभाइभरिकैं ॥ सुर
तकेआरंभ हीलाजलजुवंतीसषीनिपटल
जाइजियगईकहूंटरिकैं ॥ टादसुहियमैंगहि
निधरककैकैं आइठाढी भई निकटढिठाई
ढीठि टरिकैं ॥८९॥ दोहा ॥ जदपिनाहिनाही
नहीवदनलगीजकजाति ॥ तदपि भौंहहां
सीभरी हांसीयैठहराति ॥९०॥ टीका यहसु
रतारंभ नाइका शोढा सषी वचन सषीसौं ॥९०
॥ कवित्त ॥ वैदी सिंगारसजैं ब्रजनारि अचांन
कमोहनु आयो नदांरी ॥ मांनिगयो अवलो
कि अकेली ओलो किककेलि कलाचितचा
ही ॥ जदपि वानवनागरि के मुषलागीय है
कंनां ननंनांही ॥ तदपि हांसी भरी भ्रकुटी
तु मैं वीसविसे ठहरानि है हांही ॥९१॥ दोहा ॥

॥७०॥

दीपउजेरेंहूं पतिहिंरेहेनव [illegible] सनरतिकाज
॥ रहीलपटिछबिकीछटनुनैकौछुटीनला
ज ॥९१॥ टीका यहसुरनवर्ननना इकाकेत
नकीदीपतिकौआधिक्यसषीकौवचनसषी
सौं ॥९१॥ कवित्त नैसोई ब्रकासरतिमंदिरकेदी
पनकौनैसोईसमूहजगमगानरतनकौ ॥
नैसीयैसुधानिधिमैमुषकीनिहारिजोतिमो
हनकेमनभाउउमग्योउनतनकौ ॥ प्रीतमबि
हारीलालनैवैकौसुरनसुषनिजुकैवसनु
मटकिहरयौतनकौ ॥ छबिकीछटानुहीसौं
रहीलपटाइरांधानगनहूतनकौछुटीन
लाजनकौ ॥९१॥
[illegible] सकुचिनसरकिपियनि
कटतैंमुलकिकछुकनननतोरि ॥ कर आंचर
कीओटह्वैजमुहांनीमुहमोरि ॥९२॥ टीका
यहसुरतांतनाइकाप्रौढासषीकौवचनसषी
सौं ॥९२॥ कवित्त केलिकलाकुसलनैकुरंगनै
नीपिकवैनीजाकीछबिपररतिवारियेकोरो
रिकै ॥ सैनसुषपागीअनुरागीपतिसंगजागी
मैंनकेबिलासनिसौंलैतिचितुचोरिकै ॥ स
रकीसकुचिमनमोहनकेनिकटतैंकछुक
मुलकिअंगिरांनीननतोरिकै ॥ सोभावहमो
पैक्योंहूंजातिनबषांनीकरआंचरकीओ

वि॰ स॰
॥७२॥

टजमुहांनीमुहमोरिकैं ॥९२॥ सुरतदोहा ॥ च
मकतमकहांसीससकमसकम पराल पर
नि ॥ यो जिहिरति सोरतिमुकतिओरमुकतिम
तिहांनि ॥९३॥ टीका ॥ यहसुरतवर्ननमाइक
कौवचनअथवाकविकीउक्ति ॥९३॥ कवित
किलकनिमुलकनि हेरनि हरनिचितचम
कनमकमकनिमुसिकांनिहै ॥ हिलनिमि
लनिअरूरसभरीकसकनिससकमसकम
पटनिसुघरांनिहै ॥ लटकनिमटकनिउरनि
मुरनिकिलकुंजनिलफनिलल्लकनिललपट
निहै ॥ ऐसीरीतिरतिसोईमुकतिकहावति
है मुकतिकहावतिहैसोतोअनिहांनिहै ॥
९३ ॥ सुरतांतदोहा ॥ लेबिलबिअबियांअध
खुले तुअंगमो रिअंगिराइ ॥ आधिकउठि
लेटतिलटकिआलसभरीजभाइ ॥९४॥ टीका
यहसुरतांतनाइकाकौप्रोढासखीकोवचन
सखीसों ॥९४॥ कवित्त ॥ सेनसुखपागीअनुरा
गीहरिसंगजागीसोभासरसांनीअरसांनी
जैमुहांनिहै ॥ बिथुरीअलकनुकीआवतिपव
कमनमथकीझलकअतिरसबरसानिहै ॥
ललितकपोलनपेलसतिनीकीपीकलीकदो
ऊमुनजोरिमुडमोरिजमुहांनिहै ॥ अधिपु
लीआंखिनसोंआलीतनअवलोकिआधी
उठिसेजहीलटकि [illegible] लेटिजांनिहै ॥७१॥

२४॥ दोहा ॥ नीठि नीठि उठि बैठिहूं प्यौ प्यारी प
रभात ॥ दोऊ नींद भरे षरे लागि गिलागि गिरिजा
त ॥ २५ ॥ टीका ॥ यह सुरतांत नाइका प्रौढा सषी
को वचन सषी सों ॥ २५ ॥ कवित्त ॥ व्रषभांन लली
औ व्रजराज लला रति संगर मैं निसि संग जगे ॥ क
विलछिमन कहै केलकाम कला व्रजभाइ विलं
स हियें उमगे ॥ उठि बैठन से जपे नीठि तऊ उ
ठि पै न सकें अति प्रेम पगे ॥ सुष नींद भरे अरस
न षरे वक्र सौं गिरिजात गरैं ही लगे ॥ २५ ॥ दोहा
रंगी सुरत रंग पिय हियैं लगी जगी सब राति ॥
पैंड पैंड पर ठठुकि कैं ऐंड भरी ऐंडाति ॥ २६ ॥
॥ टीका ॥ यह सुरतांत सषी को वचन सषी सों
जो सषी नाइक सों कहै तो वांछित नाहोइ ॥ २६ ॥
॥ कवित्त ॥ सबरैं निजगी हरि कंठ लगी रति रंग
रंगी अलसांति षरी है ॥ डगये क चलै फिरिकें
चितवे मुरकें अंगिराति मरोर भरी है ॥ विथु
री अलकें झलकें श्रम वारि हु की पलकैं तु ष
मारटरी है ॥ लषि पीक की लीक कपोल नि नी
कीलसै अति सारी सलोर परी है ॥ २८ ॥ दोहा
यौं दलमलियतु निरदई दई कुसुम सौ गातु ॥
कर धरि देषौ धरधरा उर कौ अज्यौं न जातु ॥
२७ ॥ टीका ॥ यह नाइका सुरति मैं मर्दित अति वि
कल भई है सु सषी नाइक सों कहति है ॥ २७ ॥ क

वि०स० वैसश्रलवेलीग्रइवेलीसीनवेलीचालमिल
७२ ईयुपालनुहेकितनेंउपाइकैं रसिकरसालवि
नमणनिरदई केलिकरैयोंकरेरीरसरीनिवि
राइकैं श्रसीरत्नमलीकुसमकीपोंवुरीसीप
रीहैश्रचेनसवेसुधिविसराइकैं वनियाकहा
हैंकहोंछतियाकोधरधराश्रजहूं नेमिरलु
विकटदेषोश्राइकैं ९७ लेहिरतिसु
षुललगियेहियेंलषीलजौंहीनीठि षुलितनमा
मनवंधिरहीवुहेश्रधषुलीडीठि ९८ य
हसुरतांतनाइकाकोवचनसषीसों ९८
केलिकलासुषमेलिषभानललसीयरजंकप्रेर
श्रिकाप्यारी श्रंगलगीनऊलाजपगीरहीना
निवाइमहाछविधारी सोहेंचितेवकोंमो
हहियेंतवनेंसकभोंहउचाइनिहारी सोऊनि
दीश्रषियांश्रधषोलीचितोंनिहियेंनेनटरेन
हटारी ९८॥रतिविपरीतिदोहा॥विनतीर
तिविपरीतिकीकरीपरसिपियपाय हंसिश्रन
वोलेहीदियोऊतरदियोवताय ९९ य
हरतिविपरीतिसषीकोवचनसषीसों ९९
केलिकलाकुसलकुरंगनयनीकेश्रंगश्रंगनी
निकाईउनिरतिकीरतीकरी पहिरतश्रंतरति
विरषिविधिविधिमदनमहीपतिकीविजैरति
हैलीकरी नहीरतिमेंहेरमेंप्यारीकपरसिपाइर ७२

तिविपरीतिकीपियारेंविनतीकरी॥ प्यारीसुमि
काइअनबोलैंहीबनायोहियौपीतमकेजी
चाहेयहीमैंसहीकरी॥२९९॥रतिविपरीतिदो॰
परयोजुरनविपरीतिरतिरूपीसुरतरनधीर
करतिकुलाहलकिंकिनीगह्यौमौंनमंजीर॥
३००॥टीका यहविपरीतिरतिवर्ननहैनाइका
कीदासषीकोवचनसषीसौं॥३०॥कवित्त श्रीबृ
षभांनसुतातनजोतिजगेरतिलाजनलागी
मौंहविलासनिहासनिकैहरिसाजनकौसुषसा
जनिलागी॥धीरमहारतिसंगरमेंविपरीतिरची
अतिराजनलागी॥मौंनगह्यौविछियांनित
हीरसनारसहीरसवाजनलागी॥३००॥दोहा
रमनकह्यौहठिरमनिसौंरतिविपरीतिविलास॥चितईकरिलोचनसतरसगरबसलजमहास॥३०१॥टीका॥यहनाइकानैंरतिविप
रीतिकीबातकहीसुनाइकानैंचितवनिमैं
जुचेष्टाकीनीसुसषीसषीसौंकहतिहै॥३०१
॥कवित्त॥श्रीबृषभांनसुतानंदनंदललारसके
लिकलानिषबीनषरे॥नितिमंदिरमेंअतिपे
मपगेरतिकंतविलासकेरंगढरे॥रतिकीबि
परीतिकरोरमनीहसियोंजबप्यारेंनिहोरे
करे॥तवप्यारीकियेलषिनैंनतिरीछेगुमांन
हसीअरुलाजभरे॥३०१॥जुगलरसिनदोहा
निलवतियेंकतहीरहतवेसतुरनमनयेक॥च

बि०स०
॥७३॥

हियतजुगलकिसोरलेंषिलोचनजुगलष
नेका॥ २०२॥ टीका॥ यहजुगलकिसोरकीसो
भाग्यसदोऊनुकेहितकौआधिकसषीसषी
सोंकहतिहै॥ २०२॥ कवित्त॥ नितश्रीवृष
भानसुतानेदलालविराजतहैंछविपुंजजैये
॥ कविकहैमनसीलवहैक्रमचातुर
ताइकरंगरये॥ सुषदैषिमिहातिसवेसजनी
विधिसौंविनवैनअभिलाषनये॥ यहरूप
विलोकिवेकौंतनमैंप्रतिरोमनिलोचनकैं
नभये॥ २०३॥ दोहा॥ मिलिपरछांहीजोंन्ह
सौंरहेदुहुनकेगात॥ हरिराधाइकसंगहीच
लेगलीमैंजात॥ २०४॥ टीका॥ यहदोऊनुकौ
मिलिवौगलीमैंजातहूकहीजोनिपरतहैंसु
सषीसषीसौंकहतिहैनिसिचारकौमिल
नु॥ २०५॥ कवित्त॥ दोऊरसभीजेरूपरीझेंत
रुनाईभरेदुहुंकेसनेहउमगतगातहैं
॥ दंपतिकरतचतुराईकेचरित्रचारुओर
कोनजानैंयेप्रवीननकीबातहैं॥ जहांपर
छांहीतहांप्यारीयेविलोकियतिजोंन्ही
लषातहैं॥ कहैकविलसबोलिकुंजकैंनि
सोंकभयेदोऊयेकसाथहीगलीमैंचलेजा
तहैं॥ २०५॥ दोहा॥ नजिनीरघ्यहरिराधिका
तनदुतिकरिअनुराग॥ जिहिव्रजकेलिनि

कुंजमगपगौंहोतुप्रयागु॥ ३५४॥ टीका॥ यहकुं
गलवर्ननहै॥ ३५४॥ कवित्त॥ नीरथनिकटको स
हेकौंब्रह्मनटकतुकौंनअटकहुवनसोभा
कीहिलगमें॥ राधावनमालीकीसरसगौ
रस्यामहुतिसकललनिकाईकौलसतुसारज
गमें॥ तासौंकरिप्रीतियहनिगमबसिढिजग
विधिसंकरसेतिनहूंतेंअगमें॥ डगडगप्रवि
होतप्रगटप्रयागपगजिनपरनकेलिकुंजके
मगमें॥ ३५४॥ दोहा॥ उनकोंहितुउनहीवि
नेंकोऊकरोअनेक॥ फिरतुकाकेगोलकुं
भयोउहूंदेहज्योंएक॥ ३५५॥ टीका॥ यहदोउ
नकेहितकीअधिकाईसषीसषीसोंकहतिं
है॥ ३५५॥ कवित्त॥ आजुलौंऐसनदेषेकहूंउ
नहीपेवनेंउनकेहितकेपन॥ औरअनेक
उपाइकियेंहूंपैहोंहिनऐसेसनेहमनेंमन
॥ कोऊनजाननदोऊहैंएकहीश्रीवृषभान
सुतामनमोहन॥ वाइसगोलककौसजनी
फिरिवोकरेएकहीजीवदुहूंतन॥ ३५५॥ प्रे
मगर्वितादोहा॥ विपमोतितुदेषनदईअप
नेंहियतेंलाल॥ फिरतिसबतुमेंडहडहीउही
मरगजीमाल॥ ३५६॥ टीका॥ यहनाइककी
मालापाइअतिप्रसन्नभईहैसुसषीनाइक
सोंकहतिहैप्रेमगर्वितादोइ॥ ३५६॥ कवित्त

बि॰स॰
॥२४॥

सोनिकेलषतमरगभांवनमयाकैरीनीउरनैं
बनारिपरगटकीनीरतिहै॥नवहीतैंरहसनि
विहसनिकुलसनिविलसनिलसतिगुमान
भरीअतिहै॥मननमैंमुदितकुलीननमैंसमा
ननाहीविलतिचितौंनिअनुरागउकलतिहै
॥मरगजीमालावहीउरधरैंबालवहडहडह
रहीआलिनुकेंडुडमेंफिरतिहै॥२६॥दोहा॥
आपनैंकरगुहिआपुहीहठिपहिराईलाल
॥मौलसिरीऔरेचढीवौंलसिरीकीमाल
३०॥टीका॥यहनाइकनैंआपनैंहाथवना
इकैंवौंलसिरीकीमालपहिराईताहिपाइ
याकीसोभाअधिकभईसोसषीनाइकेसौंक
हेसषीसोंकहे॥३०॥कवित॥आपनैंहाथ
निवीनिकैंफूलवनाइगुहीमनुलाइकका
री॥मालसुवौंलसिरीकीरसालसुगंधभरी
अतिहीछविछाई॥आलिनगनमैंलसिकैं
हठिप्यारीपियैंपैहियैंपहराई॥ओपअनूप
लहीतरुनीवरनीनपरैअनुरागनिकाई॥
३१॥दोहा॥नीजपरवमोतिनुसजेंनषनैंव
सनसरीर॥सवैमरगजेमुहकरीउहीमरग
जेंचीर॥३१॥टीका॥यहनाइकाप्रेमगर्वित
मरगजेचीरनैंसरनकोंगर्वभयोतातैंसंगा
रुकीनौंसुसषीसषीसौंकहतिहै॥३१॥कवि॥२४॥

औरैगति औरै वचन भयो बदन रंग और
द्यौसक तैं पिय चित चढी कहै चढौ हैं त्यौर
३०९ ॥ टीका ॥ यह नाइका नाइक के प्रेम गा
वैन का हू कौं मन आंनति नाही सु सषी स
षी सौं कहै नाइका ह सौं कहै तौ बनैं ॥ ३०९
॥ कवित ॥ और ही चाल विलोकनि और ही
देषियै आंनन हूं रंग और हि ॥ बोलनि औ
र ही भांति गुमांन सन्यौ निधि नि निधि पाइ
कैं बौर हि ॥ हमैं हूं बान हि ऊन रुदेनि न दी
ठि कहूं ठहरानि है बौर हि ॥ द्वैक दिनां तैं च
ढी पिय कैं चित प्यारी चढायैं ही सी ष निते
रहै ॥ ३०९ ॥ दोहा ॥ कियौ जु चिबुक उठाइ कैं
कैंपित करन भरतार ॥ टेढीयै टेढी फिरति
टेढे तिलक लिलार ॥ ११० ॥ टीका ॥ यह नाइका
प्रेम गर्विता सषी कौ वचन सषी सौं सु नेह
तैं सात्विक भाउ भयो ॥ १० ॥ कवित ठोडी उठा
इ कर्यौ चित चाइ सौं नेह लला अति ही अ
नुरागे ॥ भाल लगावत ही अंगुरी कर कंपु
भयौ अति हेत सौं पागे ॥ आमैं न आनैं मनै
न बतैं नगनैं कहूं आपनें प्रेम कै आगैं ॥
टेढीयै टेढी फिरै मृग नैनी चनि टेढौ ई दीकौ
लिलार सौं लागे ॥ ११० ॥ गुनगर्विता दोहा ॥

वि०स०
७५

सुघरसौनिवरदव्यसुनन्दलहन्दुगुनकौ
नोसु॥ लषीसषीननदीठिकरिसगरवसज
न महास॥११॥टीका॥ यहनाइकागुनगर्विता
अपनैंगुनकेगुमानतेंसौतिकैआगमकौ
दुनाहींमानतिप्रसन्नभईसषीकीओ
रचितवतिहैसषीकोवचनसषीसों॥११॥
कवित्त॥ रूपकीरासिसषीनसमाजमेंसोहै
सिंगारूसजैंब्रजनारी॥ कान्हकहीसुघरा
पनुकेनुवसौतिनैंलीनैंविनाइविहारी॥ यौं
सुनिकैंअलिहीकुलसीगुनचातुरीकीपरमा
वधिप्यारी॥ लाजगुमानभरीमुसिकाइकैं
रंचकडीठिअलीनपढारी॥१२॥रूपगुनग
र्विता दोहा॥ दुसहसौतिसालेहियेगननतिनना
हविवाह॥ धरैंरूपगुनकोगरवुफिरतिअछे
हउछाह॥१२॥टीका॥ यहनाइकाअपनैंरूपके
अरुगुनकेगर्वतेंओरकौंचितमेंआनतिना
हीसुसषीसषीसौंकहतिहै॥१२॥कवित्त॥ नाह
केव्याहमेंप्यारीअछेहउछाहभरीपुरन्दुवन
ठौनति॥ जानतिहैनिहचेंअपनैंजीकोवानि य
ताकस्हैनरहीनतिः॥ रूपकेजोवनकेगुनके
अभिमानतेंआनहितामनआनति॥ जद
पिसौतियासालतऊउरमैंवहनीउदुमानति
१२॥सषीनकोरूपविषैसुरतलक्षिता दोहा॥ ॥७५॥

नदिनसीससाबिनभईदुरीसुषनुकीमोट॥
चुपुकरियेचारीकरैमारीपरीसलोट॥३॥टी
यहसुरतकीमरगजीसारीदेषिसषीनाइकासौं
कहैहैतिहैलछिताहोइ॥३॥कवि॥ रसकीउमंग
भरीरंगभरीसोहतिहैअंगकीसिथलतुतिश्रम
जलछाईहै॥कूमनिकुकनिअंगिरानिजमुहानि
मुसिकानिअरसानिसरसानिसोंनिकाईहै॥
मोटैलुटीसुषकीप्रगटभईतेरेसीसक्योंहू
मुकरनिमनमथकीदुहाईहै॥अबचुपुकरि
प्यारीएईतोकरिचोरीजेहूआछुसारीमेंस
लोटपारिआईहै॥३॥दोहा॥ मोहिकरतिकत
बावरीकियेंदुरावदुरैन॥कहैंदेतिरंगिरानिवे
रंगनिचुरतसेनैंन॥४॥टीका॥ यहनाइकाके
नेत्रदेषिसषीकहैहैतौलछिताहोइजोनाइक
कोविद्यमाननाइकेकीसषीसौंनाइकाकहैतौ
पंडिताहोइ॥४॥कवित॥सुरतकेचिन्हचतुरा
ईसौंलुकाइतनभूषनबनाइसंजेबसनहरे
नहै॥लसमप्रानप्यारेकेसनेहसरसानैतानै
गानअरसानैरसउमगिदुरतहै॥काहेकौंस
षोनीमोहिबावरीकरतिअबकियेंतेदुरावउ
काहिकैसेंकैदुरतुहै॥प्रगटकाैरंगरानि
केकहतनयेनौतोचबैचुगललमानौरंगनिचु
रतहै॥४॥दोहा॥लाजगरबआलसउम

वि०स०
॥७६॥

गभरे नैंन मुसिका[न] ॥ रातिरमी रतिहै तिन्हैं हि
चौरे प्रभा प्रभात ॥ २५ ॥ टीका ॥ यह नैंननु कौ भा
उदे पिसखी नाइकासौं कहै तौ लछिता होइ जो
नाइका नाइकसौं कहै तौ षंडिता होइ ॥ २५ ॥ क०
सारस तैं सरस लसत भरे आलस रस महा रंग
मगन है रैं हियो हरि लेत हैं ॥ लाल डोरे राजत
हैं औरें ओप साजत है फूले मुसकात है निका
इके निकेत हैं ॥ मैंनकी उमंग भरे जोवन के रंग
भरे लाज की तरंग भरे गरव समेत हैं ॥ सैंन सुष
पागे निसि जागे इगते रैवान रातिरमी रतिकी
प्रभात कहे देत है ॥ २५ ॥ सषी नंकौ लषि वौ हो
पट की टिंग कन दो पियतिसो हर तिसुभग सु वेष
॥ हदर रदछद छवि दे तिय हसदे रदछद छद कीरे
ष ॥ २६ ॥ कवित्त ॥ आजु भट्ट रतिरंग के मैं हिरन
मन मोहन के संग जागी ॥ कैलि विलास कला
सनि के वड भागिनि तैं रिझयो अनुरागी ॥ टांक
निकौं पट की टिंग सौं अतिसोहति चारु प्रभा
निसौं पागी ॥ देति महा छवि की हद कौं यह रेष र
दछद की सद लागी ॥ २६ ॥ दोहा ॥ सुरति उराइ उर
तिन हि दगर करति रति रूप ॥ छूटे पीक औरे
उठी लाली औठ अनूप ॥ २७ ॥ टीका ॥ यह सुरति
के चिन्ह देषि सषी नाइकासौं कहति है पर कि
या जो नाइका सषी सौं कहै तौ अन्य संभोग दु
षिता होइ ॥ २७ ॥ कवित्त ॥ षेषन जारु वेनाइ सजे ॥ ७६ ॥

कचफूलनिगुहेकिरिआडनाई॥हांतोकहा
पटलैपटराधिकेनीककपोलकीपीछिकै
आई॥देनिकहैरतिरंगकीभांतिचितिपेमकी
रीतिदुरैनदुराई॥पांनकीपीककहुंटैअधरानि
मेंओरैकछुप्रगटीअरुनाई॥७॥दोहा॥सों
सोंमिलवतचातुरीतूनहिमांननिमेत॥केहे
हेतुयहप्रगटहीप्रगट्यौहुसपसेत॥८॥टीका
यहनाइकाकेखेदलषिसषीसुरतभयौजांनि
कहेतिहैलछितांजांनियें॥१०॥कवित्त॥आजु
पगीसुषपुंजमैंप्यारीसुकुंजमैकेलिकरीमन
भाई॥पीकगईछुटिओठनुपेप्रगटीसुषमंडल
पेअरुनाई॥मेरुकीवातनकहैकिनिभामिनिमे
सोंचलावतिकौंचतुराई॥तोतनदेतकेहैंप्र
गटैयहहुसकेमासपसीजुतमेंझाई॥१०॥दोहा
आजुकछुऔरैभयेवयेनयेठिकठैन॥चितके
हितकेचुगलयेनितकेहोंहिनतैनं॥११॥टीका
यहनाइकाकेनेत्रदेषिसषीकहैतोलछितनाहोइजो
नाइकानाइकसोंकहेतोषंडितनाहोइ॥११॥कवि
आलसकेरसमैंविधकेरंगेलालकेरंगसुरंग
भयेहैं॥हेतकहैचितकेहितकीचुगलीठिक
ठैननयेईठयेहैं॥निरतहैअरविंदप्रभाअरु
रागपरागमैंपागिगयेहैं॥होंहिनयेनितकेस
जनीडगआजअनुरवओपठयेहैं॥१२॥दोहा

वि॰ प्र॰ ॥ ४७ ॥

मेरे हू रूसन बात न कंत व्है राव ति धाल ॥ जग जो
नी विपरीति रति लषि विंदुली पिय भाल ॥ २०
टीका ॥ यह नाइका प्रौढा रति विपरीति कों नी
सषी सौं दुराव ति है सु प्रवीन सषी जांनि लई
सु नाइका सौं कह ति है ॥ २० ॥ कवित्त हौं हि तुकें
छिवू रूतें तो क फ़ंत्त व्है राव नि बात हि मेरी
॥ भृन्यौं कौ चंद उदोत न के रैन व के सं दवै किये
घोर है घेरी ॥ तैं हरि सौं विपरीति रची व है कें
दुरि है अब तौ हम है री ॥ नीकें दीजां निपरी
सब कौं पिय भाल लषें विंदुली तिय नेरी ॥ २०
॥ दोहा ॥ सही रंगीले रति ॥ जगे जगी पगी सु
ष चैंन ॥ अलसौं हैं सौं हैं कियें कहें हसौं हैं नै
न ॥ २१ ॥ टीका ॥ यह नाइका के नैन अनु कें सो भा
देषि सषी सषी सौं क है है नैं छिना ॥ २१ ॥ कवित्त
मो सौं छबीली रसरीति कौं छिपाव ति है आं
नन पैं उमगि अरुन ओप जागी है ॥ अंग अंग
सिथल अनंग सुष संग सनैं रंग सनी हूं सम अ
नुरागी उर लागी है ॥ ल सन हसौं हैं अलसौं हैं
अलसौ हैं ये वपले चष सौं हैं कियें कहत व
गर बेम पागी है ॥ कहीन परति अति अरसउं न
छवि यह सही तू रंगीले रति जगे चाजु जागी
है ॥ २१ ॥ दोहा ॥ कोरि जतन कीजैं तऊ नागरि नेह
दुरैन ॥ कहैं देत चित ची कनैं नई रुषाई नैंन ॥ ४४ ॥

२२ ॥ टीका ॥ यह नेत्र रोषित सषी नाइका सौं कहै
तु छिता ॥ २२ ॥ कवित्त ॥ नैंन मनमोहन सौं मिल
यो मन मैं नव हीलविष पाई ॥ क्रूर नितो हि हियें हि
तु मांनि कैं मोसों चलावतिन्ह चतुराई ॥ कोरि
उपाइ करे किनि नागरि नेह की डोरि टुरै न टुरा
ई ॥ नैंन नु मांफ रुषाई नेइ यह देत कहैं चित
की चिकनाई ॥ २२ ॥ प्रौढा सादरा धीरा दोः
मुह मिठास दृग चिकनई भौं हैं सरल सुभाइ
॥ नेकुं परे आदर रुषरी षिन षिन हियो सकाइ
२३ ॥ टीका ॥ यह नाइका सादरा धीरा प्रौढा
नाइका को वचन नाइका सों ॥ २३ ॥ कवित्त बद
न कमल नैं अधिक हित सां नैं वैंन मधुरै क
ढत अमी जिन मैं चुचातु है ॥ भ्रकुटी सुभाइ
ही सरसल षिपाति कै हैरी सकौ रंच न विला
सु दरसातु है ॥ नेह की निसांनी चितवनि
त्यों ही कै सहूं नमो पै यह मे डुलयो जातु है
॥ ज्यों ज्यों अति परी पुरी आदर करति प्या
री त्यों त्यों मेरो हियो परो परो ई सकातु है ॥ म
२४ ॥ दोहा ॥ परे आदर व इठलाह टौ उर उपज्यो
नित्राम ॥ दुसह संक विस की करै जैसे सों ठि
मिठास ॥ २४ ॥ टीका ॥ यह नाइका अधीरा
माधीरा प्रौढा नाइकको वचन सषी सों ॥ २४
कवित्त ॥ गांसु गयो उर मैं जितनो कछु मैं तो

वि॰ स॰

॥७८॥

नहूकरनीकवरीहै॥वानिसजीइठलाहट
कीश्रेवकाहेतैसोयौंनजांनीपरीहै॥आतु
हियेंउपजावैधरोअतिआदरसोंअभिमान
भरीहै॥सोंछबबावनमीढीलगैसठकोऊक
हैविसहीकीउरीहै॥२४॥आकनिगुमाधी
रादोहा॥नहिनचाइचितवनिदृगनिनहि
बोलतिमुसिकाइ॥ज्योंज्योंरुषरूषोकरेत्यों
त्योंचितचिकनाइ॥२५॥टीका यहनाइकाउ
दाधीराआकनिगुमानाइकाकौवचनना
इकासोंसषीकौवचननाइकैसोंनाइकेहसो
हार॥२५॥कवित्त जोरतिलोचननेचाइनै
हचाइभरेअधमुसिकांनिकोनभाउदरसा
तुहै॥बोलतिकहूंमनमोहनमधुरवैनमो
रतिनभ्रकुटीमरोरतिनगातुहै॥कहैकवि
ह्मवाकीगरबीलीबानिकैहूसहजबसी
करकोसोमबजान्योंजातुहै॥ज्योंज्योंहीरति
प्यारीराधारूषोरूषोंसुषकरतिसोंहीत्यों
बौरईपरीचितचिकनातुहै॥२५॥दोहा॥चि
तवनिरूषेदृगनिकीहांविनुमुसिकानि॥
मांनजनायोमांननीजांनिलियोपियजां
नि॥२६॥टीका यहनाइकामानवतीहैपैमा
नुकेलछनकछुप्रगटकरेनाहीपैप्रवीन
नाइकनेजांनीसषीकौवचनसषीसोंसषीना

इकहू सौं कहै ॥२६॥ कवित्त॥ जैसें ही चितैंनी नि
जैसें आगें चितवनि ही पैनें है चिकनाई की
नी इगनि निसांनी है॥ मधुर वचन त्यों ही बोल
नि बिहसनि पेसरस मुसिकांनि कीन बांनि पहिचा
नी है॥ ऐसी भांति भांमिनी जनाई गूढ मांन री
ति जोंन मन प्यारे भेष देखनही जांनी है॥ साधि
कै रुषाई रिस ठांनी तें सयांनी सो प्रवीननु की
डीठि नें रहनि कै सैं छांनी है॥२६॥ दोहा॥ येरी य
हनेरी इई क्यों हूं प्रगटनि नें जाइ॥ नेह नभ रे हि
यरा बिर्षे नूरूषी ये लषाइ॥२७॥ टीका॥ यह म
नाइबो सबी को वचन नाइका सौं नाइका धी
ढाधीरा आक्रांति गुप्ता॥२७॥ कवित्त॥ कौंन
परी प्रकृति छुटाये हूं न छुटैं न क्यों हूं स्यों स्यों की
जे कनी त्यों त्यों हूं नी पेंषियति है॥ प्रेम पांन प्या
रे की दुहाई तेरी है धंग तिमेरी मति सो चब सां
नी बिसे षियति है॥ जह पिसनै रमेर उरमें बसा
ई प्यारे पीति सरसाई मन लै षियति है॥ तकै
तिय मोंह तु मैं बैंन तु मैं नैंन तु मैं तेरे अंग अंग
मैं लषाई दे षियति है॥२७॥ मध्यविश्रमदोहा॥
जो तिय तुम जिय भांवती राषी हियें बसाइ॥
मो हित कारनि इगनि कै वह ई उमकति आ
इ॥२८॥ टीका॥ यह मान प्रमनाइका नाइक की
आंषिन में आपनो प्रतिबिंबु देषि औरस्त्री जां

वि०स०
॥४२॥

निकैं कहति है मानवती है ॥२७॥ कवित्त नैंक मन नैंक रौ पाइ परौ हरि है मन नैं मो सौं रही दुरि है ॥ राज करौ नित याही लियें रहौ या मैं कहा कहे नाह निहै ॥ जो तुम राषी वसाइ हियें पिय प्यारि तिहारी कहावति है ॥ मां कनि रावरी औ छितु औं निवहै नियमो हि हु कावति है ॥२८॥ परमा रमान दोहा ॥ चिरजीवौ जोरी जुरै क्यौं न सनेह गंभीर ॥ को घटि ये वृषभान जा ए हलधर के बीर ॥२९॥ टीका ॥ यह परस्पर मान सषी कौ वचन सषी सौं ॥२९॥ कवित्त ॥ मान न क्यौं न है मारी कही जहां दोऊ तुम मान भरी गरुवाई ॥ दोऊ धरे अति निज भरे तहां क्यौं न बढे हित की सरसाई ॥ को घटि है चिरजीवौ करौ यह एक सी जोरी विरंचि वनाई ॥ हैं उत वे वृषभान सुता इत ये हलधारी के वीर कन्हाई ॥३१॥ दोहा दोऊ अधिकाई भरे ये के गो गहि राइ ॥ कौं न मनावै को मनैं मनैं मत ठहराइ ॥३०॥ टीका ॥ यह परस्पर मान है दोऊ अधिकाई भरे सुनाई का मानवती नाइक रूप मांनी अथवा नाइका कौं मान देषि वे कीनौ है सषी कौ वचन सषी सौं अ रु जौ दोऊ अन्यास कि होहि नौ यौं ही कहि वे संभवै ॥३०॥ कवित्त ॥ आजु चली रस हीर सभै र सवान दुहून निसु नौं कहि आवै ॥ लै अपनें अ

॥७२॥

पनैां रिसमैं चषरूसाषो हियो अबकौ तुरसावै ॥
दोऊ घरे अधिकाई भरेगहै येकहीगौंको ऊभेद
न पावै ॥ कौन मनावे मनैं कहि कौ मन मानै उ
हैतु कौं मान नही भावै ॥ ३० ॥ मानउडिटाइबौ दोहा
मानकरतिवरूजु तिनहीं उलटि दिवाव सौंह
॥ करीन सौंही जो हिगी सहज ह सौंही मोंह ३
टीका यह मान उडिटावति है सु मान छुडाइबौ
षयो जनु है सषी को वचन नाइका सौं ॥ ३१ ॥ कवि
त्त रूषौक स्यौ रूषनैन चढाइकैं बैन कहैं मुषते
अनषौंहैं ॥ मानकस्यौ सु भली करी हौंन मनैं क
रैं औरदिवावे तिसौ है ॥ मोहसौ बूझै न ऊतर
दै तिसु दै षौंगी मोंहन को मुषु जो है ॥ होइगी
केसरि सौं ही सुहागिल हां सी भरी जु सुभाइ कै
सौं है ॥ ३१ ॥ मानदोहा ॥ रसके से रस ससि मुषी
हँसि हँसि बोलति बैंन ॥ यह मान कहि कौं डुरे
भये बूढ रंग नैंन ॥ ३२ ॥ टीका यह नाइका धी
रा को मान है सु सषी नाइक ही नाइका सौं कह
ति है ॥ ३२ ॥ कवित्त ॥ ऊपर कै औरस कौ सौ कै स्वार
थु भोऊ किये हित केसर माते ॥ स्यौं चितै हसि
बोलति भामिनि बैंनु कटै मुष मीठै सुधा ते ॥ ने
ह के चिंह जनाये सबै अरस्वा सदबा इकते ह
कैं माते ॥ मान हिये कौ डुरै कहि कौं जु मजीठ कै
रंग भये डग राते ॥ ३२ ॥ मानबरिहास दोहा ॥ कप
ट सतरम्यौं हैं करी मुषअनषौं हैं बैंन ॥ सहज हंसौं

वि०स० ॥८०॥

जांनिकैं सौंहैं करति न नैंन॥३३॥टीका॥ यह मान
परिहास है नाइका कौ टा सषी कौ वचन सषी सौं
३३॥कवित्त॥ प्रीतम की प्रीति की प्रतीति लषिवे कौं
प्रांनप्यारी कछु कीनौं परिहास रूठौ मान ठांनि
॥कहै कवि लछिराम उर ऊपर रसगोई मेरि वदन बिरी
रि बैठी धरिकैं कपोल पांनि॥ आपनी अलीनि
हूं सौं जोरति न रुष मुष वैन अनषाइवे कौं त्यौं
त्यौं गही वांनि॥ भ्रकुटी सतर कीनी कपट सौं
तिनि त्यौं पै सौंहैं न करति दृग सहज हंसौंहैं जां
नि॥३३॥मानसौ भा आसक्ति दोहा॥ मन न मना
वन कौं करे देत रुठाइ रुठाइ॥ कौतिग लाग्यौ
प्यौ प्रिया षिझिहूं रिझवति जाइ॥३४॥टीका॥ यह
नाइका कौ मान देषिवे कौ प्रयोजन है समान छु
टत जानन है न वही फेरि रुठाइ देतु है सु सषी सौं
कहति है॥३४॥कवित्त॥ रीस भरी अंषियां निहूं
की अवलोकनि मानभर्यो रस भारी॥ याही तैं मा
नहूं कौ रुष देषिवे कौं नंदनंद है यैं रुचि धारी॥
होति मनौं ही प्रिया जब ही तब सैं करि देतु रुसा
इ बिहारी॥ कौतिग लाग्यौ इहि रस कौ षिझिहूं कै
रिझावति राधिका प्यारी॥३४॥गुरमान दोहा॥
बाही निसि ते ना मिट्यौ मान कलह कौ मूल॥ भले
पधारे पांहुनैं ह्वै गुडहर कौ फूल॥३५॥टीका॥
यह नाइका परकीया उपपति कौ बिरह दुराइवे कौं
पति सौं मान कीनौं सु सषी सषी सौं कहति है जो ना॥८०॥

इकाकी सखी नाइकसौं कहै है खंडिता होइ ॥ ३५
॥ कवित्त ॥ जौ हीर जनी के घर बसै आनि घर बसे
जानैं कौंन कहा मंत्र कैसें पढ़ि आयो है ॥ वा हीर
जनी तें अज्यों मिल्यौ न अनैसौ मान सखी पचि हा
री काहूं मनावन पायो है ॥ कहै कवि कृष्ण ऐसे
रूठनौ सुन्यौं न देख्यो जैसौ उहि लरि हारी उर मैं
ढिढायो है ॥ पाऊं नें पधारे आछे फूल गुडहर कौ
कै कहूं न कौ मूल बावगर बगरायो है ॥ ३५ ॥ मं
ध्यम मान दोहा ॥ मोहूं सौं बातन लगे लगी जीभ
जिंहि नाइ ॥ सोई लै उर लाइये लाल लागियत
पाइ ॥ ३६ ॥ टीका ॥ यह मध्यम मान नाइका सौं बा
तें करत जान नाइका सौं आसक्त है नाइक ने ता ही
कौ नाम लीनौं सु नाइका नाइकसौं कहति है ॥
३६ ॥ कवित्त ॥ कैसो राखौ गोइ होइ प्रगट हिये कौ
भाउ जासौं रंग मगि विलुरयौ अनुरागि कै ॥ उप
री रसिक रसरीति की प्रवीनी वाकी मैंनैं सुधि की
नी मोसौं बात निहूं लागि कै ॥ कृष्ण पौन प्यारे ह
री प्रीति कौ धरमु यहै पायौ अब मरमु भरमु ग
यो भागि कै ॥ पाइनु परति हहरि वाही उर लैये ज
हीर मनी कौ नाम रह्यौ रसना मैं पागि कै ॥ ३६ ॥
दोहा ॥ कहै कहै न कहा कह्यो तो सौं नंद किसोर
॥ बड बोली कित होति बलि बडे दृगनि कै जोर ॥
३७ ॥ टीका ॥ यह मनाइबो सखी कौ वचन नाइका
सौं ॥ ३७ ॥ कवित्त ॥ सांची कहि मोसौं अहै काहे तें

कहतिमाहितोसौंकहाकह्यौमनमोहनकन्ह
ईरी॥कौंनवडोवोलतुऐसोवोलतुमोंनमसी
रतीरिसरासितेंकहांतेंगहिपाईरी॥हमप्रांन
प्यारोश्रीनिहितुकैमनावतुहैकरिमनुहारिवा
नमैंवनाईरी॥मांनिकह्यौमेरौवलिकलटनक
रिजौपैतैंहीपाईवडीवडीआंखिछविछोईरी॥
३७॥दोहा॥विधिविधिकोंनकरैटरैनहींपरैंहू
मांन॥चितैकितैतैंलेधस्योइतोइतैननमांन
३८॥टीका॥यहमनाइवेसषीकोवचननाइका
सों॥३८॥कवित॥पाइपरेमनमोहनहूंवकमां
निहियैंरसमाइमरेतो॥पीतिकीवौंपवढाय
सखीनिकहीसमझाइविनैकरिकेतो॥लोचनन
तेरेतऊनलेचेअनषाइनचेअतिरोसरचेतो
॥नैकचितैचगनैंनिकितैंनैंधस्योभरिमानइ
तेनचयेतो॥३९॥मानपरिहासदोहा॥हसिहस
इउरलाइउठिकहिनरुषोहैंवैंन॥जकितछकि
कैतकिरहेतंकीतिलौंछैनैंन॥४०॥टीका॥यहमा
नपरिहासनाइकाकेविषमानसषीनाइकासोंक
हतिहैजोनाइकाकोअपराधुउराइवेकोंकरैतो
हूसंभवै॥४१॥कवित मानकियोहोहितोमनावै
प्यारौपाइगहिऐसेपरिहासकौंजननकहाकी
जियै॥रसिकरसालतेरेलोचननितलोंछेवाहि
चकनकैरह्यौऐसैंनाहकनषीजियै॥हाहातो
हिसौंहैंअवसुधीकरिमौंहैंवैनकहिनरुषौं

हैं लालछोतीलाहली जियै ।। [illegible] येहसमाई येरी
सुषसरसाई येरी रसु वरसाई दुषसौ नितु कौं दी
जियै ।। ३९ ।। दोहा ।। वैयो हू सहवान निलगै छाके
भेद उपाइ ।। हठ छूट गढु गढवै सु चलि लीजै सु
रंग लगाइ ।। ४० ।। टीका ।। यह गुरमान है सषी नाइ
कसौं कहति है कि वाकौ मानु तुम्हारे वैनै छुटै
गौ सषी कौ वचन नाइकसौं ।। ४० ।। कवित्त ।। आजु
सस्यो हठ कौ गढु प्यारी नैं देषत धीरज कौं न की
धीजै ।। कौं न हूं मां निलगै सहवान न भेद उपाइ
थके मन ठीजै ।। लोचन हू तन नकौं हूं मिलै हरि
मानियैं मंत्र वित्तं तु न कीजै ।। आपु न ही चलि कै
वलि जाउ सुरंग लगाइ लगाइ जो लीजै ।। ४० ।। दो
चन रस हू रस पाइयतु रसिक रसीली पास ।। जै
सें सांठे की गेठि नगांठो भरी मिठास ।। ४१ ।। टीका
यह मानवती की सीभा सषी नाइकसौं कहति
है प्रयोजनु यहै है कि नाइकु वैलै तौ मानु छूटै
४१ ।। कवित्त ।। मानमेति हारी मनमोहन निहारी
के हू मो पै न कै यों परै सोभा कौ विलासु है ।। ना
सिका सकोरि मुह मोरि भ्रुकुटी आन विवेंदी लो
चन नु मार्ह आरुनाई कौ प्रकासु है ।। रसिक रसा
लन्वारसी सीकी विलोकौ छवि चनै रस हू मैं ये
मो रसकौ निवासु है ।। कहै कवि ऊम जैसे सांठे की
सरस रीति गांठि है गठिन नऊ पे यनु मिठासु है
४१ ।। दोहा ।। हम हारी कै कै हहा पाइनु पार्यो लो

नि॥ लै हि कहा अजहूं कियै तै हठ तेरे रैं न्यौम॥४२
॥टीका॥ यह अग्यात गुरमान है सषी कौ वचन ना
इका सौं॥४२॥कवित्त॥ चंदक बूरसी चारु सुख पा
रु माल तनी मल्ली फुली सुषदाइनि॥ हाहा कै हा
रि रही सजनी वरु भांतिनि हौ रिम नैवे की भावु नि
॥जीवन जो सिगरे ब्रज को हरि प्रीतम सौ रूप न्यौ
हरि पाइनि॥ लै हि कहा अजहूं वलितै हसौ न्यौर
तेरै रौ कियैं ठकुराइनि॥४२॥दोहा॥ सौहैं हूं हैरयौ
न तैं कैती ह्याइ सोहि॥ ए हो क्यौं बैठी कियौ ऐंठी ग्वैं
ठी मोहि॥४३॥टीका॥ यह नाइका मानवती सषी कौ
वचन नाइका सौं॥४३॥कवित्त॥ कैती मनुहारि क
रि हार्यौ नंदलाल ब्रजवनिता निहाल हौ तिजा
के नैंक चाह है तैं॥ ही तौ तूं सयांनी परि कहा बितनं अ
नी ए तेरि सके समाज वितु काज अबगाहै तैं॥
सौंहैं हेरि वेकों हम केती ह्याई सोहैं नकु तेरौ म
तु लल क्यौं न रस के उमाहै तैं॥ कियौ कहा चाह
ति है सोई क्यौं न कहै ऐंठी ग्वैंठी भौंहैं करि वैठी ग्व
वको है तैं॥४३॥दोहा॥ निरदई नेह न यौ निरषि
मयौ जगत भयभीतु॥ यह न कहूं अब लौं सुनी
मारि मारियतु मीतु॥४४॥टीका॥ यह मानवै रहे स
षी कौ वचन नाइका सौं नाइक के पठे की सषी है
जो परकिया है हो इ नाइका कहियै तौ कहियै गु
रु मान॥४४॥कवित्त॥ ऐसो चपीन भयौ मन मो
हन तो वितु नैंक न अंग समार हि॥ नाहिं सौ तौ नर

सावतिवांवरीकौंनकरैमिलि कुंजविहारहहि जे
रोनक्योनरहैहिनुहेरिहसोजगहौंहूंमरीमयमं
रोहि॥ऐसोजुलोऐसीसुनीनकहूंगतिआपुमेरेअ
नमीनकौंमारहि॥४४॥माननमोचनदोहा॥हठ
तुहठीलीकरिसकैयहपावसरितुपाइ॥ओमं
गांठिज्योंघुटतिज्योंमानगांठिछुटिजाइ॥४५॥टीक
यहमानमोचनप्रसंगविध्वंसरभीकोवचनसषी
सों॥४५॥कवित दांमिनिचपलगतिसोकस्यामघ
नहीसोंमिलिविरहहरतिअतिसोभासरसातिहै
॥दुमनसौंलहलहीलसतिकालिवृद्धिरहीसि
हीकेउरप्रीतिरीतिअधिकातिहै॥कैसीयोहठी
लीकोऊरूठनोंनठांनिसकैमदनमरूरनिसोठ
तीअकुलातिहै॥४५॥दोहा॥मनरमोहरूषेवच
नकैरिनिकठिनमननीठि॥कहाकरोंकैजातिह
रिहेरिहसौंहीडीठि॥४६॥टीका॥नाइकाप्रौढा
उतमासषीसिषावतिहैकितूमानकरियाकौना
इकाकौदेषतहीमानरहतनांहीनाइकाकौवच
नसषीसों॥४६॥कवित नेरौकयोकरिरूसनौंरां
ननितिहारूषरूषेकेतांनतिमोंहै॥नीठिकठोरक
रोमनऊंमुषहूतेंवषांनतिवैनरूषोहैं॥कहाअ
मेरोअलीलचैलालचीजोअपनीतेकिगोंहैं
॥कैसीकरोंमनमोहनकोमुषदेषतलोचनहो
तहसौंहैं॥४६॥दोहा॥जुरेदुऊनकेद्रगममकिर
केनमीनेवीर॥हठतुकीफोजहरोलज्योंपरतिगो
लपरभीर॥४७॥टीका॥यहमानमोचनसषीको

वचनसषीसों ॥४७॥ कवित्त ॥ बैठी अली गन मैं न
व नागरि अचांनक आयो नन्द हो वन वारी ॥ लो
की दीठि बचाइवे कौं मुष घूंघट ओट कियो नान
हारी ॥ नैन सौं नैन उमगि मिले न रहे पट ओट
किते पचिहारी ॥ रोकि सके न हरोल की फौज ज्यौं
गोल पै आंनि परे मनु भारी ॥४७॥ दोहा ॥ तोही कौ
छुटि मान गौ देषत ही ब्रजराज ॥ रही घरीक लौं
मानु सी मान किये की लाज ॥४८॥ टीका ॥ यह मान
मोचन सषी कौ वचन सषी सौं ॥४८॥ कवित्त ॥ आजु
के रूसनैं की अनिसो भा कहा कहौं पांनि कपोल
धरे की ॥ आलिनु की विनती हू सुनैं न टरी रिस रा
धिका के हियरे की ॥ छूटि गई सु तौ देषत ही मनु
मूरति कान्ह तुनाइ भरे की ॥ मानु ही सीउ रमां
न रही वह लाज घरीक लौं मानु करे की ॥४८॥
दोहा ॥ चलो चलैं छुटि जाइगो हठु रावरे संको
च ॥ षरे चढाये हो नै अब आये लौचन लोच ॥
४९ ॥ टीका ॥ यह मान छुडाइवे कौ है सषी कौ
प्रयोजन नाइक कौं लै जाइवे कौ है सषी कौ वच
न नाइक सौं ॥४९॥ कवित्त ॥ जानै को कोन्हि निहारी
पियारी करा जिय जांनि महा रिस ठांनी ॥ कैनी मैं
बात बनाइ मनाइ करी मनुहारि पै एकन ही मन
मानी ॥ क्यौं हूं कै जान न टरै दृग भौंह के छुकुनैं स्नु
कुती अति मांनी ॥ लाल चलो अवलोकिनु मैं छु
टि जाइगो मान अवे हम जानी ॥४९॥ दोहा ॥ बिचे
मान अपराध हूं चलि गै वढै अचैन ॥ सुरत डीठि

नहिसषिसींहंसे दुकूनकेनेंनं॥५०॥टीका॥यहमा
नमोचननाइकाकेनेत्रतोमानसेंषिचेनाइकके
नेत्रअपराधसोंषिचेहैंपैअचैंननैंबिनादेषें
रह्यौनजाइयातेंरिसअरुषिसीआपुहीतेंछोरि
केदोऊनुकेनेत्रहंसेसषीकोवचनसषीसों५०
कवित्त॥ मानकेभामिनिनैंचिरहीदुगरातिक
हूंहरिअंनवसेई॥याहीतेंमोंहननारिनवाइरहे
उरसोवसकोचगहेई॥छलकहैविनुदेषेंदुहं
नुकेमैनअचैनहियेंसरसेई॥दीठिजुरैंनछिपें
सषिसीबिबिनैंनमिलेंसुषपाइहंसेई॥५०॥दो॰
नुहींकहतिहौंआपुहंसमाऊनिसवेसयोंतु
लविमोंहनमनुजोरहैतोमनुराषोमानु॥५१
टीका॥यहनाइकाप्रौढासषीकहतिहैतूमानु
करिसुनाइकासषीसोंकहतिहै॥५१॥कवित्त॥
मानकियेंरमनीजनकेवसपीतमहोनुमतोय
हतेरो॥होंहूंयहैअपनेचितमैंनतिहौंकरिस्यां
उपनेरो॥तौकरोंमानुरीमोंहनकोंलविजोसषि
हाथरहेमनमेरो॥रूसिवेजीमेंविचारविचारसें
हौंपेकहाकरौंत्योरूतनेरो॥५१॥दोहा॥मोहिलै
जावतनिलजएफूलसिमिलेंसवगात॥मोंनउ
देकीविसलोंमांननजांन्योंजात॥५२॥टीका॥यह
नाइकाप्रौढामानमोंवननाइकाकोवचनसषी
सों॥५२॥कवित्त॥हूंतौसिषवनिमनमोंहनसोंमा
नकरिमैरेहूंहियेमैयहविचारठहरानरी॥फिर

घूनहूसमधानप रेकीछ्बीलीछविश्रापहीसिंकु
लेसिमिलतसवगातरी॥ कहाकरौंनिलजयेसो
हीकौंलजावतहेंकहेंजोपेहोइकहिवेकीकछु
गोतरी॥ भांनकौउदोतभयैंश्रोसकनकीसीभां
तिमानुमनमैंतेहौंनजांननतविलातरी॥५२॥दोहा
हिगिनिगोरेनैंनहिगिगहैंनचेतुश्रचेतु॥ हौंकसु
करिरिसकौंकरौंयेनिसवेहंसिहेतु॥५२॥टीकायु
हनाइकाकोवचनसषीसौं॥५३॥कवित्त॥सहियें
जगकेउपहासनितेंरहियेगुरुलोगनिमोंजगमें
उरुश्रांनियहैश्रपनेंउरहींसमझाइरहीनहि
नकवसे॥ श्ररुरंचकमेरोकह्योनकरैंतनहूंम
नहारेंतऊकुलसें॥ यहनेंमुगयोसजनीयननें
नतुपैहरिहेरिहसेंईहसे॥५३॥दोहा॥सकुचिन
रहियेस्यांमसुनियेसतरौंहैंवेंन॥ देतरुषौंहैंचि
तुकेहैंनेहनिचौहैंनेंन॥५४॥टीका॥यहप्रथमसमा
गमनायकापरकियासषीकौवचननाइकसौं॥
५४॥कवित्त॥नाहीयेमैंहांहेनईरीतिहेइहांकोय
हेरसिकमननिकोंकरतिश्रनिचैंनहैं॥ यहीरूषौ
रुषुचिकनावतुश्रधिकचितुयेईमनमथकेवि
लासतुषदैंनहैं॥ सकुचिनरहियेसुजांनमनस्यां
मसुनौंकहाभयौजोपैमतराइकहेवैंनहैं॥ प्रीति
सौंसबौहैंयारचौहैंसेहियेकीवातमेंहसौंहैंनि
चौहैंयेकहेईदेतनैंननहैं॥५४॥दोहा॥कहाले॥८४॥

गोऐलपैनजौ अटपटी वानि ॥ नै कहसौंही है मई
मोहैं सौंहैं घात ॥५५॥ टीका ॥ यह नाइक कौ और सौं
आसक्ति जो निनाइका नैं मानु कियौ नाइक कुमना
वनैं आयौ सु वाही नाइका कौ नाम मुह तैं निकस्यौ
सो सषी नाइक सौं याकौ मान छुडाइवे कौ परिहा
स कौ प्रसंगु चलायौ सषी कौ वैचन नाइक सौं ॥
५५ ॥ कवित्त ॥ हांसी तो की जियै ना सौं लला जु है
सै सुषपाइनु ये तिय औरासी ॥ वारही वार लै और कै
नाम नु का वोइ कै नैं जौ वांनि अनेसी ॥ या परिहा
स पै लैहौं कहा हहरियै तो इते कहि कौं मुरि वैसी ॥
सौं है कियें मई नीठि हसौंही ये भौंह कमान मना
ज की जैसी ॥ ५५ ॥ सनेह के अंग के ॥ दोहा ॥ छनछ
टईवत्तु करि थके कटैनकु वनकु ठार ॥ आलवाल
उर झालरी षरी प्रेम तरु डार ॥ ५६ ॥ टीका ॥ यह सने
ह की दृष्टांत सषी सौं नाइका अथवा नाइक कहै है
५६ ॥ कवित्त ॥ देषत ही सूरति मधुर मन मोहन की नै
ननु के मिलैं मिल्यो मनु अवदातु है ॥ आलवाल उ
र तैं प्रगट भयौ प्रेम तरु दिन दिन झालर न अमित
रसातु है ॥ नाहि हू सिकरिवे कौं कितनैं षलनि षगि
कुवतन कुठार गहि की नौं उतपातु है ॥ कहै कवि देव
ल सवै थाके अति वलु करि नैंक घटन सौं सौंड
टहोन जातु है ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ करतु जातु जेती कट
नि वढि रस सरिता सोतु ॥ आलवाल उर प्रेम त
रु तितो तितो दृढ होतु ॥ ५७ ॥ टीका ॥ यह सनेह के अं

गमैंइहनाने?कोकौग्रथवानाइकंकौवचन
लषीसौंसषीनाइकानाइकहसौंकहै॥५७॥कवि
आलवालउरमैंमनोज्ञवयोनेहवीजतातैंभयो
आलीपेमअंकुरउदोतुहै॥सुरतिसलिलसींचौय
हीनेउमगिफूलफलप्रगटौविरहआनयोतुहै॥क
हैकविकमसौंज्यौंउमगिप्रवलमरकरतुकटनिर
सेसरितोकोसोतुहै॥नैंकनडिगातुवाकीत्यौंहीत्यौं
जमतिजरमालरतुमौंरतुघरीइदहोतुहै॥५७
॥दोहा॥जदपिसुंदरसुघरऊसगुनोदीपकदेहऊ
ततऊपकासुकरेंतितेभरियौजितैसनेह॥५८
टीका यहसनेहवढाइवेकौंसषीनाइकासौंकहै
नाइकहसौंकहै॥५८॥कवित्त॥जदपिचारुगहैंदि
कनाईसुढारदरसौंसुघरौकितिहोऊ॥ऊसकेहै
वऊमंडितकेगुनजोतिजगाइधरौपुनिसोऊ॥
हैयहवातप्रसिद्धिसवैजगयेकसीरीतितिवाहन
होऊ॥नेहभरेवितुदीपकदेहऊपकासुकरैनकि
तौकरौकोऊ॥५९॥दोहा॥सरसतुमिलिचितनुरा
गकीकरिकरिप्रमितउठांन॥गोइनिवाहैंजीनियै
षेलपेमचौगांन॥६०॥टीका॥यहसषीनाइकाकौंसनै
हकीढवनावतावतिहैअरुप्रयोजनुनाइकासोंमि
लौपुकरायौचाहतिहैसषीकोवचननाइकासों
६०॥कवित्त॥सरसतुरंगुग्रतितुमिलविमलचितु
ताहिवाहितजैनैंमौंचुटकिचलाइवौ॥लोकलाज
वागसाधिइहअनुरागकरिप्रमितउठांवनीत्रक
रिंकरिधाइवौ॥कहैकविकमलअमिलापघरीहाथ

गोइ निरखो है नवलीनि पर पइयो ॥ षेलिबौक
ठौ यह हषें मचे वगांन षेल विनु विलार मैं नन्द
पा हरि मा इयौ ॥ ५८ ॥ प्रीति कौ उपालंभ दोहा ॥
जाति मरी बिछुरी घरी जल सफरी की रीति ॥ निन
घ निहो नि षरी षरी अरी जरी यह प्रीति ॥ ६० ॥ टीका
यह नाइका परकीया प्रोढा नाइक के वियोग मैं
षरी व्याकुल है अरु प्रीति निंदति है सु सषी सों
कहै है ॥ ६० ॥ कवित्त ॥ नैंन अघान नही निरषें निर
षें बिनु चैंन परै न घरी है ॥ व्याकुल केतु सुजा
इ परी न लषै बिनु नीर मनों सफरी है ॥ मैं न मरू
र बिथा चित ही नित होनि तहो नि षरी है ॥ जानि
मरी छिनु के बिछुरें यह प्रीति जरी अरी कौं नें क
री है ॥ ६० ॥ दोहा ॥ तो ही निरमोही लग्यो मो ही यह
तु भोउ ॥ अन आयें आवै नही आयें आवति जा
उ ॥ ६१ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोढा है नाइक की नि
ठुरता अरु अपनें हृदय की आसक्ति उराहनौ
दै करि प्रगट करति है नाइका को वचन नाइक
सों ॥ ६१ ॥ कवित्त ॥ नेह मेरे नैंननु की जबतें न जा
नि लीन वही नें चित कौं लगायो अति चाऊ है
॥ मिलत न मिलत मनु हि लि मिलि ये कभयो पर्यो
प्रेंम फंद कौ अनोषो उरझाऊ है ॥ कहि न सकति
तेरो हियो निरमोही अति मेरें हियें गयो कछु
कैसो लोइ सु भाऊ है ॥ तेरे अन आयें मन आवै कै
रहै यह मेरे आयें आइ जातं प्यारे तन आऊ है

वि०स०
॥८६॥

६१॥ दोहा॥ नैनन मलौं नैं अरु रहे अति सनेह
सों पागि॥ ननक कवाई देति तुउ उरन लौं अह
लागि॥ ६२॥ टीका॥ यह नाइका प्रोढा है नाइक के
अंगन हे करन में कछुक पटु जानि उराहने में प्रग
ट करति है नाइका कौ वचन नाइक सौं॥ ६२॥ कवि
नैंक चितै चितु चोरत हो उर जोरत हो अनुराग
स वाई॥ रावरे प्रेम प्रबंधनु की जित ही तित ही
सुनियै वरवाई॥ रूप सलौने सनेह पगे हरि प्री
ति के रंग में वुमिरवाई॥ स्वरन लौं मुह लोगनि
क्रू दुधु दे नित लायह नैं कक चाई॥ ६२॥ नाइका
कौ उराहनौं दोहा॥ मो हिहियो मरो भयो रहे तनु
जिय मिलि साथ॥ सो मनु वांधिन सों पियै सो ति
नु के हाथ॥ ६३॥ टीका॥ यह नाइका प्रोढा परकिया
उराहनौं नाइका कौ वचन नाइक सों॥ ६३॥ कवित्त
जो मन मोहि मया के दियौ तुम मो जिय सौं मिलि
के रस भीजै॥ भेद रह्यौ न सरूप सनु भाइ में पेम पिय
वस दो मिलि पीजै॥ मैं अपनौ करि जान्यौ यही अ
व अंतर होत छिनै छिन छीजै॥ सो मन जोरावरी
करि मोहन सौतिनु के कर वांधि नदी जै॥ ६३॥ दोहा
भये वटाउ नेह तजि वादि वकत वे काज॥ अव अलि
देत उराहनौं उर उपजत अति लाज॥ ६४॥ टीका
यह नाइका परकीया प्रोढा उराहनौं नाइक के वि
द्यमान नाइका सखी सों कहति है॥ ६४॥ कवित्त॥
नैननु सों ननु सौं मन सों रहते ई मिलेजु लहते सुख
साजनि॥ हलि गई सब वेव नियो हितु पूजनि की ॥८६॥

पिय

वहु भांति विराजति॥ येन जिनेकु कटाक्ष मयेश्र
ब्रुवाहिव कैं मजनी विनु काजनि॥ देति कुराहनौ
अैसें नु कौं अपनें उरही चपियै अति लाजनि
६४॥ दोहा॥ आपहियौ मनु फेरि लै पलटैं दीनी
पीठि॥ कौंन चाल यह रावरी लाल लुकावत डीठि
६५॥ टीका॥ यह नाइका प्रौढा उराहनौं देति है ना
इका कौ वचन नाइक सौं॥ ६५॥ कवित्त॥ नेह लोल
मलै उरमाइ हियौ अव देखिवे कौं तरसावत हौ॥
अव तौ हमकौं यह जांनि परी इहि लाज इतै न हि
आवत हौ॥ तुम मोहि दियौ अपनौं मनु आपुहि
फेरि लै क्यौं सिर नावत हौ॥ अव ता पर लै रत पीठि
दई हरि काहे कौं डीठि लुकावत हौ॥ ६५॥ दोहा॥
विरह विथा जल परस विनु वसियतु मो हिय ताल
॥ कछु जांनत जल थंभ विधि दुरजोधन लौं लाल
६६॥ टीका॥ यह नाइका प्रौढा उराहनौं नाइका कौ व
चन नाइक सौं॥ ६६॥ कवित्त॥ हरि मो हिय प्रेम सरो
वर मैं वसिवौ निसि वासर ठांनत हौ॥ नेहूं नीरु वि
योग विथा सु निदै न उपाउ कहा उर आंनत हौ॥
कविहं सम कहैं अपनें उरकौ हम सौं प्रिय भेद न
भांनत हौ॥ कछु जांनि परी दुरजोधन लौं जलथं
मन की विधि जांनत हौ॥ ६६॥ दोहा॥ दछिन पिय
कै वाम वस विसराई तिय आंन॥ येकै वाघर कैं वि
रह लागे वरस विहांन॥ ६७॥ टीका॥ यह नाइका प्रौ

वि॰स॰
॥८७॥

टाहेतुनाइककोंउरांहनौंदेतिहैरछिनप्रिया
तैंचतुरप्रियसंबोधनजांनियैंरछिननाइकेंब
नै॥६३॥कवित्त॥रमरीतिनागरहौचातुरीकेआग
रहौकोरिकामकलानिधिउपमानपरसे॥सब
सुषदेनहौनिकाईकेनिकेतहौतुमैंदेषतहीषी
झिसवहीकेउरसरसै॥रछिनसनेहीहरिऐसे
भयेवामवसविसराईऔरतियदेषिवेकौंनरसै॥
कहेकविरूसयेकभवनवसिरहेंहमर्थांनल
गीविरहविहांनलागीवरसैं॥६४॥दोहा॥फिरनक्षु
चटकनैंनिविनुरसिकसरसुनप्रियालाल॥वनन

वतनिनितनितसुनितहितमकुचेतनहिलाल॥
६५॥टीका॥यहनाइकाप्रौढाउराहनौंनाइकाकौ
वचननाइकसौं॥६६॥कवित्त॥हमसेंग्रांनप्यारेज
गुजानततिहारेगुनगूढनउधारेऐसीटरनिट
रतहौ॥सवकौंभावतहौरसिककहावतहौरसुन
रसीलेलालनुष्याल्सौकरतहौ॥ऐटकनैफिरत
लगनिविनुठौरठौरप्रेमपनुसांचौयेकहूंउधरत
हौ॥वनततवनततनितकोजननवरनेहरंचकहूं
हियमैंनसकुचधरतहौ॥६७॥दोहा॥तुमनेंमस्यो
तुवगुननकननुपचयोकुवनकुचाल॥क्योंधौंदा
स्योंज्यौंहियेरकतुनाहिनलाल॥६८॥टीका॥यह
नाइकाप्रौढाउरांहनौंनाइकाकौवचननाइकसौं
६९॥कवित्त॥मोउरमैंअनुरागकेफूलनैयोंपरतीति
कलीप्रगटीज्यौं॥रावरेऔगुनकेकनकाछुवके॥७०॥

बकुलासंगनूरिमरेत्यौ॥ बंचकनाईकीबातनि
सोंकविकुलसकहैंपरिपक्कमयोंयौं॥ आवनमो
परेमोयहेखबरोहिमस्योंदरकैनहियोक्यों॥६९
॥दोहा॥ मदनसदनकेफिरनकीसदनछुटैहरि
राइ॥ रुचैतितैविरहनफिरैकनविहरनदैरआइ
७०॥टीका॥ यहनाइकाप्रोढाउत्राहनौनाइकाके
वचननाइकसौं॥७०॥कबित॥ डोलतेलालयनै
घरंगांकनपैमकोआंकुककहूंनउधारो॥ जोनि
परैंअवनोवकसोउरहीकेरहैहमध्यांननिह
रो॥ बांनिपरीसुनक्योंहहूटैमनुमांनैनहीक
चिमानिपधारो॥ भांवतीसोजविहारीहियोकि
नयोंकिनतैंइतआइविहारो॥७०॥स्वाधीनप
तिका॥दोहा॥ छिनकुचलतिठटकतिछिनकु
भुजपीनमगलडारि॥ चटीअटौदेषतिघटावि
छुटासीनारि॥७१॥टीका॥ यहसंजोगसृंगार
नाइकास्वाधीनपतिकासषीकोवचनसषीसों
७१॥कबित॥ मेलिभुजामनमोहनेकंठचलैंउ
हुकैंउमगेसुषुमारी॥ नाछविपेकविकुलसकहैं
घनदामिनिकोरिकैंबलिहारी॥ कुंदनसेमनखो
निकसोंवनीसारीसुरंगलसैलहकारी॥ कारीघटा
छुविसोंअवलोकतिसांवनसांभ अटाचढिप्या
री॥७१॥दोहा॥ दुनिहारईसवटोलमेंरहीजुसौनिक
हार॥ तुनैंऔचिचिचाव उत्यौंकरीदोबिनआइ
७२॥टीका॥ यहनाइकास्वाधीनपतिकासषीको

अ

वचननाइकसौं ॥७२॥ कबित्त ॥ रानिरि नाछोकि
याहीकेधामपग्यो रसमैं रहतो सुषदाई ॥ पासपरो
समवै करतीयह बीसबिसे तियहेतु निहारि ॥ तेरे
बैनैं गुनरूपकीरो सिसुसीलसुहागसुगौंन हियाइ
ई ॥ प्रानपतीअपनैं बसकै तैं भलीकीनी सो तिकी
छोनिवहाई ॥७२॥ दोहा ॥ तोपरवारौं उरवसी सु
निराधिके सुजान ॥ ह्मोंहनकै उरवसी कै उर
वसीसमांन ॥७३॥ टीका ॥ यहनाइकास्वाधीनप
तिकासषीको वचननाइकासौं ॥७३॥ कबित्त ॥ रू
पकी उज्यारी ब्रषभांनकी दुलारी राधे तेरी छबि नि
काई हेरि मोहि सब हारी है ॥ तेरे गुनगाइबे कौं
तेरी वीनि री कोपन्नग है गिरधारी है ॥ तेरो ना
म रटै ध्यांन तेरो ई हियेमैं धरै नेरे रसबस उहिमा
इहि बिसारी है ॥ तुहीं उरवसी कै कैं मोहसी मोह
नकै तेरी छबि पिरकोटि उरसी वारी है ॥७३॥ दो
॥ मोहनमनगहि रही गाढी गढी निगुवालि ॥ उ
रनिसदौंनन्दलालसौं तो तिनिकै उरमालि ॥७४॥
टीका ॥ यहनाइका स्वाधीनपतिका संषीको वचन
नाइकासौं ॥७४॥ कबित्त ॥ बीनषरी कै रिपोनसोपे
इ करैरोम उरकुचकोबिलवैनी ॥ कैंचुमो कै टक
लोधरसोसुषकोरसकटाछ तेनुकी अनिपैनी ॥ मम
नमोहनकेमनमैं लिरहीगडिकैलिकलाछबि दै
नी ॥ सो तिनकै उरमो कसदानंदलालकै सोभावति
हे मृगनैनी ॥७४॥ बामकसज्यानाइकादोहा ॥ ॥८८॥

कुकि कुकि रूप कौं हैं पलनि फिरि फिरि जु रिजगु
हाह ॥ बीर बियोग मेंनी रहि मिसि सवै अली उठा
इ ॥ ७४ ॥ टीका ॥ यह नाइका परकीया वासकसज्जा
सषीकौ वचन सषीसौं क्रिया विदग्धा संभवै ॥
७५ ॥ कवित्त ॥ जांनि समै पिय आगम कौ चतुराई
कसी बिन बाह के बाइकै ॥ सैंकरि आधिक बू न
द्हि कैं आंषि कु कैसी करी पल कैं बुंदकाइकै ॥ जो
रि भुजा ननतोरि तिया अंगिरा नी वरी अरसा
य जंभाइ कै बैरी ऊनी ढिंग आइ अनीलु रहैम
वकुव महीसौं उठाइ कै ॥ ७५ ॥ उत्कंठिता दोहा ॥
नभलाली चाली निसा चटकाली धुनि कीन ॥
रति पाली आली अनत आये वनमाली न ॥ ७६
॥ टीका ॥ यह नाइका उत्कंठिता परकीया नाइका कौ
वचन सषीसौं ॥ ७६ ॥ कवित्त ॥ आजु मनमोहन कौ
मगु निरषन मेरे पलकन लागे षीनि उरतैं न हाली
ही ॥ भई नभलाली रहि विधि की पवरीन षतालीसु
नियत धुनि चिटकाली निसा चाली है ॥ काहू रम
नी की लषि मदरग जवाली ता सौं जांनियत रीझि
वनमाली रहि पाली है ॥ कहा कहौं आली इन म
दन विपति घाली घाली कैज भई ऐसी व्याली वि
कराली है ॥ ७६ ॥ अभिसारिका दोहा ॥ निसि अंधि
यारी नील पट पहिरि चली पियगेह ॥ कहौ दुरा
ई क्यों दुरै दीप सिषा सी देह ॥ ७७ ॥ टीका ॥ यह नाइका

बि॰स॰
॥८९॥

कृस्नाभिसारिकासषीकीसिछाअंगहीनिकोअ
धिकइ॥७७॥कवित्त॥कारीनिसाकीअंध्यारीमहा
घरु नैसीयैस्यामघटानकीआई॥प्यारीनकुंज
बिहारीपैजानिसजीतनमैंबकसारीसुहाई॥घू
घटमैंअबचंदहुराइकहैकबिकृस्नकरीचतुरा
ई॥देहकीदीपतिदीपसिषासीकहैयहकैसेंदु
रैगीदुराई॥७७॥दोहा॥अरीबरीसटपटपरीबि
धुआधेमगुहेरि॥संगलगेमधुपनिईभागनु
गलीअंधेरि॥७८॥टीका॥यहनाइकाकृस्नाभिसा
रिकाअपनीरातिकीबातसषीसोंकहतिहैयार
मैंचंदोदयभयोसुभौंरनुगलीछाईलीनीयाप
रतेरूपगर्बिताहूभई॥७८॥कवित्त॥स्यामनिसा
लषितैसोईसाजिसिंगारकैहौंपतिपासचली
री॥त्यौंअधगैलउदोतुभयोससिदेषितमोमति
सोचरलीरी॥पंकजछांडिसुगंधकेलोभलगी
संगभौंरनुकीअवलीरी॥नाहीसमैंममभागि
निआइकैछाइलईजनुकुंजगलीरी॥७९॥दोहा
छुप्योछपाकरछितिछयौतमससहरिनसम्हार
॥हंसतिहंसतिचलिससिमुषीमुषतेंअंचलडा
रि॥७९॥टीका॥यहनाइकासुक्लाभिसारिकारा
हमेंचंद्रास्तभयोदेषिसंकुचितभईतबसषीस
मोधानकरतुहै॥८०॥कवित्त॥नेरेकैहैसजिसुभ्र
सिंगारचलीअलिहौंमहिकैंगनिमंदहि॥आंध॥८९॥

यौ सोम अ‍ैनी अथवी चहीं देषिबे पेखितु पैन
महूंदहि ॥ घूंघट कौ पट ह्युरि कैं प्यारी उघारि हैं नृत्य
पनें मुष चंद हि ॥ सोम सनें मति जो कहै सी कहि
यौं बलि कै मिलि री नंद नंद हि ॥ ७९ ॥ दोहा ॥ उठि के
ठकुर यैनौ कहा पावस कै अभिसार जानि परेगी
देषिबेयौ दामिनि घन अंधियार ॥ ८० ॥ टीका यह सषी
नाइका सौं कहति है कि अभिसार कौ सहज ही स
मय है नाइका परकीया ॥ ८० ॥ कबित्त ॥ क्यौं तन
नीलनि चोल सजै सषि क्यौं मृगमेद कौ येतौ
विचार कहा चित मांह धरैगी ॥ कुंज कै भौंन नि
सक है क्यौं नु चलै हरि कंत हि अंक भरैगी ॥ सा
मथ राकी अंधेरी मैं तेरी नदु निदामिनि जो निप
रेगी ॥ ८० ॥ शुक्लाभिसारिका ॥ दोहा ॥ जुबति जो
न्ह मैं मिलि गई नैंकन होत लषाइ ॥ सौंध के डो
रे लगी अली चली संग जाइ ॥ ८१ ॥ टीका ॥ यह ना
इका शुक्लाभिसारिका सषी कौ वचन सषी सौं ॥
कबित्त ॥ तन की गुराई तरुनाई की निकाई छाई जो
की उजराई तें उज्यारी उजरति है ॥ सारद निसा मैं प्या
री विसद सिंगार साजैं गजगमनी की नीकी सोभा
सरसाति है ॥ चली अनुरागी मनमोंहन के मिलि
बे कौं चांदनी मैं मिलि गई क्यौं हूं न लषाति है ॥
लपट सुगंध की अछेह उपटनि अंगना ही की
तें संग लगी सषी संग जाति है ॥ ८२ ॥ अभिसारिका
दोहा ॥ गोप अथाइन तें उठे गोरज छाई गैल ॥
चलि बलि आलि अभिसार कन तीन संजोष मैं

न॥८२॥टीका॥ यहनाइकासंध्याभिसारिका
सषीकौवचननाइकासोंकिऐसेसमेंअभिसा
रुकरि॥८२॥कवित्त॥ छोडिअथांरनुगोसलई
कौउठीसवगोपनुकीअवलीहै॥ छीनभईरु
पहीरविकीछविगोरजहरिनगैलगलीहै॥
चंदकलाप्रगटीनअजौंचलिक्योंनकरेअ
लिरंगरलीहै॥ मानिमुहागिलमेरौकह्यौअभि
सारकीसिलसंगौषीभलीहै॥८२॥षंडितादोहा
पलसोंहैंपगिपीकरंगछलसोंहैंसववैन॥ वल
सोंहैंकनकीजियतयेअलसोंहैंनैन॥८३॥टीका
यहनाइकाप्रौढाअधीरापंडितानाइकाकौवच
ननाइकसों॥८३॥कवित्त॥ सोहैनिसिपलगानपा
रसमेंपागेनिसिजागेतातेंओरसकेढारढरि
यतुहै॥ वैननुतयतअंगिरानमुखवेरखेरफेरि
फेरिहेरिहरियतुहै॥ वैनसुनेछलसोंहैपीक
पगेपलसोंहैंदेषेछविडगनिअनंदभरिय
तुहै॥ कम(?)छोनप्यारेअमुकाहेकौंकरतयेतो
अलसोंहैंनैनवलसोंहैकंपियतुहै॥८३॥
दोहा॥ कनकपटैरतुमोगरेंसौनजुहीनिसि
सैन॥ जिहिचंपकवरनीकियेगुललालारंग
नैन॥८४॥टीका॥ यहनाइकाप्रौढाअधीरापं
डिताफूलनुकेनामसवैरकौचमत्कारहै॥८४
कवित्त॥ मोगरेंफूलिनलागियेलालनुसौंनजु
हीनिसिसेनमेंप्यारी॥ जाकौतमैतनुचंपकसौ

इसनाइलिकुंदकलीछविधारी ॥ लोचनला
लगुलालकौरंगकरैजिनिरैनिजगाइबिहारी
॥ निंदतहैंअरिविंदनिकीछविषीनिपरागभ
रेमदभारी ॥ ८४ ॥ दोहा ॥ कनकहितउपदैनको
रचिरचिवचनअलीक ॥ सवैकहाउरद्योलपे
लालमहाउरलीक ॥ ८५ ॥ टीका ॥ यहनाइकाषं
डाअधीराषंडितानाइकाकौवचननाइकसौं
८५ ॥ कवित्त ॥ आजुमयाकरिमेरेपधारेलसौछ
विरैनिविहारविहारे ॥ क्यौंकहियेउपदैनको
वैनवनाइवनाइलेतेरहिहारे ॥ येमनलोचन
नींदभरेउघरेउरमेनपषिक्रनिहारे ॥ औरक
हाउरद्योसबुनालललिलाइमहाउरलीकनि
हारे ॥ ८५ ॥ दोहा ॥ १८ सौंपौंछिपरीकरौपरीम
यानकवेष ॥ नागिनिकैलागीडगनुनागवेलि
रसरेष ॥ ५६ ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रौढाअधीराषं
डितानाइकाकौवचननाइकसौं ॥ ८६ ॥ कवित्त ॥
आजुमयाकरिमेरेपधारेफुलीवउभोगिनिकी
सुघसीहै ॥ पीनमयेपटछोरसौंपोंछिपरीकरे
मोमनिहेहरिहरीहै ॥ लागनिहैममनैननुकौंअ
हिभांमिनिसीभयभूरिभरीहै ॥ केलिमेंआहि
वेलिकेरंगकीरेषनिमेषनिपेउघरीहै ॥ ८६ ॥ दो
पलकनुपीकअंजनअधरधरेंमहावरभाल
आजुमिलेसुभरीभलेवनेंहोलाल ८७ ॥ टीक

वि॰ स॰ ॥९॥

यहनाइका प्रौढा अधीरा पंडिता नाइका कौ बच
न नाइक सौं ॥ ८७ ॥ कबित्त ॥ पीक पगी पलकैं छलन
कैं छबि नैंननु मैं अरुनाई धरी है ॥ अंजनु चा
रु फब्यौ अधरानि लिलार महावर छाप परी
है ॥ लाल बिना गुन माल हियें मुसकानि लीने
कपमानि भरी है ॥ नीके बनें इहि बानिक आ
जु मया कै मिले सु भली यै करी है ॥ ८७ ॥ दोहा ॥ जि
हि भांमिनि भूषन रच्यौ चरन महावर भाल ॥ उ
ही मनौ अंखियां रंगीं ओठनु के रंग लाल ॥ ८८ ॥
टीका ॥ यहनाइका प्रौढा अधीरा पंडिता नाइका
कौ बचन नाइक सौं ॥ ८८ ॥ कबित्त ॥ वाही के नैंन
को काजरु ओठ पनी को बन्यौं जिनि पौंछि कै षे
उ ॥ वाही के पाव को जाव करंसु लिलार महा छ
बि देत नहैं सो क ॥ ऐसो बनाइ सिंगारु कंरयो जि
हि है वह लाल बिचछन को उ ॥ जांनत लाल
रंगी उन ही अंखियां अधरानि के रंग मैं दोउ ॥ ८९ ॥
॥ दोहा ॥ वाही की चित चटपटी धरत अटपटे पा
इ ॥ लपट बुझावत बिरह की कपट भरेहू आ
इ ॥ ८९ ॥ टीका ॥ यहनाइका प्रौढा धीरा अधीरा ना
इका कौ बचन नाइक सौं ॥ ८९ ॥ कबित्त ॥ अनन ब
सु कौ है तो बिन गुन मान न है सो सब रस बस कि
यो चाहैं बड नाइकै ॥ ताके भाग आगे जाके संग
निसि जागे मेरै भोर भयें आये हितु हिय कों जनना ॥९॥

इकैं ।। जानियतु याही की लगी है चित चटपटी
अटपटी चैन परत न इ गुलाइ कैं ।। लपट दवु झा
वन हैं विरह कृशानन की कपट भरे प्रानप्यारे
इत आइकै ।। ८९ ।। दोहा ।। गहकि गांस औरै गहे
रहे अधकहे बैन ।। देखि खिसौंहैं पिय नयन किये
रिसौंहैं नैंन ।। ९० ।। टीका यह नाइका पंडिता नाइकु
सुरतन के चिन्ह डुराइकैं या कैं आयो यह बात क
हन लागी वत रात मैं नाइक के नैन लजौंहैं भ
ये सषी को वचन सषी सौं ।। ९० ।। कवित्त ।। आवत
प्रानपती हि विलोकि सुधा सम नेह की दीठि
सौं हेरे ।। धाइ कैं आ[illegible] कै आइ लिये हियमैं उम
गे सुष पुंज घने रे ।। आधे से बैन कहे रहे षगां
सग है उर कोप करे रे ।। लाल के नैंन षिसान विलो
कि रिसाइकैं राधे नहीं दृग फेरे ।। ९० ।। दोहा ।। नेह न
रेरे सौ रू करि कत कौरियतु दृग लोल ।। तीकन
हीय हपी की श्रुति मनि झलकत कपोल ।। ९१ ।।
टीका यह नाइका सापराध जानि नाइक को नैं चं
चल करति है सुनाइक की सषी नाइका के चित को
भ्रमु निवारनु करति है सषी को वचन नाइका सौं
नाइका सषी सौं कहै तौ नूतन सुरत गुप्ता परकीया
होइ ।। ९१ ।। कवित्त ।। औरै भूल षियहू कहू औरैं भां
ति नैरी गति आंनन पै उमगि ललाई नेलकति
है ।। भ्रकुटी कुटिल चपि नेह सौं तनैं नीम धनै
तुमैं रिस की तरंग छलकति है ।। कहै कवि श्रीम

यहधोषौहियहांतोकरिपीकर्ल।कजांनितहु
बोलवलकतिहै॥लनिलतकपौंपरनीकेंकै
विलोकिश्रुतिभूषनकीमनिकीफलकफल
कतिहै॥९१॥दोहा॥पावककेसोंनैंननुलगतुजाव
कलाग्योभाल॥मुकरहोऊगनैकमैंमुकरवि
लोकौलाल॥९२॥टीका॥यहनाइकाधीरा
अधीराषंडितानाइकाकोवचननाइकसौं॥
९२॥कवित्त॥नीकेरमनीकेह्वैकैंरसकेलिकी
नीवाहीकीसुगंधअंगमहकिरहीरसाल॥
होतनकहामुकरैयेनदुरैंनदुरायेंचिन्हअंजन
अधरदीयेंबिनुगुनहि[illegible]माल॥पावककेसोंल
गतुअगटमनमनैंननुकोहूलप्रांनप्यारेलाल।
ग्योजावकतिलकभाल॥केसीआजुराजति
हेसारसतेंसरसयेआरसमगनआंषिआर
सीलैंदेषोलाल॥९२॥दोहा॥आयेआपभली
करीमेटनमानमरोर॥हरिकस्योयहदेषियतु
छलाछिगुनियांछोर॥९३॥टीका॥यहषंडिता
नाइकाकीसषीनाइकसोंकहतिहै॥९३॥क[illegible]
आजुमयाकरिआयेभलीकरीआजुकोवानि
कमोमनमोहै॥देषुतरावरीमोहनीमूरतिमा
नमरोरधरैगेरकोदै॥काहूछबीलीकौछोर
छलायछोरछिंगुनीकेछाजतुजोहै॥देषिवि
साइगीहरिकरौकछुजांनतहोचयनषाइलसौ
है॥९३॥दोहा॥लालनलहिपायेदुरैंचोरीसों॥९४॥

हकरैंन॥ सौसषपनिंहां प्रगट कहैंपुकारैं नैं
नें॥ ९४॥ टीका॥ यहनाइका प्रौढा अधीरा षंडिता
नाइकाकौ वचनेनाइकसौं॥ ९४॥ कवित्त॥ आये
उनींदे से भात न ऊके छूभे दुन ज्ञान्यौं हियें की
मैं भोरी॥ वाकुं बकुंकुंम केलि मैं चिक्क मिलाइ
हियें मसके जिहि भोरी॥ लाल लहीअबनौंम
वृंवान दुरैनहि सौं है करौ किनि कौरी॥ सौंसब
हैपनिंहां होयेनैंन पुकारिकहैं रति रंग की चो
री॥ ९४॥ दोहा॥ तुरत सुरत कैसें दुरत मुरत नैंन
जुरनीठि॥ डौंडी हैगुन रावरे कहैं कनौंडी दी
ठि॥ ९५॥ टीका॥ यह [illegible] इका प्रौढा अधीरा षंडि
ता नाइकाकौ वचैंनेनाइकसौं सषीकौं वचन
नाइकासौं॥ ९५॥ कवित्त॥ चिक्क अंग अंग केदु
रायेच दुराइकैपै आरस मगन गात दुरि रहै ना
तहै॥ प्रेम सुधा पांनकै उलासतें सुदित मन मैं
न सुषमनैं अैंन बैंन तुतरात है॥ तुरत सुरत क
हौ कैसें कै दुरति लालनी ठिजुरि मुरत नैंन
ललजात॥ इसे पांन प्यारे यह डौंडी है कनौंडी
डीठि प्रगट करति रति वारी वात है॥ ९५॥ दोहा॥
मरकत भाजन सलिल गत इंदुकला के वेष॥
झीन झगा में झलमलै स्याम गात नषरेष॥ ९६॥
टीका॥ यहनाइका प्रौढा अधीरा षंडिता नाइका
कौ वचननाइकसौं॥ ९६॥ कवित्त॥ आये हो मेरैं म
याकमि मोहनै राजति मूरति रंग भरी है॥ पंकज

बि॰स॰
॥९२॥

नैंनीकेपांनिकीआजुहियेंमप्रेरषभलीउघ
रीहै॥झीनैंरूगामेंविराजनियौंछविछाजनि
मोमतिहेरिहरीहै॥नरमैंनीलमनीकोसिला
नलईदुकलामनौतापैधरीहै॥९६॥दोहा॥न
षरेषासोहैंनईचूलसोंहैंसवगात॥सोहैंहो
ननैंनयेतुमसोंहैंकतबात॥९७॥टीका॥यहनो
इकाप्रौढाअधीराषंडितानाइकाकौवचनना
इकसौं॥९७॥कवित्त॥हरिजांनिपरीहमहूपेमया
पगधारेइतैरतिकोलिकियें।तुमनौसवकेसुष
दाइकहौसवहीकौंवि[illegible]पुंजहियें।तुकरा
जिनियेपगरैलषियेंउरमैंउरकीनषरेषहियें
॥इगसोहैंनहोतसकोचनितैंअवकाहेकौं
सोंहइतीकरियें॥९७॥दोहा॥नरूनकोकनदवर
नवरेभयेअरुननिसिजागिमवाहीकेंअनुरा
गइगरहेमनौंअनुरागि॥९८॥टीका॥यहनाइका
प्रौढाअधीराषंडितानाइकाकौवचननाइक
सौं॥९९॥कवित्त॥कसप्रानप्यारेप्रातप्रीतिके
पधारेमेरेदेवेमेंनमूरतिविरञ्चमयोभागिनैं॥
मरगजेवागेरसपागेलटपटीपागेंआरसमे
नअंगरहेअंकलागिकै॥मेरेंजांनप्रांनपतिवा
हीप्रांनप्यारीकेपरमअनुरागमैंरहेहैअनुरा
गिकैं॥९९॥दोहा॥सोहतुसंगुसमानसौंयहेकहै
सवलोगु॥पांनपीकओठनुवनैंकाजरनैंननु
जोगु॥९९॥टीका॥यहनाइकाप्रौढाषंडितानाइ ॥९३॥

२

काकौवचननाइकसौं ॥३९९॥ कवित्त ॥ ग्रंथनिमैं
यहबातप्रमानहै यौंचलि आईमनौसबही
कौ ॥ जैसेकौतैसौ ईजोगुनरैनवहोतुमहासु
षदाइकजीकौ ॥ जोविपरीतिविपरीतिविलो
कियेसगुकुटंगनहींरंगुलागतुफीकौ पांन
कीपीकवनैंपियप्रोठनुआंषिनिहूलगैका
जरंनीकौ ॥३९९॥ दोहा ॥ प्रांनपियाहियमैंबसी
नषरेषाससिभाल ॥ भलौदिषायौआंनिय
हहरिहररूपरसाल ॥४००॥ टीका ॥ यहनाइ
काप्रोढाधीराअधीराषंडितानाइकाकौ
वचननाइकसौं ॥[illegible]॥ कवित्त ॥ प्रांनप्रेमसौं
प्रांनपियारिवसाइहियेंहियरोफूलेसायौ ॥
भालनईनषरेषविराजतिसोईमयंकुलसै
छबिछायौ ॥ लोचनरागुरजोगुनराजतुपं
मतनैंनतमोगुनपायौ ॥ सीतमप्रातहीआनि
भलौहरिकौहरिकौधरिरूपदिषायौ ॥४००॥
॥ दोहा ॥ प्यौनचलैवलिरावरीचतुराईकीचा
ल ॥ सनषहियेंनषिनषिनुनटतेअनषवदा
वनलाल ॥४०१॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रोढाअ
धीराषंडितानाइकाकौवचनेनाइकसौं ॥४०१
कवित्त ॥ प्यौनचलैकछुरावरीलालचला
वतजेचतुराईकीचालै ॥ छातीनषछतनपी
कसुगालधरेंअनिरंगुमहावरभाल ॥ पान
कैपरसौंहगुपालहियेउमगावत कयारिसजा

ल॥ भागवड़े उहि भामिनि भाल हियैं उपटी जि
हि मेटन माल॥४०१॥ दोहा॥ वे सियै जो नीपर
ति रंगा ऊजरे माह॥ मगनैं नील पट तिन्नु यह
वैं नीउपटी वांह॥४०२॥ टीका॥ यह नाइका जो
ढा अधीरा पंडिता नाइका को वचन नाइक
सों नायक के विद्यमान सषी सों कहै॥४०२॥ क
काहे कों करत चतुराई के चरित्र लाल सो देषे
रेसु रेति वगर पे षियतु है॥ सो है जिनि करो नैं
नैं न क कि निसो है करौ सो हनी सी सो भाग अंग
अंग लेषियति है॥ हम ज्ञाने प्यारे कुच कुंकु
म की छाप रही छाती पर उघरियत है अब रेषिय
ति है॥ मगनैं नील पट तउ परी षियै पै वैंनी ऊ
जरे मेंगा में अरगट देषियति है॥४०२॥ दोहा
न करुन उरुसवु जग कहत कत वे काज लजा
न॥ सो है वीजे नैन जो साँची सौं है बान॥४०२
टीका॥ यह नाइका जोढा अधीरा वेंडिता नाइ
का को वचन नाइक सों॥४०३॥ कवित्त॥ मोहि तौ ला
गत नीके महा तुम आये प्रभात प्रभा सुरसों हैं
॥ जो करियै तो हियें उरिये विनु कियें कितै डरि
ये उरसों हैं॥ क्यों विनु काज सकोचु भरो उर का
हे कौं की अतनैं न लजौ हैं॥ जो तुम साँची ये सों
ह करो हरि तौ इत क्यों न करौ दृग सौं हैं॥४०३
॥ दोहा॥ रयो चकित चहूँ घा चितै चितु मेरो म
ति भूलि॥ सूर उदै आये इगानु रही साँम सी फू

लि॥४०४॥टीका॥यहनाइका प्रोढा अधीरा षंडिता नाइका कौ वचन नाइक सौं होइ सषी सौं होइ॥४०४॥कवित्त॥देषत रावरी मोंहनी मूरति मोहि कै सुधि भूलि रही है॥ आजु महा छवि छाजति मोरनि काई सबै अनुकूलि रही है॥ बाहिर यौ चहु घां बकि सौं चतुराई चिरजीं मति डूलि रही है॥ आये हो सूर उदोत भयें वियनैन नसंझ सी फूलि रही है॥४०४॥दोहा॥कंत वे काज चलाइये अति चतुराई की चाल॥ कहै देत यह रावरे सब गुन बिन गुन माल॥४०५॥टीका॥यह नाइका प्रोढा अधीरा षंडिता नाइका कौ वचन नाइक सौं॥४०५॥कवित्त॥सौति के धाम विराम कै आइ प्रभात इतै पग धारत हो जब॥ मैं न छकी छवि देषन दिषाइ अनंद हिये उपजावत होत व॥ क्यौं विनु काज चलावत हो चतुराई की चाल न लालह मसौं अव॥ मानि विना गुन की उरपै उपटी गुन रावरे देति कहै सब॥४०५॥दोहा॥दुरै न निघरघट्यौ दिये ये रावरी कुचाल॥ विसु सी लागति है बुरी हंसी षिसी की लाल॥४०६॥टीका॥यह नाइका प्रोढा अधीरा षंडिता नाइका कौ वचन नाइक सौं॥४०६॥कवित्त॥जोंन तिहारौ हिये कौ हितै सो उनही कै वसे सुष सौं निसि नासी॥ भोर कियें हम भूलि कै लाल पधारे इतै कछु कीनी हपासी॥ ती दौ दियें कहौ कैसें दुरै यह ओरही नैंसुकु चाल

प्रकासी ॥ लागति बीस बिसे बिज्जु सी सुषमा सौं यन
के मूह आव नि हांसी ॥ ४०६ ॥ दोहा ॥ गड़े बड़े छबि
छाकि छकि छिगुनी छोर छुटै न ॥ रहे सुरंग रंग रंगि
उ ही नहदी महदी नैंन ॥ ४०७ ॥ टीका ॥ यह महदी
कौ बर्नन है और जो नाइका कौ बचन नाइक सौं
होइ तौ षंडिता होइ जो नाइका कौ बचन सषी सौं हो
इ तौ सुमिरनु जानिये ॥ ४०७ ॥ कबित्त ॥ वा की छबि प्रीति
छिगुनी के छोर छुये सचि पुंज नि पेई नये हैं ताप
र चारु उमैं न हदी महदी हू लबि [illegible] डु मजी तिल
ये हैं ॥ ताकी महा छबि के भर छाकि छुटै न अजौं
गड़ि औसे गये हैं ॥ ये बिष लोचन वाही के रंग मैं
राचि कै मनों सुरंग भये हैं ॥ ४०७ ॥ दोहा ॥ कत सकु
चत निधरक फिरौ रतियौ षोरि तुम्हें न ॥ कहा करै
जो जांहि ये लगे लगौंहैं नैंन ॥ ४०८ ॥ टीका ॥ यह ना
इका धीरा षंडिता नाइका कौ बचन नाइक सौं ॥
४०८ ॥ कबित्त ॥ छल सों जान प्यारे आजु प्रीति कै
पधारे हो तौ तन मन वारौं करौं कौन सिख धाइ है
॥ नैंक निरखत लगे जाहि जौ लगौं हैं नैंन ताकौ तु
म कहा करौ यौवन नवाई है ॥ कैसें राख्यौ जात मो
रि मनु वंध्यौ पैं मडोरि तुमतन षोरि कहूं रंच कौ
न पाई है ॥ काहे कौ सकुचत कीजे रचै नित सुषरी
झै अलि कै निसि कर रस लीजे जहां पाई है ॥ ४०९
॥ दोहा ॥ अनत बसे निसि की रिस नु उर बारि रही वि
सेषि ॥ तऊ लाज आई सुकनि षरे लजौं हैं देषि ॥

४०९ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रौढा धीरा सषी कौ
वचन सषी सौं ॥ ४०९ ॥ कवित्त ॥ राति कहूं अनने
विन ई मन मोहन केलिकला सुष सौं है ॥ ताते हि
यें आनि ही रिस छोइ रही अन जाइ कैं मो है ॥ भो
रही आवन देषि लऊ कहिवे कौं भई तु कियै नैन
भौंहैं ॥ आई तिऊ अनिला जहियैं निरषे सवु लानु
षरे ईलनि जौं है ॥ ४०९ ॥ अन्य संभोग दुष्षिता दोहा
बिलषी लषै षरी षरी भरी अन षवै राग ॥ षगै नै
नी सैं नवि भजै लषिवें नीके दाग ॥ ४१० ॥ टीका
यह नाइका अन्य संभोग दुष्षिता सषी कौ वचन
सषी सौं ॥ १० ॥ कवित्त सा जि सिंगार रुल्लास सौं
आई विलोकि रही चकि हू रही जै कहि ॥ सो ति
की चौकनी चोटी कौ दाग उलग्यो टट कौ पति
के परजंक हि ॥ ठाढी जंकीसी कपोल धरैं कर
रोस भरी भृकुटी करिवें कहि ॥ सोच सनी वि
लषै षग लोचनि लेति उसासनि आवति अंक
हि ॥ १० ॥ दोहा ॥ रही पकरि पाटी सुरिस भरैं भौंह चि
तेनन ॥ लषि सपनैं पिय आन रति जगत हूं लग
त हियें न ॥ ११ ॥ टीका यह नाइका नैं स्वप्न मैं नाइक
अन्यासक्ति देष्यो न पजागत हूं मान नांही छोड
ति अन्य संभोग दुष्षिता सषी कौ वचन सषी सौ ॥
कवित्त ॥ दंपति केलिकलोल पगे उरला गे ई सोइ
गये पलिकां ही ॥ औसें मैं प्यारी लष्यो सपनें हरि आं
न वधू सौं कियें गलवांहीं ॥ पाटी सौं लागि रही व्रग

वि०स०
॥२६॥

मैं निमरी रिसनैंनेनु भौंहनुमांही ॥ वोप यहै वितपा गी महातियजा गीतऊ हियेलागनिनांही ११ ॥ दोहा ॥ गयो अबैलौ बोलियो आप पठैव सीठ ॥ डीठि चुराई इऊ नुकील खिसकु वौंही ईठि ॥ १२ ॥ टीका ॥ यह नाइका अन्यसंभोगदुष्यता सषीको वचनु सषीसौं ॥ १२ ॥ कवित ॥ आपनी प्यारी अली कौं पठै पियप्यारे कौं आपुहीवो लिपठायो ॥ आगें कै आइलियो हितसौं हियु राऊलस्यो नियरो जब आयो ॥ एते मैं कुसाइऊ नु कीडीठिलजौं हीलषी उरते हत बायो ॥ वा लैको भारी मलो लौ मस्यो जियका सौं कहै अप मौं डहकायो ॥ १२ ॥ दोहा ॥ छला परोसिनि हाथ्य तैं छलु करिलियो पिछांनि ॥ पियहि दिषायो लषिविलषि रिसस्चक मुसिकांनि ॥ १३ ॥ टीका ॥ यह नाइका अन्यसंभोगदुष्यता सषीको वचन सषीसौं ॥ १३ ॥ कवित ॥ पेषि परोसिनि के कर प्यारी करी चतुराई की बाहकलाहै ॥ मांगिलियो कछु ऊठ मसो वऊ के मनु हारि है छला उ भलाहै ॥ प्रीतम सौं मुसिका इकरी कवि हठ क्यकहे रषरो सरलाहै ॥ नैंकइते लषि ये मनमोहन आकु मन्लो हम पायो छलाहै ॥ १३ ॥ दोहा ॥ नये विरह वढती व्यथा षरी विकल जियबाल ॥ विलषि पिरोसिन्यो हरषि हंसी तिहि काल ॥ १४ ॥ टीका ॥ यह नाइका अन्यसंभोगदुष्यता एक तो नाइका या सौं हित नाहीं करतु तातैं विकल है दूसरैं परोसिनि उ

॥ २६ ॥

ब॰ दै॰

सन्नदेषीताहीसमैंनवमरीविलषीअहनाइ
कुयाकौंपरोसनिसौंरतहैसुयाकोंविलषीहै
षिपरोसिनित्रसन्नमइ॥१४॥कवित्त॥बालमकौ
हितुआंनवधूसौंरहैनकहूंयरएकघरीहै॥
ताडुषबालमहात्रियब्याकुलकामधरीकल
कौंनकरीहै॥वाहीवियाअतिडाढीसीडोल
तिगांढीवियोगकीगाढपरीहै॥त्यौंविलषीय
गनेंनीघरीपैपरोसिनिकौंलषिमोदभरीहै॥
१४॥दोहा॥सुरंगमहावरसोंतिपगनिरषिरही
अनषाइ॥पियअंगुरिनुलालीलषैंउठीष
रीलगिलाइ॥१५॥टीका॥यहनाइकाअंन्यसं
भोगदुष्यतासषीकोवचनसषीसौं॥१५॥क०
पषिसुरंगमहावरसौंतिकेपाइनुबालरहीअ
नषांनी॥याहिविलोकिविकाइगोमोहननेवा
नयहैअपनेउरआंनी॥एतेमैंप्रीतमकौंअं
गुरीललाईविलोकिषरीबिलषांनी॥पावकज्वा
लजगीउरमैंमुरझातिमहारिसमैंअकुला
नी॥१५॥दोहा॥विछुरेहुजावककेसौतिपगनिर
षिहंसीगहिगांसु॥सहजहंसौंहीलषिलियोअ
लीहंसीउसासु॥१६॥टीका॥यहनाइकाअंन्यसं
भोगदुष्यतासषीकोवचनसषीसौ॥१६॥कवित्त॥
बालहंसीकछुगांसगहैंनुषिफेत्यौमहावरसौं
तिकेपाइनुजानियहैअपनेंत्रियमैंयहतानति
[illegible]सिंगारकेभाइनु॥एतेमैंमोदभरीमुसका
नलजौंहीविलोकनिदेषीसुभाइनु॥त्याधिये

हांसीउसासभरी अकुलानिधरी बिसरी चितचा
रनु ॥१६॥ दोहा हरि हितु करि दीनमलियो कियौ
जु सो तिसिंगारु ॥ अपनें कर मोतिनु गुह्यौ भयौ
हराहरहारु ॥१७॥ टीका यह नाइका अन्यसंभो
गदुष्यता या कौ हार नाइक नें लै कें सौतिकों पहि
रायौ सु नाइका सखीसों कहे सखी सखीसों कहे
१७ ॥ कवित्त ॥ मांगिलियौ हितुकै हठि प्यारे नें हे
रुतु चारु व भांतिसों पाग्यौ ॥ नाहि लैलाल ची
न्यौ नु गयौ कहुं सौतिकें धाम नहीं अनुराग्यौ
॥ वाही कौं रीझि सिंगारु कियौ लखि यकरियें
अनखाहट जाग्यौ ॥ आपनें हाथ बनाइ गुह्यौ
मुकता कौ हराहरहारु सौ लाग्यौ ॥१७॥ दोहा पा
ल्यो मोरु सुहागको इनि बिनु ही पियनेह ॥
उहिं दौंरी अंखियां कहै अलसौंहै ही देह ॥१८
॥ टीका यह नाइका सौतिकों आलसवलितदे
खि अकरस मसी आंखि देखि सखीसों अथवा ना
इकसों ध्वनि करि कहति है अन्यसंभोगदुष्य
ना होइ हर्ष करि कहे तौ वनें मानवती होइ सखी
नाइकासों कहे तौ अपराधु दुराइवो जो नियेना
इका कहे तो ईर्षी संचारी होइ ॥१८॥ कवित्त ॥ सो
करि आंखि उनींदी करी अध ऊतर सो मुखबोल
उचार्यौ ॥ वारही वार जंभाइ कें यौं ही परी नन
आरस कैंट रदो ल्यो ॥ रूठी जताव तिहै सुख सैंन
जगी यह जामिनि जामिनि चार्यौ ॥ देखितो प्रीन ॥१९॥

मकी बिनु षीनि सुहाग कौ ओर किनौ हि पारयौ ॥
१८ ॥ दोहा ॥ लषि सोरह निगोपाल कैं उरगुंज ने की मा
ल ॥ बाहरि लसनि मनौं पियें राधा नल कौ ज्वाल
१९ ॥ टीका ॥ यह नाइका कौ वचन सषी सौं ॥ १९ ॥
भागवड़े निरषौ यह वौ निकुआज कौ हौ वलि
जाउं घरी की ॥ ओन प्रभाल बिलगनि है कछु मो
हि तौ मैं न की हरनि की की ॥ इ षिरी मोहन के उ
र भांवती माल विराजनि गुंज की नीकी ॥ पाई
ऊनी बगरी जनु सुनौ बाहिर ज्वाल मनौं बड़वान
ल ही की ॥ १९ ॥ प्रवत्स्यत पतिका दोहा ॥ अजौं
न आये सहज रंग विरह दूवरे गात ॥ अबही कहा
चलाइयत ललन चलन की बात ॥ २० ॥ टीका
यह नाइका प्रवत्स्यत पतिका सषी कौ वचन ना
इक सौं नाइका हू कौ वचन नाइक सौं होइ ॥ २०
कवित्त ॥ चलन मैं कहूं का कछ्यौ तुम कालि
ही जैहौं बरावन गाई ॥ सो सुनि कैं उहि दीरघ सा
स भरी सब अंग परी पियराई ॥ ना हि ने कौ बा
न बेनी के अंग मैं आजु हूं लौं न मिटी दुबराई
॥ लाल रहौ छन बोलै कहा अबही चरचा व
लिवे की चलाई ॥ २१ ॥ दोहा ॥ बिलषी डभकौं
है चषनु पिय लषि गवनु बराइ ॥ पिय गहबरि
आयो गरैं राषी गरैं लगाइ ॥ २१ ॥ टीका यह नाइ
का प्रवत्स्यत पतिका मध्या की यह है सो है दे
बिनाइक कहूं नैं गवनु बराइ कैं गरै सौं लगाइ राषी

वि०स०
॥९८॥

सषीकोवचनसषीसौ ॥२१॥ कवित्त पतिप्रांनपि
याबिछुरैंनकहूंसुषसोंरहैं प्रेमपियूषपियैं ॥ हि
तुमांनिबिदेसुकौंहौंनबिदाहरिआयोप्रयान
कोसाजुकियैं ॥ निरषीडभकौंहूंसेनैंनकियैंलषी
षगलोचनेंसासलियैं ॥ नकहीचलिवेकीकछूब
तियांछुतियांभरिलीनीलगाइहियैं ॥२१॥ दोहा
ललनचलनसुनिचुपरहीबोलीआपुनईठि
॥ राष्योगहिगाढेंगरोमनोंगलगलीडीठि ॥२२॥
॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रवत्स्यतपतिकासषीकोव
चनसषीसोंमध्याप्रवत्स्यतपतिका ॥२२॥ कवि
प्यारीकेंभवनआनिहितुकरिप्रांनपतिआयौ
बिदाहौंनपरदेसकौंउमहिकैं ॥ ललनचलन
सुनिरहीआनबोलीतियप्रोलीहूनवचनसु
नायौकछूकहिकैं ॥ चकितसीभईचकचौंहेंदु
सोंछायोचितुआवतुसलिलुदोऊनैंननुतेंव
हिकैं ॥ गलगलीडीठिकरिहेरीहरिसनमुषमें
रेजांनराष्योवेंहीगाढोंगरोगहिकैं ॥२२॥ दोहा
ललनचलनसुनिपलनुमेंअंसुवाझलकेआ
इ ॥ भईलषाइनुसषिनुहूंझूठेंहीजमुहाइ ॥२३॥
टीका ॥ यहनाइकामध्याप्रवत्स्यतपतिकासषी
कोवचनसषीसोंक्रियाविदग्धापरकियाहै
होइ ॥२३॥ कवित्त ॥ षेलतिहीसजनीगनमेंब्र
षभांनकुमारिसरूपसोंसांनी ॥ काहूकालि
कैंगेपयानुसुनीयहकाहूकेआंननबांनी ॥ सो ॥९८॥

बितुमेंअसुवाज़लकैबहमेरकीबातअलीहृन
जानी॥योंसुकुमारिजंभाइवेकौंकरिऊटमुपो
छतिनैनसयानी॥२३॥दोहा॥हिहैचंचलप्रा
नयेकहिकौंनकीअगोट॥ललनचलनकी
चितधरीकललनपलनुकीओट॥२४॥टीका॥
यहनाइकाप्रवत्स्यतपतिकानाइकाकोवचन
सषीसौं॥२४॥कवित्त॥मैंनसुषसंगनिमैंनेहकी
तरंगनिमैंअंगअंगपागिरहैरंगमेंउमहिहैं
॥छलप्रानप्यारेतेंनछिनौभरिन्यारेभयेऔर
हीतेंअबसमभयेऐसीवोनिगहिहैं॥पलनुकीओ
टभयेंकललनलहततेंक्योंहूंजैसीगतिहोतितसोधौं
आवनिनकहिहैं॥ललनविचारीचितचलन
कीबातअबकौंनकीअगोटयेंचपलप्रानरहि
हैं॥२४॥दोहा॥बाहभरीअतिरसभरीविरह
भरीसबबात॥कोरिसंदेसेदुहूनकेचलेपोरि
लौंजात॥२५॥टीका॥यहप्रदेसकोगमनुदोऊ
नुकेहितकीअधिकाईसषीसषीसौंकहतिहैना
इकाप्रोषितपतिका॥२५॥कवित्त॥कौंनहूंकाज
कौंकांक्षकरकीनौंप्रयांनुमहूरतसाधिमलेई॥
अंतरहोतदुहूंनकोज्यौंअकुलातवियोगकेत
लसलेइ॥बाहभरीअरुबीतिमरीरसरीतिभरी
बतियांनिरलेइ॥पोरिलौंजातदुहूंनकेओरतें
आलीरीकोरिसंदेसेचलेई॥२५॥दोहा॥मिलि
चलीचलिमिलिचलतआंगनअथयौभानु

वि० सं०
॥ [illegible] ॥

भयोमहूरतभोरकोपौरीप्रथममिलौनु ॥ २६ ॥
टीका ॥ यहप्रदेसप्रयांनकोसमयसषीसषीसों
कहतिहै ॥ २६ ॥ कबित्त ॥ रमनगमनपरदेसकौं
विचारचित्तसाधिसुभलगनगनेसकौंमनायौ
है ॥ साहसुकैउरप्रांनप्यारीहूंकहूनकह्यौम
गलहरैइगहवरैंगरैंगायौहै ॥ चलतमिलनमि
लिचलतचलिमिलतिचलनिमिलिचलन
मिलतयौंहीवासरबितायौहै ॥ भोरकोमहूर
तभवनहींमैंसांझभईपौरिप्रथममिलानठ
हरायौहै ॥ २६ ॥ दोहा ॥ बामाभामाकामिनीकहि
बोलौप्रांनेस ॥ प्यारीकहतलजातनहिपावस
चलनबिदेस ॥ २७ ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रौढाप्र
वत्स्यतपतिकानाइकाकोवचननाइकसौं ॥ २७
कबित्त ॥ आयेहोमागममोपैबिदाइतपावसके
घुमडेघनकारे ॥ कामिनीभामिनीबामकैबोल
उप्यारीकहोजिननंददुलारे ॥ रंचकहूंनलजा
नहियेंहितुकेअवयेउघरीजतभारे ॥ ऐसमैंछो
डिबिदेसचलेकरौमेरीकहागतिप्रांनपियारे
२७ ॥ प्रोषितपतिकादोहा ॥ पियप्रांननकीपा
हरूकरतजतननअतिआपु ॥ जाकीदुसहदसाप
रोसौतिनहूंसंतापु ॥ २८ ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रो
षितपतिकासषीकोवचनसषीसौं ॥ २८ ॥ कबित्त ॥
तापतपीबिरहानलकेबिलषीबहलागरिषीन ॥ ९९ ॥

निहारी ॥ आंखि नुही मैंरहे अव आंनि कैं प्रान
सवै सुधि आंन विसारी ॥ सो तिसवे उपचार क
रैंग नि कैं प्रिय प्रानन्तु कीर ववारी ॥ २९ ॥ दोहा
पावक ररतें मेह झर दाह कछु सह विसेषि ॥ र
हे देह वाके परसें याहि डगनि ही देषि ॥ २९ ॥ टीका
यहनाइका प्रोषित पतिका विरहनी नाइका के
वचन सषी सों उह वेग तें नाइक कुहै सषी सों क
हे तो संभवे ॥ २९ ॥ कवित ॥ धुंमधरैं धुरवा गर
रे झरझर झूरि मही अवगाहैं ॥ द्रवि री पा
वक की झर तें यह मेह की ज्वाल कराल महा हैं
॥ वाहि भट परसें दहे यह नैन नुही निरषैं न ही
न दाहैं ॥ वा गिरधारी विना वचिवे को नुही क
हि और उपाय कहा है ॥ २९ ॥ दोहा ॥ कहे जु वच
न वियोगनी विरह विकल अकुलाइ ॥ किये न
को अंसुवा सहित सु चातिक वोलनु ताइ ॥ ३० ॥
टीका ॥ यह नाइका प्रोषित पतिका विरहनी
सषी को वचन सषी सों ॥ ३० ॥ कवित ॥ प्रान पती
विनु वा तिय कों इकसाथ सवै दुष आंनि परे हैं
॥ वा की दसा लषि पास के वासी उसास भरैं ग है
रग हरे हैं ॥ जे कहे वैन वियोगिनि नें अकुलाइ
वियोग विथा न भरे हैं ॥ वे वतियां अव वोलि सु
रामवही अंसुवा निस मेत करे हैं ॥ ३० ॥ दोहा
जानै उसह विरह दास रनदसा रहेन और उपाइ

वि०स०
[illegible]१००॥

जानज्यौंराधियतुयाकोनामसुनाइ॥३१॥टीका
यहनाइकाप्रोषितपतिकाविरहनीसषीकोव
चनैसषीसौंदसअवस्थानुकेभेदमैंजानि
नियें॥३१॥कवित्त॥घांनपियापरदेसुकियौति
यअंगअनंगतरंगविताये॥सीरीकैसांतेज
रैकवहूंउपचारविचारजितेसवछाये॥ईटि
निधाइपेवासिहितसुरझाइरहीनभुयेमनभा
ये॥ऐसैंकहैजोववैतोववेकहोगांउनमांउ
नेमोहनआये॥३१॥दोहा॥रह्यौअंचिअंतु
तनलहैअवधिउसासनुबीरु॥आलीवाट
नुविरहज्यौंपंचालीकोचीरु॥३२॥टीका॥यहना
इकाप्रोषितपतिकाप्रौढानाइकाकोवचनस
षीसौं॥३२॥कवित्त॥चैनपरैनहींजीउरहैदिन
नैननुमांझरहैजलछायो॥भाउैनभोजनुमैं
नुसुहाइनहाइहियौपरितापनचायो॥ऐंच
नुऔधिउसासनुवीरजकौवलकैतकअंत
नपायो॥ज्योंहरिकेविछुरेंविरहाअवद्रोपदी
कैपटज्यौंअधिकायो॥३२॥दोहा॥तियहिय
नियजुलगीचलनपियनषरेषषरौंट॥सूष
नदेतेनसरसईषौंटिषौंटिषतषौंट॥३३॥टी
यहनाइकाप्रोषितपतिकासषीकोवचनसषी
सौं॥३३॥कवित्त॥सेनमैंसंगरमीरसरंगअनंग
तरंगउमंगिसुहाई॥काक्रकेकरकीनषरे

षकहूं नियके उर मैं लगि आई ॥ पीय परदेस ग
यो जब तें तब तें उ निनींधनकों धन पाई ॥ वेष
२ नषोट षरीं टिषरीं टिन स्वषन देति वहै मरसा
ई ॥ ३३ ॥ विरह ॥ दोहा ॥ मरिवेकों साहस कके व
ढे विरहकी पीर ॥ दौरति है समुही ससि सहिसरसि
ज सुरमि समीर ॥ ३४ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोषित
पतिका सषी कों वचन सषीसों ॥ ३४ ॥ कवित्त ॥ श्री
मनमोहनसों जब तें विछुरी न तब तें न पलो कल पा
वति ॥ नीर विनां मकरी ज्यों परी ये परी नल षेस्व
ई दुवरी आति ॥ साहस कै मरिवे कों सषी सुउधा
रि कैं आंनन तुजो क मैं आवति ॥ दौरति सामुहैं स
र समीर सरोज निलै हियरा सों लगावति ॥ ३४ ॥
॥ दोहा ॥ वसिसकोच दसवदन वंससां च दिषा
वति वाल ॥ सियज्यों सोधति तियतन हि लगनि
अगनि की ज्वाल ॥ ३५ ॥ टीका ॥ यह नाइका कें लग
निकें लगें तें सनेह की अधिकाई है याते अगनि
भई है सुया की दसा सषी नाइकसों कहति है ॥ ३५
कवित्त ॥ जा दिनातें लग्यो नव नेह मनभावन सों
ता दिनातें मैनकी मरूरनि मरति है ॥ ता तुगुरलो
गनु के सासनि सकनि भरि येक आसलागी निसि
वासर भरति है ॥ वसतिसकोच दस वदन के वस
वाते कहू न वसाति धातु पति कौ धरति है ॥ ल
गनि की ज्वालनि में वाल निज देह कों सियालौं
वहसोध तु करति है ॥ ३५ ॥ दोहा ॥ कैरी विरह कै

वि० स०
१०१

सीतलअगेलनछोडतुनीचुदीनेहूंचसमाच
षतुचाहेतहेनमीचुदि ३६ टीका यहनाइका।
प्रोषितपतिकासषीकोवचननाइकसौंविरह
निवेदनुअरुसंषीहूसोंकहे ३६ कवित को
कुकहीकहौंकंजमुषीकोंनिहारेवियोगकी
तापसतावति होतिषरीउवरीषिनहीषिनदे
षिदसानअलीकेपलपावति ऐसीकरीन
कुगेलनछोडतुऔरकहाकहियेकहनावति
देषतुआंषिनुदेचसमातकुटैहैंमीचुकी
डीठिनिआवति ३६ दोहा औधाईसीसी
सुलषिविरहविकलविललात। विचहीसू
किगुलावगोछीटौछुईनगात ३७ टीका य
हनाइकाप्रोषितपतिकासषीकोवचननाइ
कसोंसषीहूसोंकहैतोवनैं ३७ कवित वा
लवधूमनमोहनसौंविछुरेंविलषीदुषदेदे
नेवाई नीरविनासफरीज्योंपरीतलफैवकु
भांतिवियोगदवाई सीतलजांनिसषीकरु
नाकरिसीसतैंसीसीगुलावकीनाई वीचही
नीरुविलाइगयौसवएककहूछौंटनआंगलौ
आई ३७ दोहा जिहिनिदाघदुपहरनदै
हतिमाघकीराति तिहिंउसीरकीरावटीष
रीआवटीजाति ३८ टीका यहनाइकाप्रोषि
तपतिकाविरहनिवेदनसषीकोवचननाइ
कसोंसषीहूसोंसंभवै ३८ कवित लालतिह

रे बियोग नैं बाल बिहाल न घरीत लफै सकरी
सी ॥ बानन त्रास के ताप निनें सषि को उत न जा
इके हो नियरी सी ॥ कै रहे जे कौ ज्वालनि मैं ज
हां माह की रातिनु सार भरी सी ॥ ना हि उसीर
के धामं मैं बाम तुज्ञाइ की रातिनि रही मुवरी सी
३८ ॥ दोहा ॥ सीर जतनन नु ससि रसि रतु सहि रहि नि
नन तापु ॥ बसिबे कौं ग्रीषम दिननु परयो परो
सितु पापु ॥ ३९ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोषितपति
का [illegible] सषी कौ वचन नाइक सौं बिरह
सषी कौ वचन सषी ह्वै सौं संभवै ॥ ३९ ॥ कवित्त
का कनिहारी बियोगिनि की गति देषत मेरो हि
यौ अकुलायौ ॥ हो सुकुमार सरीर सु तौ अब
ऐसौ बियोग कृसानु तायौ ॥ सीत मैं सीरे उपा
इनु सो घिस ह्यौ नन तापु मनौं वह रायौ ॥ ग्रीषम
हौ सनि कैं नौं बसिये पास परौ सिनु कौ अब पाप
सो आयौ ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ गवनी गनिवे नै रहे छुन
है अछुन समान ॥ अब अलि ये तिथि औं मनौं
परे रहे न न प्रान ॥ ४० ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोषि
तपतिका नाइका कौ वचन सषी सौं ॥ ४० ॥ कवि
दे षिरी कैसी करी मन भांवन ऐसी धौं वा हि के
हाव निआई ॥ औधि ह्वै बीति गई न लई सुधि
एती घरी उर मैं निठुराई ॥ ताग नि ती गनि वे तें
रहे न भये से भये बिनु बासु षदाई ॥ ये तिथि औ

मलौं छौलके सोमलौं आन परे न नरहौ माई ॥
४०॥दोहा॥ आउदै आलेवसन जाइहू की राति
॥साहंस कछै नुनेह वस सषी सवै ढिंग जाति
४१॥टी०॥ यह विरह निवेदनु आव निपतिकाना
इकाको वचन नाइक सौं सषी सषी हू सौं कहै ॥
४१॥कवित्त॥ लालवन माली विछुरे नै अजेवा
लभई निपट विहाल विथा उर सरसाति है ॥
आनन सताई वा के नन न कीतना इदेषें अब केन
रनिहू की किरनि सिराति है॥ करनि उपाइहा
इहाइके हिवारवार मोडि करति निपट अकु
लानि है॥ आउदै वसन आलैं जाइ हू की राति मा
झसाहसु केनेह नों तें सषी ढिंग जाति है॥४१॥
दोहा॥ सुनन पथिक मुह माह निसि लुवैं च
लति उहि गाम॥ विनंहू है विनु ही सुनें जिय
ति विचारी वाम॥४२॥टी०॥ यह नाइकाको उतिप
तिकाविदेस मैं पथिक के मुष की वात सुनिना
इकनैं अटक रनैंया की दसा जांनि सषी कौं वच
न सषी सौं॥४२॥कवित्त॥ सीन समैं हू की राति मैं उ
वै चलें उहि देस ऊतास न सांनी॥ आगु समैं व
नेरात वटोही अचांनक कांन परी यह वांनी॥
छोडि दये सव काज विदेसी की वुधि नहीं घरकौं
अकुलांनी॥ प्रांनपियारी की च्याइ गई सुधि जी
वति है तिय पैंयह जांनी॥४२॥दोहा॥ मास सुमा

हकरीउरीभरीभरीछिनमाहि॥सीचिगुलावघरीघरी
वरीवरीछिनवारि॥४३॥टीका॥यहनायकाप्रोषित
पतिकाउद्वेगदसानाइकाकोवचनसषीसौंरतरंग
सषीसषीहूंसौंकहैतौवनै॥४३॥कवित॥वालम
वियोगतैंविकलअतिप्रानकछूसकुतनऔंन
वनैंदुषहरीकोदाउरी॥औरउपचारकरिमारिमा
रिनमरीकोजोरिदहैतौतकहमप्रानप्यारेकौं
मिलाउरी॥घरीघरीसीचिगतिगुलावकेसलि
लसौतौंकियोकहाचाहतिहैमोहूंधौंवताउरी
भरतिघरीयैमारीमारकोडरीयैविरहागिनिव
रीयेअववारिजिवाउरी॥४३॥दोहा॥पलनुप्रग
टिवरुनीनुवढिनहिंकपोलढरात॥अमुवा
परिछतियाछिनकुछनिछनाइछपिजात॥
४४॥टीका॥यहनाइकामध्याप्रोषितपतिकास
षीकौंवचनसषीसौंनाइकहूंसौंनिवेदनुकरै
तौसमझै॥४४॥कवित॥वालनंदलालकेवियो
गतैंविकलयातेंपलपलविधिकेरौवासरविहा
तहैं॥विरहतताईकीवढनिवरुनीनिजातिराते
मोनतवैवाकेकुसुमसेगाततहैं॥पलनुतैंप्रग
टिवढतवरुनीनहूंतेंपरतकपोलयेतुरतढरि
जातहैं॥सलिलकीवूंदतातीछितिपैपरतिछै

सखीं पतीपरिस्प्रं सुवा लनकि कछु पिजात हैं ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ फिरि सुधि सुधि ग्या इ प्यो दृष्टि निरद ई निरास ॥ न ई न ई वरू कें भई दई सुमासि तसास ॥ ४५ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोषितपतिकाया की अवस्था सखी सखी सों कहे हे ॥ ४५ ॥ कवित ॥ आली वियोग वनमाली कौं व्याकुल बाल परी अकुलाइ ॥ पाहन की पुतरी ह्वै परी उपचार विचार कछु न वसाइ ॥ ऐसे मैं वाहि दई सुधि दै सुधि ग्या इ पियो दुषरासि जगाई ॥ वा निरदै सौं कहा कहिये जिन प्रेम ममकार की पीर न पाई ॥ ४५ ॥ दोहा ॥ विरह जरी लषि जीगनन कह्यो न उहिं के वार ॥ अरे आउ भजि भीतरी वरसत आजु अगार ॥ ४६ ॥ टीका ॥ यह नाइका प्रोषितपतिका उद्वेग अवस्था सषी कौ वचन सषी सों ॥ ४६ ॥ कवित ॥ विरह विकल मृगलोचनी विवस भई हरि विनु तन मन प्रान तरसत है ॥ पल पल वरत न छूटत रती क धीर अधिक अनंग दुष दरसत है ॥ जीगनानि हारि वार वार यों पुकारि कहें आली ये तो नीषन तपात दरसात है ॥ अरे भजि आव वेगि भीतर भवन देषि अंवर तें आजु तो अंगार वरसत है ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ इत आवति चलि जात उत चली छसातक हाथ ॥ चढी हिंडोरे सेर हैं लगु

सीउसासनुसाथ॥४७॥टीका॥यहनायकाप्रोषि
तपतिकाव्याधिअवस्थासषीकौवचनसषी।
सौं॥४७॥कवित॥मोहनलालतिहारेवियोगर
हीहुजनागरिचित्रकढीसी॥होतिछिनैछिनअ्रो
रहीरंगअनंगकीवेदनिअंगवढीसी॥वातन
आईइतीउवरायसषीलषिसोचसमुद्रमढीसी
आवतिजातिउसीतकहाथउसासकेसाथ।
हिंदुरैचढीसी॥४७॥दोहा॥नेंकनुझुरसीविरह
झरनेहलताकुम्हिलाति॥नितनितहोतिह
रीहरीषरीझालरतिजाति॥४८॥टीका॥यहना
इकाप्रोषितपतिकानाइकानाइककोवचन
४८॥कवित॥नंदडुलारेन्यारेभयेजवहीतेंतव
हीतेंवहतातीकैकैंछातीअकुलातिहै॥सुधि
आयेंघरीघरीसहलसेसलतउरप्रानपरेंपरवस
कछुनवसातिहै॥हाहूनविरहझरजदपिसने
हलताझुरसीतदपिनेकहूनकुम्हिलातिहै॥
दिनदिनछिनछिनउमगिअधिकहोतिहरी
हरीषरीषरीझालरतिजातिहै॥४८॥दोहा॥या
केउरऔरकछूलगीविरहकीलाइ॥पजरे
नीरगुलावकेपीकीवातवुझाइ॥४९॥टीका॥
यहनाइकाप्रोषितपतिकाकीअवस्थासषी

वि॰ प्र॰
२०४

सषीसोकहतिहै ॥ ४९ ॥ कवित्त ॥ ऐसीहमाहि
षिहौं अकुलातिकितोउपचारविचारष्याकीरी
आनिभयोलैनसोलैविलोचनहूवरीहोतिहिरैं
छिनषीरी ॥ याकेहियेकछूऔरैआनौषीविथाभ
ईतासनज्वालगीरी ॥ नीरगुलावकेहूनीवरै
पियप्यारेकीवातहिंहोतिहैसीरी ॥ ४९ ॥ दोहा ॥
हौंमतिसुषकरिकामनातुमहिंमिलनकीवा[त] ॥
ज्वालमुखीसीजरतिलषि ॥ लगनिआगनिकी ॥
ज्वाल ॥ ५० ॥ टीका ॥ यहनाइकाकेलगनिकीज्वा
लकीअधिकाईकहतिहै ॥ ५० ॥ कवित्त ॥ कन्हप्रा
नप्यारेलालजवहीतेंभयेन्यारेतवहीतेंफल
प्यारेपलकनधरतिहै ॥ ससकिससकिअतिदी
रघउसाससलेतितलफितलफिसुधिवुधिविस
रतिहै ॥ विरहकुतासनकीनिराषिष्ववडज्वाला
निहचैंहियमेंज्वालामुखीकोधरतिहै ॥ मिलि
वेकीकामनाहियमेंकरिउइमुषीअवसवसुष
सुषनकोहोमसोकरतिहै ॥ ५० ॥ दोहा ॥ नितमं
मोहंसोवचनतुमनेंसुहृहिअनुमानु ॥ विरह
अगिनिलपटनिसेकेजपटिनमीचमिचानु
५१ ॥ टीका ॥ यहनायकाप्रोषितपतिकास
षीकोवचनसषीसोंजोनाइकसोंकहैतोवि

रहनिवेदनुहोई ॥ ५४ ॥ कवित्त बिछुरैतिहारैमनमो
हनपियारेबालनिपटकलेपीनकरीमदनसताइकै
सवहीकेरहतुहियेमैंयहीसमैवहद्दलमैं यैंबला
गिकैसरह्यागहराइकै ॥ जानियतुयहीउनमान
ताकेवचिवेकोआनिपविहासौअनगनैतिउप
इकै ॥ ॥ विषमलपटलषिविरहऊतासनकीरूप
टनिसकतुसिवांनुमीचआइकै ॥ ५४ ॥ सोरठा विर
हजुकाईदेह ॥ नेहकियोअतिडहडहो ॥ जेसेंवर
सेमेहजरैजवासोजोजमै ॥ ५४ ॥ टीका यहनाइका
प्रोषितपतिकाविरहकीअरुसनेहकीअधिका
ईसषीसोंकहतिहैअरुनाइकहूसषीसोंअप
नीअवस्थाकहैतोसंभवै ॥ ५४ ॥ कवि॰ देषोवियो
गतेंनेहसुषाइकरीउवरीसह्योमांसुनमांसो ॥ ने
हलताजलहाइहरीकरैहेरिसषीनुहूंकेपरयो
सांतो ॥ आवतिहैजियमैंउपमाकविहूसमकहै
यहदेषितमांसो ॥ ज्योंवरसैंघनपावसकेंसव
हूपजमैंजरैआकुजवांसो ॥ ५४ ॥ दोहा विरह
विथादिनपरतहीतजेसुषुनुसवअंग ॥ रहिअ
वलेंधोषोमयोचलाचलोजियसंग ॥ ५३ ॥ टी
का ॥ यहनाइकाप्रोषितपतिकानाइकाकोव
चनसषीसोंसषीकोवचननाइकसोंअरुसषी-

विरहकीअवस्थासषीसषीसोंकहतिहै॥
५७॥कवित्त॥नादिनतेंब्रजनागरिकोमननंद
किसोरकेनेहनह्योहै॥नादिनतेंनहिंरनिंद
रेंअसुवातिनकोयहमेडलह्योहै॥औचंत
ह्योविरहानलकीतिह[illegible]तिभीजि
रह्योहै॥तातेपसीजिपसीजिहियोवियनेंन
जुकेमगनीरूवह्योहै॥५७॥दो॰कोंनसुनेंका
सोंकहौंसुरतिविसारीनाह॥वदावदीज्योले
तहेंयेवदरावदराह॥५८॥टीका॥यहनाइका
प्रोषितपतिकाविरहकीदसअवस्थामेदसैं
चितनाइकाकोवचनसषीसों॥५८॥कवित्त
कासोंकहोंकोनुयहजानेंउरअंतरकीसुरति
विसारीसुषकारीहरिनाहरी॥हमप्रानप्यारे
वीछुहाईनसुहाइकछुवरसतुनेंननुजैसलि
लप्रवाहरी॥अंगहोतुविकलअनगतनता
वतुहैवेदनिदहतिचितचाहरी॥रातेपरबरे
ज्योंनमानेंक्योंहूप्रानलेतवेदावदीवदरानि
परवदराहरी॥५८॥मुग्धाप्तदोहा॥स्यामसु
रतिकरिराधिकालकतिगतरनिज्ञातीहं॥अ
सुवनिकरतितरोमकोंषिनकुघरोंहोंनीरू
५९॥टीका॥यहनाइकाप्रोषितपतिकादस

अवस्थाभेदमेंस्मृतिसंषीकोवचनसषीसों॥ ५८
॥कवित॥श्रीमनभावनकेबिछुरैंवृषभानसुता
अतिहीअकुलानी॥मोजनुकौंनसषीनसुहासु
हांयवैनिसिवासरवानी॥सूरसुतादिगिदारि
रहीजनहांस्किछुहरिकीपहिचानी॥आसुनि
केपरिवाहकस्योछिनयेकपरोहौंतरोसकौंपा
नी॥५९॥दोहा॥सोवतजागतसुपनवसरस
रिसचैनकुचैन॥सुरतिस्यामघनकीसुरति
विसरैंहूंविसरैन॥६०॥टीका॥यहनाइकाअ
नेंचितकीप्रीतिसषीसोंकहतिहैदसअवस्था
नुकेभेदमेंस्मृतिजांनिये॥६०॥कवितकछू
नसुहाततिसिद्योसविहातनक्योंहूंकहाक
हौंवातपरवसपरेमनकी॥सोवतहूंजागतहू
सपनेंहूंचितवहीरहैचितवहीवानिप्रीतिपन
की॥रसहूमेंवादमेंहिसि[illegible]मैचैनहूंअचैनहू
मेंकौनहूमेंवागरहूमेंवनकी॥मूलनिसुरतिमें
जतनहूकीतऊवहमूलतिनकेसेहूंसुरतिस्या
मघनकी॥६१॥उदवेगदोहा॥मोयहऐसोई
समोजहांसुषदउषदेत॥चेतवोदकीवा
हिनीडारतिकैंअचेत॥६२॥टी॥यहनाइका
प्रोषितपतिकादसअवस्थानुमेंउद्वेगनौ

६८

वि॰स॰
२०७

नाइकाकोवचनसषीसों ॥ ६२ ॥ कवि॰ ब्यालमई
अवमालतीमालसमीरतेंपीरहियेंसरसाई ॥ पा
वकपुंजसौंबपकुचंदनचंदकुचंदलज्योंनसु
हाई ॥ चेतुहरेंचितचेतकीचांदिनीवधतुवांन
नुकामकसाई ॥ ज्योंनवन्योंअवज्यैसीसमाउ
षदेतसवैजुरूतेसुषदाई ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ होंही
बोरीविरहवसकैबोरोसवगांउ ॥ कहाजांनि
येकहतहैंससिहिसीतकरनांउ ॥ ६२ ॥ टीका ॥
यहनाइकाप्रोषितपतिकानाइकाकोवच
नसषीसों ॥ ६२ ॥ कवित्त ॥ कुंभजहूंअचयोसु
पचयोनयाहीतेंउगलिजन्योतमहूंउरपिवि
षकंदसों ॥ दोषीअवलनिकोकलंकीलैवढायो
सीसईसकहांजांनिहितुकीनोंमतिमंदसों ॥
कैधोंसवहीकीमतिहीनभईमेरीआलीकैधों
होंहीबोरीभईविरहकेदंदसों ॥ देषियतुपाव
कतेंविषविसषवेषसीतकरकाहेतेंकहतऐ
सेचंदसों ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ औरेभांतिभयेवराचौ
सरचंदनुचंदु ॥ पतिविनुअतिपारतुविपतिमा
रतुमारूतमंदु ॥ ६३ ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रोषि
तपतिकादसअवस्थामेंउद्वेग ॥ ६३ ॥ कवि
त्त ॥ वेमोहितुकरिअवऐसीविसराईनिठुरा

ईवाकछोईकौनकहतिवनतिहै ॥ जेईहैंसुष
दतेईभयेदुषदाई अवकहाकरौंमाई अकुला
ई अतिमतिहै ॥ चंदनसरोजचंदचोसरुसिवा
रुचारुचंपककेचंद्रिकाकीओरेभईगतिहै ॥ भ
योनिरदईमंदमारुतहूमारतुहै प्रांनपतिबिनु
अकुलाई अतिमतिहै ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ इतिआव
तचलिजातउतचलीछसातकपाय ॥ चढीहि
डोरेसेरहैंलगीउसासनुसाथ ॥ ६४ ॥ टीका ॥ यहं
नाइकाप्रोषितपतिकाकमतीकोअधिकार
सषीकोवचननाइकसोंसषीसषीहूसोंकहै
तोहोइदसंअवस्थानुमेंव्याधिस्वाससंचा
रीसुकुमारतानसंमवै ॥ ६४ ॥ कवित्त ॥ मोहनला
लतिहारेवियोगरहीव्रजनागरिचित्रकदी
सी ॥ होतिछिनैछिनऔरहीरंगअनंगकीवद
निअंगवदीसी ॥ वातनआईइतीदुवराईसषी
लषिसोचसमूहमढीसी ॥ आवतिजातछसा
तकहापगउसासकेसाथहिंडोरैचढीसी ॥ ६४
॥ दोहा ॥ हरिहरिकिरिवरिविरिगतिकरिकोरि
पकीउपाइ ॥ वाकोजुरुवलिवेदज्योंतोरस
जाइतौजाइ ॥ ६५ ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रोषित
पतिकाव्याधिअवस्थाविरहनिवेदनुसषी

विं०स०
२०८

कोवचनसषीसों ॥ ६५ ॥ कवित्त ॥ हरिहीहरिरहतिव
हति विथा छिनु छिनु वरिवरि जैवेवाकेनेरें जात
जरिये ॥ करिकरिप्रथकीहैनपाइसवप्राली श्रव
कछूनवसाइप्ररसोचभारभरिये ॥ हाहावबलि
वेद श्रवरावरसुरसहीवचैतोवचैबालचलिवा
कीपीरहरिये ॥ तीषोतापुदारियेधर्मउरधारि
येनिवारियेगहरुकरुनाकेढारुढरिये ॥ ६५ ॥
जउत्ता दोहा ॥ मरीउरीकिटरी विथाकहाघरी
चलिचाहि ॥ रहीकराहिकराहिश्रतिश्रवमुष
श्राहिनश्राहि ॥ ६६ ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रो
षितपतिकादसश्रवस्थामेंदसैंजउत्तासषी
कोवचनसषीसों ॥ ६६ ॥ कवित्त ॥ ऐसीकोछा
डिविदेसगयोहैसोकवहूविछूरीनघरीहै
हायपहेरटलाइरहीगतियाकीलषेमतिमे
रीहरीहै ॥ वालवियोगवजागिमरीवेकसैंदन
कोंश्रवैंहीविसरीहै ॥ पीरटरीकिपरीहैमरीचलि
देषिश्रेरीकहाहूविषरीहै ॥ ६६ ॥ दोहा ॥ मरुन
भलोवरुविरहतेयहविचारुचितजोइ ॥ मर
नमिटैदुषयेककोविरहदुहूदुषहोई ॥ ६७ ॥
॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रोषितपतिकानाइका
कोवचनसषीसों श्ररुनाइकहूकोवचनस. २०८

व.

षीसोंसंभवे ॥ ६६ ॥ कवित्त ॥ नैंक हीकेबिछुरेंसव
हीसुषसाजभये दुषदायकमारे ॥ नैंननुनीरुझरी
वरसेतरसेंछतियाबिनुप्रानपियारे ॥ आलीबि
योगबिथावरिवेतेंभलेंमरिवोमतमान्योंहमारे
ताककौदुष्षमरेंमिटिजातुबियोगजरेंमनुसे
तुहैदागदुषारे ॥ ६७ ॥ विरहनिवेदनदोहा ॥ क
रकैमीडकुसमलौंगईविरहकुम्हिलाइ ॥ सदास
मीपनिसिषननहूंनीरपिछानीजाइ ॥ ६८ ॥ टी० ॥
यहनाइकाप्रोषितपतिकासषीकोवचनसषी
सोंसषीसषीह्वसोंकहै ॥ प्यारेनंदनंदनतिहा
रेबिछुरेंमोपैकहतवनैंनजैसीभईवाकीगतिहै
आलीजेरहतिनिसिवासरसमीपतिहूंपैपहि
चांनीवहनीनिहीपरतिहै ॥ वासदेषिपासजे
वोछ्योपासवानिनुहूंएतेमानमदनऊतास
नवरतिहै ॥ कामलकुसुममानोंमीड्योकरवर
करिऐसेंकुम्हिलाइमुरझाइगईअतिहै ॥ ६९
दोहा ॥ नैंकनजांनीपरतियोंपर्योविरह
तनुछामु ॥ उठतिदियेलौंनाहिहरिलियेंति
हारोनामु ॥ ६९ ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रोषितप
तिकाविरहनिवेदनुसषीकोवचननाइकसों
६९ ॥ कवित्त ॥ लालतिहारेवियोगतेंवाके

बि० स०
२०९

बिहातिघरीबिधिबासरकीसी ॥ ह्वांभुमयोअ
तिहीतनुबामकौंकामदहैसुधिबुधिरदरीसी
मेजमैंनैकहूजानिपरैनहिहैषियेकंचनरष
लिषीसी ॥ रावरोनामससुनैइकबारहीनाहितिबै
दुतिदीपकहीसी ॥ ६९ ॥ दोहा ॥ जोवांकेतनकी
दसादेष्योचाहतआपु ॥ तौबलिनैंकबिलोकि
येचलिअचकचुपचापु ॥ ७० ॥ टीका ॥ यहनाइका
प्रोषितपतिकाव्याधिअवस्थासषीकोवचन
नाइकसौंनाइकलैचलिबेप्रयोजन ॥ ७० ॥ कबि
त ॥ पाहनकीपुतरीज्योंपरीबरसैंअसुवासरसे
तनतावै ॥ ज्यौंज्यौंकरैउपचारवैरत्यौंपरमोह
मलोगनुकौंअतिपावै ॥ वाकीदसाअबऐसी
भईहरिजोअबलोक्योईचाहतआवै ॥ तौबहि
सौचलहिनबलाइल्यौंयोंअबकोचलियेचुपु
चावै ॥ ७१ ॥ दोहा ॥ तजतुअगंननदहबपैयास
बमतिआगैजाम ॥ भयोबामबाबामकोरहत
कामबेकाम ॥ ७२ ॥ टीका ॥ यहनाइकाप्रोषित
पतिकाविरहनिवेदनुसषीकोवचननाइक
सौंसषीसषीसौंकहैतौसंभवै ॥ ७२ ॥ कवित्त ॥
लालमनमावनतिहारैबिछुरेतेंज्वालबि
रहअगनिमेंबरतिनाकुनाथहै ॥ वेहीकाम

कामवामदेवकेभरमभूलित्यौंवाहीवांमसों
विषमवेरूवांधेहैं॥सवमतिह्वमपिद्याऩ्तर
परहरिश्राँगेजामरा़हतमरोससरसांधेहैं॥
कीजेक्षोंकहाजपानछोडतुनग्रापपातत्के
हानिकोदाउलागोइहीवांधेहैं॥७२॥दोहा
वालवेलिसषीमुषदइहिरूषीसुषघाम॥फिरि
उहहहींकीजियेसुरससींचिघनस्याम॥७२॥
टीका॥यहअनुरागानिवेदनुसषीकोवचनना
इकसोंपुरूषमानकेप्रसंगहहमेंसमवे॥७२॥
कवित॥हितुकरिजाकोहरिलीजेचितुलाल
यहकितहै॥उचिततातोहिरातोडुछुदीजियै॥जा
नतहोप्रीतिरीतिकोप्रवीनपतुकीजेनगहरू
सुषदैकेसुषलीजियै॥ताकेरंडुसहदइहरुषेरू
षघामहीसोंवालवेलिसूकीजाहिनिरषतछी
जियै॥प्यारेघनस्यामजगजरनिनिवारतहोसीं
चिकेंसुरसपकेहिरउहहीकीजियै॥७२॥दोहा॥
लालतिहारेविरहकीअगनिअनूपअपार
सरसेवरसेनीरहूकरहूमिटेनझार॥७३॥टी
का॥यहनाइकाप्रोषितपतिकासषीकोवच
ननाइकसोंविरहनिवेदनु॥७३॥कवित॥क
सुप्रांनप्यारेलालविछुरेंतिहारेवालअलिही

बि॰ स॰
११०

विकलमलिवेकौंतरमतिहै॥सौरहोतितातें
उपचारमींडेंतातीछिनछिनैंअकुलातिछा
तीपीरनिसरतिहै॥वाकेतनरावरेवियोगकी
आगनिऐसीअदभुतगतिसोंअपारदैंसरति

२४

है महाझरहूतें झरसीरीनपरतियजरतिज्यों
ज्योंनीरकीभरनिबरसतिहै॥७३॥दोहा॥देषा
तिवुरेंकिफरलैंउपैजाइजिनिलाल॥छिनछि
नजातिपरीषरीछीनछबीलीबाल॥७४॥टीका॥
यहनाइकाअनुरागनिवेदनुसषीकोवचननना
इकसोंविरहनिवेदनुहहोइ॥७४॥कवित्त॥वि
छुरेंतिहारेलालविलषीविकलबालपरीवि
ललातक्योंहूंधीरननधरातुहै॥एतेमानहूंम
मईपरैपरजंकपरनौविनीनिनिरषोपरतुवा
कोगातुहै॥काल्हिहीमुआजुनाहिंआजुही
मुअवनाहियातैंपरितननुकोजीउअकुला
तुहै॥ऐसीछिनछीजिनिविलाइजिनिजाइ
वालज्योंकपूरवांनीतेंकपूरउड़िजातुहै॥
७४॥दोहा॥हंसिउतारिहियतेंदईतुमजुतिहि
दिनलाल॥राषतिप्रानकपूरज्योंवहेहचुहु
टनीमाल॥७५॥टीका॥यहअनुरागनिवेदनुहैस
षीकोवचननाइकसों॥७५॥कवित्त॥दूवरी

११०

ऐसीमईबिछुरेंतियसेजहूमेंनऊनषीपरेसो
वो॥ आलीबिलोकिकेंमीडतिहाथगयोइक
सांथसबैसुषजोतो॥बीसबिसेगहिजातेकहूर
लोंधरापतोप्यारीकेप्रांननुकोतो॥जोवहलाल
तिहारोदयोघुंघचीकोहरागुरमांझनहोतो॥७५
॥दोहा॥ कहाकहेंवाकीदसाहरिप्रांननुकेईस
बिरहज्वालजरिबोलषेंमरिबोभयोअसीस॥७
६॥टीका॥ यहनाइकाप्रोषितपतिकासषी
कोवचननाइकसों॥७६॥कवित॥प्यारेमनमें
हूनतिहारेबिछुरेतेंवृषभानकीकुंवरिभईबरी
कलकानहे॥ जलबिनुमीनज्योंबिकलतलफ
तिअतिकहेंकबिकृस्नऐसीहोतिअंनवानं
हे॥ज्योंज्योंकरियतुउपचारनुकीभारत्यौंत्यों
परतहूनीपीररहेआंषिनहूप्रांनहें॥बिरहकी
ज्वालनिसोंजरिबेकेलेषेंवाकोमरिबेकोबच
नअसीसकेसमांनहें॥७६॥दोहा॥यहबिनस
तनगुराबिकेंजगतबडोजसलेहु॥जरीबिष
मजुरज्याइयेआइसुदरसनदेहु॥७७॥दोहा
यहनाइकाप्रोषितपतिकाव्याधिअवस्था
सषीकोवचननाइकसों॥७७॥कवित॥जरीहै
बिषमजुरगिरीहैअचेतवहघिरीहैचहूंघा

व्याधिहूं दनि मैं परिहै॥ कै व्रनसै तन कौं अ
तनव्रथा वारतु है रतनु उवारिये जतनहूं
करिये॥ ऐसी गति देषें होत तो मरति परेषें
दुषवढ्यो अनलेषे वाके नेरे जात डरिये
लीजिये जगतु जसु कीजिये धरमु यह दी
जियै सुंदर समनु वाकौ तापु हरिये॥७४॥ दो०॥
मैलै दयो लयो सुकर छुवत छनकि गयो
नीरु॥ लाल तुम्हारो अरगजा उर ह्वै लग्यो
अबीरु॥७५॥ टीका॥ यह नायका प्रोषितपति
का सषीकौ वचन है नाइक सौं॥७६॥ कवित॥
तुम प्रान प्यारे लाल बिछुरै तिहारे अब
हियो ब्रजबाल कौं अनंग दुषदाग्यो है॥ कै
वरीनि पट कुं मिलाइ गई फूलि जि मिंदु
षु अनुकूल मो समूल सुष भोग्यो है॥ तुमु
नु पठायो सो मैं दीनो जाइ वांहि उनलीनो
अतिहितु करि चितु अनुराग्यो है॥ कर पर
सत ही छिनकि गयो नीरु अरगजा वाके
उर मैं अबीर ह्वै कै लग्यो है॥७८॥ दोहा॥ प्या
कौं जतनु अनेक करि नेक निछाइ तिगो
ल॥ करी षरी दुवरी सुलगि तेरी चाह चुरे
ल॥७९॥ टीका॥ यह नाइका की लगनि सषी

कोवचननाइकसौं॥७४॥कवित॥रोमनिसे मनिभोइगईहियमैंधसिप्रानुनुमांफघ गीहै॥होकरिप्याकीउपाइसबैहरिजंत्रनि मंत्रनिहूनउगीहै॥देहसुषाइकरीउवरी उरीबावरीज्योंसुधिवुद्धिभगीहै॥एतेपै वाकीनछ्बाउतिगैलचुरैलछैरावरीचाह लगीहै॥७४॥दोहा॥पियकेआनगहीगही रहीवहीह्वैनारि॥आपुआपुहीआरसी लषिरीकतिरिझवारि॥७०॥टीकायहनाइ काकीलगनितमयातासषीकोवचनस षीसौं॥७०॥कवित॥नेकुलग्योमनभोवन सौंउहितौंअगईयहवानिनईहै॥ध्यांन हीध्यांनमैंआजुकछुद्रषभानसुतामई काछ्सईहै॥आरसीमैलविआपनीम रतिआपुहीरीझिनिहालभईहै॥श्रनप्रे मकीजेतिजगीउरज्ञांनसबैमुधिभूलि गईहै॥८०॥पुरुषवियोग॥दोहा॥औरेपरै नकरैहियोजरैबरैपरजार॥लावतुघो रिगुलावसोमिलेमिलेघनसार॥८०॥टी यहनाइकाप्रोषितपतिकानाइकाकौ वचनसषीसौं॥८०॥कवित॥काहेकौलंघ

बि॰स॰
११२

नसारुगुलावमेघोरि घनो घसि चंदनला
वै॥ काहेकोंसीयूरे नीरभिगाइउसीरपषार
निसमीरुगुलावे॥ तोरिकहाजके औसीपरी
पजरीउरम्हागि षरी पजरावै॥ येउपचार
परेनकरैकलजातेंपरैकिनिताहिमिला
वै॥ ८॥ पाती॥ दोहा॥ रंगराता रातेहियें पीत
मलिषीवनाइ॥ पातीकातीविरहकीछाती
रहीलगाइ॥ ८२॥ टीका॥ यहपातीसषीकोवचे
नसषीसों॥ ८२॥ कवित॥ जवतेंवियोगभयो
लालमनभावनसोंतवहीतेप्यारीतन
फूलिमुरझाइकैं॥ नैनजलवरसतिमिलि
वेकोंतरसतिसरसतमदनमरूरवकुम्हा
इकैं॥ अतिअनुरागसोंवनाइलिषीप्रान
पतिऔसैमैंगरुवोनकहीदीनीकाहूव्या
इकैं॥ हितअकुलातीसुतोविरहकीका
तीजानिरातीपातीरहीलातीछातीसों
लाइकें॥ ८३॥ दोहा॥ कहाभयोजोवीछुरे
मोमनतोमनसाथ॥ उडीजाउकिततरू
डीतऊउडाइकेंहाथ॥ ८३॥ टीका॥ यहनाइ
ककीपत्रीनाइकाको॥ ८३॥ कवित॥ जोकर
तारखीसुसहीविधिऔरविचारअका

रथ्यहीहै ।। वेदपुरानपुरानेमुनी सवकोतुक
हैयहगाथहीहै ।। अंतरवीचपर्यौतौकहा
भयौमोमनुतोमनुसाथहीहै ।। जाकूंगुडी
कितकूंउडिडोरिउडावनहारेकैंहाथही
है ।। ८३ ।। दोहा करलेचूमिचढाइसिरउरल
गाइभुजभेटि ।। लहिपातीपियकीलषति
वांचतिधरतिसमेटि ।। ८४ ।। टीका यहनाइ
काकीपत्रीआईताहिदेषिकनाइकाकी
जुदसषीसषीसौंकहतिहै ।। ८४
कवित ।। मोहनकैविछुरैमगनैनिचकी
सीफिरैउरमैंअकुलाती ।। प्रीतिकेपीतम
आपुलिषीकहूंऐसेमैंआईअचानक
पाती ।। चूमतिचाइकैनैननुलाइकैंसी
सचढाइहियैकुलसाती ।। वांहनिभेटति
चौंपसौंचाहतिवांचिसमेटतिछ्वावति
छाती ।। ८४ ।। संदेस ।। दोहा कागदपरलि
षतनवनतकहतसंदेसलजात ।। क
हिहैसवुतेरोहियौमेरेहियकीवात ।। ८५
टीका यहपत्रीनाइककीअथवानाइका
कीपरकाया ।। ८५ कवित ।। पातीमैलिष
तकैसेवनतिजितीहैचाहसागरकोस

लिलुञ्चुरु मैं कैसे कीजिये ॥ कह निस दूसे
उरग्राव तिहे लाज ग्रति — ग्रधिक ग्र देसे
श्रौ ही छिन छिन दीजिये ॥ मनु ग्रैसो मान
सु मिले न कोऊ मधि पाती जामैं सम मुऊ
दूजी कों न दु कहि दीजिये ॥ याते प्रीति रीति
ग्रव दात मेरे ही की वात ग्रापने हिये ते
नी की भांति जानि लीजीये ॥ ८५ ॥ दो ॥ तर
ऊरसी उपर परी ॥ क ज्जल जल छिरका
इ ॥ पिय पाती विनु ही लषी वांची विरह
वुलाइ ॥ ८६ ॥ टीका यह नाइका ग्रो षितप
तिका विरह की ग्रधिकाई पत्री लिषिवे
तें जांग्र गई ॥ ६ ॥ क वि त ॥ प्यारे कों संदेसु
लषिवे कों वैठी साहसु कै लिष तन वन्यों न
मति विरह मलीन कै ॥ ग्रैसी ये लपेट उ
निसों पी सजनी के हाथ उ विजाइ सोंहि
प्रान नाथ हाथ दीन है ॥ तरुनि तिपानि
के परस तें जरी ग्रो स ऊपर ते गरी ग्रंसु
वनि जल मीनी है ॥ वोल न तही पाती पिय
तासी की सुरनि करि छाती गह वरि ग्राई
ग्रांषि भरि लीनी है ॥ ८६ ॥ दोहा ॥ विरह वि
कल विनु ही लषी पाती दई पठाइ ॥ ग्राक

विरूनीयोंसुचितसनेवाचतजाइ॥८७॥ही
यहनाइकाप्रोषितपतिकापत्रीआईया
तेदीतनुकीविरहकीअधिकाई तेप्रसंग
जानिये॥८७॥कवित॥विरहमदूरतेंनतनकी
तनकसुधिवालअतिव्याकुलअचेतऐसे
सीकैगई॥लिषिवेकोलईपातीलिषत
नवनैनकघ्वैसियेलपेटिप्रानपतिपेप
ठैदई॥वाकोविकलाईकीकहालोंअधिका
ईकहोंएकसीडुऊकीगतिएकैवेरहैमई
चपरीप्रवीनीनाहजकुंअकहीनीतऊवां
विसनैंहियकैलगाइछातीसौंलई॥८७
चलतचलितलोलेचलेसवडघसुगल
गाइ॥यीषमवासरसरसनिसिज्योंसोपा
सवमाइ॥८८॥टीका यहस्त्रीनाइकाकी
नाइककौं॥८८॥कवित॥रेनिदिनारहतेई
मिलिरसरंगउमंगनिभेमनुहारें॥ऐसोस
नेकुवढाइकैदेपिरीकेसीकरीउहिका
कूपीयारें॥लिग्योसंगलग...नवेसुषहे
गयोसोघुनरेनहीढारें॥इसकोजामिनि
जेठकेमासवमाइगयोअवपासहमारे
८८॥उधोकोवचन॥दोहा गोपिनुअमुव

निभ रिमवा अमोस अपार ॥ उगर डगरने
फिरही वगर वगर कै वार ॥ ८७ ॥ टी ॥ यह व्र
नको विरहनिवेदनु श्रीकृष्णसों सषीकोव
चनसषीसों ॥ ८८ ॥ कवित ॥ श्री जदुनाथ जिन्हा
रे वियोग कहीन परै व्रजकी जुदसा है ॥ जो
पिनुके ग्रायो वर सैं सर सैं ग्रसुवानि तैं नी
रप्रवाहे ॥ जो लगली सब भूरिकैं भूरि नदी
व ढिहोति ग्रपार ग्रथाहे देषत धीर जको
न धरै रहरि वांह गहै विनुको ग्रवगाहै ॥ ८९
ग्रागम पतिका ॥ दोहा ॥ कियो सयांनी स
षिनुसों नहि सयान यह भूलि ॥ दुरै दुराई फू
लली क्यों पिय ग्रागम फूलि ॥ ९० ॥ टीका ग्रा
गमो ... वना... कासिं सषी को वचन ॥ ९१ ॥ क
वित ॥ ललित कपोल ग्रानु मंद मुलकन ला
गे ग्रान नपे भई के ... ग्री रैं ग्ररुनाई री मे
ती बूझी सुषमानि तें के ... रु षाई ठौनि घूंघ
टमैं ठौ कि सुषडी ठि कै चतुराई री ॥ नाहिनें स
यान पनु ... षमे ... हे सयांनी सजनी
निसों क ... जो चतुराई री ॥ फूल की सुवासु
लों विकासु पहिले ही होतु फूल हरि ग्रागमकी
क्यों दुरे दुराई री ॥ ९० ॥ दोहा ॥ ग्रायो मीत विदे

स तें कान्ह कहीपुकारि ॥ सुनि कुलसी
विकसी हसी दोऊ कुनिहारि ॥ ९ ॥ टी
यह नाइका उपपति सौं दोऊ नु कोने
ऊ हेतांवें आगम दोऊ नु कें हर्ष भयो यां
हीतें परस्पर जानि परी सषी कौ वचन स
षी सौं ॥ ९ ॥ कवित ॥ कान्हर कें विछुरैं ब्रज
बालनु वो मनही मनही मन मैं मुरझानी
ढूँ हमकहें वहराइवे कौं मनुवेठि दुकुम्हि
लि वो परगोनी ॥ मोहनु मीतु विदेशतें
यो पुकारि कै कान्ह कही जव वांनी ॥ सो
सुनि दोऊ कुनि विलोकि लसी विल
सीकुलसी मुसिकोनी ॥ ९ ॥ दोहा ॥ मग
नैनी दृग की फरक उर उछाह तन फू
ल ॥ विनु ही पिय आगम उमगि पलट
न लगी दुकूल ॥ २ ॥ टीका ॥ यह नाइका
आगमिष्यत्पतिका सषी कौ वचन स
षी सौं ॥ ९२ ॥ कवित ॥ वाल षरी अकुला
नि हिये नंदलाल वियोग वियाउरजा
गी ॥ औसि मैं आइ अचानक कुलसी
छतीयासु घरी अनुरागी ॥ वां मवि लो
चन के करकें मंगलोच निजा वउछाह

निपागी ॥ फूलभरी विनहूं पियआगम
चारु ऊकूलचुनावनलागी ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ म
लिनदेह एई वसनमलिन विरह के रूप
पियआगम औरे रुची आनन ओप अनू
प ॥ ६२ ॥ टीका ॥ यह आगमस्वस्पत्तिका सषी
को वचन सषी सों ॥ ६२ ॥ कवित ॥ लालमन
भांवन के विछुरे मयंकमुषी अतिही वि
कल विरुपस्यो चिंताकूं पहें ॥ अधिकअं
गपीरतीरसी छांति हिये चांदिनी लगति
जेसी ग्रीषम की धूपहे ॥ कीनों न सिंगार
चारु वेसी सिंघ मलिन देह वसन मलिन
तुही विरहके रूपहे ॥ कहे कविदास पिय
आगमसुनतवही औरे ओप आनन पे
उमगि अनूपहे ॥ ६३ ॥ टीका ॥ रहे वरोट में
मिलत पियप्रानन के ईस ॥ आवत आव
तकी भई विधिकी घरी घरी सु ॥ ६४ ॥ टीका ॥
आगमोत्सवनाइका को वचन सषी सें
मे चारी कि[illegible]न में आल[illegible]कजानिये ॥ ६४ ॥
कवित ॥ [illegible]विदेश तें प्रानपती ये षि
आली सुनै छतिया सियराई ॥ नेनन लाल
गी रही दिवसा घमनोज उमगि हियें भरि
आई ॥ कहे कहे मिलिवे कहं का रूसांप

रिमजोलोंरह्योसुषदाई ॥ आवतआवत
कीसुधरीविधिवासररूतेषरीसरसाई
६४ ॥ दोहा ॥ कहिपठईजियभावतीपियआव
नकीवात ॥ फूलाआगनमेंफिरैंआगनअं
गसमात ॥ ६५ ॥ टीका ॥ आगमोत्सवसषीको
वचनसषीसोंसंचारीहर्ष ॥ ६५ ॥ कवित ॥ का
लवियोगमलीनमहाविसरीसुधिहा
सविलासरूमूले ॥ एतेमेंआधिवितीत
भईउरयेकहीसाथसवैदुषऊले ॥ आव
नतोमनभावनकोसुनिकेंउमहेसुष
पुंजसमूले ॥ आंगनमैंफूलसीफिरेसं
गअंगनआंगसमानतफूले ॥ ६५ दो
हा ॥ नाचिअचानकहीउठेविनेपावसवं
नमोर ॥ जांनतिहोंनिंदाकरीयहदि
सिनंदकिसोर ॥ ६६ ॥ टीका ॥ यहआगमोत्स
वनाइकाकोवचनसषीसषीरूकोवच
ननाइकासोंहोइ ॥ ६६ ॥ कवित ॥ राधायोवि
सासासोंकहतिजाकोरूपमोहिवारुचि
तचंदन्वरेषतेंदिषायोरी ॥ जाइतुवही
चितचोरुनंदपुतधतुआलीइहिकान
नकूहूतेंआजुआयोरी ॥ लहलहीहोति
वहकालकीसुषानिवलिफूलउतुसमन

ऐसौ वनु छवि छायो री ॥ विनउ नअरु घन
भये हरषित मन नाचिं नाचिं मोर नु कुला
हलु मचायो री ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ वाम वाऊ फर कव
मिले जो हरि जीवनि मूरि ॥ तो तो ही सो भेटि
हौं राधिदा हि नी हरि ॥ ९७ ॥ टीका ॥ यह आगमो
स्व भुज फरकत ही नाइका कौ वचन वा
म भुज प्रति ॥ ९७ ॥ कवित ॥ कौ रु विसासी वि
देस रह्यो वसि मैं नंद ही व रू भांति हियें हौं
वाम भुजा फरकी तो भूलें अव होरु यहे
निहचै पन के हौं ॥ कैसें उ वामन भौं वचा
कौं अव जो भरि आंषिनि देषिन पै हौं ॥ रा
धि हौ हू प्याहां हि नी वांह कौ तो ही सौं गं
हे अलिंगन दे हौं ॥ ९८ ॥ दोहा ॥ विछुरे जियेस
को चढि हिं वोलत वैने न वैन ॥ दोऊ दौरि
लगें हियें कियें निचौहैं नैन ॥ ९९ ॥ टी ॥ यह प
रदेश तें आगम दीऊ न के हितु को अधि
कु सषी कौ वचन सषी सों ॥ ९९ ॥ कवित ॥ दं
पति आपुस मैं कहत पतु ओट भयें पलुस
न रहै ना ॥ आयो विदेस वितै व रू वास र
नंद लल्ला अति चैम कौ अैं ना ॥ ये तो विछें
हे भये हू जियें चढि हि लाज तें वोलत वैन व
नैना ॥ दोऊ लगे लपटाय हियें पै निचौहें कि

ऐसकुचौंहैसैनैना॥४५॥दोहा॥जदपितेजरो
हालवलपलंकौलगीनवार॥तऊग्वैडो
घरकोभयोपैंडकोसहजार॥४८॥टीका॥यह
परदेसतैंआगमुआगतपतिकानाइका
नाइकाग्रौत्सुक्यसंचारी॥४८॥कवित्त॥कौंन
हूंकांजकोंग्रनपियापरदेससमौंवहतै
वितयोहै॥राधिकाकीसुधिकैकविहूम
तिहीछिनभौनकौंगौनुठयोहै॥जदपित
जतुरीनियरीघरतदपिकोसहजारभयौहै
ग्वैडेकोपैंडोनकाटयौकहैअभिलाषसमू
हहियेकंनमौहै॥४९॥अथकनिष्ठा॥दोहा
ऐसहीमिसआतपदुसहदईओरबहरा
इ॥चलतिललनमनभांवतिहितनकी
छांहछिपाइ॥५०॥टीका॥यहकनिष्टाकनि
ष्ठनाइकाकेभेदमैंसवैसषीकोवचनुस
षीसौं॥५०॥कवित्त॥कोऊसुजांनकेमा
पेंकछूरसरीतिकेभेदकहैनहिजांही
आतपुकोमिसुकैवहराइदईसंगओ
रतितीवनितांही॥छैलगहेंहीयहौलमहु
जमुनातटकेलनिकुंजजहांही॥राधि
काप्यारीकौलैचलीसंगकिपैअपनैंत्य
कीपरछांहीं॥५०॥दोहा॥छिरकेनाहनवीढ

ग्राकरिपिचकोजलजोर॥रोचनरंगला
लीभईवियतियलोचनकोंर॥प॰५॥टी॰॥य
हजेप्रिछाकनिछाकोभेडअन्यसंजोगदुष्य
ताकूंहोइसषीकोवचनसषीसौंलछिता
कूंहोइ॥प॰१॥कवित॥नंदलालाललनाग
नमैंजलकेलिरचीसरीतरलाइ॥कूमक
लेउछरैवकूभांतिदुरैभरिअंककरीतर
लाइ॥लोचनभांवतीकेछिरकेकरकीपि
चकीजलधारस्वलाई॥सोतिकेलोचनको
रनुमांफलहीभईरोचनरंगललाई॥प॰१
दानलीला॥दोहा॥लाजनाहीबेकाजकत
घेररहेघरजाहि॥गोरसचोहतफिरत
होगोरसचाहतनाहि॥प॰२॥टी॰॥यहदा
नलीलानाइकाकोवचननाइकसौं॥प॰२
कवित॥लाजकौंत्यागहोबिनुकाजमगुघे
रिरहेकाहेइतराइबैलहतग्रैनसेहोगो
रसुनचाहतहौगोरसकौचाहतहौभेली
भांतिजानतिहौकाहूतुमऐसेहौ॥छलु
प्रांनप्यारेव्रजविदिततिहारेगुनमाषन
केचोरिवेकोघरघरपेसेहो॥अवइंवि
ऐसेचलनचलावतहोसोहैलषिह
सतलसतमनुलेसेहो॥प॰२॥जाचिवनै

न॥ दोहा॥ पकुल्ला हार हियेलसैं सुनकी वे
नीभाल॥ राषति षेल षरी षरी षरे उरोजन
वाल॥ प॰ ३॥ टीका॥ यह जोति वर्नन्नु नाइ कको
वचन॥ प॰ ३॥ कवित॥ पातरो लंकु कमेरेष
रे कुच गोरी गरे गे ढिलु नाई जरी है॥ मेचूक
पो लित गरे वरु टेढ़ गओ ठन्नुपे अरु नाइ ध
री है॥ हार हिये पकुलोकोलसे विंदु लीस
नकी पषुरी की करी है॥ राषत षेत षरी व्र
ज नागरि जोवन जोति षरी निषरी है॥ प॰ २
॥ दोहा॥ टटकी धोई धोवती चटकीली मुष
जोति॥ लसति रसोई के वगर जगर मगर
दु ति होति॥ प॰ ४॥ टीका॥ यह जोति वर्नन सषी
नाइका के रूप की निकाई नाइक सोनि
वेदनु करति है॥ प॰ ४॥ कवित॥ वैठी आप
र सत्र जनागरि सरसवे षदे षि मन मोह
न की सुधि वुधि उगरी॥ हुलसि प्रान प्यारे के
उ होई री सुहाई वे सि तैसी दई विधि ने स
के लिसी मामगरी॥ दमके वदन जोति वि
दसव रन धोती पहिरे लसति सोती रूप
गुन आगरी॥ कैर सोई प्रकास उजोति जगर
मगर होति हि वगर रसोई के अपार आप व

गरी॥ ५०४॥ दोहा जदपि नांही नाही नही व
रनलगी जकजाति॥ तदपि मौह हांसी
ही हांसी येठह रातिं॥ ५०५॥ टीका यह जाति
वर्नन है॥ ५०५॥ कवित्त बैठी सिंगार सजैं ब्रज
नागरि आवांनकमोहन आयो तहांही पां
नि गह्यौ अवलोकि अकेली अलोकिक
केलि कला चित वाही॥ जदपि वा न वना
गरि के मुष लागी यहै जकमान न नांही
तदपि हांसी भरी भ्रकुटीनि मैं वीस विसे ठ
हराति है हांही॥ ५०५॥ दोहा दृग थरकौ
हैं अधषुले देह थकौहैं ढार सुरति सुषि
तसी देषियति दुषित गरभ के भार॥ ५०६
टीका यह नाइका जाति वर्नन गर्भ वती ना
इका की सोभा सषी नाइक सों कहे सषी
सषी सों कहे नाइक सषी सों कहे॥ ५०६॥ क
वित्त॥ बोलति वैं न हरैं ई हरैं रुम ई छवि
आंनन की पियुरी है आधे षुले अलसो
हैं सै। लोचन देह थकौहैं से ढार ढरी है
गर्भ कौ भारु धरै सुकुमारि जउ दुषित तौ न
वनारि वरी है॥ नीकी तऊ अति लागति है
मनो केलि कलोलकैं रंग भरी है॥ ५०६॥ दो
हा जो कर सौं चुटकी चलति जो चुटकी सो

नारि ॥ छवि सों गतिसी लीचलति चातुरका
तनहारि ॥ ५०७ ॥ टीका ॥ यह जातिवर्ननना इ
कौं वचन सषी सो कविकी उक्ति होइ ॥ ५०
कवित ॥ जैसो करनत्यौं ही चले चुटकी उधरै
भुजमूलवढी छविभारी ॥ चारु कला इकी
मोर निग्रीवकी होरन जीतेटरे नहिटारी
मोहन्वै तिरछै करिलोचन लेतिकि घो
गति रूप उज्यारी ॥ चातुरमानो मनोजमही
पकी चातुरका तनिहारनिहारी ॥ ५०७ ॥ दो
भुवतें घारि च्यौल षिरहबरह्यौ न गो मिस
सें सु फरके ओठ उठे पुलक गये उघरितु
रिसन ॥ ५०८ ॥ टीका यह जातिवर्नन परिहा
स सषा को वचन सषी सों ॥ ५०८ ॥ कवित ॥ पां
नपति आवत निरषिमगलोचानेहु क
लआंछिमीनो पोढि रही मिसु करिके वा
ढ्यो चौपचाइहहरे हरे ढिंगआय मुष नि
रच्यो त्यौघारि मृरिहितुहियें भरिकैं ॥ इहलं
श्रीनप्यारे केविलोकत मयंकमुषी सेंन
में रह्यौ मनुमिसुगयौ टरिकें ॥ गात पुल
कित भये अधरमुलकि आये नैननल
लकि मिले आपुही उघरिकें ॥ ५०८ ॥ दो
नहि अन्हाइ नहि जाइघर चित चहुट्यो

वि-स.
१२९

तकितीर ॥ परसि फुरकरी लेफिरति विह
सति धसत्तिन नीर ॥ ५० ॥ टीका यहजा ति
र्वनेन नाइका परकी याक्रिया विदग्धा स
खीको वचन सखीसों ॥ ५० ॥ कवि त ॥ को
वे कों जमुनागई बात ही वनितान की है
अति भारी ॥ त्यों ही अचानक छल है कंठ
डीटि पस्यो नरनागर नीरो ॥ चाइ तुम्भोवि
तु न्हाइ सके नुगयो न हि जानु कपानु सरी
रो ॥ अंगुलि नीरु भरे रग हि डारति नोक स
को रि कहै यह सीरो ॥ ५० ॥ दोहा ॥ मुखपखा
रिमुहरु भिजै सीस सजल कर छुवाइ ॥ मो
रउ चै घूंटेनि तें नारि सरोवर न्हाइ ॥ १९ ॥ टी०
यह जा विनेन कवि की उक्ति ॥ १० ॥ कवित
वे ठिकै तीर पखारि कैं आनन हाथ भिजैज
लके सनि छवैकैं ॥ हल कहै कर सों उमरा
इकें धाध सो सीस को वारु भिजैकैं

यो ब्रजबाल सरोवर न्हाति महा छवि सों
घुटुआं नितनेकें ॥ १० ॥ दोहा ॥ विहसति सकु
चति सी दियें कुच आंचर विच वांह ॥ भीजे
पट तट कों चली न्हाइ सरोवर मांह ॥ ११ ॥ टी

१२९

यह जाति वरनन कवि की उक्ति सषी नाइ
का की सोभा नाइक कौं दिषाइवे कौं कहै है
तौ हूं संभवै ॥११॥ कवित ॥ देवदिवाकर कौं
करि वंदनु हूलस कहै मनहीमनावति ॥ बां
ह दियेकुच अंचल बीच लजाय हियें हसि वै
ननबावति ॥ भीजि दुकूल रहे लपटाइ म
हाछवि कंचनसेतन छ्वावति यो ब्रजन
गरि रूप उजागरी न्हाइ सरोवर तीर कौं
आवति ॥११॥ दोहा ॥ मुह धोवति एंडी घंस
ति हसति अनगवति तीर ॥ धसति न इंदी
वरंनयनि कालिंदी के तीर ॥१२॥ टीका ॥ यह
जातिवर्नन नाइका की चेष्टा सषी सषी सौं
कहति है ॥१२॥ कवित ॥ न्हाइ वेकौं आई
अति रीझि मइराई हियें हुलस प्रान प्यारे
कौं सरूप दरसति है ॥ इंदीवर नैनी अन
गवति अनेक भांतियेव है कलिंदी के न
सलिल धसति है ॥ परसि उसारे कर कौ
रि सोभानिधि नासिका सकोरि मुहमो
रि विहसति है ॥ वदनु पषारति है वांके
ह्रग ढारति है गुलफ घसति अति रंगु
वरसति है ॥१३॥ दोहा ॥ ओट उचैं हीसीभ

तिवर्नन नाइकाकी सोभा सषीसषीसोंकह
तिहै ॥१५॥ कवित ॥ काहू कही अतिही हितुकै
तवराधिकाके जियमें यहआई ॥ ग्रीव बनाइ
दुराइ कपोल किये तनमें नकछु मुसकाई
वीरीव नाइलई करकेंजषवेकी मंजुमुज
उकसाई ॥ योहितुकी सरसाई विलोकि भई
मनमोहनकेमन भाई ॥१५॥ दोहा ॥ नां कमो
रिनाहीक कै नारि निहोरें लोइ ॥ छकु नवको
ठ विचआंगुरीनु विरीवदनषोदे ॥१६॥ टी
यहजातिवर्नन सषीको वचन सषीसों ॥६
कवित ॥ आजुकु कोविलास अलीमें दुरै
... कहतेनहिआवतु ॥ नंदलला अ
तिही हितुकें व्रषभांनकुमारिहिपानषव
वतु ॥ ओठनुसों विफअंगुली छै मुसिक्याइ
केनैनसों नैन मिलावतु ॥ नासिकामोरि मरो
रिकें मोंहकरैकिहि थिनाहिं सुत्यों सुषपावतु
१६ ॥ दोहा ॥ वतरस लालच लालकी मुरलीध
रीलुकाइ ॥ सोंहकरै भोंहनुहसें देनकहैनट
टिजाइ ॥१७॥ टीका ॥ यहनाइकापरकियाप्रो
ढाजातिवरनन सषीको वचन सषीसों ॥१७
कवित ॥ आजुअली व्रषभान ललीमनमोह

न सोरस षेल दरी है ॥ बातन के च सके मुर
ली मुरली हरि की दव का इधरी है ॥ ज्यों ज्यों
हे हाक रि मागे लला वह त्यों त्यों कछू इठला
ति षरी है ॥ दैन फहै मुकरै हसि मो हनु सों
कर रैरसु भाइ भरी है ॥ १७ ॥ दोहा ॥ गदराने तन
गोरटी ऐपन आड लिलार ॥ हूयो दे इठला
इ दृग करति गवारि सुमारि ॥ १८ ॥ टीका ॥ यह
जाति विनै नन नाइका की सोभा ना इक सषी
सों कहति है ॥ १९ ॥ कवित ॥ सो भाके भरत भ
री रूप के से सांचे ढरी विनु ही सिंगारु छवि क
ही न परति है ॥ ललित लुनाई सने गदराने
गात में सुरस तरु नाई आनि भरी ओ
है ॥ वर्तुल से वदन पे ऐपन की सोहै आ डु ते
सीये चिवुक गाड मन को हर ति है ॥ सहज सु
भाइ इठलाइ कैं गवारि गोरी हूयो दे चला
इ नैन घाइल करति है ॥ १९ ॥ दोहा ॥ नांक च
ढी सी वी करै जिते छवी ली छैल ॥ फिरि फिरि
भूलि वहै गहै प्यो क करी ली गैल ॥ २० ॥ टीका
यह जाति विनै न सषी को वचन सषी सों ॥ २१ ॥ क
वित ॥ सषि जात चले दोउ तीर षपै पघ उरा ह
ने पाइनु रंगु ढरे ॥ वह प्यारे की रीझि रिझाव

निप्यारी की मोपन कोहू वषानिपरै ॥ अति
बाजु क छैल छवीली तियाजित नोक सको मि
कै मीवी करैं ॥ कवित्त कहै कहरि चांइ पंसी
तितजांनि कैं प्रीतम पायेघटै ॥ दोहा ॥ जा
लरंध्र मृगा ग्रगनुकी कछु उजास सोपाइ
ठिदियै जग सों रह्यौ डीठि फरोषा लाइ ॥ २० ॥
यह जातिवर्नन सषी को वचन सषी सों ॥ २०
कवित ॥ बालकी देहकी दीपति भ...
ग्रटा छवि छाइ रही है ॥ जो लंदरा... चनु तें
कढि कें वढि कें वढि जोतिनु की समुदाइ रह्यो
है ॥ लालु भयो अवलोकि लहू ठगा मरिसी ष
... काइ रह्यो है पाठि दियें सिगरे जग सों
वह डीठि फरोषा लगाइ रह्यो है ॥ २१ ॥ जाति
र्वनन चार मिह्यचनी ॥ दोहा ॥ दौ अचोर मिहचि
नी षेलनु षेल अघाइ ॥ दुरत हियें लपटा
इ कें छुवत हियें लपटाइ ॥ २२ ॥ टीका यह
जातिवरनन सषी को वचन सषी सों ॥ २१ ॥ क
वित्त ॥ येइन हीपे वनें हित को गति ऐसी क
हूं अवलो न लही है ॥ दोऊ करें अति चाइसों
रे निसि द्यौस रहै उमहे चित ही है ॥ चोरमिह
चनी षेल हिये लतको न कछू मांति अघात

वि-स
१२२

नहीहै ॥ ज्यौं दुरैं तौउ रसों लपटाइ के जो छ
वितो लपटैउ रही है ॥ २१ ॥ दोहा ॥ दृग मिहचत
[illegible]गलोचनी भरेउ लटि भुज बाथ ॥ जानि ग
ई गुन नाथ पो हाथ परस ही हाथ ॥ २२ ॥ टीका ॥ य
ह जानि वरनन सषी को वचन सषी सों २२
कवित ॥ बैठी कुती व्रषभांन कुमारि अचांन
क आयो तहां गिरधारी ॥ प्यारी के लोचन मू
[illegible]यो न कही भुज लोटि भर्यो अकवारी
पीतम कै कर के परसें उमग्यो उर आनंद
बुद्धि बिचारी ॥ याही तें बाम न भांवन कौं प
हिचांनि हैं सी सु विचछन प्यारी ॥ २२ ॥ दो
पीतम दृग मिहचत प्रिया पांनि परस [illegible]ष
पाइ ॥ जांनि पिछांनि अजांन लौं नैक न हा
सि जनाइ ॥ २३ ॥ टीका ॥ यह जानि वर्नन सषी
को वचन सषी सों ॥ २३ ॥ कवित ॥ षेलत मै कहुं
पाछिली घात तें अचांनक ही चलि आयो बि
हारी ॥ मूंदि के प्रांन पियारी के नैन न रह्यो बु
[illegible]कै रस रीति सचारी ॥ जदपि वा मन मोह
न को सरू लागत ही उमग्यो सुष भारी तद
पि जानि कै आपनी जोंहि अजांन भई वृषभा
नदुलारी ॥ २३ ॥ दोहा ॥ दीठि परी सिषि दीठि कै

कहै जुग है सयानु॥ सदेसं देसै कहि कह्यो मुसिकाहंट मे मानु॥२४॥टीका॥ यह परकीया प्रोढा सषी कौ वचन सषी सों २४॥ कवित॥ ताही परौसिनि के दु षयासौ रुकौ मिलना॥ रसजीव मे दिनाई॥ सोई परोसिनि ही ठि ड्हाले लि ई ठि या हि मना वन आई॥ पीतम के जु ग से कु ते वे कहै सव ही करि कै चतुराई॥ एते पै मान कह्यो मुसिकाइ यहै कहि प्यारी पी के रु स्वाई॥२४॥ दोहा॥ चित तरसत मिलत न बनतु वसि परोस कैं वास॥ छाती फाटी जाति पुनि सुनि टाटओट उसास॥२५॥टी॥ यह परकीया अनुरागु नाइक कौ अपवान्नाइका को वचन सषी सों २५ कवित॥ नेन भिलि जव तै त वतें अति व्याकुल दोउ रहै हि नुराती॥ वासुं परोसि पै त्रासु त उ गुरु लोगनु कों मन सि सोच सकाती॥ जो तर मे मिलि तेनवै न अभिलाषनु की अवली सरसाती॥ टाटी की ओट उसास सुनै फटि दूक हजार कै होति है छाती॥२५॥ मद पान॥ दोहा॥ हा वैरा दे वो लति हस ति प्रोढ विलास अपेढ॥ त्यों त्यों चलत सुपिय न यन छक ये छ

कीनवोढ ॥२६॥ टीका यहमदपानसमयस
षीकोवचनसषीसों ॥२६॥ कवित ॥ आजुवा
रुनीकीवारुनीकी मे विलोकीवहसोभामे
रनैननुमैं अरुनाईवसतिहै ॥ज्योंज्योंवहही
रोदैदैवोलनिसरसवैननागरिनैवेली
हेरिहेरिकैहंसतिहै ॥ कहैकविदत्त उर
लागिवेकोंललकतिप्रौढाकेसेसकलाप
लासविलसतिहै ॥त्योंत्योंछकीतियनैन
छकायेंअरुसंपीकेनैनपलनुकीगति
भूलीदरसतिहै ॥२६॥ दोहा ॥ हंसिहसिहे
रतिनवलतियमदकेमदउमदाति व
लकिवलकिवोलतवचनललकिल
लकिलपटाति ॥२७॥ टीका ॥ यहमदपानके
समयसषीकोवचनसषीसों ॥२७॥ कवित
मोहनकेसंगमधुपानकेनवेलीवाल
करतितमासेकछुसोभासरसाति है ॥ दे
सिहसिहेरति वषेरतिउ कूलकचरुकि
रुकिपरातिनकारु जेसकातिहै ॥ वलकि
वलकिवोलतिमयंकमुषीललकि
ललकिलालउरलपटातिहै ॥२७॥ दोहा ॥
मिलिचंदनवेदीरहीगोरोमुहनलषाइ

ज्यौं ज्यौं मद लाली चढै त्यौं त्यौं उघरत जाइ
२७ ॥ टीका ॥ यह मदनपान समय नाइका की
सोभा नाइक कहै है अथवा सखी सौं कहै ॥ २८
कवित ॥ कछु आजु लषी मदपान समै लल
ना की प्रभा जियतें न टरै ॥ कवि हू सकै है बु
लकै ललकै मन मोहन को द्दग सिंध्रंक मे भै
इ ति चंदन की विजुली की रही मिलि गोरे लि
लार न जानि परै ॥ अरु नाइ चढै मद की मु
ष ज्यौं ही ज्यौं त्यौं ही त्यौं जोति घरी उघरी ॥ २८
दोहा ॥ निपट लजीली नवल तिय बहकि
वारुनी सेइ ॥ त्यौं त्यौं अति मीठी लगै ज्यौं ज्यौं
ढीठो देइ ॥ २९ ॥ टीका ॥ यह मदपान समै स
षी को वचन नाइक सौं ॥ २९ ॥ कवित ॥ ल
जभरी अति हीन व नागरि जाकी सुधाइ
सुधाइ कै गाई ॥ ता हि छकी छवि देषि वे
कौ पिय प्यारे मुराइ कै वारुनी प्याई ज्यौं
ज्यौं उमगौ है मद की तिय त्यौं त्यौं निसंक है
दे तिं दिषाई ॥ नीकी ओ ई लागति नीकी महा
वह मानो मरी व कु भाँति मिठाई ॥ २९ ॥ दोहा
वा मत मा सो करि रही विवस वारुनी सेइ
उकति हँसति हँसि हँसि उकति कि

किहंसिहंसिदेह॥२५॥टीका यह मद्पानसमयनाइकाकी सोभा सषीनाइकसों कहतिहै सषीसषीसूं सोकहे॥२५॥कवित वारुनी विसेइमनमोहनसुंमानुठानिआजुमनलोचनितमासेकीलसतिहै॥वारुतरुनाईमें निकाईछविछाईसोंत्योंगोरे मुषपरअरुनाईसरसतिहै॥कवहूंवदनपरघंघटकैठोकिलेतिकवहूंउघारिदेतिरंगवरसतिहै॥रुकतिहंसतिहंसिरुकतिरुकिहंसितिहंसिहसिरुकेरुकिरुकिकेहसतिहै॥२५॥दोहा रूपसुधाआसवछकेयोआसवपियतवनेन॥प्यालेओठप्रियावदनरंचोलगायेनेन॥२६॥टीका यहमदपानसमयनाइकाकीसोभाँ सषिनाइकसुंकहिरह्योसषीसषीसोंकहतिहै॥२६॥कवित वारुनीकोवनिआयोसमोंछकहतेनचनेकछुकोनिरुभारो॥प्यावतिरंगभरीमृगनेनिस्योंडतिकोभरिभोंनउज्यारो॥आसवरूपसुधाकोछकोमधुपीवेकीमूलिगयोसुधिप्यारो॥प्यालेसोंओठप्रियामुषनेनलगायरह्योछविकोमजवारो॥२६॥दो

षलि तवचनु अधष्तुलितदृग ललितस्वे
दकनजोति ॥ अरुनवदन छविमद छकी
षरी छवीली होति ॥ ३२ ॥ टीका ॥ अहमदपा
न संमयनाइकाकी सो भासषी सो कहति है
३२ ॥ कवित ॥ नैनकछुडघेरे से मुदे अरुवेन
नुमैं लिथलाई रसीली ॥ स्वेद के बुंद नि सो
ऊलके अरुनदुतिआनन पेसुस्की काली
ते सीथेरूप उजागरि नागरि सोहति सो म
सनीगरवीली ॥ बालजुगीतनजोवनजो
ति छके मद होति षरीयें छवीली ॥ ३२ ॥ वस
तु रितु ॥ दोहा ॥ छकि रसाल सौरभ समै मधु
पंमाधवी गंध ॥ ठौरठौर झौरत झंपत भौर
भौर मधुअंध ॥ ३३ ॥ टीका ॥ यह वसंत रित
समयजो मानवती नाइकांसी सषी कहै
तो मनाइ वौ हाइ जो नाइका नाइक सो क
हे तो स्वयं दूतहाइ ऐसे नाइक हू को क
हि वोसमवे ॥ ३३ ॥ कवित ॥ फूलनिके रसके
वसकें अवमाहियके सवबेलि जिती व
न ॥ माधुरीके मकरंद गंघ सनें अरविंद प
रामु सों पागि रहे तन ॥ मंजुरसालके सोर
नसों मिलि मतमये मधुरसौं न रही मन ते

वि॰स॰
१२५

रनिठोर निठौर निकू मिसु के मधु अरु मधु म
धुब्रत के गन ॥ ३३ ॥ दोहा ॥ कि रि घर कों नूत
न पथिक चले चकित चीत मा गि फूल्यो
देखि पलास वन समुही समुझि दवागि ॥ ३४
॥ टीका ॥ यह वसंत समय है नाइका कों वचन ना
इक सों है इतो प्रवत्स्यत पतिका सषी कों व
चन नाइका सों होइ ॥ ३४ ॥ कवित ॥ देषो रितु
राजु कों समाजु वन बागनि मैं प्रफुल्लित सु
मनर है है जो निज गि कें ॥ कुसम पलास के
अंगार जानि च हूं ओर चुचे नसो थिपतच
कोर अनुरागि कें ॥ आगे तें विलोकि फूले मे
न दर चित उलेन तन पथिक मन ले भर मद
बागि कें ॥ परी उर सैल पर देस की बिसारी
गेल लौटि चले घर कों चकित चित भागि कें
३४ ॥ दोहा ॥ वन बाट नु पक बट षराल षिषि
रे हिनु मन मैं न ॥ कुहो कुहो क हि क हि नि
वत करि क रि रातें नैन ॥ ३५ ॥ टीका ॥ यह व
संत समय सषी को वचन नाइका सों होइ
तो मनाइवो नाइक कों वचन सषी सों होइ
तो अपनी अवस्था ॥ ३५ ॥ कवित ॥ मैन स ही
पं कों मानि मतो रुम डारि चढे च हूं ओर रागि

हूं कत ॥ देषत ही बिरही जन को करि लोच
न लाल कुहो कुहो कूकत ॥ बीसबिसे बन
बाटनु मैं बट पार बसे पिक कम्भू तिलक तं ॥ प्रां
न पती चितनु क्यों बचिवो अब दाउ परै रिपु
कोट कं चूकत ॥२५॥ दोहा ॥ दिसि दिसि कु
सुमित देषियत उपवन बिपन समाज ॥ म
नो बियोगनि को कियो सर पंजर रितु रा
ज ॥२६॥ टीका ॥ यह बसंत समय है सषी कि
वचनु नाइका सौं होइ नाइक सौं होइ तौ प्र
बत्स्यत पतिका होइ ॥२६॥ कवित ॥ आयौ
है मदन छिति पाल कौ कटक भूपा इ आमि
ल प्रबलु ऐसौ अमल चलायौ है ॥ मान
गढ तोरिबे कौं अधिक प्रचंड देषौ सब ही कै
उर अनुराग ठमगायौ है ॥ बन उपबनाजि
तितित अवलोकियतु द्रिसि ॥ कुसम स
मूह छबि छायौ है ॥ बेरु बांधि बिषम बि
योगीनु के रोकिबे कौ मानौ रितुराज सर
पंजरु बनायो है ॥२७॥ दोहा ॥ हौं औरै सी कि
मई टरी आध कै नाम ॥ हूजै करि डारी षरी
बौरी बौरी आम ॥२७॥ टी॰ ॥ यह बसंत सम
य नाइका की अवस्था सषी नाइक सौं क

हतिहै सषी सषी हूं सौं कहै ॥ ३७ ॥ कवित ॥ मो
हन सौं विछुरी जब तै तब तै तन ल ही कलएक घ
री है ॥ नैन नि नीरु रु है रैनि नि सिवासुर व्याकुल
वाल अचेत परी है ॥ ऐसी दसा पहलै ई हुती
पुनि और भई सुनि ओधि टरी है ॥ तापर वी
रि रसाल ने देषौ वसंत के मो सरवोरी करी है
३७ ॥ ग्रीषम रितु ॥ दोहा ॥ कहलाने येकत व
सत अहि मयूर म्रग व्याघ ॥ जगत तपोवन
सौ कीयौ दीरघ दाध निदाघ ॥ ३८ ॥ टीका ॥ य
ह ग्रीषम समय नाइका कौ वचन नाइक
सौं होइ तौ प्रवत्स्य तपति का सषी कौ वचन
नाइका सौं नाइक हू सौं होइ ॥ ३९ ॥ कवित
होतौ वरहीन वरहीन है रैं अहि नु कै न्ग्र
हि करि पुंउ नुकै रंध्र निगहतै है ॥ करि करि
रितु के उदर के सून रहरि आइ सौ वन सो
वन की रतिनि वहति है ॥ हरि नु की छाति
तर वैठत हरि नग्राइ छे डिचित ठाइ नुवि
रोध विसरत है ॥ दे षि रितु ग्रीषम कौं तीषन
प्रताप हू दे कहलाने कहलाने येक तब सत है
३९ ॥ दोहा ॥ वैठि रही अति सघन वन पैठि स
दन तन माह ॥ देषि दुपरी जेठ की छांहो चा

हतिछांह ॥ ३९ ॥ टी ॥ यह ग्रीषम रितु नाइका
को वचन नाइक सौं स्वयं हुतप्रैसें ही नाइक
कौ वचन नाइका सौं जो नाइका की सषी ना
इक सौं कहै सो प्रदेश कौ निवारनु होइ ॥ ३९
कवित ॥ सलिल मुषात जलचर अकुलात
थल जीव जंत सकल उभ्रव रवि रिकें ॥ क
है कवि हुल्लास श्रौनि अँवर अनिल सवपाव
क ही होति कौन रहै धीरज धरिकैं ॥ ग्रीषम के
आतप कौ भीषम प्रताप तकि टिकि न सक
ति कहूं डोलौ डोलै डरिकैं ॥ सघन विपन तह
खाने कूप कुंजनि मैं छांहीं विरमति कहूं छां
ह लपट करिकैं ॥ ३९ ॥ दोहा ॥ नाहिं न ये पावक
प्रवल लुवें चलति चहुंपास ॥ मानक विरह
वसंत कैं ग्रीषम लेति उसास ॥ ४० ॥ टी ॥ यह
ग्रीषम समय नाइका प्रोषितपतिका नाइ
का को वचन सषी सौं ॥ ४० ॥ कवित ॥ चंडकर
मंडल तैं मंडि कैं अषंड धार वरषत पावक
प्रचंड किधौं हहरी ॥ हुल्लास प्रानप्यारे कौ दुहा
इ किधौं आई वडवानल की लुवैं तातैं तवीति
इ प हहरी ॥ चंदकर मंडल तैं पावक न वरषतु
लुवैं न चलति जिन्है देषि मति हहरी ॥ मेरे ज

न प्रीतम बसंतको वियोग भयै थी षमविरह ॥ ३ ॥ उमासेंलेत्ति गहरी ॥ ४० ॥ जलकेलिवर्नेन ॥ दोहा ॥ लेत्रुम की चलि जाति जित जित जलकेलि अधीर ॥ कीजत के सखि नीर सेंति तितिं तके मनि नीर ॥ ४१ ॥ टीका ॥ यह जलकेलि सषीको बचन सषीसों ॥ ४२ ॥ कवित ॥ मोहन सों जलकेलि रची व्रषभान सुता दित रंग मैं वोरी ॥ हंसक है कविता छविपैर तिकाम की वारों करो रिकज़ोरी ॥ चूनक ले गहरे ग लईं बलि के जित ही जित जाति किसोरी के सरि के जल के सरि के सरिनीर करें तिन ही तित गोरी ॥ ४३ ॥ वर्षारितु वर्नन ॥ दोहा ॥ पावस घन अंधियार महि रह्यो नेकु न भानु ॥ राति द्यौस जान्यौं परतु लषि चकई चकवानु ॥ ४४ ॥ टीका ॥ यह वर्षा समय स्वयं हृत नाइक को वचन नाइकासों प्रीति नाइकाको वचन सषीसों ॥ ४५ ॥ कवित ॥ ऐं वर ओनि दिसा विदिसा सगरेत पहीकौं वितान सौतान्यौं मेव करंग सबै जग मो अति मोदु हियैं निहिवार निमान्यौं ॥ पावसके घनके अंधियार सें नेद कछ्छ न परैं पहिचान्यौं ॥ द्योस निसाकौं वि

वैकुसुतोचकईचकवानि केवोलतिजोमे
४२ ॥ दोहा ॥ कु ढंगकोपतजिरंगरलीकरति
जुवतिजगजोइ ॥ पावसगूढनवातयहबू
ढनहूंरंगहोइ ॥ ४२ ॥ टीका ॥ यहवर्षासम
यसषीकोवचननाइकासोंमनाइवो ॥ ४२
कवित्त ॥ पावसआवतहीअगवुंजनिमोद
सोंकूकमचाइदईहै ॥ वाइस्वरवुकुभाइम
ीमिलिरंगरलीवनितानिवईहै ॥ कोपअ
सुकुढंगुनिवारिनिहारिघटाउनईजुनई
है ॥ मूढनहैयहवातगुसांईनिवूढहदेषिसु
भईहै ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ धुरवाहोहिनअलि
उठैधुवाधरनिचहूंकोद ॥ जारतआवत
जगतकोंपावसप्रथमपयोद ॥ ४४ ॥ टी ॥ य
हवर्षासमयनाइकाप्रोषितपतिकानाइ
काकोवचनसषीसों ॥ ४४ ॥ कवित्त ॥ मेरोकेवे
मानिप्रियमिहचैकेजानिआलीप्रथमही
पावसकेवलुउघरतहैं ॥ सीतलसमीरुमि
लोतैसोईसहाइकरुविरहीविचारेकहिकै
सेजरवतहै ॥ जगाहिजरावतपैआवतघुमं
डिघनताहीत्रासषगकुलसोरयेकरत
है चपलानिचपलझरयहज्वालनिकी

तेई धूम धारये न धुरवा पर तहे ॥ ४४ ॥ दोहा ॥ वे
ऊ चिरजीवी अमर निधर कै फिरी कहाइ ॥ छि
नु बिछुरै जिनकी नहि न पावसं आव सिराइ
४५ ॥ टीका ॥ यह वर्षा समय सषी को वचन नाइ
कसों नाइकासों नाइका को वचन सषी सों क
वि की उक्ति ॥ ४५ ॥ कवित ॥ घोर घटा घुमडी चकु
चोर करै वकु भांति नु सोर विरावै ॥ भू मिहरी
व हसीत समीर गहै गति मंद सुगंध सु भावै
ऐसे समै छिन एक विछोऊ भयै जिन को न इ
छ दिन आवै ॥ वे चिरजीवी भये जम नें अजरा
मर कैं नि निसंक कहावै ॥ ४५ ॥ सोरठा ॥ आवत ति
नाऊ उपाइ कौ आयो सावनु मासु ॥ बिलु न र
हिवौ बेमसौ के मऊ सम कीवासु ॥ ४६ ॥ टीका
यह वर्षा समय प्रोषितपतिका नाइका को
वचन सषी सों ॥ ४६ ॥ कवित ॥ जौ लौ मन रह्यो
हाथ तौ लौ न उमासी गाथ आगयो विरह दु
षु सूलनि कौ सहिवौ ॥ प्यारे नंद नंदन कूं का
व न अवधि आस तेसे तैसै होइ जाउ अब क
हा कहिवौ ॥ आयौ सषी सावनु न आयो म
न भावनु री अवत उपाइ निकौं छाडि न चा
व हिवौ ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ तियतर सोहिंमु निकिये

करिसरसोहैनेह ॥ धरपरसोहैकेर है रुख
रसोहैमेह ॥ ४७ ॥ टीका यह वर्षासमयहैकविकीउ
क्ति अरु स्वयं दूतनाइकाको वचननाइकसों
४७ ॥ कवित्त ॥ हरितपुहमिजलभरेवनउपव
नचहूं ओरसोरमकेउमगिउदैरहै ॥ महमही
लतालहलहीछबिछाइरहीकुंजकुंजषग
कुलकोलाहलमकेरहे ॥ उमडिघुमडिपरसर
सेपुहमिघनसोहैसरसोहैवरसोहैरुमकै
रहे ॥ हेरिहेरिमुनिमनतियतरसोहैहोतइत
घनवृंदअनुरागकेउनैरहे ॥ ४७ ॥ वनविहा
र ॥ दोहा ॥ चलितललितश्रमखेदकनकलि
तअरुनमुषलेन ॥ वनविहारथाकीतरुनि
घरेथकायेनैन ॥ ४८ ॥ टीका ॥ यहवनविहार
नाइकाकीसोभानाइककीआसक्तिसषी
सषीसौंकहतिहै ॥ ४८ ॥ कवित्त ॥ सुषमाक
लिततरुनोईकीगुराईमांझउमगिप्रकास
अरुनाईकेसुहायेहै तैसेईललितश्रमखे
दकनझलकजगमगिजोतिकेसमूहसरसा
येहै ॥ कहेककवि[illegible]दोषिरहेअनिमिषद्वैकै
नवेलनननैनोंहूपगिऐसेरिझछायेहै ॥ विप
नविहाररसछाकीव्रजवालवाकीधकित

वि-स:
१२९

प्रभांनेंपरेलोचनथकाहेहे॥४८॥हिंडोरावर्नन॥दोहा॥वरजैंह्नीहरचढैनासंकुचैनसकाइ॥टूटतिकटिदुमचीमचकंलचकिलचकिवचिजाइ॥४९॥टीका॥यहवर्षासमयहिंडोरेकीसोभासषीनाइकसोंकहतिहैसषीकोवचनसषीसों॥४९॥कवित॥भूलिवेकोचसकीलग्योहैइन्हसनिमेंछाडिसवओरउहीओरठहरीतिहै॥घरजियेज्योंज्योंतोत्योंत्योंनतिंनयेकहुकहुकेचढतिसकुचतिनसकातिहै॥गातकीनमुधिनसम्हारउरअंचलकीहारुविलुलितपिंडुरीमुषहसतिहै॥मचकैंडोरकेहिंडोरेकीमचकिकटिटूटतिसीलचकिलचकिवचिजातिहै४९॥सरदरितुवर्नन॥दोहा॥घनघेराछुटिगोहरषिचलीचहूंदिसिराह॥कियोसुचैनोआइजगुसरदसूरनरनाह॥५०॥टी॥यहसरदसमयराजनीतिप्रसंगकविकीउक्ति॥५०॥कवित॥घनघेराछुटिगयोहरषिचारोमितिटिगयोविसदप्रतापुजगमलोकविथाइकें॥कहैकविठाकुरहरषेनिरषिचलेपथिकचहूंघांभूरिभयविसराइकें

फूलेहियकमलअमलभयेजलपलघ
टेअपचलनतछाहतमगाइकैं॥सरदसु
मटनरनाहकीनिकाईनीतिदेषेसवजा
तुसुषेनीकीनीगाइकैं॥५०॥दोहा॥अरुन
सरोरुहकरचरनद्रगषंजनमुषचंद॥समै
आइसुंदरिसरदकाहिमकरतुअनंद॥५१
॥टीका॥ यहसरदसमयकविकाउक्तिहो
तु॥५१॥कवित्त॥सोहतअरुनसरसीरुहच
रनकरजिनहिंजगतप्रियसदनगनाव
ई॥कलापरिपूरनसुधानिधिवदनुलसे
जाकीअदभुतछविकहतनआवई॥दे
षियतषंजनतरलकजरारेनैनकहैंक
विकुलदेषेजीउसवुपावई॥समैसुषपुं
जसनीसुंदरिसरदआइकौनकेनउर
मैंअनंदसरसावई॥५१॥हेमंतरितु॥दोहा
कियोसबैजगकामवसजीतेजितेअजे
इ॥कुसमसरहिसरधनुषकरअगहनु
गहंमनुदेइ॥५२॥टीका॥यहहेमंतसमयका
[illegible]दीपनुअधिकहोतुहैसुनाइकुअपवा
नाइकानासषीसोंकहैहैसैहीसषीकोव
चनुसंगमवैकविकीउक्तिहोइ॥५२॥कवित्त

वि-स०
२

सिंगीसेमुनीसमसिद्धईससेसतकतसकेते
कोतेंविकलगनेयेकहोकाहिकाहिं॥ मानि
यतजाकोनोकुषंडमेंअषंडथाकुजीतेंमहि
मंडलकेअजीतीजितीकआहिं॥ कहोक
विह्वलसिनफूलहीकेआयुधसोंकैसेकै
सेवलीमेंदेसाहसुइतीकुचाहिं॥ जीतेजि
हितीन्योलोकऐसोवलीमनमथुआहु
नुनगहनदैतुंसरचापुताहिं॥ प ४॥ दोहा॥ जो
ज्योंवढतितिमोदरीत्योंसोवढतअनत
ओकओकसवलोकसुषकोकसोकहेम
त॥ प ३॥ टीका॥ यहहेमंतसमयककविकीउ
क्तिमुख्यहेसंयोगसिंगारमैवेनेविप्रलंभ
हूमेंकोककोप्रसंगअन्योक्तिहूजानिये
प३॥ कवित्त॥ हिमरितुआईलईसीतसर
साईदेषिभाजिगोईगरमउरोजअचलन
में॥ वासरकीलघुताविलोकिमुरझातको
लसूछमद्वैरह्योतेजुतपनकेतनमें॥ कहे
कविह्वलज्योंज्योंजरनीवढतित्योंत्योंउम
गतुमोकुअनुरागिनुकेमनमें॥ ओपचो
कलोकलोकवाढतअपारसुषसोकहै
वियोगीकेकिकोकनुकेगनमें॥ प३॥ दोहा॥

मिलिविरहतविछुरतमरतदंपतिअतिरस
लीन॥नूतनविधिहैमंतसबजगतेजुराफाकी
न॥५४॥टीकायहहेमंतसमयसषीकोवचन
नाइकासोंहोइतीमानवतीअरुकविकी
उक्तिहूहोइ॥५४॥कवित॥दोऊपंकेदेषिये
इकुंनवीचएकैप्रानहितकोउमगनईन
ईयेमहताहै॥अतिरसलीनदोऊमिलेहीवि
हारकरैकहैकविव्हांचेतअतिउमहतहै
विछुरैंनिमिषहूतौजीवेकौभरोसोनाहिंअ
तिअकुलाइमैनविपानसहतहै॥औरये
कदेषोहिमरितुकीनवलरीतिजगतमैंसब
हीजुराफाकैरहतहै॥५४॥सिसिररितु॥दोहा
आवतुजातनजांनियतुतेजहितजियसिय
रान॥घरहिजमाईलौंघट्योषरौफूलदिन
मान॥५५॥टीका॥यहसिसिरसमयदोउन
कहितकीअधिकाईहैसुरात्रिहीआछील
गतिहैसुसबदिनकीलघुताकहतिहैविर
हीहूतादिनकीनिंदाकरैं॥५५॥कवित॥बाव
[illegible]काइराकेविभावरीछतिजोंहीतोहीतो
।वियोगिनकोहियोअकुलातुहै॥दंपतिउ
मगिअनुरागउझिलतउरयेककैरहतभि

लि ह कनु कोगातु है ॥ इसकौं दिवसु लघु
मानमयौ ऋौसैं जैसें ससुर के घर मैं जमांई
सकुचातु है ॥ तिजको न लेसु रह्यो सीतल
सुभावगह्यो जान न तुनकोऊ कवे ऋायौ
ऋवजातु है ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ रहि न सके सिसव
जगत मैं सासिर सीत के त्रास ॥ गरम भा
जि गढवे भई तिय कुच ऋचल मवास ॥ ५६
टीका ॥ यह ससिरी रितु को समय कवि की उ
क्ति होइ ॥ ५६ ॥ कवित ॥ ससिर मैं ऋायौ जुरि
सीत कौ प्रवलु जा के त्रास सव ही कंपत थ
हराइ कैं ॥ ताहि लखि हर महर मतें निक
सत जो सरभगर मचली हिये हहराइ कैं
ऋंवर ऋव निपौंन पानी तजि तलितकी
टिकनि तहां ऊसकी भगी न हराइ कैं ॥ कु
चे ऊं चे ऋचल उरोज नव नागरी कि कर
मवास जाइ रही ठहराइ कैं ॥ ५६ ॥ दोहा ॥
तपन तेज तपताप ति ऋतुल तुलाई
माह ॥ ससिर सीतु क्यों ना घटै विनु लंप
टैं तिय नाह ॥ ५७ ॥ टीका ॥ यह ससिर रितु को
इक को वचन नाइका सौं सखी कहै सो है
इ कवि की उक्ति हू होइ ॥ ५७ ॥ कवित मोल

विसालकी ओंढितुसाला दिनेसकोतेज इ
तेपरहोऊ॥ राषकुछाइनिहालिनुमेतनु
पावकपुंज अगीठसजोऊ॥ माहकोसीत
विहातनकेसेहू कोरिउपाय करो किनि
कोऊ॥ जोलगिपाव पियासचुपाइ रहेलि
पटाइने एक केदोऊ॥ ५७॥ दोहा॥ लगाति
सुभग सीतलकिरनिनिसिसुषदिनअव
गाहि॥ माहससीभ्रमसूरत्यों रहतिचकोरि
चाहि॥ ५८॥ टीका यहससिरसीतुकविकीउ
क्ति सुष्यहे॥ ५५॥ कबित॥ ससिरमेंसीतनेक
रोहेओरेंरोलिआइ घांमरूमेंचांदिनीकेचे
नउमहतहे॥ संपटसरोजगहेकुमुदवि
कासचहे मिलिनसकतकोकविरहदहु
तहे॥ सीरीसीरीसुमगवाकिरनिलमात
रातरातिकेविलाससबघोसहीलहति
हे॥ ससिकेउदेकोसुषमानिसविताकीओ
रचोपसोंचकोरचितवतहीरहतहे॥ ५८
फागुनबर्नन॥ दोहा॥ दियेवपियलषि
नयनुमेबेलतुफागुनवालु॥ वाढतुहुअ
तिपीरहुनिकाढतवनतुगुलालु॥ ५९॥ टी
यहहोरीमेललकोसमयनाइकाकोअनु

रागकी अधिकाई सषीसषीसों कहतिहै

प ५ ॥ कवित ॥ हरिषेलतफागुवधूगनम

ध्यसषासवकेसरिरंगसनैं ॥ इतचाइम

रीव्रषभानसुताउमग्योहरिकेतैंउतमो

उमनैं ॥ जवनैनमुमैंतकिउाह्यौ लालाग्र

पनेकरसौं वहराइधनैं ॥ आतिवांछतिहै

जऊपारतऊंवहकाढतपैंनगुलालैवे

नैपरी ॥ दोहा पीठिदियेंनैकमुरिकरघू

घटपटटारि ॥ नविगुलाल [illegible] मूठिसौंगई

मूठिसीमारि ॥ ६० ॥ टीका यहहोरीषेलकौ

समयनाइकाकीसोभानाइकसौं सषीसौ

कहतिहै ॥ ६० ॥ कवित ॥ मोपेकछू कहते

नवनैंकरिजेसीहंसीव्रजनारिगईहै ॥

पीठिदियेहीसुरामनुलेवहफागुनषेल

विलारिगईहै ॥ घुंघटकोपटदूटारिकैंमो

हउसारिकैनैकनिहारिगईहै ॥ योम

रिमूविगुलालसौप्यारीअचांनकेमूठी

सीमारिगईहै ॥ ६० ॥ दोहा ज्योंज्यौंपटझ

टकतिहसतिहठतिनचावतिनैन ॥ सौं

त्योंनिपटउदाररूफगुवोदेतवनैन

६१ ॥ टीका यहनाइकाप्रोढाहोरीषेलकौ

समाजुनाइकु ॥ सोभादेषिवेकौलोमनभा
स्योहैसुसषीसषीसोंकहतिहै ॥ दू० १ ॥ कवित
फागुनकेषेलकोसमाजुवनिआयोजेसो
एकरसनासौंकहतवनेनहै ॥ सांकरीग
लीमैंनंदलालकोपकरिवालमनभा
यैकरमंवठावेचितचैनहै ॥ ज्योंज्योंनेह
वारेअरीलोचननवाइपटुऊटकिकह
तिहंसिहंसिमदुवैनहै ॥ त्योंत्योंचितलाल
नकौंनिपट[illegible]रतऊफगुवाकोंदेवेदे
वोक्योंहूंमाननमनेनहै ॥ दू० १ ॥ दोहा ॥ छु
टतमुठिनुसंगहीछुटैलोककुलाजकुल
वाल ॥ लगतदुहूनइकवेरहीचलिवि
तुनेनगुलाल ॥ दू० २ ॥ टीका ॥ यहहोरीषेल
कोसमयसषीसषीसोंकहतिहै ॥ दू० २ ॥ क
वित ॥ होरीकोसमाजवरसानेकेवगर
आजुकहांकहौंआलीवंनिआयोनकी
ख्यालरी ॥ इतजुवतीगनमैंराधिकाकिसो
रीउतंसहितसषानिवमोंमदनगुपाल
री ॥ छूटतमुठीकेसंगछूटतहैकेवेरगुर
जनलोककुलाजलाजकुलचालरी ॥ कहै
कविलसतत्योंहीलागतदुहूकतनयेकै

वि·प्र·
१२२

साष वाउ चितु लोचन गुलाल री॥ ६१॥
दोहा॥ ज्यों ज्यों रुकि रूप पति वदनु विहसति
अति सतराइ॥ त्यों त्यों गुलाल मुठी रुठी रु
रुकावत प्यो जाइ॥ ६२॥ टीका॥ यह होरी षे
लनाइका की चेष्टा देषि नाइका री ज्यो हे
सुनाइका उकति करतु है सु सषी सषी सों
कहति है॥ ६२॥ कवित॥ आजु ब्रज देष्यो
होरी षेल को समाजु वह सोभा मेरे नैननु
में रही है विहरि कैं॥ राधा व[illegible]माली को वि
लासु लषि आली सची मघवा को रिक
रूमान जात गरि कैं॥ ज्यों ज्यों प्यारी रुकि
रूप पति वदनु विहसति सतराति रिस को
रूप करि कैं॥ त्यों त्यों देषि क्यो छैल
प्रान प्यारे लाल रुकि रुकावत गुलाल
मुठी भरि भरि कैं॥ ६३॥ दोहा॥ रस भि
जये दोउ दुहुन तौ टिकं रहे टरें न॥ छ
वि सों छिरकत प्रेम रंग भरि पिचकारी
नैन॥ ६४॥ टीका॥ यह दोऊ न को परस्पराव
लोकनु है सषी सषी सों होरी के ष्याल को
समता दै करि कहति है॥ ६४॥ कवित॥ आ
जु ब्रषभान की कुवरि मनमोहन सों नैन

नमे राख्यो होरी को सोरख्यालु करिकैं ॥ भो हि
तं चाह कोऊ चूकत न दाऽ टिकि रहे ट कुला
ऽ कोऊ जातु न टरिकैं ॥ मिजयेव नाऽ अति
रस मैं परस्पर पागे अनुराग के गुलाल रंग ग
रिकैं ॥ कृष्ण कहे छिरकत छवि सों छवीले दे
उ नैंन पिचकाई प्रेम रंग भरि भरिकैं ॥ ९४ ॥ दो
गोरे कैं पकछु कछु रहे करूं पसी जियलप
टाइ ॥ लियो गुलाल मुठी भरी छुटत न मुठी
के जाइ ॥ ९५ ॥ टीका यह होरी खेल को समय
सषी सखी सों कहति है दोऊनि के सात्विक भा
उ कहुं है ॥ ९५ ॥ कवित ॥ मेरो कहो मानि री छुतै
ले चलि दै बिनै कन्या जु ब्रजधांम होरी खेल
की अनूठी है ॥ केसरि मैं सनें रसिक रसीले
जहां वर षाल हांई सब सुषुनु की बूठी है ॥ जहं
पिपरस्पर दोऊ मुष माड़िवे कों लेति अति
चाइ सों गुलाल मं भिमूठी है ॥ कछू कर पंक
जप सानें लपटात कछु कोपे गिरिजात तता
ते षो लैं होति रूठी है ॥ ९५ ॥ वायु वर्नन दोहा
रही रुकैं क्यों हूं सु चलि आधिक राति पधारि
हरित धाप सब धोस को लागि लगि तरहि
वृयारि ॥ ९६ ॥ टीका यह वायु वर्नन कवि को उ

ति॥ ६६ कवित॥ ऐसी रही है कि क्यों हूं आ
वन पाइजा के बिनु मिलैं प्रानन्नु की गति
कुं लगती है॥ लोचन चकित जाको आगमु वि
लोकिवे कौं च हूं ओर चितवति छाती हो ति
ताती है॥ क्यों हूं क्यों हूं चलि कैं अवांन कही
आधी राति आइ गई व्यार जैसैं वयाल्हि ऐ
इ जाती है॥ हरति विपति सब घोसं की हिये
सों लागि कहै लाल सुंघसि दूसर साती है॥
६५॥ दोहा॥ चुवत स्वेद मकरंद कन तरु तरु
तर विरमाइ॥ आवत दछिन तें चल्यो प
थिक बटोही वाइ॥ ६७॥ टीका॥ यह पवन वरनन
के कवि की उक्ति॥ ६७॥ कवित॥ निझरत जात
जल जे तरनि के विमल सलिल पर सतु ऐ
सी हारसों टरै हैं॥ लाल कहै जहां तहां सी
री छांह देखि विरह तुत रुत रुके तरैं तरैं॥ सुम
न पराग जपागि रह्यो अंग अंग स्वेद कन
बुंद मकरंद के धरैं धरैं॥ सुरभि समूह छा
क्यो दछिन दिसा तें वायु पाक्यो सो बटोंच
ल्यो आवनु हरे हरैं॥ ६७॥ दोहा॥ विकसित नव
मल्ली कुसम निकसित परिमल पाइ॥ पर
सि पजारत विरह हिय वरसि रहे की वाइ

६२॥ टीका॥ यह पवन नवर्नन न बिरहके प्रसंगमें
नाइका अथवा नाइक कौ॥ सौ कहै मानके
प्रसंगमें सषी नाइकासौं कहै॥ ६३॥ कवित्त॥
मंजु लता वेल्लिनुके सघन निकुंजनि तिवि
हरे हरे निकसति सबहि सुहाती है॥ सुमन
के दूवनके सुषद पराग सनी जाहि मिलि भौं
रनु की पांति कुलसाती है॥ मुकलित माल्लि
काके कुसमनु बीमनुतें निकसि तनु रभिम
हित सरसाती है॥ बरसि रहे की सीरी आंवति
वियारि देषो परासि पजारति वियोगिनु की
छाती है॥ ६४॥ दोहा॥ रुकौ सांकरे कुंजमग कु
रत झुकि झुकि रातु॥ मंद मंद मारुत तुरंग
षूंदितु आवतु जातु॥ ६५॥ टीका॥ यह वायु वर
नन कविकी उक्ति॥ ६६॥ कवित्त॥ सोहत सिंगा
र वरु भौं विनु जराउ साजि रंग रंग कुसमत
रल अति गुहें॥ करि कोल ललित भ्रमरा
वली लसति मधु पुहप परागरे कौ उमगि
औभगुहि॥ रुकतु सांकरीनि कुंजमगनि
रचतु झुकि झुकि सीकर तु रुकरात भसौरंगु है
[illegible] सीकर तु मंद मंद मलयाचलतें आव
तु पवन कामदेव को कुरंगु है॥ ६७॥ दोहा॥

वि॰स॰
१३५

पलटी फूहपपरागपटसनी स्वेदमकरंद॥
आवति नारि नवोढ लौं सुषद वायु गति मं
द॥७०॥टीका॥ यह पवन वर्ननु कवि की उक्ति
नाइका नवोढा करि कैं वरनी॥७०॥कवित॥ फू
लन की रज अंबर मैं नष तें सिषलौं लपटी छ
बि छावति॥ स्वेद लसैं मकरंद फुही लगि नै
ननु सो छतियाहि सिरावति॥ हंस कहै वकु
भांतिनु के तन सौंभ वौरह दिसामहकावति
मंद गहै गति नारि नवोढा लौं [illegible] सिमिकुंज
लगी तन आवति॥७०॥दोहा॥ रनित भ्रंग घं
टावली झरत दान मधु नीर॥ मंद मंद आ
वत चल्यौं कुंजर कुंज समीर॥७१॥टीका॥ यह
वायु वर्नन कवी की उक्ति॥७१॥कवित॥ घंटनि
के सवद अषंड तें ई सुनियतु गुंजतु अनंद म
सौ अलिनु के वृंद है॥ सुमन सम्हनु की
धूरि सौं धुरे हैं गात मद जल उमगि झरतु म
करंद है॥ रंग रंग फूलतिनि की झूलनि में झूपा
यै तन जगत विदित याकी विक्रम अमंद है
मानत कृतारि वे कौं आवत गुमान भरयौ म
द गति पवन मनोज कौ गयंद है॥७२॥ वै टो
दय॥दोहा॥ द्वैज सुधा दीजतु कलावेह

१३५

लषिडी ठिलगाइ ॥ मनो अकास अगस्ति याए
कौं लषाइ ॥ ७२ ॥ टीका यह वचन दीय सषी
को वचन नाइका सों अगस्ति या दित रूतं सके
तस्या लसचनु द्वंजतं मिलिवेकी अवधि सच
नु साधारनु तिकविकी उक्ति ॥ ७२ ॥ कवित्त दीष
उमहतिथाके मयंक केमा कलान मजो
तिज... ॥ सो छवि याहि चकोरसुकी अवली
कुलसी हियमोद पगी है ॥ यौ निरषी अरुना
ई लिये उपमा कविके उरमें उमगी है ॥ मानु
वो मनु अगस्ति के रूसही एककला पहिले ही
लगी है ॥ ७४ ॥ दोहा घनियह द्वैज जहां लषी
तज्यो दृगनु दुषदंदु ॥ तो भागनि पूरव उयें
अहे अपूरव चंदु ॥ ७३ ॥ टीका यह वचन दीय
सषी को वचन नाइक सों अथो जनु नाइका
दिषाइवो अन्योक्ति रूप ही प्रसंग में संभवै
७३ ॥ कवित्त सकलकलानिप रिपूरनपियू
ष निधि सोहै अकलंक सब सुषनि को कं
दु है ॥ जाहि देषिवारिजवदन कोरतिय न
के सकुचि उर तिमैसी प्रभा को अमंदु है ॥ ध
नि यह द्वैज जहां नीके के निरषि पायो देष
त ही दृगनि कों गयो दुषदंदु है ॥ पूरव की

रवनुव ष्टव मुकुत फलुनि सषि अपर वउदित
भयो चंद्रहि ॥७३॥ श्री ठाकुर को ध्यान ॥ दोहा ॥ सी
स मुकट कटि काछनी कर मुरली उर माल
इहि बानिक मो मन सदा बसो बिहारी लाल
७४ ॥ कबित ॥ छबि सौं फबी सीस किरीट बन्यो
बिसाल हिये बनमाल लसै ॥ उर कंज हि
मंजु रली मुरली कछनी कटि चारु प्रभा बर
सैं ॥ कवि दूलह के हे लषि सुंदर मूरति यो अ
भिलाष हियें बरसैं ॥ वह नंद किसोर बिहारी
सदा इहि बानिक मो हिय मांझ बसै ७४ ॥ दो
मोर मुकट की चंद्रकनु यो राजत नंदनंद
मनु ससि सेषर को अकस किये सेषर सतचं
द ॥७५॥ टीका यह श्री कृष्ण के मुकट की सो
भा सषी को बचन नाइका सौं भक्त को बच
न है संभूवे ॥७५॥ कबित ॥ मंजुल मो ब्रज
राजकुमार सुदेस सिंगार बने संग रे है ॥ रू
प की रीझि कहा न परे अवलोक बिलोच
न मोद भरे हैं ॥ दूलह के सिर सोहत मोर
किरीट चंदा छबि पुंज भरे हैं ॥ मनों अकस
स ससि सेषर सो हरि सेषर चंद अनेक भरे
हैं ॥७५॥ दोहा ॥ अधर धरत हरि के परत ओ

ढडीठिपटजोरि॥ हरितवांसुकीवांसुरीछुद्र
धनुसुरंगहोति॥७६॥ टीका॥ यहश्रीकृष्णकीमु
रलीवजावतजुसोभाहोतिहैसुलषीनाइका
सषीसौंकहैहैकविकीउक्तिहोइ॥७६॥ कवित
वलिरेषिरीवांनिकसीवनिकैव्रजराजकी
लडिलीआवतुहै॥ मुषचंदकीचारुमरीचि
नुसौंलिनैनचकोरसिरावतुहै॥ जवडीठि
कोअोठनुकोपटकोमुभिकानिकोरंगुभि
लावतुहै॥ तववांसुरीवांसुहरेकीलसासु
रचापकेरंगदिषावतुहै॥७६॥ दोहा॥ मकराकृ
तगोपालकैसोहतकुंडलकांन॥ मनोधस्यो
हियधरसमरड्योढीलसतिनिसांन॥७७॥
टी०॥ यहश्रीकृस्नकोध्यानुहैअरुताकुंमाइ
आईहृदयमैंकंदर्पप्रवसभयोयहप्रयोज
नु॥७७॥ कवित॥ मैनिरख्योव्रजराजलाडुति
पुंजहियैहितमांजिरहेहै॥ कुसुकैहैहगदीरघ
देषिप्रभातकेपंकजलाजिरहेहैं॥ मंजुलकांन
मैकुमकराकृतकुंडलज्योंछविछाजिरहेहै
मनोमनोजधस्योहियमंदिरद्वारनिसांनवि
राजिरहेहैं॥७८॥ दोहा॥ सोहतओढेंपीतपटस्या
मसलोनैगात॥ मनोनीलमनिसेलपरआ

त पुप सो प्रभात ॥७७॥ टीका ॥ यह पीतांबर की
सोभा नाइका कौ वचन सषी सौं सषी कौ वच
न नाइका सौं भक्त कौ वच ॥७८॥ कवित ॥ वनि
जा छवि सौं हरि नें तनु मैं अरु प्रांन तनु मैं अ
वरो हैं तु है ॥ समता कें हेत ता छवि कौ कहियें
[illegible]तियो ति हूं लोक मैं को हतु है ॥ सषि सुंदर
स्याम के लेवर पेप टु पीत लसै मन मैं [illegible] तु है
मनि नील कसैल के ऊपर मानौ प्रभात कौ अ
ततु सोहतु है ॥७७॥ भक्त कौ वचन उपालंभ
दोहा ॥ कब कौ टेरत दीन रट होत न स्याम
सहाइ ॥ तुम हूं लागी जगत गुरु जगनाइक
ज[illegible]वाइ ॥७८॥ टीका ॥ यह भक्त कौ वचन भ
गवांन सौं ॥७९॥ कवित ॥ हौ कब कौ रट लाइ
रह्यौ गहि दीन सु[illegible]ाइ मनो वच काय कै ॥ नं
द के नं[illegible] के हा वत हौ हरि का है तें हौ तन क्यो
नि सहाइ कै ॥ एतौ विलंब कह्यो कहूं नां भय
हूं लक है प्रभु हौ सब लाइक ॥ नां विपरीत
मैं हूं कौ कक चू अव मारि लगा जगनाइक
गनाइक ॥७९॥

नैकी दई अनाकनी फीकी परी गुहारि ॥
ज्यों तुम तारन बिरद बारक बारनतारि ॥ ८० ॥
॥ टी० ॥ यह भक्त कौ वचन भगवान सौं ॥ ८० ॥ कबित ॥ सेवक संकट निवारिवे कौं सावधान कहत निहारौ। वेद बिरद पुकारि कैं ॥ कहैं कबि कहा ऐसौ दीपी परतीति साषि दीननु कै दीनें हैं अनेक दुष टारि कैं ॥ आंनाकंनी नीकी करी मेरी बेर कौं ढीकरी लागे न गुहार रहे निठुराई धारि कैं ॥ जानियतु तारिवे कौं पै प्रभु अब आलसी हौ तुम जैसे जू जीते एक बेर बारन निस्तारि कैं ॥ ८१ ॥ दोहा ॥ बंधु भये का दीन के को तार्यौ रघुराइ ॥ तूठे तूठे फिरत हो झूठे बिरद कहाइ ॥ ८२ ॥ टीका ॥ यह भक्त कौ वचन भगवान सौं ॥ ८३ ॥ कबित ॥ कौन से दीन पै कीनी दया अपराधी कहौ तुम कौन उधार्यौ ॥ कौन अनाथ के बंधु भये प्रभु कौ बि

विनुदास भयो तुम ताहीं ॥ अब ऐसे ईके से प्रतीति करो कृविहत्सक है हैं पुकारिके हारयो ॥ तुठई तृठेनि सों काफिरो प्रभु भूतो धाकु अनाहक पायो ॥ ८२ ॥ दोहा ॥ घोर रहीगुनरी भितै विसराई वह वानि ॥ तुम रूकान्ह सुनो भए आजु कालिके कानि ॥ ८३ ॥ टीका ॥ यह भक्त को वचन भगवान सों ॥ ८ ॥ कवित ॥ कृपा अति आतुर में विनती कु भांति करी करुना रस भीनी ॥ हस्तहु पानिधि दीनु के बंधु सुनी अस सुनी तुम काहे ते कीनी ॥ रीझत रंचक हीगुन ते वह वानि विसारि मनो तुम दीनी ॥ जानि परी तुम रूं अब कलिकाल के खात नि की गति लीनी ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ मो हितु मेरी विरह सको जीतै जडराज ॥ अपने अपने विरद की तुमनि [illegible] हन लाज ॥ ८४ ॥ टीका ॥ यह भक्त को वचन भगवान सों ॥ ८ ॥ कवित ॥ तुम जेते तारे ते ते भांति न पतित भारे मो सो तरे पापी को जु दुसरो न पेषिये ॥ तुम्हे बाँधि रही प्रभु अधम उधारि वेकी मेरे येक पाप ही टेक अवरे षिये ॥ दुहू न को काज अपने अपने विरद की है रीपे जपालि के निर्वाह नी विसेषिये ॥ कहे कवि हम मो सों तुम सों वह सवादी को नुल दि आइ अव जीत कौन देषिये ॥ ८४ ॥ दोहा ॥ ज्यों के हो ओहि

गो होइ हरि औन नी चाल ॥ हउं न करो अति कठिन हे मोता रिवो गुपाल ॥ ८५ ॥ टीका यह भक्त को वचन अपनो पाप करि बेको प्रभु भगवान् कौ उधारिबे को पनु उपालंभ सों प्रगट करतु है ॥ ८५ ॥ कवित ॥ हौं उन की गनती में नहीं प्रभु जो तुम तारे ते आपन मोंही ॥ कहा कहि है गुन तेन ते कछु पापिनु की परमा न थिहौंगी हानी है जो कछु कहे है वहे गति मेरीये चाल कुचाल निसों हीं ॥ पेलनु है प्रभु मेरो उधारिवो है लिन की जे वृथा हठ यों ही ॥ ८५ ॥ दोहा ॥ कोन भांति रहि है बिरद अब देषिवी मुरारि ॥ बीधे मो सों आनि कें गीधे गीध हि तारि ॥ ८६ ॥ टीका यह भक्त को वचन भगवान सों यह दीनउ पार न बिरद है सुनिश्चय जानि कहतु है ॥ ८६ ॥ कवित ॥ पतित उधारन के है तसव को उसों साच हू अचव वहराइ गो वना इ कें ॥ कहे कबिर बजिनि और के भार में भूलो होतो हौं गरु व पापी मन वच काइ कें ॥ तारयो है पषेरु एक गीध ताते गीधे तुम साई जसु राष्यो है जगाइ कें ॥ कोन भांति राषिहो बिरदु प्रभु देषिये जु कठिन वनी है अब बीधे मो सों आइ कें ॥ ८६ ॥ दोहा ॥ मो हू दीजे मोष ज्यों अनेक पतितनु दियो ॥ जो बांध्यो ही तो षुसीतो बांधो अपने गुननि

वि॰ स॰
१३९

सो ॥ ८७ ॥ टीका यह भक्त को वचन भगवान सो कि मुक्ति करी तो बांधि राख्यो तो अपनो करि रा खो ॥ ८७ ॥ कवित्त ॥ भांति भांति आरत की आरति निवारत प्रगट पुकारत निगम गन भाषिये ताते कै विहाल दीन बंधु दयासिंधु जू सों बार बार विनती पुकारियतु है भाषिये ॥ अधम भक्त नि को जो हाट दीनो मो पतुम त्योंही मोहू मो परि वो चित अभिलाषिये ॥ बांधि वोई जो प्रेम नमा सो महाराज तो जू आप नेही गुमनु वना इ बांधि राखिये ॥ ८७ ॥ दोहा ॥ निज करनी सकुच हि कत सकुचावत इहि चाल ॥ मो हूं से नित विमुषन्यों सनमुष रहि गोपाल ॥ ८८ ॥ टीका ॥ य ह भक्त को वचन अपनी विमुषता भगवान को भक्तनि सों सनमुष रहिने आप नु सुप्रगट करतु है ॥ ८८ ॥ कवित्त ॥ जानि परें नीति हारी प्र भु गति वेद हूं नी केकें भेद न पावत ॥ ए सोप्यिरे व्रज ग्वालनि के मुनि पावे न ध्यान सनमाधि ल गावत ॥ ए कु तो है अपनी करतूति नु ही सकु च्यो व कत्यो सकुचावत ॥ हे तुम सों नित ही वि मुष तुम दीनदयाल सनमुष आवत ॥ ८९ ॥ द्रोपदी को समो ॥ दोहा ॥ नाह गरजि नाह र गरजि बोल सुनायो टेरि ॥ फसी फौज मैं वंद

विवहसीसवनुतनुहेरि॥८६॥टीका यहद्रोप
दीकोसमय कविकीउक्तिसाधारनतेयामा
नप्रसंगमे वंदिमेंहे येअपनेपतिकेविक्रम
कोभरोसोजानिहसीहे॥८८॥कवित॥आयुध
अघटसाजेभटनुकोभारभाख्योचाख्योंओ
कविकरलियेंईजातघेरिकें॥नाहरकोगर
जगल रसोंगरजिपतिताहीसमेंपाछेलेंसुन
योवोलटेरिकें॥वाकेप्रतिविक्रमकोभा
वजियजान्योंयहजीतेगोंसमरएकएक
कोनिवेरिकें॥प्रवलचमूकेवीचवंदिमेंफ
सीहेतऊउमगिउछाहहसीसवनतनहे
रिकें॥८९॥अप्रस्तुतप्रसंसा॥दोहा॥नहिपाव
सरितुराजयहतजितरवरमतिमूल॥अ
पतभयेचितुपाइहेकोनवलफलफूल॥
९०॥टीका यहअन्योक्तिकोरूदालाकेधोपं
समयेककवकोऊचाहेनहांकहियेरूगरेके
प्रसगजगतकेप्रसंगरूमेंसंभवे॥९०॥कवि
त॥मघवाकेजलसोंउमगिअधिकानोंव
कपछिनुकोराष्योतेंवसाइसमुदाईहे॥
छोडिचितमूलवाभरोसेमतिभूलेंअवबै
ठोवनकनीठिनीठिवनिआईहे॥पाव
सजोनिरितुराजकोसमाजयहसोंहीकें

सैं हरित छबि छाइ है ॥ सुनि तरवर जो लौं
के है न अपतु तौ लौं नवदल फूल फल सं
पतिन पाइ है ॥ २० ॥ दोहा ॥ को छूट्यौ इहि
जाल परि कत कुरंग अकुलातु ॥ ज्यों ज्यों
सुरझि भज्यौ चहतु त्यौं त्यौं उरझतु जातु ॥ २१
टीका ॥ यह अन्योक्ति संसार जाल अपनों
प्रेम जाल के बंधन मैं कहियैं ॥ २१ ॥ कवित्त
तब तौ न जान्यौ लगि लालच भुलानौ चि
तु अब परसपर काहे पछितातु है ॥ कहै
कवि कलस याके बंधन की इहै रीति नैक
अटकत अंग अंग बंधि जातु है ॥ देषौ
तेरे पेरु को ऊ छूट्यौ इहि जाल परि काहे
कौ तरवरे कुरंग अकुलातु है ॥ ज्यौंही
ज्यौं सुरझि भज्यौं चाहतु सयानु [illegible] रि सौ
हीं त्यौं परी ई परी उरझतु जातु है ॥ २१ ॥ दो
इहि द्वै मोती सुगमु तन पग रबि निसांक
जिहि पहिरें जग दृग ग्रसत लस[illegible] हस
तिसी नाक ॥ २२ ॥ टीका ॥ यह अन्योक्ति थो
रे हू से धन सौं अपथवा गुन सौं अधिक सो
हतु होइ तहां कहियें ॥ २२ ॥ कवित्त ॥ सुनि
समेत नाक या ही तें कहत मुकत [illegible]
त मुकति पुरी सौं दरसति है ॥ कहै [illegible]

कुसुम नमी [illegible]के मोहि वेकौं मोहनी सिद्धि
मानौं सोभा सरसति है ॥ ताहि पहिरि तें जगन
यन अ सति अति छवि बरसति मानौं नासिका
हसति है ॥ अहे न थ उर मैं निसाकै त गरकुक
रि है लि मुकता गथ सहित लसति है ॥ २२ ॥ दो
हा ॥ वे सरि मोती थनितु ही कौ पछे कुल जाति
पावो करितिय अठ कौं रसुनि धर करि निरा
ति ॥ २३ ॥ टीका यह अन्योक्ति कोउ और छै कुल
ल तैं भयो लघु मान तु और बड़ी है और जाइप
यो होइ तहां कहिये ॥ २३ ॥ कवित्त ॥ कौन विना
न करै कुल जाति को जीवन आपनौ ई जग मैं
गनि ॥ है सब तें बड़भागी तु ही अरु आई है तेरी
ये वा तन ली बनि ॥ ते ही लयो है तपूरब को
फलु है [illegible] तु ही वेसरि के मुकता धनि ॥ द्यौ
मनि सा तिय को अधर रातें तनी कौ निसाक
द्ध पीवो करै किनि ॥ २३ ॥ दोहा ॥ पाइ तरुनि कु
च उच्च पद चिर मिठ्यो सब गांव ॥ छुटै ठौ
र रहिहै वहै जु हो मोल छवि नांउ ॥ २४ ॥ टीका
यह अन्योक्ति कोउ लघु मान सु बडे ठिकानैं
पहुंच्यौ तहां कहियै ॥ २४ ॥ कवित्त ॥ सखि मा
[illegible]ल षोल घुनाउ नई उतपति न उत मधे
[illegible] कौं नरु मागि लहो घुंघची नव नागरि

केकुचउन्नतिठिकानो ॥ याहीतें मोहोसवजग
कौमनुतोहिगुमानघरोअघिकानो ॥ छोरछु
टैरहिजेहैवहीमुषकालिमारंगवजारविकै
नौं ॥ २४ ॥ दोहा ॥ नहिपरागनहिमधुरसधुन
हिविकासइहिकाल ॥ अलीकलीहीसौंवध्यौ
आगेकोनहवाल ॥ २५ ॥ टीका ॥ यहअन्योक्ति
नायकाकेतनमैंअवहीजोवनआयोनां
हीनाइकाआसक्तपहिलेहीअघिकदेषी
सुसषीसषीसषीसौंकहतिहै ॥ २५ ॥ कवित
नहीपरागनहीमकरंदअजौंप्रगटीनसु
वासुविकासुर ॥ जानेकोआजमैंघोकैहैक
हांगति ऐसोपर्योअवहीइकआसर ॥ फू
लीघनीफुलवारिसांतिपैकोउकौंलेकन
मानतुतातर ॥ रीझरलीमतिकंजकलीपै
अलीमडरानौरहैनिसिवासर ॥ २५ ॥ दोहा
मोरचंद्रिकास्यामसिरचढिकतकरतगुमा
न ॥ लषिबीपाइनुपरलुठतिसुनियतुराधिका
मान ॥ २६ ॥ टीका ॥ यहअन्योक्तिकोऊलघुमा
नसौंवडीठौरपाइगर्वुकरैताकोमानभंगु
होतजानियेतहांकहियें ॥ २६ ॥ कवित ॥ [illegible]
मनैंआपनैसीसपैराषीवनाइकैचाइ[illegible]

धारिहै॥ जिनि याकोतजीमैं गुमानकरै अबतौ सबजो मलषी परि है॥ करि कार्ह कौं मोरकी चंद्रिका ऐसी दिठांई के दार रही दरिहै वृष भान कुमारि कैं मानस मैं तर वानितरै लुटि वौ करिरिहै॥ ६५॥ दोहा॥ जिन दिन देषे वे कुसम गई सुवीति वहार॥ अब अलि रही गुलाब मे अपत कटीली डार॥ ६६॥ टीका॥ यह अन्योक्ति कोउ धनवान निर्धन भयो है। हितहे धन के लोभी जाचकु कोक हिवो अमर के प्रसंग करि ॥ तथा यौवन हू कों कहिवो सभवै ६७ कवित्त॥ जे बरु उहि तरिनु राजको प्रताप तीषो कहै कदिह्रलजाकौं विक्रम अति अपार॥ तवह न बरनि ... निदेषे हे सुषद सुकुर सरस कुसम भरे अतुल सुगंध भार॥ गही आसला गपाइ तआवते चलौ वोलि आलि वह... वितीत भई ओ सब ही वहार॥ गंधव ... ता पराग को न लेस रह्यौ अब रही अपत गुलाब की कटीली डार॥ ६६॥ दोहा॥ यह कवि वडाई आपनी करत राच तुम ... ल॥ विनु मधु मधुकर कै हियें गडे न गु ... फूल॥ ६७॥ टीका॥ यह कोउ गुन हीन है ... अधिक करत है तासैं गुड हर

के फूलको प्रसंग करि अन्योक्ति संभवै॥ ९७
कवित॥ कहा भयो जो पै पायो सहज अरुन
रंग उमंगि ललित छवि रही तन छाइ है व
हकि रहकि चित आपनी वडाई मेतू काहे
को रचतु गरुवाई यौन पाइ है॥ जाहि रस
लैवे हाको चसको लग्यो है सो कौं सुमन सुग
धत जितो पै मडराइ है॥ गुउ हर फूल इतरा
त कैसौ तू फूलि फूलि विनि मकरंद अलै भ
लि रून भाई है॥ ९७॥ दोहा स्वारथु सुक्रतु
न श्रमु व्रथा देषि विहंग विचारि॥ वाज प
राये पानि पर तूं पंछीहि न मारि॥ ९८॥ टीका
यह अन्योक्ति कोउ पराई सुसाम दिकस्त्रि
दूनै कौ वुरो करे तहां कहिये॥ ९८॥ कवित
कहि कौं वीरा नै वुरे करतु पराये काज ऐ
सौ पोटो करमु विचारत है काहे कौं॥ एतो श्र
मु नाहक सरीर कौं तू देतु अरु दोरै ...
पनै किगारतु है काहे को॥ या मे कछु सुक्र
तु न स्वारथु समझि देषि पातक कौ भार सि
र धारत है काहे को॥ कहा भयो जो पै आनि
परयो ई पराये पानि वाज निज पंछि तु ...
र तु है काहे कौं॥ ९९॥ दोहा॥ जनम जल ...

निपुविमलमोजगुनश्रागश्रपार॥रहेगुनीके
गरपस्यो नलेनमुकत्ताहार॥९९॥टीकायह
अन्योक्ति कोउसुपात्रुरहैमलीठौररहिबेला
इक अरुछोरीठौरश्रानेदसोंरहेतहांकहि
ये॥९९॥कवित॥जनमुजलधिकुलपानिपु
विमलअतितेरीसुभ्रसोभाजगामग्रमतिसुहा
ईहे॥सनुकोऊजगतमेंचोपस्योंचाहितौहित
हीवेसकिमतिजवोहरमेंपाईहै॥तेरोसंग
पाइछितिपालश्रोरुवालनिकीकेसीनी
कीदेविइतिरूपकीनिकाईहे॥ऐसोतुगु
नीक्केगरिपरकैंरहतुसुनिमुक्तताकेहारया
मेंकहाथोमचाईहै॥९९॥दोहा॥गहेननेकौगु
नगरवुहसोमुदेसंसार॥कुचउचपदलाल
चरहेगरेंपरेंहूहार॥१००॥टीका॥यहअ
न्योक्तिश्राछेटेरीहूजाबैंअनादरहूसोरहे
तासोंकहिबोसत्तवे॥१००॥कवित॥छोरेव
डेकुलेंसदवीगुनकीगरुवाईनजीमे
धरे॥कोनसवेहसिबोईकरेंजगपानिप
हांनिहूतेनहरे॥हारनहाटविकेइहिश्रा
सविधायोहियोपनतेनटरे॥उच्चउरोजन
कोसुपलोभुरहेहियपायनिगरेहूपरे॥१००
॥कंचगाधुअतिश्रोपुरोनदीकूपसरवा

वि०स०
१४३

इ॥ औ ताको सागर जहां जाकी प्यास बुझाई
ह०१॥ टीका॥ यह अपनो कार्य छोडि कै तैं होइ
तहां कहिये॥१॥ कवित॥ कूप गंभीर सरोवर बा
पी किती महि मैं न हि जात वषानी॥ छोटी नदी
रु वडी सरिता नद और चना जगरी सनै ठानी
उत्तम मध्यम को ऊ [illegible] आय दोउ अगाधि कै
औ थेरो पांनी॥ वाकों वही कवि [illegible] समुद्र है
जाकी त्रिषा जिहि ठौर सिरांनी॥ ६०१॥ दोहा॥ दि
ष मत्र षादित कौ त्र षार है सवै जल सोधि॥ म
रु धर पाइ मतीर ह्वै मारु कहत पयोधि॥ ६०२
टीका॥ अय क्रमयोक्ति अपनो प्रयोजन काहू
छोटे तें सिद्धि भयो अरु वडे कै दुष कृत समर्थ
है अरु अपने काम नाहीं आवत तहां कहिये
॥ कवित॥ व्रष की वरक्षै चौविषम किरनि
सव सलिल सुकाल क ह्वै औडि ई रहत हैं॥ जी
व जंत जल थल प्रवल अवल सव अकुल
प कल होत कलंमंल हत हैं॥ आतप के ताये
अति प्यास के सताये जल सोधत फिरत प्रां
न राषिवो चहत हैं॥ ऐसस मैं पायो काहू भो
ग मै मतीरा तासों मारु लोग जलनिधि नाम कही
कहत हैं॥ ६०३॥ दोहा॥ प्यासे दुपहर जेठ के
जिये मतीर नु सोधि॥ अमित अपार अगाध [illegible]

१४३

लमारीमूडपयोधि॥ ६०२॥टीका यहग्रंथमों
किंआपनों.काजजैसैंतैसैंसिद्धि भयें पाछैंस
वैसंपन्नमिले तहां कहिये॥२॥ कवित॥ कौन
कामजगतमैं 'तासकी वडाई जातें कछुगार
जगरैनकारूपनमैं॥ छोटेहीतेंआपनोंस
फलहोइ काजुतौ पैंधौं कौघटतरूऔरुकौन
त्रिभुवनमैं॥ जाकेआंनदारुननिदाधकीत्रि
षामैंवामतीरैपाइवचिसियराईजर्ईतनमें
ताकेआगेंकहौकोऊसागरकीवातऔंडेंस
लिलअपारकैसेंआवैवाकेमनमैं॥ ६०२॥ दो
कोकहिसकैवडेनसौंलषेवडीयोभूलि दी
नेदईगुलावकीइनडारनुयेफूल॥ ६०४॥
टी॥ यहग्रन्थमों किंकोउप्रवीनमहाजोनअन
जानेंअविवेककौकामकरैतहांकहिये॥ ६०५
कवित॥ कौंयहवातसकैकहिभूलिकैंकामक
रेकरतारसैंजैसें॥ एतीकरीजगकीरचनापैवि
चारविनानकिरैनाहितैस॥ देषकुकोऊउस
सैंनसासवडेजुकरेकछुकामअनेसे वैसी
येकंटककडारगुलावकीफूलसुगंधदयेग्र
इऐसे॥ ६०४॥ दोहा॥ दिनदसआदरपाइकैं
करिलैआपुवषांन॥ जौलगिकागसराधप

वि॰ प्र॰
१५५

थु तौलगि तो सनमान ॥ ६०४ ॥ टीका यहग्रन्यो क्ति कोऊ थोरे दीनन्न की वडवा रिसें गरबु करै तहां कहियै ॥ ६०५ ॥ कवित्त ॥ धूसर कंठ कठोर महा सुर एकही लोचनु रंग हे कोरो ॥ नीच कहाव तपच्छिनु मैं अरु भच्छ कौ साजु कुचील निहारो ॥ आदर पाइ [illegible] कौ अनिमानव सो अपुनै चित धारो ॥ वाइस जौ लौ सराध कौ पाखु है तौ लगि है जगु आधु तिहारो ॥ ६०५ ॥ दोहा ॥ महतप्पा सपिंजरा पर्यौ सु सुवा समै के फेर ॥ आइ सुदेर वोलियतु वाइ सु वलि की वेर ॥ ६०६ ॥ टीका यह अन्योक्ति मनमें मानस कौं दुषु दीजिये कैं नीच कौ आदर होइ तहां कहियै ॥ ६ ॥ कवित्त ॥ ऐसो समै को प्रभाउ कौ भावु भयौ जगु औगुन ही कौ रिझौवा ॥ वूझ गई गुन हंदनु की प्रगटे अवकूर कुरूपु अ जोवा ॥ ब्यासौ मरे पिंजरा मैं पर्यौ सुक है मसु [illegible] वे ननु को जु कहैं वा ॥ आदरु कै वलि दैवे की वेर वुलैयत चाहरि के चाइ सौं कौवा ॥ ६०६ ॥ दोहा ॥ इहि आसा अटक्यौ रहै अलि गुलाव के मूल ॥ ह्वै है फेरि वसंत ऋतु इन डारनि वे फूल ॥ ६०७ ॥ टीका यह अन्योक्ति जहां कछु जानै पायो होइ तहां वे सियै आ माल

ज्यो रहे तहां कहिये काकुध्वनि तें यह है होइ कौ
वाही भरोसो क्यों रहे ॥ ६० ॥ कवित्त ॥ बिहरिन शर
नि फूलकु ते जिनके रसतें सब वड्यनु लानो ॥
बीति बहार गई तिनकी कुसमाव लि चित तवु
मैं नही आनो ॥ औ हे वसंत बहार तवे यह वा
मु षसो रमंही कोवि का... आस यहे निय मे
धरि मो रु गुलाब के मेल रहे मडरानो ॥ ६० ॥
दोहा ॥ पटु पाषें भष्यु कों करें सपरप रेइ
संग सु षीप रेवा पुहमि में एके तुही विहग
६१ ॥ टीका ॥ यह अन्योक्ति जो कोउ पराधीन
अरु परदेसी न्यांही तहां कहिये ... ॥ कवित्त
भोजनु को करवो नीके रैन के रे जु अधीन है
काहू की सेवा ॥ पाव नुही के वनपटु चारु वि
साह को जान तु भाव न मेवा ॥ नीके रहे घर
नीके सु... संगो पूरब पुन्यनु को फलु लेवा को
न कू... तिनु आस पराई सु षी अब नी पि तुही
है परेवा ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ करत लेस मधि सरा हिहुं
सवे रहे गहि मोनु ॥ गंधी अंध गुलाव को गाव
ई गाहक कोनु ॥ ६२ ॥ टीका ॥ यह अन्योक्ति को
ऊ बूझ न करै तहां कहिये ॥ ६३ ॥ कवित्त ॥ राषो
है उघारि नै अमोल क अतरु आके गेजा के म

गन्धी

दुगंधसोंमाहि करह्यो भोमहि ॥ श्रोहि श्रोटि
हायसवही नेली नोदेषि येको सषि संषि स
वनं सराहि गंह्यो मौनु है ॥ मोलसु नैसवंही
नेहं सिके मचाइ कुकुपथु गहि श्रवत क है
तकोन गौं नु है ॥ श्ररे गंधी श्रांध रे हिय मे ए
तो चेतु करि गाह [illegible] ला वकौ गंवेलैं गांउ कौ
नु है ॥ ६०८ ॥ दोहा ॥ वे नइ हो नागर वदे जिन श्री
दर तो श्राव ॥ फूल्यो श्रनफूल्यो भयो गंवई गा
व गुलाव ॥ ६९० ॥ टीका ॥ यह श्रन्योक्ति प्रवीन ।
लोगनु कौ समुदाय होइ गुन की [illegible] कौ क
न करै तहां [illegible] हियें ॥ ६९० ॥ कवित ॥ चाइ सौं श्रा
दर तेरौ करै श्ररु तोही सौं राखै हियो श्रनं कौ
लौ ॥ तामद्दु सौ रभ कौ रसु लेजिन केमन मो
द रहै श्रति उल्लौ ॥ किम्मति तेरी [illegible] घर
नारि फु वारन केजिन कौ तकि मूल्यौ ॥ श्रैसे ग
वारन कु वस [illegible] मैं फूलि गुलाव [illegible] श्र
नफूल्यो ॥ ६९० ॥ दोहा ॥ गांधन तुहं रच्यो हिये
निधर क लेहि पुजाइ ॥ रसम झि परैं गीसौ सप
र पर तप सुनं केपाइ ॥ ६९१ ॥ टीका ॥ यह श्रन्योक्ति
कोऊ काहू कौ श्रघातु होइ सु पाछै दै सौं [illegible]
वे तहां कहियें ॥ ६९१ ॥ कवित ॥ षनि कौं लसुषी

मुकलगावति गुंनकोकिलकंठसु माइन
सौं॥ वक्रभांतिनु कैपकंचानवनाइ मनोवैस
वैसतभाइन सौं॥ अदगोधनेतेमद्र मानिहि
येवक्रभांतिपुजाइवेचाइनसौं॥ परिहैसुधि
कोहिसवेलवहीपसुपजुह्निगेजवपाइनसौं
२॥ दोहा॥ करिफुलेललवै [illegible] चवनमीठेकह
तंसराहि॥ गंधीअंधगुलावकोअतरुदिषा
वतकाहि॥ १२॥ टीका॥ येहुअन्योक्ति मूर्षमानि
वासौंचतुराईजावेतासौं कहिये॥ १२॥ कवित॥
नगरकेक्कार तैं तेरीऊंची टेरसुनिचोपसौंचु
लाइलीनौं केहीआगेआतुरे॥ वेरायोनिक
ठआतिप्रीतिसौंकुंकुमकीनौं सोधीवेसकि
ममि [illegible] कोहमहिदिषाउरे॥ आचमनुकरिकै
कुलेलसौं कहतमीठौते नृअंध्योंजामौंसुगंध
राईकोप्रभाउरे॥ काहेकोउघारतगुलाबकौ
अतरगंधीकहोगाइतेरी चतुराईअबवाउरे
२॥ राजाकोवर्नन दोहा॥ पतिविवितजय
साहिद्युतिदीपतिदरपनधाम॥ सबजग
जीतनकौकयोकोवपुवहमनुकाम॥ १३॥
टीका॥ यहराजाकीसुंदरताईकौवर्ननकवि
कौउक्तिसषाकौवचननाइकसौंनाइकाकौ
वेचैनसषी [illegible] सौहोइ॥ १३॥ कवित॥ राजतुद

॥टीका॥ यह अद्भुत रसु है। [illegible] रोगनाइक
को बचन नाइका सों॥ ४० ॥कवित्त॥ ते रस म
गजैत्र ग्रमांन को कुच छिजैसो श्री बिधुं जति
हूं पुरमैन हतु है॥ तामै औरु अद्भुत रीति
वरेषी नाहि सुमिरिअ चिरजु तम [illegible] तु है ए
करसं नां ते मे पे करत खे नंको रू तोहि
लपि मेरो मन ज[illegible] बिललि हतु है॥ जद पिअ
गसु ओढी मे डीगाड ग[illegible] मनु तऊ देखो
[illegible] रुको ई रहतु है॥ ४० ॥दोहा॥ या अनु
[illegible] चतकी गति समुझे नाहि कोई॥ ज्यों ज्यों
[illegible] सुरंग त्यों ज्यों उज्जल होइ॥ ४१ ॥टीका॥
यह अद्भुत रस [illegible] बचन अरु नाइका
कौ बचन सखी सो होइ तऊ मन वै॥ ४१ ॥क
वित्त॥ नैननु मांझ रही सुमि के वहन द कि
सोरकी ऊ बिसु हाई॥ प्रानंनु मैं तउ मा ल
ति है कबि [illegible] कहे सुधि [illegible] न भुलाई या
अनुरागी पग चित की कछु अद्भुत रीति
कही न हि जाई बूड्यो रहै [illegible] स्याम मै ज्यों
ज्यों त्यों त्यों गहै अति उज्जलताई॥ ४१ ॥सा
तरस॥ ॥दोहा॥ जमकरि मुह तरहरी परयो
इह हि घर हरि चितु लाइ॥ विषय तृषा परि
हरि अजौं नरहरि के गुन गाइ॥ ४२ ॥टीका॥ य

हसांतरस नजकौ वचन मनुसौ नृपसं
चारी ॥४२॥ कवित ॥ दसरूहिंसा न भावै ज
सांऊ ब्यापि रह्यौ जाकौ याकु कहौ वाकौ बि
क्रम वौ कहां लौ प्रभाउ रे ॥ तिनु का लौ ता
रे तीनौ लोकके सकल वैलौ कौ ऊपै नव
चौवकू विधें हू उपाउ रे ॥ ऐसे कालक
रिकै पर्यौ तू मुहत रहौ सिसु सक है यह ध
रि चित लाउ रे ॥ तारिमां निबिसय पररषानि
परिहरि मन नरहरि देव के सरन गनु नम्म
उ रे ॥४४॥ परस्तावि का दोहा ॥ हरि भजे नि
नृप पीठि दै गुन बिसतरन काल ॥ प्रगट तु
निस्युननि कट रहि है चंगरंग नृपाल ॥४५॥
टीका ॥ यह नजके वचन गुनानि मानु है
तवृपा तै प्रनु हरि है अरु निर्गुन लखे है तहां
प्रगट है यह रीति कलि काल कु केस जानु
की कहिये वो संभवे ॥४६॥ कवित ॥ हसलक
हे कविताकसी रीति प्रेमु अरु चेंगनि माह
तसोऊ ॥ पीठि दे हारहौ हरि भजे गुन गानि बि
सतार कैरै जवकोऊ ॥ नीके है का कियौ न लहै
नमुक्त के सोचु कैवा दिपचौ मति कौ ऊ
निरगुन ता प्रगटे जब ही अति ही निकट पै

रहै तव सोक ॥४३॥ दोहा ॥ जैसैं नै के औगुन
नरी चाहि याहि वलाइ ॥ जो पति संपति रिधि
मान उपति राषे जाइ ॥४४॥ टीका ॥ यह परलो
किक संपति बिना ही रहति है तिय सर्वंग ॥४४॥
कवित ॥ औगुन भतु जेते [illegible] ति चंचल याहि
कहौ जिय को पावि [illegible] राषे ॥ नंदकिसोर कृपा
करिकै वह संपति ह्वै विन जो पति राषे ॥ या
विनु काज कछू न सरै मन को इयहै निहचै
मति [illegible] ॥ जानियै है चित चाहत याहि उपा
[illegible] कै वकुताकत नपाषै ॥४४॥ दोहा ॥ या नव
पारावार कै उलंघि पार को जाइ ॥ तिय छवि
छाया ग्राहनी गहै वीच ही आइ ॥४५॥ टीका ॥
यह परलौकिक संसार सागर के पार कैवैको
एक स्त्री अवरोधे है ॥४५॥ कवित ॥ लोभ मोह
काम नाम या नक नघर जहां असुर मनोज
जाको विक्रम महतु है ॥ ऐसौ भव सागर अग
पार विकरार महा कहै कौ वह तास को उलंघि
निवहतु है ॥ साहस हिये में घरि जतन अनेक
करि सवको कृपाहि तरि पार भौ चहतु है ॥
तरुनी की छवि छायाग्राहिनी विकट गहि
राषति प्रवल ताते बीच ही रहतु है ॥४५॥ दोहा
जगत जनायो जिहि सकल सो हरि जान्यो ना

हि ॥ ज्यों ग्राषिजु जग देषिये ग्राषिन देषि
ज्यों ॥ ४६ ॥ टीका यह सांतरस भक्त को व
चन निर्वेद स्थाई भाव ॥ ४६ ॥ कवित ॥ नाहि त
जिन्हें पांच भ्रम भूल्यो नट के तु बौरे जा तेल
हि षंत्तु [illegible] सुषन को गोतु है ॥ मां निग्रन ह
चि हरि भजे जु पिय [illegible] जां निवृ[illegible] वि
षय विष मांगे [illegible] मों तु है ॥ जिन सब जग ते
जे नायो मेली मैली भांति व हे [illegible] ये न जा
न्यो गिरे सो मोह को उदो तु है ॥ दृष्टी [illegible] नित्य
षि नुही सब दरसायो तिन ग्राषिनु को का
हू भांति देषिवो नही तु है ॥ ४६ ॥ दोहा ॥ कोउ
को रिसके सेय्र हो कोउ लाष हजार ॥ मो संप
ति जदुपति सदा विपति विदारन हार ॥ ४
टीका ॥ यह सांतरस भक्त को वचन ॥ ४.१ ॥ क
वित ॥ सेय्र ह कोऊ करो रिकरो मेरो को कु
लक्षि के लछि भंडारो ॥ कोऊ हंमर कजा
रि थके बकु मोतिल हो मन में मन्ड भारो ॥
हलब्र कपानि धिदान को वधु सुरनु मदां वि
प्रतापउ भारो ॥ संपति मेरे वही जदुपति
विपति सदा जु विदारन वारो ॥ ४७ ॥ दोहा
जात जात वितु होतु है ज्यों चित में संतोषु

वचननु मन सो अरु मान वली माइ कासों
सषी को वचन न कहै तो सनवै ॥ प ॥ [illegible]
मेरो कह्यौ मानि मन मोहन सौं मो कुक
रि सुंदर व[illegible] स्यामके सम्हारिले
ब्रजवन कुंज केलि हारी सों विहार कु
रि गिरवरधारी सुख कारि उर धारिले
मूलिहू कै चित त्रषा वा[illegible] चावे मति
कहै [illegible] हल यह सुमति विचारिले ॥
थिर न रहतु धन जोवन भवन तनु जा
नि ब्रजजीवनसों प्रीति तू पारिले ॥ प्र
दोहा जपमाला छापै तिलक सरे न एको
काम ॥ मन काचे नाचे वृथा सांचे राचे
राम ॥ प३ ॥ टीका यह परस्ताविक जो लो
मन मे कचाई है तो लौं ऊपर को स्वांग एको
मनोरथ [illegible] आवै ॥ प३ ॥ कवित ॥ टीके मनो
हर भाल वनाइ कै माल धरी उर मैं म
निसी लो ॥ छापिन सौं तन मंडित [illegible]
कु ध्यान न लगाइ रहौ किनि कोली ॥ ना
चेलु नाच वृथा के विकुष्ण कचाई रही
उर मे मरि तो लौ ॥ काज कछू इहि भेषस
रे नहि सांच रची मति ना हिने जो लो

वि-स
१५५

रतसवप्रीतिनिपेप्रीतिरीतिजानतजेप्री
तिके[illegible]निधानहै॥ऋतुसिंगाररचिपचिसव
कोउपैसिंगारकरिवेकेभेदभाउमेविधा
नहै॥अनियारेकजरारेरीझ्यहगनिवा
केतीनते[illegible]निमहिमंडलमेंग्यानहै॥प्रेम
भरीबिहचितसनिकछुओरहीहेहोतवंस
जाहिनिरखतहीनुजानहै॥५७॥दोहा॥जो
चाहेचटकेनघटेमैलोहोहिनमित्र॥रज
राजसनछुवाइतोनेहचीकनेचित्त॥५८
॥टीका॥यहपरस्ताविकमित्रतामेंरजोगुन
नलागेतोसुद्धहेमित्रकौवचन॥५८॥क
वित॥नगनमैसवहीतेंमहगीहेप्रीतिए
कसाविनुकोउताकोलेसरूनदरसेय
हीहेजतनकविलसयाकेपालिवेको
मानीमतिहोयबुझिनत्र्याविरूनदरसेजो
नेहचीकनेतियेकीयेकरससछौवाह
तेचटकउजराईअतिसरसे॥तापैका
रूभातयाहिमैतेनतिकरैमातजैसेरी
षिजेसेरजराजसुनपरसे॥५५॥दोहा॥जोसि
रधरिमहिमामहीलहियतिराजाराइ॥
प्रगटतिजडतात्र्पनियेसुमुकदुपहि
राइ॥५९॥टीका॥यहअन्योक्तिजोआछे

मानुसु है भलै आदरलाइक ताहि निरा
दरसौं राषैं तहां कहियै ॥ ५४ ॥ कवित ॥ तैसो व
कुंभांति जवाहन लैवकुं भांति सुभो अति
सोभ बिछाई ॥ जाकी जगमग ज्योति प्रभ
मविं जाहि लषै सषकी ललचाई ॥ जाहि
धरे सिर भूपनु कौ महि मंडल मैं प्रभुता स
रसाई ॥ ता मुकतै पगमैं पहरैं प्रगटै तव
वाही कै[illegible] रषताई ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ समति मा
नै मुकता ही दियै कपट चित कोटि ॥ जोगु
नहीं तौ राषियै आंषिनु मांझ अगोटि ॥ ५६
॥ टीका ॥ यह परस्ताविक राजनीति मै सभवै
अरु नाइका नैंदमैं सषी कौ वचन नाइका
सौं कितयाहि छाडै मति आंषिनु मै राषै
६० ॥ कवित ॥ मुकत इमां नियै न दैइ जौ क
पट चितु कोटि कौं तकौ छोटि दीवो न अभि
लाषियै ॥ कीजियै हमारौ कह्यो दीजिनु
आनि करु वार वार वात समझइयै है
भाषियै ॥ कहै कविकस बही कहत सा
थानै सब देषौ राजनीति रूके ग्रंथ मैं सा
षियैं ॥ जांनियै जोगु नहीं तौ आंनियै न
आरतुर नीकै ही अगोटि करि आंषिनु
में राषियै ॥ ६ ॥ दोहा ॥ दुचितै चित हलौ

टे॥ विकरुजटेजोलोनिपटटबुटेनकपट
कपाटरे॥६३॥टीका॥ यहसोतनरसभक्तकोवच
नन॥६३॥कवित॥ सालुसुभाउअहिसंतनु
वेसगरहिसंग्रहिधरमुलागिभगतुकेघा
टरे॥ ओछियो टपाइगुनगाइबकन्यामप
केपहैसमुजाइतोसोकहतुनिरादरे॥क
हेकविकलहीदेखियोविचारिमनमंदि
रमेहरितेलोआवेविहिबाटरे॥जटेहेवि
कटअवगवादकेजेजोरनुसोजोलोयेषुट
तनेहिकपटकपाटरे॥६३॥दोहा॥करोकुटि
लजगकुटलतातनेभनदीनदयाल॥दुरभी
होकुगेसरलहियबसतत्रिभंगीलाल॥६४
॥टीका॥भक्तकोवचनभगवानसो॥६४॥कु
वित॥चाहतहोअपनेहियमांझबसायो
तुम्हेप्रभुजेसेकुतेसे॥वेपानकुवातक
रीझियोजगुसो[illegible]तएकरूआवेनवैसे
होकुटिलाईतजोनक्रपाविधिजानतहो
अपनेजियजैसे॥दीनद[illegible]केपत
होउरमध्योभक्तिवसिहोतु[illegible]केसे॥६४॥दो
करिदेबोसोप्यामुसरवक्कुसुरहथीजानि
रूपरहचटेलगिलष्पोमागनसवुजग
ओनि॥६५॥टीका॥यहपरस्नाविकसमने

सुनी है भलो मान सुरे गुरु को हू करने वो को
सत्त कारन कियो तरो कहिये ॥ ६६ ॥ कवित्त
जो सब भांति रस्यो गुरु वो विधि मानो को बैठे
[illegible] गते सोई तोरा ॥ हम कहे विनु जाने ग्य
जोन के पैवरह ग्यानु सुचत है न हियो रस पी
न सरोगते को हू कतने छांड्यो कहूं जो
मानिके सोरा ॥ [illegible] है ईसु गंध घटे य
ह को उ करो जियमें जिनि भोरा ॥ ६७ ॥ दोहा ॥ कै
से छोटे नरनु तें सरत वडिनु के काम ॥ मठो
टू मांझो जात क्यों कहि चूहा के चाम ॥ ६८ ॥
टीका ॥ यह परस्ताविक छोटे ते वडे की गरज
न सरै कवि की उक्ति ॥ ६८ ॥ कवित्त ॥ जा कौं
जितो जगदीस रच्यो वलु ता के फव सिद्ध ते
सोई भारी ॥ बात विचार यहै अपने जिय को
ऊ हया मति सो तु विचारो ॥ छोटे ते कौ सब
जो न सरे बंर कैतो ऊ साहसु के पचि हारो ॥
को टिक रैसे परि चूहा के चाम सों क्यों हू मठो
[illegible] जात नगारौ ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ [illegible] पति के सर
[illegible] सन रन वंत कूनु इकवानि ॥ विनव
सन र कुच नीचे नर न मैं विभो की हानि ॥ ६९ ॥
यह परस्ताविक कवि की उक्ति ॥ ६९ ॥ कवित्त

वि॰स॰
९६

केसवो सु देस अंतर रहै है सदा एक रसु कहि क
विहु लग है एक सी पेवानि है ॥ ज्यौं ज्यौं वढ
वारिल है त्यौं ही त्यौं नघति दोऊ सकल प्र:
वान यह वात करि आनि है ॥ और देषो
न उरी जंगरू नाचन रस्म करे रह तन्कोरै की
रू कीनि का नि है ॥ सं पति लहत न त्यौं त्यौं रह
त तननैं नै फेरि आपु हीन रमहो त भये विनौ
हौं नि है ॥ ९८ ॥ दोहा ॥ वैन फूजत तु विनु गुन नतु
विरंद वडाई पाइ ॥ कहत धतूरे सौं कनकु
गहनौ गढ्यो न जाइ ॥ ७ ॥ टी॰ ॥ यह परस्तावि
क कवि की उक्ति ॥ ७ ॥ कवित ॥ वडो नो वना
यो जगदीस सो व डोई कै है ताही सबु जगु
वो है आदरु वडाइ कैं ॥ कं है कविहु सवह
ते सोई लहतु मोलु कंचन को देषो क्यौं न कै
यो वैरता इ कैं ॥ छोटो जो पे वडे गुन विनु यौ
ही वडो है तु नाउ की वडाई हि मंडल मैं
पाइ कैं ॥ तो पै वह कनक धतूरौ ऊ कहावतु
है क्यौं न पर्रतको ऊ गहनौ गढाइ कै ॥ ७
॥ दो॰ ॥ गिरतें ऊंचे रसिक मन बूडे जहां हजार
वहे सदा पसु नरन कौ प्रेम पयोधि पगार
७ ॥ टीका ॥ यह परस्ताविक समुद्र की अन्यो
काई कवि की उक्ति ॥ ७ ॥ कवित ॥ जाकौ प्रेमो

न परे कुछ अजु लो का हू न आर रल हार हि हू
इमक हैं सु अगाध हु हाल गिरि के से हू को तन
प्राव तु था हे ॥ मे हत तें उ वे रसा प नु के मनु बू
डु अने कु अचं भो म हा है ॥ सो पसु पा मूर लो
ग नु को व ह से म स मु दू प गा र स दा है ॥ ७ ८
दोहा संगति दो खु ल गे स ब नु कहे नि सो चे
चे न ॥ कुटिल वं क भ्रुव संग भये कुटिल वंक
गति नैन ॥ ७२ ॥ टीका यह प रस्ता विक संगति
को दोषु लगै या दृष्टांत कविकी उक्ति ॥ ७२
कवित ॥ और ही जैसे ई संग रहे जु गहे सु भली
विधि वां नि व हिये ॥ संगति दो षलगे सब
को विधि है यह आदि अनादि सहिये ॥ हू
इमक हैं जग में यह बात प्रत छ प्रवीन नि
अचाहिये ॥ वंक भ्रकुटिनु को संग पाय के
नैन नुहूं गति वंक गहिये ॥ ७२ ॥ दोहा संगति
सुमति न पावहीं परे कुमति के धंध ॥ राषक
मेलि कपूर मे हींग न होइ सु गंध ॥ ७ ॥ टीका
यहु प्रस्तावि क जो उ बुद्धि के ठार मैं प र्यो
तौ हू संगति तें सुबुद्धि नाही होति ताको द
ष्टां तु कवि की उक्ति ॥ ७३ ॥ कवित जो गुन र
ग्राहक हो इ तो गुन गहे जो वा हि सो गुन मि

रि॰स॰
१६१

षाइ येतो औगुनगाहा करै ॥ लोकलीक लेष
पै एक पापही की पीक जाहि ठीक बात ए
कौ नाहिं चीक नैं रहावरि ॥ लाज न कहै कै
ए कीनें की नहीं ढकीन करै कोऊ औरु सुनौं
त्यौ वदियै महा करैं ॥ संगत प्रसंगतै वुरौ ऊ
नतलौं हौ इ देवी वैसेवा ग्रसगत कौ संग
तिक हाकरै ॥ ७३ ॥ दोहा ॥ वढत वढत संप
ति सलिल मनुस रोजवढि जाइ ॥ घटत घ
टत सु न फिरि घटै व रु समूल कुम्हिलाइ
७४ ॥ टीका ॥ यह परेखा विक कविकी उक्ति ॥ ७४
कवित्त ॥ मदन सरोवर मैं मुष कौ हिलोरु तु
सौं संपति सलिल ज्यौं ही ज्यौं ही सरसा तु है य
ह तौ प्रगट संवु जगतु वषांनतु है मन रूप सरे
ज तौं ही त्यौं ही अकुलातु है ॥ जव आनि प
रै कोऊ आन कुप्रारि तव जल को प्रमान
फिरि निघटतु जातु है ॥ कहै कवि हरवह
कमल वढ्यौ सु वढ्यौ वोरू पे न घटतु स
मूल कुमिलातु है ॥ ७४ ॥ दोहा समैं समैं सुंद
रसवे रूप कुरूप न कोइ ॥ मन की रुचि जेती
जितै तितै तिती रुचि होइ ॥ ७५ ॥ टीका ॥ यह पार
खा विक कवि की उक्ति नाइका भेद मैं सषी
कौ वचन नाइक सौं ॥ ७५ ॥ कवित्त ॥ सुंदर रूप

कहो किहिं काम है जो अपने चित में नहि आवे ॥ जो चित माफ कु रूप बुस्यो तो बहे उरको अति मोद वढावे ॥ हो जिस में ही समें सर सुंदर रूप कु रूप न को ऊ लषावे ॥ जाकी जितो जिहि ठोर वढे रुचि सो तिहि ठोर रति ती रुचि पावे ॥ ७५ ॥ दोहा ॥ मू ड चढाये हू रहे परयो पीठि कच भारु ॥ रहे गरे परि राषिवो तऊ हिये पर हारु ॥ ७६ ॥ टीका ॥ यह परस्ता विक कविकी उक्ति ॥ ७६ ॥ कवित ॥ का हू के मूड चढे रहियेन रहे गहिये चित में चतुराई ॥ नीको मनो रहिये जोग रै परि तो लहिये अ धिकै गरुवाई ॥ मूड चढे हू पुरे रहे पाछे कि बंधन की मति कै सुनि पाई ॥ देष्यो रहे जो गरे रूप स्यो तो विहार करे छतिया पे हमई ॥ ७६ ॥ दोहा ॥ मो पर रिन मन भावरि सरैं कोरी को रिखि करवाद ॥ अपनी अपनी टेव को छुटै न सहज सुभाउ ॥ ७७ ॥ टीका ॥ यह परस्ता विक कवि की उक्ति ॥ ७७ ॥ कवित ॥ का हू बुरो लगो का हू भलो लगो षोटी षरी जिय में धरी सो ऊ ॥ लाष नु कोन करो वक वाद सालो कु किलो कु जु होइ सु सो ऊ ॥ औरतें

जाकौं पर्यौ जु सुभाउ वहै निवहै निवहै जग
जोऊ ॥ आपनी टेव कौ सिद्ध सवाउ छुटै न कि
तो करो कोऊ ॥ ७७ ॥ दोहा ॥ जितनी संपति कृपन
के तेती सूमति जोर ॥ वढत जात ज्यौं ज्यौं उरज
त्यौं त्यौं होत कठोर ॥ ७८ ॥ टीका ॥ यह परस्ताव
क कृपनं के जितनी संपति तितनीये कृप
नता ता कौं दृष्टांत कवि की उक्ति ॥ ७९ ॥ कवित
कौं न हूं भाग प्रभाइ के दाय सौं संपै जो क
हूं संपति पाई ॥ त्यौं वह होत षरोई कठोर
विलोकिये समनि की सरसाई ॥ ताहि निहा
रि कह्यौ चहियै कछु वात यहै कवि के जिय
आई ॥ ज्यौं ज्यौं उरोज वढै तिय के उर त्यौं त्यौं
गहै अति ही कठिनाई ॥ ७८ ॥ दोहा ॥ पिय विछु
रन कौ दुसह दुष हरषु जात प्यौसार ॥ दुरजो
धन लौं देषियत तजत प्रांन उहि वार ॥ ७९ ॥
टीका ॥ यह प्यरस्ता वि कह हर्ष दुष दोऊ एकत्र
कवि की उक्ति नाइका नेद मैं सषी कौ वचन
सषी सौं ॥ ८० ॥ कवित ॥ नेह लग्यौ मन भावन
सौं वसिवो ससुरारि कौ जामैं सुहानौ ॥ नेह
रत्ने कौ आयौ चलावन ताही समैं सुनि जो
त्र कुलानौ ॥ प्यौ विछुरे दुष होत महा सुष

मांइ केकौ चित सोच समानौं ॥ प्रातकौ पंक
जु मैं तिय कौं मुष फूल्यौं कछुक कं छुकु नि
लानों ॥ ७९ ॥ दोहा ॥ वरघर डोलेत दीनकै ज
नजन जाचतु जाय ॥ दियेलोभवस माच
पनु लघु पुनि बउौ लषाय ॥ ८० ॥ टी ॥ यह
परस्ताविक लोभ की अधिकाई कवि की
उक्ति ॥ ८० ॥ कवित ॥ ठौर ही ठौर घिंघात फि
रै लघु ता जित ही तित आपु प्रकासै ॥ जाच
तु है सब ही पर जोइ वनाइ हियें वहु भांति
डरासें ॥ लोभ कों अैसो धर्यें च समान नहै ने
न नु पेम टकै वहु कूपा सें ॥ जद्यपि है अति विल
छिन रूं वह याहि तऊ अति दीरघ वासै
८० ॥ दोहा ॥ कालकूत इतौ विनाजु है नं आन
उपाइ ॥ फिरि ताकैं टारेलसें पांके पेमल
टाइ ॥ ८१ ॥ टीका ॥ यह प्रस्ताविक नीति प्रे
म के परिपक करिवे कौं उपाइ कवि की उ
क्ति ॥ ८१ ॥ कवित ॥ मंदिर लदाउ कौ वनायो
चाहै कोऊ सो तौ विनु कालकूत कौ हूं व
न न तु वानि है ॥ सो ही प्रेम मंदिर कौ काल
कूत इतौ ता हि वीच दियें विनु कहौ कैसे
ठिक ठानि है ॥ कहै कवि हैस परिपक्क
होहि दीक तव सकल प्रवीन यह वात

वि·स·
१६२

उरअग्नि है॥ काल कूट हूती बीचं राषिये
न एक अग्ना कटारिये न जौलौं तौलौं सुषही
की हानि है॥ ८१॥ दोहा॥ बरु हि किन इहि बिहहिनें
पुलीज वतन बीरु विनासु॥ बचै न देजी स
बील रू चील्ह घौं सुवा मासु॥ ८२॥ टीका॥ यह
परस्माविक ष्यौ पीको ब्वन नं नाइ कासो॥ क
वित॥ आपनी गौं सब कोऊ विचारतु मे
द कं छूयह पायो हैं तैं रूं॥ हो इमै पाछै परै
पछिता औरी या तैं कह्यौ स मुझाइ कै मेरे
मूलति याव हिं सांपु ली के हि केतन फोरि
मिले सपने रूं॥ कैसे रू राम्रौ पै चील्ह के
घौं सुवा मासु अछुतौ बचै न हि के रूं॥ ८२
दोहा॥ गुनी गुनी सब कोऊ कहे निगुनी गु
नी न होतु॥ सुन्यौं कहूं तरु अरक तें अर
क संमान उदोतु॥ ८३॥ टीका॥ यह परस्मावि
क है कछु नाही अरु सबु कोऊ मासौं कह
त हौं महा कहि ये कवि की उक्ति॥ ८॥ कवित
विनु करतूति रूठी पद वील ही तौ वह नी
की न लगति उ पैहास पेषियतु है॥ गुनी गु
नी सब कौ तु कहत पुकारि कहूं निगुनी
गुनी न मांऊ लेषे लेषियतु है॥ जगत वि
दित जासों मीठो कहियतु सोई निपट वि

निसोऊ॥ हे यववात प्रसिद्ध सवै जग एक
सी रीति नीवाहत दोऊ॥ नेकु भरे विनं दीप
कु देकु प्रकास करे न किन्तो करौ कोउ॥ ८४॥
दोहा॥ अपरेषो को न करै तुहा विलोकि वि-
चारि॥ किहि नर किहि सर राषियो पै बढै
परिवारि॥ ८५॥ टीका॥ यह परस्ता विक संसार
व्यवहार पै अन्ति वढै तें मदेषु टेक विकोउ
क्ति॥ ८६॥ कवित॥ केते भये नर केते भये स
दूजात कथ्य गने नान हि भाषी॥ ज्यों ज्यों वढे
अनुमानु गहे मरजाद रहे तब ही लगि पा
षी॥ कोने कौन परेषो करै पर मानुक हा
परतच्छ को साषी॥ पै अति की बढवार भयें
अपना परिपारि कहौ किहि राषी॥ ८६॥ दो
हा॥ पिय मन रुचि के बोक ठिन तन रुचि हो
त सिंगारु॥ लाष करो अषि न वढै वहै
व ढायै वार॥ ८७॥ टीका॥ यह परस्ती विक
नायका को वचन सषा सौं सो नि कौ सिंगा
रु देषि पिया के गर्व भयो सु ई षी सौं कहति
है अरु सषी या के चित्त को भ्रमु निवारे न
करै तौ संभवै॥ ८७॥ कवित॥ वैठ्यो कुंज
सदन विलोकतु है तुव मगु तेरो नाम मेरो

न

हनरूहवार बारही ॥ उठि चलि हिलि
मिलि मानि रंगा रंगी ली ग्वाला मेरी कहो
मानि मन गवति कहौ रही ॥ पिय मन ब
स करि वोई है कठिन ग्ररु तन कुतिमर
स तिसौ जैहूं सिंगारं ही ॥ कहै कवि हल
कीजै लाष कुंजन तन तें लोचन नवेह
त बंढा छबि बढै बार ही ॥ ८७ ॥ दोहा ॥ मीच
हिये फूल सरहे गहें गे द के पोत ॥ जौं जौं मो
मा पै मारियतु सौं सौं ऊंचे होत ॥ ८८ ॥ टीका
पर स्त्री विरह कृ विकी उक्ति ॥ ८८ ॥ कवित्त
जनम तैं कबहूं न लाई सौं न तैं टगई ज
गत मै कोटिक धिक्कार धारियतु है ॥ मह
ज भुभाइ परकाज लै विगारि डोरे चौ
एनग हत गुन पुंज हारियतु है ॥ नीच न
र ल्ते यो हिये मैं फूल सेई रहैं गेंद के सुभ
इ गहेयो निहारियतु है ॥ जितही बिका
इ दै पैं तितही हुं रकिजांहिं ऊंचे होत तौ
तैं ज्यों ज्यों मापै मारियतु है ॥ ८८ ॥ दोहा
कोरि जतन कोउ करौ परै न प्रकृतिहि
बीचु ॥ नल बल जल ऊंचौ चढै अंत नीच
कौ नीचु ॥ ८९ ॥ टीका ॥ यह हग्र मोकि जाकी

न

सुभाउनीचहोइजोपीवृद्दवारिद्रहोइ
पैसुभाउनछुटैकविकीउक्ति॥८८॥क
बित॥औरतैजसौसुमछपस्योवहओर
प्रकारनकैसैउकैहै॥कोरिककीयाउपा
इकरैकविद्युमकैहैनिरधारयहैहैसो
जगमेलखियेपरतछकरौजलजंत्रनि
तेमिहचैहैकैतोऊंऊंचौचढैनलकेंव
लनौरतकहुंरिनीचौइऔहै॥८९॥दोहा॥
जाकेएकतएककूंजगब्यौसाइनकौइ
सोनिदाघफूलेफलैआकडहडहोहोइ
९०॥टीका॥यहअन्योक्तिकाहूकेधनकाम
नाहीआवतुतहांकहियै॥९०॥कबित॥
छौहनकाहूकैचौटिवैजोगगनछीरथवै
कोउपेटभरै॥फूलनतैफलतैदलतै।
जगमेनहिकाहूकोकाजुसरै॥जौरचुन
लिमैं उहिओरपषेरूनकोऊबरा
मकरै॥होतुहस्यौयहआकुनिकाहुनिदा
धसमैवहफूलैफरै॥९०॥दोहा॥जोकौंन
हीयहतमुवहैकियेजुजगतनिकेरै॥
हौतुउदैसमिकौभयोमानोससिहरिबै
तु॥९१॥टीका॥यहचांदिनीकोवरननवि

योगी की वचन कवि की उक्ति है ॥ २१ ॥ क
वित ॥ हरि रह्यौ भ्रम धरुरथ में धरा जल में सो
लि [illegible] कठ्यो है ॥ ज्यों ही विलोकि वियो
गी उर अनुरागि नु की मनु मोदन यो है
होत न जो क्रव हेत मुहै यह जाने सबे ज
गु छाय लयो है ॥ हो तु उदोतु लख्यो सखि
को गेहिं सुकमनो तनु सेतु मयो है ॥ २
दोहा ॥ चटक न छोड़त घटत हूं सज्ज
न नेकु गंभीर ॥ फीको परे न वरु फटै रंग्यो
चोल रंग चीर ॥ २२ ॥ टीका ॥ परमात्विक के
वि की उक्ति ॥ २१ ॥ कवित्त ॥ सज्जन नेक जग
दीस रचे जिन की इक बानि सदा न व
टै ॥ सील सुभाउ गहे सहजे अनुराग स
[illegible] हिये उपटै ॥ नेकु कवें सुबरोम है री
उन है [illegible] घटै ॥ चोल कौ रंग नि चोल रंग्यो
[illegible] न को कोपरे फटै तैं हूं फटै ॥ २२ ॥ दोहा
कनक कनकु ते सौ गुनौ मादकता अ
धिकाइ ॥ वह खाये बौरातु है इहि पाये बौ
राइ ॥ २३ ॥ टीका ॥ परमात्विक के कवि की उक्ति
है ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ कनकु धतूरो सो नौ दोऊ यक
साँ वत है सोने को धतूरे तें प्रमाउ सरसै

नेकाई हीवढैतलतिनुरंगमतत॥२६॥
टीका यहपरस्नाविक कावि कीउक्ति॥२६॥
कवित॥ गटकोब नाउवाकोहीइतौ
डाई पावे ग्रंथनिमें बात यह वरनी
वकी॥ चुगिलाई दोषिये निकाई कीव
काई ही तुंग्सलक चितोनिमौह वरुनी
कभानकी॥ कहै कवि इहसरीति जानत्त
प्रवीनत्सोंही तरुनीकीतु काकी तुरंगम
कीतान की॥ वंकेही तपालकाके वास
कीवदनमोलवाकी रजपूती लहै कीर
तिकपानकी॥२७॥ दोहा वसैबुराई जासु
तनताहीकोसनमान॥ भलौन लौकरी
ओडियेधोष्यरहज पढान॥२८॥ टीका प
रस्नाविक कवि कीउक्ति॥२८॥ कवित जा
तन माझ बुराई वसै कछु सोजगमें सन
मान है पावे॥ वाहीकोजीमें सवेउरमानत
देषोइवामैं प्रनछप्पभावे॥ जोतिगीजोध
ह भाषे भलीतौ भलेही भलेकाहिके वह
रावे॥ जोपैवहेग्रहषोटो भुनैलवरानुक
गन जापक रावे॥२८॥ टीका पतिं रितुकी
गुनगुनवढतु मानुमाहकोसीतु॥ जातु

बि॰स॰
१५८

मनुवहै॥ जहां देषैवलुतहांकरैनप्रम
नजहांदेषैनवलमाईएलहांइअधदेत है।
७०० ॥दोहा॥ओछैवडेनुह्वैसकेलगोमतर
कैगेन। दीरघहोहिननैकहूंफारिनिहारै
नैन॥७०१॥टीका॥यहपरस्ताविककविकी
उक्ति॥१॥कवित॥जैजगदीसरचेजिहिभाइ
वैतैसेईदासैंघटैनवढैंजी॥मीरुहियेंधरि
मदगहीगतिपेवगुहंससकोमोललहैंना।
ओछेसो कैसेंहूंहोतवडेनवेकाइअवाडै
गसैंकिसिगेना॥दोहा॥निहारैकिमैंकरि
हारेपूरैदीरघहोहिनकैसेंहूंनैना॥७०१
दोहा॥मैमिसहीसोयोसमझिमुहचुम्योटि
गजाइ॥हसोषिसानीगलुगह्योरहेगरे
लपटाइ॥७०२॥टीका॥यहपरस्ताविकना
इकाकोवचनसषीसों॥७०२॥कवित॥कुं
वरकन्हाईसुषदाईचतुराईकरिपौढेरहे
सोमिससुरू ठौरिसकोवनाइकैं॥हितप्र
षिकाईकीउमंगवढिआईजियमैतौसौ
योजानिमुहचुंम्योडिगजाइकैं॥आरसम
सैंठारितनुरेचकउघारिनैननाइदीनाव
हगरैंगहिमुसिकाइकैं॥कहाकहोंओलि
होतोहसिरूंषिसाईतवओरनवसाईरही

गैलिपटाइवै ॥ ७०२ ॥ दोहा नयेविसालये
लषिनयेंदुर्जनतुसहसुभाइ ॥ श्रोटपारि
नतुहरतकांटेल्लोगाडिपाइ ॥ ७०३ ॥ टीका यु
हपरस्त्राविकनाइकाकोवचनसषीसौं
घषनपरकुंग्रथीरानाइकाराजनरिविके
प्रसंगामेसंभवै ॥ ७०३ ॥ कवित ॥ ऊपरैताद
षियतअधिकभलोईनेरेअंतरकेदुसह
दुषदैनिकेतहै ॥ कहैकविहरलवरूव
तनवनाइकहैदोऊपरेजेसेवनेतेसेइ
षरितेहे ॥ देषतहैनषेतकमावतरिधी
नयेभलतनकोहूंजेविचारमैंसदेषैहै
कांटेकीसीरीतिउरजनकेसुभाइनुकीश्री
टेपरैंपाइनहूलागिप्रानिलेतहै ॥ ७०४ ॥
दोहा तंत्रीनादकवित्तरससरससगरानि
रंग ॥ अनबूडेबूडेतरेजेबूडेसबअंग ॥ ७०५
टीका यहपरस्त्राविककविकीउक्ति ॥ ७०५
कवित ॥ तंत्रीकीमधुरधुनितालकेबिवि
धिभेदरागजामेंसुरनकीविविधितरंगहै
कवनविलासचतुराइकेप्रकासचाहके
विलासुदेसलहारसकीउमंगहै ॥ बागकी
वहारनवनागरीसौंहिलिमिलिवहिर

तिय ओरित सुरत प्रसंग है॥ जग जो बूडे
उन बूडे अंग अंग में इनें बात तनु में तरे ते
जेई इत बूडे अंग अंग गहै॥ ७०४॥ दोहा॥ सबै
हंसत करतार दै नागरता के नाउं॥ गयो
गरब गुन को सबै गरब गवारे गाउं॥ ७०५॥ यह
यह अन्योक्ति पर स्तुतिविक है मै संभवे क
विकी उक्ति॥ ७०५॥ कवित्त॥ कोस मुकेर सरी
तिके मैं दहि कौन सुनैं नर पनी तिउ या पा
न की कौन करे चरचा जहाँ मूढ ताके हि
त सौ मन पीरे॥ नागरताई को नाम सुनें सब
दै करतारी हंसें किलकारे॥ हरि गुन गन ग
यो गुन रूप सबै को वा सुभयो जो वेगां गवा
रे॥ ७०५॥ दोहा॥ सहे दुराज प्रजानु को क्यों
न बढे दुष दंदु॥ अधिक अंधेरो जग करत
मिलि मावस रवि चंदु॥ ७०६॥ टीका॥ यह पर
स्ताविक कवि की उक्ति॥ ७०६॥ कवित्त॥ ओ
र जाई सुनें प्रभु द्वै सुत मो गुन को वक ल्यै
ति वढावत॥ ता सु महा दुष दंदु प्रजान को
औ रस वे सुभ का थका वेत॥ ह्वै हल की
दिन नाथ निसाकर एक ही मंडल मै जब
आवत॥ दिपो प्रत छ अमावस को अंधि
यारी कितो जग मै सरसावत॥ ७०६॥ दृ